राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

राजस्थान राज्य द्वारा प्रकाशित

सामान्यत अखिल भारतीय तथा विशेषत राजस्थानदेशीय पुरातनकालीन
संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, राजस्थानी, हिन्दी आदि भाषानिबद्ध
विविध वाङ्मयप्रकाशिनी विशिष्ट ग्रन्थावलि

प्रधान सम्पादक

पद्मश्री जिनविजय मुनि, पुरातत्त्वाचार्य

[ऑनरेरि मेम्बर ऑफ जर्मन ओरिएन्टल सोसाइटी, जर्मनी]

सम्मान्य सदस्य

भाण्डारकर प्राच्यविद्या संशोधन मन्दिर, पूना, गुजरात साहित्य-सभा, अहमदाबाद,
विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोध-संस्थान, होशियारपुर, निवृत्त सम्मान्य नियामक-
(आनरेरि डायरेक्टर), भारतीय विद्याभवन, बम्बई ।

ग्रन्थाङ्क ५६

कविया करणीदानजी कृत

सूरजप्रकास

भाग १

प्रकाशक

राजस्थान राज्याज्ञानुसार

सञ्चालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर (राजस्थान)

कविया करणीदानजी कृत

सूरजप्रकास

भाग १

सम्पादक

श्री सीताराम लालस

'वृहद् राजस्थानी शब्दकोशके कर्ता

प्रकाशनकर्त्ता

राजस्थान राज्याज्ञानुसार

सञ्चालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर (राजस्थान)

विक्रमाब्द २०१८ | भारतराष्ट्रीय शकाब्द १८८३ | ख्रिस्ताब्द १९६१
प्रथमावृत्ति १००० | | मूल्य ८००

मुद्रक—हरिप्रसाद पारीक, साधना प्रेस, जोधपुर.

RAJASTHAN PURATANA GRANTHAMALA

PUBLISHED BY THE GOVERNMENT OF RAJASTHAN

A series devoted to the Publication of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa, Old Rajasthani-Gujrati and Old Hindi works pertaining to India in general and Rajasthan in particular.

*

GENERAL EDITOR

PADMASHREE JINA VIJAYA MUNI, PURATATTVACHARYA

Honorary Member of the German Oriental Society, Germany; Bhandarkar Oriental Research Institute, Poona; Vishveshvaranand Vaidic Research Institute, Hosiyarpur, Punjab; Gujrat Sahitya Sabha, Ahemedabad; Retired Honorary Director, Bharatiya Vidya Bhawan, Bombay; General Editor, Gujrat Puratattva Mandira Granthavali, Bharatiya Vidya Series; Singhi Jain Series etc. etc.

* *

No. 56

SOORAJPRAKAS

BY KAVIYA KARNIDANJI

Part-First

* * *

Published
Under the Orders of the Government of Rajasthan
By
The Director, Rajasthan Prachyavidya Pratishthana
(Rajasthan Oriental Research Institute)
JODHPUR (RAJASTHAN)

V.S. 2018]

[1961 A.D.

विषय - सूची

त्रतीयो प्रकरण—

सञ्चालकीय वक्तव्य

राजस्थानके चारण साहित्यकारोने स्वकीय काव्य-प्रतिभा और सतत साधनाके बल पर राजस्थानी भाषामे उत्कृष्ट साहित्यका निर्माण किया है, जिसका भारतीय साहित्यमे विशेष महत्त्व है। व्यक्तिगत अनुभव और अध्ययन द्वारा इन राजस्थानो कवियोंने अपनी रचनाओको प्रामाणिक रूपमे प्रस्तुत किया है, अतएव इनका साहित्यिक एव ऐतिहासिक दोनो ही प्रकारसे विशेष उपयोग है ।

कविया करणीदानजी राजस्थानके चारण कवियोमे उच्च स्थानके अधिकारी है । मेवाडके सूलवाडा नामक ग्राममे जन्म लेकर करणीदानजी अपनी काव्य-प्रतिभा, विद्वत्ता, रण-कौशल और राजनैतिक पटुताके कारण तत्कालीन अनेक राज-कुलोके पूज्य हुए थे, तथा जनताके भी प्रीतिपात्र वने थे । स्वय करणीदानजीने अनेक युद्धोमे सक्रिय भाग लेकर अपनो वीरताका चमत्कार भी प्रदर्शित किया था और साथ ही उन युद्धोसे सम्बद्ध घटनाओको काव्य-रूपमे मूर्तिमान किया था ।

कविया करणीदानजी कृत 'सूरजप्रकास' नामक महाकाव्य राजस्थानी भापाकी एक उत्कृष्ट कृति है । इस कृतिमे मुख्यतः जोधपुरके महाराजा अभयसिंह द्वारा गुजरातके सूबेदार शेरविलदखाको अहमदाबादके युद्धमे परास्त करनेका चित्रण हुआ है और प्रसङ्गवश पौराणिक एव ऐतिहासिक आधारो पर राठौड वश-वर्णन आदि सम्वद्ध विषयोका भी निरूपण किया है । उक्त युद्धमे स्वय कविने भी सक्रिय भाग लिया था, अत समसामयिक रचना होनेके कारण इस काव्य-कृतिका विशेष महत्त्व है ।

'सूरजप्रकास' के इस रूपमे अब तक अप्रकाशित होनेसे जिज्ञासु जन एतद्विषयक विशेष अध्ययनसे वञ्चित थे । प्रसन्नताका विषय है कि 'सूरजप्रकाश' का प्रथम भाग अब वृहद् राजस्थानी कोशके कर्त्ता श्री सीतारामजी लाळस द्वारा सम्पादित होकर राजस्थान पुरातन ग्रन्थमालाके ५६ वे ग्रन्थके रूपमे प्रकाशित किया जा रहा है। 'सूरजप्रकास'से

सम्बद्ध विशेष ऐतिहासिक और काव्यगत विषयोंका विवेचन आदि ग्रन्थके द्वितीय भागमे सम्पादक द्वारा किया जावेगा ।

इस ग्रन्थके प्रकाशन-व्ययका अर्द्धांश भारत सरकारके वैज्ञानिक और सास्कृतिक मन्त्रालय द्वारा आधुनिक भारतीय भाषा-विकास-योजनाके अन्तर्गत प्रदान किया गया है, तदर्थ हम भारत सरकारके प्रति अपना आभार-भाव प्रदर्शित करते है ।

विश्वास है कि हमारे पाठकोको यह प्रकाशन विशेष रुचिकर होगा ।

बम्बई,
गणगौर पर्व, सं० २०१८

मुनि जिनविजय
सम्मान्य सञ्चालक,
राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान,
जोधपुर [राजस्थान]

भूमिका

राजस्थान एक विशाल प्रदेश है। यह शताब्दियोसे भारतीय सस्कृति, साहित्य और कलाका केन्द्र ही नही, रक्षक रूपसे भी रहा है। वीर-भूमि राजस्थानने अनेक वीरो तथा विद्वानोको जन्म दिया है, जिन्होने अपने कृत्यो द्वारा, जिनमे इतिहास, वेदान्त, सगीत, नृत्यकला, वाद्यकला आदि प्रमुख हैं, सदैव राजस्थान का नाम उज्ज्वल रखा है। राजस्थानी साहित्यमे सभी रस प्रचुर मात्रामे उपलब्ध होते हैं जिनमे वीररस, शृगाररस और शान्तरस विशेष उल्लेखनीय हैं।

जिस प्रकार वीरोने अपने शौर्य और पराक्रम द्वारा राजस्थानकी मान-मर्यादा व प्रतिष्ठाकी रक्षा की है, ठीक उसी प्रकारसे राजस्थानके विद्वानो द्वारा इन महावीरोके यशको अमर रखनेके उद्देश्यसे अनेक काव्य-रचनाएँ हुई हैं जिनसे इन वीरोकी यश-गाथाएँ काव्य द्वारा सदैव अमर रह सके। ऐसे विद्वानोमे डिंगल भाषाके प्रसिद्ध ग्रन्थ सूरजप्रकास' के रचयिता महाकवि करणीदानजी कवियाका नाम भी उल्लेखनीय है।

चारण-कुल-भूषण करणीदानजी अपने समयके महाकवि, कुशल राजनीतिज्ञ, ज्योतिषी, सगीतज्ञ और इतिहासके मर्मज्ञ थे तथा सस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश तथा राजस्थानी भाषाके विद्वान थे। ये मेवाड राज्यमे सूलवाडा नामक ग्रामके निवासी थे। इनके पिताका नाम विजयराम था। इनके बचपनके जीवनके विषयमे अभी तक कुछ भी उपलब्ध नही हुआ है। केवल वीरविनोद नामक मेवाडके बृहद् इतिहासमे महामहोपाध्याय कविराजा श्यामलदासजीने एक-दो स्थानो पर इनका जिक्र करते हुए लिखा है कि महाराणा सग्रामसिह द्वितीय चारण कविया करणीदानके गीतोसे इतने प्रभावित हुए थे कि उन्होने इनके रचित गीतोका धूप इत्यादिसे पूजन किया।[१]

इसके अतिरिक्त कर्नल टॉडने अपने राजस्थानके इतिहासमे बहुत ही

---

[१] वीर-विनोद, भाग २, पृ० ९६६।

प्रशसनीय भाषामे महाकवि करणीदानजी कवियाका कई स्थानो पर विशद् वर्णन किया है ।[२]

महाराणा सग्रामसिंहजी द्वितीयसे सम्मान प्राप्त करनेके बाद जोधपुरके महाराजा श्री अभयसिहजीने इनको अपने पास बुलाया। महाराजा अभय-सिंहजीने इनका बडा सम्मान करते हुए अपना अयाचक कवि बनाया ।

राजस्थानमे वीर चरित्रोका विशद वर्णन करने वाले अनेक कवि तो ऐसे हुए हैं जो स्वय युद्धस्थलमे अपनी ओजस्विनी वाणी और शक्तिशाली भुजाओ, दोनोके चमत्कारका प्रदर्शन करते थे। ऐसे कवियोका उद्देश्य केवल अपने आश्रयदाताके सुयशका वर्णन करना ही नही था अपितु युद्धभूमिमे घटित होने वाली घटनाओकी सामग्री एकत्रित करनेका भी था, ऐसे महाकवियोमें

---

[२] टॉड साहब लिखते हैं कि, 'कर्णादान जिस प्रकारसे पहली श्रेणीके कवि थे उसी प्रकार राजनीतिमें भी चतुर, योद्धा और प्रगाढ पंडित थे, और प्रत्येक विषयमें ही वह अपनी चतुरताका चूडान्त प्रमाण दिखाया करते थे। मारवाडके आत्म-विग्रहके समय प्रत्येक राजनैतिक घटनाका उन्होंने प्रशसनीय रूपसे अभिनय किया है। दूसरे उनके बलविक्रमके सम्बन्धमें हमें केवल इतना ही कहना है कि राजपूत जातिके अतुलनीय प्रबल युद्ध में लिप्त हुए वीरोंमे जो कई जने अपनी जीवन-रक्षा करनेमें समर्थ हुए थे, कवि कर्णादान भी उन्हींमेंसे एक थे। तीसरे सात हजार पाच सौ कवित्तोंसे पूर्ण 'सूर्यप्रकाश' ग्रन्थ उनके पांडित्य और कवित्वका अक्षय परिचय दे रहा है। वही सूर्यप्रकाश केवल उनका पैतृक गुण है। हृदयहारी कवितामाला तथा ग्रन्थ-शक्तिका प्रज्वलित प्रमाण दिखा रहा है। यही नहीं कि उन्होंने अपनी गौरवगरिमाको बढानेके लिए इस श्रेष्ठ नीतिका अवलम्बन किया था इसके भी बहुतसे उपदेशमूलक प्रमाण विद्यमान हैं।' राठौर राजकवि कर्णादान विक्रमाजीतकी सभामें कालिदासकी समान अथवा महामान्य भारतेश्वरीकी सभामें वर्तमान लार्ड टेनिसके समान केवल वीणा-ध्वनिसे प्रकृतिको प्रसन्न ही नहीं कर सके किन्तु वह अपनी अमृत नि स्पन्दनी लेखनीके समान जन्म-भूमिके लिये तलवार भी चला सकते थे। कर्नल टॉडने इसीको प्रकाशित किया है। इस बातको हम कह सकते हैं कि कर्णादानने केवल अपनी लेखनीके बलसे, अथवा तलवारके बलसे, या नीतिज्ञताके बलसे अपने यशकी किरणोंको नहीं फैलाया था, वरन् उनके द्वारा आर्य जातिका एक कलक दूर हो गया है। विलायतके निवासी शिक्षित-गणों और उन पश्चिमी शिक्षाके उपासक देशी गणोंको दृढ विश्वास था—कि भारतमें इतिहास-रचना की प्रणाली किसी समय भी प्रचलित नहीं थी। परन्तु कवि कर्णादानका बनाया हुआ इतिवृत्तमय सूर्यप्रकाश उस भ्रान्तिकी जडमें अवश्य ही एक दारुण आघात करता है। कवि कर्णादान राजपूत जातिके लिए ही गौरवस्वरूप नहीं थे, वरन् यह सम्पूर्ण भारतके अलकारस्वरूप थे, इतिहास अनन्त काल तक इस बातका प्रचार करता रहेगा, इसमें कुछ भी संदेह नहीं।

[राजस्थान-इतिहास, दूसरा भाग, पृ० १७०—अनुवादक — श्री बलदेवप्रसाद मिश्र]

करणीदानजी भी थे जिनके रचित 'सूरजप्रकास'मे दोनो प्रकारके उद्देश्योका पूर्ण निर्वाह हुआ है।

ऐसा कहा जाता है कि महाराजा अभयसिंहजीने अहमदाबादके युद्धमे जानेके पूर्व अपने तीन प्रमुख कवियोको युद्धका वर्णन करनेके हेतु आज्ञा दी थी, जिनमे कविराजा करणीदान, वीरभाण रतनू और वखता खिडिया थे। वीरभाण रतनूने राजरूपक ग्रथकी रचना की जो ऐतिहासिक दृष्टिसे एक अद्भुत और महत्त्वशाली ग्रथ है। बखता खिडियाने १६५ छप्पय कवित्तोमे इस युद्धका वर्णन किया है परतु कविराजा करणीदानने महाराजाके आदेशानुसार अपने इस ग्रथमे शेर विलदखाँके साथ युद्धके वर्णनका ध्येय लेकर महाराजा अभयसिंहजीके पूर्व पुरुषोका भी सक्षिप्त इतिहास दे दिया है, और महाराजा अभयसिंहजीके जीवन-वृत्त सम्बन्धी सिर्फ दो घटनाओका ही वर्णन किया है जिनमे प्रथम घटना नागोरका युद्ध और दूसरी घटना महाराजा अभयसिंहजीका शेर बिलदखांके साथ अहमदाबाद-विजयका युद्ध है। अहमदाबादके युद्धका वर्णन वडे विस्तारके साथ किया गया है एव इसकी समाप्तिके साथ ही साथ ग्रथ भी समाप्त हो जाता है।

ग्रथको पढनेसे विदित होता है कि कविका उद्देश्य ग्रथको इतिहासकी दृष्टिसे महत्त्वशाली बनानेका था और ठीक इसी सिद्धान्तके अनुसार ग्रथारभसे लेकर ग्रथके अर्द्ध भाग पर्यन्त महाराजा अभयसिंहजीके पूर्वजोका सक्षिप्त वर्णन है, जिसमे सर्वप्रथम सूर्यवशकी वशावली, तत्पश्चात् सक्षेपमे रामायणकी कथा लिखी है। रामायणकी कथा के पश्चात् रामके पुत्र कुशसे लेकर राजा पुज तक की पुन वशावली दे कर राजा पुजके तेरह पुत्रोका वर्णन और राठौडोकी प्रमुख तेरह शाखाओका उल्लेख किया गया है। फिर राठौड राजा जयचदसे लेकर महाराजा अभयसिंहजीके पिता महाराजा अजीतसिंहजी तकके राजाओका कही सक्षिप्त एव कही कुछ विस्तृत वर्णन दिया गया है जिनमे महाराजा सूरसिंहजी, गजसिंहजी, जसवतसिंहजी तथा अजीतसिंहजीका वर्णन अपेक्षाकृत अन्य राजाओसे कुछ विस्तारपूर्वक है। इस प्रकारसे ग्रथ समाप्त किया गया है।

ग्रथको प्रारभ करके पूर्ण करने तक कवि महोदयको पूरा एक वर्ष लगा था जिसका उल्लेख ग्रथ-समाप्ति पर कवि द्वारा इस प्रकार मिलता है—

दूहा

सत्रैसै समत सत्यासियै, विजय दसमि सनि जीत।
वदि कातिग गुण वरणियो, दसमी वार अदीत ॥ १

वरिणयो गुण इक वरम विचि, उकति अरथ अरणपार ।
छद अनुम्टप करिउ जन, सत पंच मान हजार ।। २
'अभा' तणी सुभ नजर अति, रवि छक सुकवि विधान ।
कुरवदान लहियो अधिक, कहियो करणीदान ।। ३

जव यह ग्रथ सम्पूर्ण हो गया तो कवि महोदयने अहमदावादके युद्धका वर्णन करने वाले अन्य दोनो कवि श्री वीरभाण रतनू एव वखता खिडियाके साथ-साथ महाराजा अभयसिहजीको एक दरबार कर अपना ग्रथ सुनानेकी इच्छा प्रकट की । तव महाराजाने ग्रथोका परिमाण पूछा । तीनोने अपने-अपने ग्रथोका परिमाण वतलाया । महाराजा उस समय वडे कार्योमे व्यस्त थे । उन दिनो आये दिन युद्धका झझट लगा ही रहता था और वादशाहकी सेवामे भी महाराजाको वार-वार जाना पडता था, अत इतने वड़े ग्रथोको सुननेका अवसर नही था । अस्तु महाराजाने समयाभावके कारण कवियोको आज्ञा दी कि अपने-अपने ग्रथोको सक्षिप्त कर के लाओ, हम सुनेंगे । इस पर वीरभाण रतनू और वखता खिडिया तो मौन ही रहे । वे अपने-अपने ग्रथोको सक्षिप्त नही कर सके परन्तु कविराजा करणीदानजीने सूरजप्रकाशका साराश लेकर 'विरद-सणगार' नामक छोटा ग्रथ तैयार कर दिया । महाराजाने इस छोटे ग्रथको (विरद-संणगारको) आद्योपान्त सुना और ऐसे प्रभावित हुए कि महाराजा स्वय करणीदानको हाथी पर सवार करा आप घोडे पर चढ कर उनके निवास-स्थान तक पहुचाने पधारे । इसकी साक्षीका निम्नलिखित दोहा प्रसिद्ध है ।

अस चढियौ राजा अभौ, करि चाढे कविराज ।
पौहर हेक जळेव मे, मौहर हले महाराज ।।

सूरजप्रकाश और विरद-सणगारके अतिरिक्त कवि-कृत एक और ग्रथ 'जती-रासा' मैंने महात्मा पनारामजी कवीरपथीके पास देखा था । 'जतीरासा'की कविताका कुछ उदाहरण महात्मा पनारामजीसे मैंने लिया था जो इस प्रकार है ।

दूहा

जत्ती सिंह माकळ जडै, तेडै नाग प्रतच्छ ।
कामण भुज नगरा करै, मगरा चाढै मच्छ ।। १

छप्पय

काम पडै गढ कोट, आग जद हुवै अमरावा ।
काम पडै कायवा, आग जद हुवै कवरावा ।
मिसल काज मत्रिया, आग व्है जाव सवाला ।
अहम काज ऊपजै, करै जद आग कवाला ।

आग व्है ग्यानरै काम ग्रत, महत सता मन भामणा ।
हद आग जदे जतियो हवै, काम पडै जद कामणा ।। १

छद त्रोटक

कम वेम गुलाव भले कळिया ।
इकसी न हुवै कर आगळिया ।
सास्त्रा मभ भेद इसा सुणजे ।
अधमा मधमा उतमा मुणजे ।
जिम वस हुआ खिमसूर विजे ।
सगळी प्रत दिल्लिह सायद जे ।

जतीरासाके अतिरिक्त एक अन्य ग्रथ 'अभयभूपण' भी महात्मा पनारामजीसे सुना था जिसका एक सवैया अपन्हुत्यालकारका बडा सुन्दर उदाहरण है जो नीचे उद्धृत किया जाता है—

सवैया

ऐ न घटा तनत्रान सजे भट, ऐ न छटा चमके छहरारी ।
गाज न बाजत दुदुभि ऐ, बक पत नही गजदत निहारी ।।
ऐ न मयूर जु बोलत है, विरदावत मगनके गन भारी ।
ऐ नहि पावस काल अली, अभमाल अजावतकी असवारी ।।

इस प्रकार 'अभयभूषण' ग्रथके एक सवैयेसे ही ग्रथका काव्यात्मक चमत्कार प्रदर्शित हो जाता है। अस्तु यह बडा सुन्दर ग्रथ था, किन्तु दुर्भाग्यवश अब सपूर्ण कृति उपलब्ध नही होती है।

उपर्युक्त ग्रथोके अतिरिक्त भिन्न-भिन्न विषयो पर कविराजा श्री करणीदानजी रचित बीसियो गीत उपलब्ध होते हैं।

ग्रथ 'सूरजप्रकास' कवि महोदय रचित एक ख्याति प्राप्त महान रचना है। इस ग्रथके पूर्ण अध्ययन करनेसे पता चला है कि कविराजाका राजस्थानी भाषा पर तो विशेप अधिकार था ही परन्तु साथ ही सस्कृत एव अरवी-फारसीका भी वडा ही उत्तम ज्ञान था। सैकडो ही शब्दोका प्रयोग अरवी, फारसी एव सस्कृत भाषाके प्रति उनकी प्रकाण्ड विद्वत्ताका परिचय स्वत ही प्रदान कर देता है। किन्तु फिर भी उनकी काव्य-रचनाका ध्येय सिर्फ राजस्थानीका ही था जो उनकी मातृभूमिकी वाणी अथवा 'स्वर्गादपि गरीयसी' थी।

कवि महोदयने पात्रो के चरित्र-चित्रण और घटना-विधानमे कभी-कभी अपना अनूठा काव्य-कौशल प्रदर्शित किया है। इस ग्रन्थके दूसरे भागमे ग्रथका विशद विवेचन और प्रच्छन्न सौन्दर्यका उद्घाटन करनेका प्रयत्न करूगा। कविका अध्ययन भी विशाल था। भारतकी अनेक प्रान्तीय

भाषाओ पर भी कविकी रचनाएँ मिलती हैं। अलकार, रस, काव्य-शास्त्र, इतिहास, सगीत, वैद्यक एव ज्योतिषका भी कवि महोदयको अच्छा ज्ञान था। इन विषयो पर रचे कोई पृथक ग्रथ तो उपलब्ध नही होते परतु 'सूरजप्रकाश' ही एक ऐसा ग्रथ है जिसमे यथा-स्थान कविने व्यवहारमे आने वाली प्राय सभी विद्याओ व कलाओका सुन्दर चित्रण करते हुए अपनी कुशल प्रतिभा एव विशाल ज्ञाननिधिका सुपरिचय प्रदान किया है।

जैसा कि हम ऊपर लिख चुके हैं कि सूर्यवशके प्रारम्भसे लेकर महाराजा श्री अभयसिहजी तकका दीर्घ वर्णन अनेक प्रकरणोके माध्यमसे कवि महोदयने किया है, जिनकी क्रमानुसार सूची हम उत्तरार्द्धमे सविवेचन देंगे। प्रस्तुत भाग (पूर्वार्द्ध) मे हमने केवल तीन कथा-प्रकरणोको ही लिया है जिनका परिचयात्मक विवेचन निम्नलिखित है—

प्रथम प्रकरण

सर्वप्रथम मगलाचरणके पश्चात् कविने मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्रजीके पूर्वजोकी पीढियोका वर्णन किया। तत्पश्चात् रामचरितका सक्षिप्त वर्णन किया है। उक्त कथन के पश्चात् रामचन्द्रजीके पुत्र कुशसे पुज तककी वशावली है। इसी पुजके १३ पुत्रोसे राठौडोकी १३ शाखाएँ चली हैं, उनका वर्णन इस ग्रन्थमे द्वितीय प्रकरणसे मिलता है।

द्वितीय प्रकरण

१ राजा पुजके प्रथम पुत्रका नाम धर्मविम्व (धर्मधुर) था। वनमे शिकार खेलते समय अङ्गिरा ऋषिसे उनकी भेट हुई। ऋषि प्रसन्न हुए और उन्होने राजाको अखूट दान देनेकी शक्ति प्रदान की। धर्मविम्वने अपने समयमे वहुत दान दिया और उसके वशज दानेश्वर कहलाये।

२ भाणउदीप (भानुदीप) पुजके दूसरे पुत्र थे। भानुदीपने लक्ष्मणजी(तीर्थ ?)की यात्रा करते समय एक दिन स्वप्नमे लक्ष्मणजीको देखा और उनके आशीर्वादके फलस्वरूप कागडेका राज्य पाया। राज्य प्राप्त करनेके तीन वर्ष पश्चात् कागडेमे भयकर दुर्भिक्ष आया। राजाने इसके निवारणके लिए ज्वालामुखी देवीकी आराधना की और देवीने प्रसन्न होकर उसके राज्यमें कभी अकाल नही पडनेका वर देकर इस भयको टाल दिया। इस अभय-दानकी प्राप्तिसे भानुदीपके वशज अभयपुरा कहलाये।

३ पुजके तृतीय पुत्र वीरचन्द्र थे। एक रात्रिको सोते वक्त स्वप्नमे उन्होने एक सुन्दरीको देखा। वे उस पर आसक्त हो गये और उन्हे राज्य-कार्योसे अरुचि हो गई। राज-पुरोहितके ज्ञानोपदेशसे भी राजा पर से

मोहका आवरण दूर नही हुआ तब उस राज-पुरोहितने अपनी आराध्य-देवीकी आराधना की और देवीको प्रसन्न कर के यह ज्ञात किया कि उक्त सुन्दरी जो कि राजाको स्वप्नमें दिखाई दी थी, अणहिल पाटणके चौहान राजा चन्द हमीरकी कन्या है। अनिष्ट नक्षत्रोमे उत्पन्न होनेके कारण राजाने उसे वनमे डलवा दिया था जहा एक ऋषिके द्वारा उसका पालन-पोषण हुआ और वडी होने पर ऋषिने उसको राजाके पास वापिस लौटा दिया। कन्याके विधवा होनेके योगको टालनेका यही उपाय था कि उसके साथ विवाहकी इच्छा रखने वाला राजपुत्र अपना मस्तक काट कर भगवान शकरको अर्पण करदे तो महादेवकी कृपासे वह वापिस जी उठेगा और इस कन्याको पत्नी रूपमे ग्रहण कर सकेगा। इस बातकी सूचना मिलते ही राजाने उस कन्याके साथ अपने विवाहका प्रबन्ध करवा दिया और वरकी आरतीके समय जब राजाको आरतीमे शिवकी मूर्ति दृष्टिगोचर हुई तो उसने अपना मस्तक काट कर शिवजीको अर्पण किया। इस पर भोलेनाथ प्रसन्न हुए और राजाका कपाल (मस्तक) उसके धड पर वापिस रख कर उसे जीवित किया। इस घटनाके कारण उसके वशज कपाळिया नामसे प्रसिद्ध हुए।

४ अमरविजय पुजके चतुर्थ पुत्र थे। शिकारमे जाते वक्त उन्होने कई दिनोसे अपूज पडा हुआ कालीका (देवीका) एक मठ देखा। अमरविजयने विधिवत बलि इत्यादि दे कर देवी की पूजा की। देवी प्रसन्न हुई और कहा कि तेरे ननिहाल वालोने १०० वर्षसे मेरी पूजा नही की है इसलिए उनके कुरहगढका राज्य मैं तुझे देती हूँ। कुरहगढ पर चढाई कर के अमरविजयने परमारोको परास्त किया और गढको अपने अधिकारमे कर लिया। इसी-लिए इसके वशज कुरहा कमधज कहलाये।

५ राजा पुजका पचम पुत्र सजनविनोद था। एक दिन वह विन्ध्याचल पर कुभिलादेवीके दर्शनार्थ गया। वहाँ पर उसे एक पाच-वर्षीय कन्या मिली। उसने राजासे कहा कि तेरा मनोरथ सिद्ध होगा। राजाने समझा कि यह पुजारीकी कन्या है इसलिए उसने उसको ५ मुहरे और नारियल दिया। इस पर कन्या हँसी और अन्तर्धान हो गई। तत्पश्चात् राजा मदिरमे गया और नौ दिन तक बराबर पूजा करने पर भी देवी प्रसन्न नही हुई तो वह निराश होकर वापिस लौट गया। रास्तेमे जलधरनाथ नामक योगीसे राजाकी भेट हुई। उसने राजाको सान्त्वना दी कि तू चिन्तित मत हो, वह ५ वर्षको कन्या ही देवी थी। उसने तुझे

पहले ही वरदान दे दिया था। इस पर राजाकी चिन्ता दूर हुई और उसने जलन्धरसे प्रार्थना की कि आपका जल पर पूरा अधिकार है, कृपा कर के मुझे भी वह मत्र सिखावे। योगीने प्रसन्न हो कर राजाको वह मत्र सिखा दिया। राजाने मत्रकी जाच करनेके लिए मत्र पढा तो वहा पहाड तोड कर जल-प्रवाह निकल पडा। इस प्रकारकी सिद्धिसे राजा वहुत प्रसन्न हुआ। उसने शत्रुओ पर विजय करनेकी ठान ली और कुछ साथियो-सहित चल पडा। थोड़े आदमियोको देख मार्गमे तवरोने इन पर हमला कर दिया। इस पर राजाने मत्र पढा और जल-श्रोत निकाल कर शत्रुओको वहा दिया। विजयी राजाने योगी जलन्धरनाथकी पूजा की। इसके वशज जल-खेडिया कहलाये।

६ पूज के छठे राजकुमारका नाम पद्म था। इन्हीके समकालीन वुगलाणेके राजाने मय जनानेके अपनी वाटिकामे डेरा किया। रात्रिमे एक सिद्ध गुटकेके वल उडता हुआ उधरसे निकला। वहाकी शोभासे मोहित होकर वह वहा उतरा और एक विछी हुई सेज पर लेट कर गाना सुनने लगा। उस समय सव लोग गाना सुननेमे व्यस्त थे। कुछ समय पश्चात् सिद्ध निद्राविवश हो गया और गुटका उसके हाथसे छूट गया। वुगलाणेका राजा उधरसे घूमता हुआ निकला और उसने उस गुटकेको उठा लिया। राजाने सिद्धको जगाया। जव सिद्धने गुटका अपने पास नही देखा तो वह वहुत घवराया किन्तु राजाने गुटका उसे लौटा दिया। इस पर सिद्ध वहुत प्रसन्न हुआ और उसने राजाको वर मागनेको कहा। राजाने पद्मिनी स्त्री प्राप्त करनेकी इच्छा प्रगट की। इस पर सिद्ध गुटकेके वल सिहलद्वीपकी तरफ उडा और आकर्षण मत्रसे वशीभूत कर के पद्मिनीको उठा कर उड चला। पुंजके पुत्र पद्म उडीसेके राजा थे। सिद्ध और पद्मिनी जव उडीसे परसे निकले उस समय राजा जल-विहार कर रहे थे। पद्मिनी राजा पद्मको देख कर मोहित हो गई और उसने अपना कगन निकाल कर राजा पद्मकी ओर फेंक दिया। इस पर पद्म पद्मिनीके लिए चिन्तित हो उठा। सिद्धने पद्मिनीको वुगलाणेके गढमे पहुचा दिया। सारगविजय नामक यतिने पद्मको पद्मिनीसे मिलानेका वचन दिया और उसने भैरवका आह्वान किया। भैरवने प्रसन्न होकर उन्हे वताया कि पद्मिनी वुगलाणेके किलेमे है और वसन्तपचमीके दिन चढाई करनेमे विजय होगी। राजा पद्मने ऐसा ही किया। उधर वुगलाणेके राजाकी वरात पद्मिनीसे विवाह करने हेतु रवाना हुई थी कि पद्मने उन पर हमला कर के उन्हे परास्त किया और पद्मिनीसे विवाह कर

लिया। इस प्रकार बुगलाणे पर विजय पाई और इसके वशज बुगलाण कहलाये।

७ राजा पुजके सप्तम राजकुमार अहर थे। उन्होने बगाल पर विजय प्राप्त की और उनके वशज अहर नामसे ही प्रसिद्ध हुए।

८ वासुदेव पुजके आठवे पुत्र थे। वे अपने वडे भाईके परम भक्त थे। यहा तक कि वे उनके नित्यकर्मके कार्योमे भी सहयोग देते थे, जैसे उन्हे स्नानके पश्चात् कपडे पहनाना, खडाऊ देना, पूजाकी सामग्री तैयार करना आदि। एक दिन वडे भाईने प्रसन्न हो उनसे राज्य मागनेको कहा। वडे भाईके अधिक आग्रह पर वासुदेवने इच्छा नही होने पर भी कन्नौजसे सात कोस दूर एक शिव-मदिरके पास नगर बसानेकी अभिलाषा व्यक्त की। कुछ दिनो पश्चात् दोनो भाइयोने वहा पर पारक नामका नगर वसाया और उसका राजा वासुदेव वना और उसके वंशज पारकेश (पारकरा) कहलाये।

९ राजा पुजके नवें पुत्रका नाम उग्रप्रभ था। यह सोमभारती नामक सिद्धकी सेवा किया करता था। १२ वर्ष तक सेवा करने पर सिद्ध प्रसन्न हुआ और उग्रप्रभको गगाजल हाथमे लेनेको कहा। जब उसने अपने हाथमे जल लिया तो उसको उसमे सर्प नजर आया, इस पर राजाने घवरा कर जल उछाल दिया। तब सिद्ध हसा और राजाको खेद हुआ। सिद्धने राजाकी चिन्ता दूर करते हुए कहा कि अब तुम्हे हिंगलाजकी यात्रा करनी चाहिए। वहा पर कूएमे तुम्हे यह सर्प फिर दृष्टिगोचर होगा किन्तु इस वार तुम उसे जाने मत देना। सिद्धके वचनोके अनुसार वहा पर राजाको वह अग्निशिखा वाला सर्प दिखाई दिया और उसने उसे तुरन्त पकड लिया। पकडते ही वह सर्प खड्ग बन गया और हिंगलाज देवीने आकाशवाणी की कि 'हे राजा तू इससे दक्षिण विजय कर' राजाने ऐसा ही किया और वहाके पवारोको हरा कर समुद्रमे खड्गको धोया। फिर राजाने वहा पर खड्गके नाम पर चदी और चदावर दो नगर बसाये और १३ वर्ष तक वही पर राज्य किया। इसके वशज चदेल कहलाये।

१० राजा पुजके दशवे राजकुमारका नाम सुवुद्धि था। - इसको शिकारका बडा चाव था और प्राय अकेला ही शिकारको जाया करता था। एक दिन अमावश्याकी रात्रिमे इसने जंगलमे भयानक प्रेतमाया देखी। भूत, पिशाच, योगनिया इत्यादि सब एक स्थान पर अग्नि-क्रीडा कर रहे थे।

पासमे रुधिरकी नदी वह रही थी। चारो ओर अग्निकी लपटे उठ रही थी। पासमे ही एक अग्निके सिंहासन पर वीरभद्र बैठे हुए थे जिनके आस-पास भयानक ज्वलित वदन योगिनिया नाच रही थी। आकाशमे इधर-उधर रुण्ड-मुण्ड उड रहे थे। यह सब देख कर भी राजा डरा नही तब वीरभद्रने प्रसन्न होकर उसे अपने पास बुलाया। राजा वेधडक उसके पास गया। वीरभद्र ने उसको वर मागनेको कहा और 'वीरकी' उपाधि दी। राजा अपने महलको लौट आया और कुछ समय पश्चात् तुवरोको युद्धमे परास्त कर के पहाडी देश पर अपना अधिकार जमा लिया। इसके वशज वीर नामसे प्रसिद्ध हुए।

११ भरत राजा पुजका ग्यारहवा राजकुमार था। यह पूर्वमे पाटणका अधिपति था। ६० वर्षकी अवस्थामे राजवैद्यने इसको कहा कि मैं आपको २५ वर्षके युवाके समान बना सकता हूँ। परन्तु इसके लिए आपको एक कल्प करना पड़ेगा और उसमे एक सफेद हाथीकी आवश्यकता होगी। खोज करने पर वरियावरके वडगूजर राजा रुद्रसेनके पास एक ऐसा हाथी होनेकी सूचना मिली। राजाने अपने कार्य की सिद्धिके हेतु रुद्रसेनके पास दूत भेजा। रुद्रसेनने हाथी देनेके लिए मना कर दिया। इस पर राजा भरतने उस पर चढाई कर दी और वरियावरको अपने अधिकारमे करके अपना कल्प किया। इसके वशज वरियावर (वरियावरा) कहलाये।

१२. राजकुमार कृपासिंधु राजा पुजका बारहवा पुत्र था। यह पूर्ण वैष्णव था और नित्यप्रति धर्म-चर्चा करनेके उपरान्त साधु-सन्तोको अपने हाथसे भोजन करवाया करता था। प्रयागके ऋषि मुनियोको अटकके उस पारसे हाथी खरीदनेके हेतु आये हुए कुछ मुसलमान लोग शिकार इत्यादि कर के तग करते थे। ऋषि-मुनियोकी प्रार्थना पर राजाने अपने पुत्रको उनकी रक्षार्थ भेजा। राजकुमारने मुसलमानोको बुरी तरह मारा और गोरखासे लडता हुआ स्वय भी वीरगतिको प्राप्त हुआ। इसकी सूचना जब राजाको मिली तो उस समय वह पूजा कर रहा था। राजा जरा भी विचलित नही हुआ, यद्यपि रणवासमे हाहाकार मच गया था। विधिवत् पूजा समाप्त करनेके पश्चात् राजा युद्धार्थ रवाना हो गया। नगरके बाहर निकलते वक्त उसने एक योगीको वेश्याके मकानके सामने बैठ कर तप करते हुए देखा। इस पर राजा हँसा। प्रत्युत्तरमे योगी भी हँसा। राजाने योगीके हँसनेका कारण पूछा। योगीने कहा, पहले आप हँसे इसलिए आप अपना कारण पहले वतलाये। राजाने कहा कि गणिकाके घरके सामने आपको तप

करते देख कर मुझे हँसी आ गई। योगीने अपने हँसनेका कारण बतलाते हुए कहा कि, राजन्! पूजा करते समय पुत्र-मरणका समाचार सुनने पर भी आप विचलित नहीं हुए। ऐसे ज्ञानी होने पर भी आपने साधुको नहीं पहिचाना। इस पर राजाने तुरन्त सिद्धके चरणोमे गिर कर क्षमा-याचना की। ऋषिने प्रसन्न होकर उसको केलेके पत्ते पर धूनोकी कुछ भस्मि दी और कहा कि पुत्रका सिर धड पर रख कर इस केलेके पत्तेको उस पर लपेट देना। राजाने मुसलमानोको परास्त किया और पुत्रको जिलाया। पुत्रने भी ऐसे योगीके दर्शन करने की इच्छा प्रकट की क्योकि योगीने राजाको एक ऐसी छडी भी दी थी जिससे बिना शस्त्र चलाये ही राजाकी विजय हुई। पिता पुत्र दोनो ही सिद्धके पास पहुँचे। सिद्धने आशीर्वाद दिया कि तुम्हारी १४वी पीढी तक तुम्हारे वशज म्लेच्छोको नष्ट करते रहेगे। राजा और कुमारने ज्योही सिर झुकाया त्योही योगी गोरखनाथ अन्तर्धान हो गये। राजा और कुवरने नगरमे बडा उत्सव मनाया और इनके वशज खैरवदाके नामसे प्रसिद्ध हुए।

१३ राजा पुजके तेरहवे राजकुमारका नाम चद था। यह बड़ा बलवान था, क्योकि नेमनाथ नामक योगीने रसायनसे सिद्ध किया हुआ पारा इन्हे खिला दिया था। उसी समयमे छत्र नामक राजा उत्तरमे तारापुरका राज्य कर रहा था। उसको स्त्री पुत्रीकी प्राप्तिके लिए पार्वतीकी पूजा किया करती थी और इधर राजा पुजकी रानी भी पुत्रकी प्राप्तिके लिए शिवकी पूजा करती थी। इस प्रकार बहुत समय बीत गया तब शिव और पार्वतीने इनकी मनोकामनाओको पूर्ण करनेके लिए इनके घरमे जन्म लिया अर्थात् पार्वती राजा छत्रके यहा और शिव राजकुमार चदके रूपमे राजा पुजके यहा उत्पन्न हुए। राजा छत्रके यहा कन्याने उत्पन्न होते ही कहा कि युद्ध होगा। इस पर राजाने अप्रसन्न हो कर कन्याको जगलमे फेकनेके लिए भिजवा दिया। तब कन्याने कहा कि 'मेरे पतिकी जय और पिताकी पराजय होगी'। इस पर राजाने सम्मानपूर्वक कन्याको वापिस राजमहलमे बुला लिया और उसे कुवारी रखनेका निश्चय कर लिया। कन्याकी अवस्था जब ११ वर्षकी हुई तो राजकुमार चद उससे विवाह करने चल पडे। इस पर राजा छत्रने उनको हरा कर वापिस भगानेके लिए अपनी सेना भेजी किन्तु ऐसा नही हुआ और राजा छत्र हार गया। इस पर राजाने अपनी कन्याका विवाह चदसे कर दिया। वहासे पति-पत्नी आशापुरा देवीके दर्शनार्थ गये और देवीसे वर प्राप्त किया। फिर ये दोनो काशी आ गये।

शिव-पार्वतीने जपसे प्रसन्न हो राजा पुज और छत्रके घर जन्म लिया था अत चदके वशज जयवत नामसे प्रसिद्ध हुए।

तृतीय प्रकरण

राजा पुजके पुत्रोमे धर्मबिंब सबसे बडे थे। उनका पुत्र अजयचद हुआ और उसका अभयचन्द। अभयचन्दका विजयचन्द था और विजयचन्दका पुत्र जयचद बडा ही बलवान था। उसकी सेना बहुत बडी होनेके कारण जब कभी वह किसी पर चढाई करता तो उसकी सेनाका तांता बध जाता था और ऐसा प्रतीत होता था मानो धीरे-धीरे पगुकी तरह चल रहा है। इतनी बडी सेनाके कारण यह दलपुगल कहलाता था। उसकी वीरताका उदाहरण हमे इस प्रकार मिलता है कि इसने अटकके उस पार वाले मुसलमान बादशाहोको युद्धार्थ तैयार होनेके लिए पत्र लिखा। बादशाहोने उसका डट कर मुकाबला किया। घमासान युद्ध हुआ। आखिरमे जयचन्द विजयी हुआ। उसने आठो बादशाहोको बन्दी बना लिया। जब वह उन्हे लेकर कन्नौज लौटा तो उन्हे सिरोपाव दे कर वापिस छोड दिया।

वरदायीसेन इसी राजा जयचन्दका पुत्र था। वरदायीसेनका पुत्र सेन, सेनका सेतराम और उसका सीहा हुआ। सीहा द्वारिकाके रणछोडजीके दर्शनार्थ कन्नौजसे चला और रास्तेमे उसने चावडोकी मदद कर के लाखा फूलाणीको मारा।[1] (शिव और भवानीने भी इस युद्धमे भाग लिया था)। द्वारिकाधामके दर्शन करनेके पश्चात् सीहाजी वापिस कन्नौज लौट आये।

सीहाजीके पुत्र आसथानजी थे। आसथानजीने पूर्वमे ईडर पर कब्जा कर के वहाका राज्य अपने छोटे भाई सोनगको दे दिया। पश्चिममे आसथानजीने गोहिलोसे युद्ध कर के खेड (मारवाड) पर अपना आधिपत्य जमा लिया था। अज आसथानजीका छोटा भाई था। यह द्वारिकाके पास वाले क्षेत्रके चावडा राजा भोजराजके पास चला गया। उसने इसको कटार, सिरोपाव आदि देकर सम्मानित किया और इसे अपने पास रख लिया। इसी अजका पुत्र वीकम था। वीकमको देवीने स्वप्नमे कहा कि यहाका राज्य मै तुझे देती हूँ। तू यहाके चावडा राजाका सिर काट कर मुझे भेट कर दे। प्रात.काल उठते ही वीकमने ऊखा-मण्डलके चावडा राजा भोजराजको मार कर उस राज्य पर अधिकार कर लिया। इसने वहाके राजाका सिर काटा (बाढा) था, अत इसके वशज बाढेल कहलाये।

---

१ सीहा द्वारा लाखा फूलाणीका मारा जाना इतिहासकारोमे विवादास्पद है।

आसयानजीका पुत्र धूहड था। मारवाडसे इन्होने कन्नौज पर चढाई की और विजयी हो कर वहासे चक्रेश्वरी देवीको मारवाडमे ला कर नागाणेमे उसकी स्थापना की। इसीसे उस देवीका नाम नागणेची देवी हो गया। इन्होने मडोरके पडिहारोसे भी युद्ध किया था।

अपने पिताके बैरका वदला लेनेके लिए धूहडजीके पुत्र रायमलजीने मडोरके पडिहारो पर आक्रमण किया और उनको हरा कर मंडोर पर अपना आधिपत्य जमा लिया।

रायपालजीके पुत्रका नाम कानडजी था। कानडजीके पुत्रका नाम जालणजी। जालणजीके पुत्रका नाम छाडाजी और पौत्रका नाम तीडाजी था। तीडाजीने भीनमालके सोनगरोको परास्त करके अपना अधिकार कर लिया था। तीडाजीके प्रतापके आगे वहाके पाँचो राव नतमस्तक हो गये और उन्होंने अपनी कन्याओका विवाह उनसे कर दिया।

तीडाजीके पश्चात् उनके पुत्र सलखाजी हुए और सलखाजीके वीरमदेवजी।[1] वीरमदेवजीने जोइयो पर विजय पाई थी। वीरमदेवजीके पुत्रका नाम चूडाजी था। इनके १४ पुत्र थे जो सभी राव कहलाये। चूडाजीने मडोर पर दुबारा अपना कब्जा कर लिया था।

रिडमलजी इन्ही चूडाजीके पुत्र थे। ये भी वडे पराक्रमी थे। जब मेवाडमे चाचा और मेराने महाराणा मोकलको मारा तव मोकलके पुत्र (बालक) कुम्भाने अपनी सहायतार्थ अपने मामा रिडमलजीको बुलाया। रिडमलजीने चाचा और मेरा दोनोको मार कर उनके खूनसे मोकलजीको अजली दी और अपने भाणजे राणा कुम्भाको गद्दी पर बैठाया। मेवाडमे रिडमलजीके प्रभावकी वृद्धि होते देख उनको मरवानेका जाल रचा गया और रिडमलजीको सोते हुए पलगसे बाध कर मारना चाहा तब वे जग गये और पलग सहित उठ खड़े हुए और १८ पुरुषोको मार कर स्वय भी वीर गतिको प्राप्त हुए।

राव जोधाजी रिडमलजीके पुत्र थे। राणा कुम्भाको अन्तमे जोधाजीसे मेल करना पडा था। इस पर जोधाजी मेवाडमे गये और उस समय पीछोले तालाब पर उनका डेरा हुआ। इसके पश्चात् राव जोधाजीने विक्रम सवत् १५१५की जेठ सुदि एकादशीको चिडियाटूक पहाडी पर जोधपुरके किलेकी नीव दी और नीचे नगर वसाया।

---

१. ग्रन्थकर्त्ताने वीरमजीकी विजयका उल्लेख किया है किन्तु वास्तवमे वीरमजी जोइयोसे युद्ध करते हुए वीरगतिको प्राप्त हुए थे।

ग्रन्थकर्त्ताके अनुसार राव जोधाका उत्तराधिकारी राव सूजा हुआ। उस समय अजमेरके हाकिम मल्लूखा मारवाडके कोसाणा नामक गावसे कन्याओंका अपहरण कर के ले गया। मल्लूखा घडूका या घुडला भी कहलाता था। राव सूजाने उन कन्याओंको छुडा कर अपने-अपने सम्बन्धियोको वापिस सौंपी। यह भी वडा दातार था।

राव सूजाका उत्तराधिकारी उसका वडा पुत्र राव वाघा उसके जीवन-कालमे ही स्वर्गवासी हो गया अत राव सूजाके पश्चात् जोधपुरके सिंहासन पर कुवर वाघाका पुत्र और राव सूजाका पौत्र राव गागा सुशोभित हुआ। गागाके चाचा शेखाको यह वात अप्रिय लगी और उसने नागौरके शासक खाँनजादा दौलतखासे मिल कर जोधपुर पर चढाई कर दी। किन्तु इस युद्धमे शेखा मारा गया और खानजादा दौलतखा पराजित होकर नागौर भाग गया।

उपरोक्त घटनाओंके पश्चात् ग्रन्थकर्त्ताने जोधपुरके राजसिंहासन पर राव गागाके पुत्र राव मालदेवका सिंहासनारूढ होना लिखा है। मालदेव वडा महत्वाकाक्षी था। उसने एक-एक कर के कई स्थानो पर विजय प्राप्त की। मालदेवके वर्णनके साथ ही साथ उसके पुत्र उदयसिंहका भी सक्षिप्त वर्णन मिलता है।

उदयसिंहके पश्चात् उसके पुत्र राजा सूरसिंहका वर्णन ग्रन्थकर्त्ताने विस्तार-पूर्वक लिखा है। इसमे सर्व-प्रथम गुजरातके शासक मुजफ्फर और उसके ज्येष्ठ पुत्र वहादुरका वर्णन है। वहादुरने गुजरातमे लूटमार शुरू कर दी थी। इस पर वादशाह अकवरने राजा सूरसिंहको वुलाया। एक वडा दरवार किया और गुजरातके उपद्रवको मिटानेके लिए पानका वीडा फेरा। इस वीडेको उठानेका वादशाहके दरवारमे किसी ने भी साहस नही किया। इस पर राजा सूरसिंहने वीडा उठाया और वडे जोशपूर्ण शब्दोमे वादशाहको धैर्य वधाया। तत्पश्चात् सुसज्जित हो कर गुजरातकी ओर प्रस्थान किया। गुजरातकी ओर जाते समय राजा सूरसिंह जव सिरोहीके पास पहुचे तो धोखेसे सिरोहीके राव सुरतान द्वारा राव चन्द्रसेनके पुत्र राव रायसिंहके मारे जानेकी घटना उनके मस्तिष्कमे आई और उन्होने प्रतिशोध लेने हेतु अपने सिपाहियोको सिरोहीके ग्रामको लूटनेकी आज्ञा दे दी। इस पर सिरोहीके रावने घवरा कर राजा सूरसिंहसे सधि कर ली। इस विजयके पश्चात् राजा सूरसिंह गुजरात पहुँचे और मुजफ्फरके उपद्रवोको दवानेमे पूर्ण सफल हुए। मुजफ्फरका पुत्र वहादुर, जो गुजरातमे लूटखसोट करता था, भयभीत हो कर भाग गया और गुजरात पर

राजा सूरसिंहका पूर्ण अधिकार हो गया। बादशाह अकबर इस विजयसे बहुत ही प्रसन्न हुआ। राजा सूरसिंह गुजरातसे बहुत सा धन-माल लेकर मारवाड लौटे। ग्रन्थके अनुसार उस समय राजा सूरसिंहने अपने आश्रित कवियोंको बहुत सा धन-माल और जागीरें दी।

इसके पश्चात् राजा सूरसिंहको यह सदेश मिला कि दणिखमे अमर चपूने उपद्रव खडा कर दिया है तो राजा सूरसिंह बादशाहकी आज्ञासे दक्षिणमे निजामुउल्मुल्कके सेनापति अमरचपूको दण्ड देनेके लिए गये और अमरचपूको परास्त कर विजयदुदुभि बजाते हुए वापिस लौटे।

गुजरात और दक्षिणकी विजयके कुछ समय पश्चात् बादशाह अकबरका देहावसान हो गया और दिल्लीके राजसिंहासन पर शाहजादा सलीम बादशाह जहागीरके नामसे आसीन हुआ।

सिंहासनारूढ होते ही बादशाह जहागीरने पुन सूरसिंहजीको अपने पास बुलाया। राजा सूरसिंहजी महाराजकुमार गजसिंहजीके साथ दिल्ली पहुँचे। बादशाह इन पर बहुत प्रसन्न हुआ और जालोरका परगना गजसिंहजीको इनायत कर दिया। साथमे यह भी आज्ञा मिली कि सिरोहीके रावको भी अपने अधीन कर लेना और मेवाडके राणा पर भी अपना आधिपत्य जमाना। प्रत्युत्तरमे महाराजकुमार गजसिंहने बादशाहको विश्वास दिलाया कि मैं आपकी आज्ञानुसार सब स्थानो पर बादशाही अमल जमा दूगा।

ग्रन्थके अनुसार इन दिनोमे जालोर पर बिहारी पठानोका शासन था। गजसिंहने बडा दल सजा कर जालोर पर आक्रमण किया और घमासान युद्ध कर के वहाके शासकको पराजित कर जालोर पर अपना अधिकार जमा लिया। तत्पश्चात् गजसिंहजो सिरोहीकी ओर अग्रसर हुए और वहाके रावने अपनी हार मान ली। यही हाल उस समय मेवाडके राणाका हुआ।

यही पर ग्रथकर्त्ताने राजा सूरसिंहके प्रमुख अमात्य गोविन्ददास भाटीको मारनेकी घटना बडे विस्तारसे लिखी है। राजा सूरसिंहके छोटे भाई किशनसिंह थे। इनके भतीजे गोपालदासको सूरसिंहके प्रमुख अमात्य गोविंददासने मार डाला था। अत. किशनसिंह अपने भतीजेका प्रतिशोध लेनेके लिए गोविन्ददास भाटीसे वैमनस्य रखता था। उधर शाहजादा खुर्रमने भी किसी कारणवश गोविन्ददासको मारनेके लिए किशनसिंहको भडकाया। एक समय सब सरदार अजमेरमे पडाव लिए हुए थे। उस समय राजा किशनसिंहने गोविन्ददास भाटीके मकान पर अचानक हमला बोल दिया। महाराजा सूरसिंह व महाराजकुमार

गजसिहका भी निवास-स्थान पासमे ही था। अत वे भी जाग गये किन्तु उस समय तक किशनसिहके योद्धाओने गोविन्ददासको मार डाला था। महाराज-कुमार गजसिहने उस समय विशेष कार्य किया। उन्होने गोविन्ददासकी हत्याके अपराधमे राजा किशनसिह पर और उसके योद्धाओ पर उसी समय आक्रमण कर दिया। भयकर युद्ध हुआ और राजा किशनसिह अपने एक भतीजे कर्णके साथ मारे गये। जब महाराजा सूरसिहजीने अपने भाई, भतीजे और प्रमुख अमात्यके मारे जानेका हाल सुना तो उन्हे वडा दुख हुआ। इस प्रकार प्रस्तुत प्रथम भागमे प्रकाशित पाठका साराश पूर्ण होता है।

मैने 'टॉड राजस्थान'का ऐतिहासिक वर्णन पढनेके अतर्गत जब कविराजा करणीदानजीकी टॉड साहव द्वारा लिखी विलक्षण एवं कीर्तिमयी जीवनीका अवलोकन किया तो मेरे हृदयमे एक प्रबल आकाक्षा जागृत हो गई कि मैं कविराजा कृत ग्रथ 'सूरजप्रकास'का पूर्ण अध्ययन करू। उस समय मेरे पास 'सूरजप्रकास'की एक ही खडित प्रति थी, अत मै इस अनूठे ग्रथकी पूर्ण प्रतिकी तलाशमे रहा। आखिरमे ग्राम विराईके ठाकुर श्री गोविन्ददानजीके सुपुत्र श्री शक्तिदानजी कविया द्वारा एक प्रति मुझे वि० सवत् १८०८की लिखित प्राप्त हुई। इस प्रतिका मैंने पूर्ण अध्ययन किया एव इस ग्रन्थका सम्पादन प्रारम्भ किया।

'सूरजप्रकास'का सपादित भाग मैने प्राच्यविद्या प्रतिष्ठानके उप-सचालक श्रीमान् गोपालनारायणजी वहुराके समक्ष प्रस्तुत किया तो उन्हे वडा पसन्द आया। उन्होने मेरा उत्साह बढाने तथा इस सुन्दर ग्रन्थका सुस्टु सपादन करानेके हेतु प्राच्यविद्या प्रतिष्ठानके सग्रहसे दो हस्तलिखित सूरजप्रकाशकी अन्य प्रतियाँ मुझे दी, जिनमेसे एक प्रति सवत् १८४१की लिखी हुई है तथा दूसरी प्रति विक्रमी सवत् १८८४ को लिखी हुई है। इन दो प्रतियो और श्री शक्तिदान कविया द्वारा दी गई प्रतिके अतिरिक्त जो मेरे पास एक खडित प्रति थी, इन ४ प्रतियोकी सहायतासे मैने इस ग्रन्थका सपादन पूर्ण किया। मेरे पास वाली प्रतिका लिपिकाल कुछ निश्चित नही कर सका, कारण कि उसकी दशा जीर्णशीर्ण हो चुकी है।

पाचवी प्रति जोधपुर महाराजाके 'पुस्तक प्रकाश' से राजस्थानी कोशमे शब्द लेनेके लिए हमने नकल करवाई थी, परतु उसकी नकल सम्पूर्ण नही हो सकी। उपरोक्त प्रतियोके साथ पाठान्तरमे इस प्रतिकी भी सहायता ली गई है।

इस प्रकार पाच प्रतियोंके ग्राधार पर हमने यह सपादन प्रस्तुत किया है। पाठ-निर्धारणमे हमारा ध्येय श्री शक्तिदान कविया द्वारा प्राप्त प्रति जो सबसे प्राचीन है, उसीका रहा है। परतु कही-कही पर अन्य प्रतियोका पाठ हमे शुद्ध प्रतीत हुआ तो उसको भी स्थान दिया गया है।

छदोके सख्याकनमे हमारा ध्येय चार पक्तिके समूहको ही छद माननेका रहा है, हाला कि चारणो द्वारा लिखित साहित्यमे छद-विशेषमे एक साथ लिखित चरण समूहको एक छदके अतर्गत ही माना जाता है। परतु स्थान-स्थान पर पाठातर व शब्दार्थ देनेमे जो पद्धति हमने अपनाई है, उसमे चारण कवियो द्वारा स्वीकृत पद्धति हमारे इस सपादन-कार्यमे असुविधाजनक प्रतीत होती थी, अत. हमने चार चरणोके समूहको ही छद माना है।

जहाँ पर डिंगलके गीतोको कविने अपने ग्रथमे स्थान दिया है, पूर्ण गीतकी हमने एक सख्या मानी है, चाहे वह कितने ही द्वालोमे क्यो न हो, परतु पाद-टिप्पणीके लिए छदोकी चालू सख्याके साथ द्वालोकी सख्याका भी निर्देश किया गया है। इसमे हमे पादटिप्पणीमे शब्दार्थ देनेमे सुविधा रही है।

राजस्थानीके ग्रथोके सपादनमे सबसे बडी कठिनाई वर्णविन्यास या अक्षरीकी रहती है। शुद्धिका निर्णय केवल छदकी जातिके आधार पर ही किया गया है। मूल प्रतियोकी लिपिमे द्वित्तका ध्यान नही रहा है। उदाहरणार्थ 'चड गडगग्गड रत चडै'का सिर्फ 'चड गडगड रत चडै' ही लिखा मिलेगा, किन्तु यह खास बात है कि राजस्थानके कविगण उस उच्चारणको बोलनेमे तो बिल्कुल शुद्ध बोलते थे परतु लिखनेमे ही यह स्वच्छदता थी। किस छदमे कौनसा गण होता है, उसका ठीक ध्यान रखते हुए हमने बडी सतर्कतासे मात्राएँ, गण, अनुस्वार आदिके साथ छदोका शुद्धतम पाठ प्रस्तुत करनेका प्रयास किया है। चद्रबिन्दुका मूल पाठोमे तो नाम मात्र भी ध्यान नही रखा किन्तु प्रस्तुत सस्करण मे छदोभग होनेकी त्रुटिका निराकरण करते हुए शुद्ध रूप लिखा है जिससे पाठक-वृन्द वास्तविक उच्चारणके साथ छदोकी प्रपाठ विधिको सही रूपसे सीख सके।

'सूरज-प्रकास'के सपादनमे जिन प्रतियोकी सहायता ली गई है उनका सक्षिप्त विवरण इस प्रकार है।—

(क) यह प्रति बिराई ग्रामके निवासी श्री गोविददानजी कवियाके सुपुत्र श्री शक्तिदान कवियासे मुझे प्राप्त हुई है जो वि० स० १८०८मे तलवाडा ग्राम मध्ये लिखी गई थी। प्रतिकी पुष्पिकामे सिर्फ सवत् ही पढा जा सका है, तिथि एव वार पढा नही जाता तथा लेखक एक जैन यति हैं जिनका नाम उदयचद है।

(ख) यह प्रति मुझे राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुरसे प्राप्त हुई जो सवत् १८८४मे फाल्गुन शुक्ला पूर्णिमा, शनिवारको जोधपुरमे महाराजा मानसिंहजीके राज्यकालमे लिखी गई थी। लेखक व्रोडा मगदत्त है।

(ग) यह प्रति भी मुझे प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुरसे इस ग्रथमे पाठान्तर लिखने निमित्त मिली है जो सवत् १८४१मे असाढ शुक्ला षष्ठमी गुरुवारको वधनोरमे लिखी गई थी। लेखक रामचद्र सेवक है तथा शुद्ध-कर्ता सेवक चौथराम है।

(घ) यह प्रति जोधपुरके 'पुस्तकप्रकाश'की प्रतिकी प्रतिलिपि है जिसकी मैंने डिंगल कोशके लिए नकल करवाना शुरु की थी परतु पूर्ण प्रतिकी नकल नही करवा सका, अत. इसके भी पाठान्तर कही-कही लिखे गये हैं। परतु यह प्रति (क) प्रतिसे समानता अधिक रखती है और प्रतिका पाठ करनेसे ऐसा प्रतीत होता है मानो ये दोनो प्रतियाँ एक ही की प्रतिलिपिया हो। आगे (घ) प्रतिका पाठान्तर नही मिलता है।

इनके अतिरिक्त जो प्रति खडित रूपमे मेरे पास है उसको भी ध्यानमे रख कर पाठकी शुद्धि पर विचार किया गया है। आशा है उक्त आधार पर किया गया यह सपादन-प्रयास पाठकवृन्दके लिए लाभप्रद होगा। सपादन-कार्यमे सहायक रूपमे मेरे विद्यार्थी एव तरुण कवि श्री शक्तिदान कविया धन्यवादके पात्र हैं जिनकी दी हुई प्राचीन प्रति इस सपादनमे महत्त्वपूर्ण रही है। श्री शक्तिदान कविया डिंगलके गीतो व छदशास्त्रके अच्छे ज्ञाता हैं और प्राचीन लिपिके छदोभगके सुधारमे भी मुझे बहुत सहायक हुए हैं। श्री दुर्गालालजी माथुर, क्यूरेटर, जोधपुर म्यूजियमने समय-समय पर इतिहास सबधी पुस्तकें देकर मेरी पूर्ण सहायता की। जोधपुर महाराजा के वर्तमान गृहस्थ-प्रबधक धामली ठाकुर साहब श्री मनोहर-सिंहजीको भी मैं धन्यवाद देता हूँ, जिन्होने मुझे डिंगल कोशमे शब्दोके लिए सूरजप्रकासकी नकल करवानेकी अनुमति दी।

अतमे हम राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठानके प्रति आभार प्रदर्शित किये बिना नही रह सकते। प्रतिष्ठान इस प्रकारकी साहित्यिक अमूल्य व अप्राप्य निधिको राजस्थान पुरातन ग्रथमालाके अतर्गत प्रकाशित कर सतत क्रियाशील है। प्रस्तुत ग्रथको इस रूपमे प्रस्तुत करानेका सर्वतोभावेन श्रेय मुनि श्रीजिनविजयजी महाराजको है, जिन्होने राजस्थानी साहित्यके इस अमूल्य ग्रथका प्रकाशन राजस्थान पुरातन ग्रथमाला द्वारा करना स्वीकार किया।

जोधपुर, शिवरात्रि
स० २०१७

—सीताराम लाळस

कविया करणीदान विजैरांमोतरौ कह्यौ

सूरजप्रकास

अथ[1] ओ३म नमः ॥ श्री गणेसाय नमः ॥

अथ राज राजेस्वर महाराजाधिराज स्रीछत्रपति प्रिथिपति रघुवससिरताज महाराज स्री स्री स्री स्री स्री अभैसिघजीरौ रूपक सूरजप्रकास कविया करणीदान विजैरामोतरौ कहियौ लिखते।

अथ प्रथम गाथा

स्रीपति[2] भगति[3] सकाज, सिध[4] रिध सुवर[5] नमौ[6] सकर[7] सुत ।
सुर अगिवांण[8] समाजं, स्रेस्ठ[9] बुधि दीजियै[10] गणेस्वर ॥ १

१ ख. ॥ स्री गणेशाय नमः ॥ स्री सरस्वत्यै नमः ॥ स्री गुरुभ्योय नम ॥ अथ राज राजेस्वर माहाराजाधिराज स्रीछत्रपति हिंदूपति प्रथ्वीपति रघुवस सिरताज माहाराज स्री स्री स्री स्री स्री अभैसिघरौ रूपक सूरजप्रकास कविया करणीदान विराजैरांमोतरौ कहियौ लिख्यते ॥

ग ॥ ह्रं उं ॥ श्री गणपति सरस्वत्यै नम ॥ श्री गुरभ्यो नम ॥ अथ राज राजेस्वर महाधिराज महाराज श्रीछत्रपत्ति हींदूपत्ति प्रिथिपत्ति रघुव्रससिरताज महाराज श्री श्री श्री श्री श्री अभैसिघजीरो रूपक सूरजप्रकास कविया करणीदान विजैरामोतरौ कहियौ लिखते. ॥

घ ॥ श्री गणेशाय नम. ॥ श्री सरस्वत्यै नमः ॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥ अथ राज राजेस्वर महाराजाधिराज महाराज श्री छत्रपति हिंदुपति पृथ्वीपति रघुवशसिरताज महाराज श्री श्री श्री श्री श्री अभैसिघजीरौ रूपक सूरजप्रकास कविया करणीदान विजैरामोतरौ कहियौ लिखते ॥

२ ख घ. श्रीपति, ग. श्रीपत्ति। ३ ग. भगत्ति। ४ ग. सिधरिधि। ५ ग सुबर। ६ ख ग. नमो। ७ ग संकरसुत्त। ८ ख. अगिवाण। ग. अगिबाण। ९ ख. ग श्रेष्ट। १० ग. दीजयै। ११ ख गणेश्वर।

---

१ रघुवससिरताज – रघुवशियोमे श्रेष्ठ। रूपक – वह काव्यग्रन्थ जिसमे किसी महान वीरके यशमय चरित्रका वणन हो। सूरजप्रकास – ग्रन्थका नाम। कविया – चारण वशका एक गोत्र विशेष। विजैरामोतरौ – विजयरामके पुत्रका। स्रीपति भगति सकाज – श्रीविष्णुकी (लक्ष्मी-पति) भक्तिके लिए। सिध – सिद्धि। रिध – ऋद्धि। सुवर – श्रेष्ठ वरदान देने वाला। सकर-सुत – श्री शिवका पुत्र, श्रीगणेश। सुर-अगिवाण समाज – देवसमाजमे जो सदैव अग्रगण्य व अग्रगामी है।

छप्पय– सूडादंड[1] अहेस रागरीझेस समोसर ।
वणि[2] सिंदूर चित्रवेस[3] धार मद वेस पडैंगर ॥
फरस पाणि[4] फावेस[5] उभैं डसणेस अथवकर ।
निलैं अरध नखतेस[6] मसत[7] भणणेस मधुक्कर ॥

समरेस होम जोगेस[8] सुत[9] सेव पेस कवि साधिये[10] ।
गावण नरेस 'अभमाल' गुण ओं[11] गणेस[12] आराधिये[13] ॥ २

अथ गाथा सरस्वतीरी[14] स्तुति[15]

सोळ वरस[16] वय[17] सार, सोळ सिंगार रूप अति सोभा ।
विधि विधि[18] जस विसतार[19] सुभ वरदान[20] समप्प[21] सरस्वति[22] ॥ ३

छप्पय– सोभवँती[23] सजती[24], सोळ स्रगार[25] सक्कती[26] ।
हसगती[27] हालतो[28], हस आरोह हक्कती[29] ॥

---

१ ग सुडादड । २ ग वणि । ३ ग चित्रवेस । ४ ख ग घ पाणि । ५ ख. फावेस ।
६ ग. नखत्तेस । ७ ग मसत्त । ८ ग. जोगेसु । ९ ग सुत्त । १० ख. ग घ, साधियै ।
११ ख ग ऊ । घ ओं । १२ ख गणेश । १३ ख आरधीयै । ग घ आराधियै ।
१४ ग स्वरसुत्तीरी । घ सरसुतीरी । १५ ग स्तुत्ति । १६ ग. वरस । १७ ग वय ।
१८ ग. विधि बिधि । १९ ग बिसत्तार । २० ग वरदानं । घ वरदान ।
२१ घ. समप्पि । २२ ग सरस्वत्ति । २३ ग सोभवत्ती । २४ ग संजत्ती ।
२५ ख शृगार । ग श्रंगर । घ सिंगार । २६ ग सक्कत्ती । घ सकत्ती ।
२७ ग हसगत्ती । २८ ग हल्लत्ती । घ हल्लती । २९ ग हक्कत्ती । घ हकत्ती ।

---

२ अहेस – (अथ+ईश) श्री गणेश । समोसर – श्रेष्ठ अवसर, मागलिक अवसर । पांणि – (पाणि) हाथ । डसणेस – दात । निलै – (निलिट) ललाट, भाल । नखतेस– (नक्षत्र+ईश) चन्द्रमा । मधुक्कर – भौरा । अभमाल – महाराजा अभयसिंह । गुण– कीर्ति, यश ।

३ सोळ – सोलह । वय – आयु । समप्प – दीजिये ।

४ आरोह – सवारी, वाहन ।

अधर दुती[1] आकृती[2] जत्र वजवती[3] जुगत्ती[4] ।
रूपवती[5] रजती[6] माळ भूलती[7] मुकत्ती[8] ।
विमळती[9] वेद[10] रघु[11] वचती[12] आणदति[13] हरत्ती[14] कुमति[15] ।
'अभपती[16]' गुणां गावण[17] उकति[18] सरस्वत्ती[19] दीजे[20] सुमति[21] ॥ ४

गाथा सदासिवरी[22] स्तुति[23]

अस्टाग[24] जोग अभ्यासी[25] कासी वसण[26] नमौ[27] कयळासी[28] ।
समपि ग्यान अविणासी[29] सिध भोळी चक्कवै महेस्वर ॥ ५

छप्पय— जहर विखम[30] जारग भुजा[31] धारग भुजगम ।
भाल[32] तेज[33] भारग जरा हारंग लसे[34] जम ।

---

१ ग. दुत्ती । २ ग. आकत्ती । घ आक्रिती । ३ ग बजवत्ती । घ. बजवती । ४ ग जूगत्ती । ५ ग रूपवत्ती । ६ ग रजत्ती । ७ ग भूलत्ती । ८ ग मुक्कत्ती । ९ ग विमळत्ती । १० ग वेद । ११ घ रिग । १२ ग बचत्ती १३ ग आणदत्ति । १४ ख हरति । ग हरत्ति । घ. हरती । १५ ख उमति । ग उमत्ति । १६ ग अभपत्ती । १७ ख ग गावण । १८ ग उकत्ति । १९ ख घ. सरस्वती । २० ख. ग घ दीजें । २१ ग सुमत्ति । २२ ख. शिवरी । २३ ग स्तुत्ति । २४ ख ग अष्टाग । घ अष्टग । २५ ख अभासी । २६ ग बसण । २७ ख ग घ नमो । २८ ख कैलासी । २९ ग अबिणासी । ३० ख. घ विषम । घ. बिषम । ३१ घ भुजा । ३२ ख ग घ भालि । ३३ ग. त्तेज । ३४ ख घ लसैं । ग लसै ।

---

४ दुती – द्युति, काति । जत्र – वीणा । वजवती – वजाती हुई । जुगत्ती – युक्ति । माळ – माला । मुकत्ती – मौत्तिक, मोती । रंजती – प्रसन्न करती हुई । विमळती– पवित्र करती हुई । रघु – ऋग्वेद ।

५ सिध-भोळी चक्कवे – सिद्धोमे और भोलोमे चक्रवर्ती ।

६ विखम – विषम, भयप्रद, भयकर । जारग – हजम करने वाला । धारग – धारण करने वाला । भुजगम – सर्प । भाल – ललाट । भारग – चद्रमा । जरा – वृद्धावस्था । हारग – हरण करने वाला ।

वर[1] अनेक वारग[2] पाव वदै[3] सुरपत्ती[4] ।
पावण करि पारग त्रिपुर[5] नारग सकत्ती[6] ।
तारग[7] मत्र आदेस तो[8], दिढचा रंग निस मधि दिव ।
सारंग नयण उमया सुवर[9], सीस गंग धारग सिव[10] ।। ६

गाथा स्री[11] सूरजजोरी[12] स्तुति[13]

सहस किरण[14] परकास, पंकज चक्रवाक[15] अति[16] प्रीतम[17] ।
इळ[18] नवखड[19] उजास, सूरज[20] देव[21] नमौ[22] कासिवसुत[23] ।। ७

छप्पय— उदित ब्रहम[24] मधि ईस पछी[25] वप विसन[26] प्रकासैं ।
तम[27] नासै[28] जोवता[29] नाम[30] कहता[31] अघ नासैं ।
अतरीख[32] मग उरस चचळ सातहमुख[33] चालैं[34] ।
सुरग पग सारथी[35], हेक चक्रह रथ हालैं ।

---

१ ख वर । २ ग. वारग । ३ ग वदै । ४ ख सुरपती । ५ ख ग तृपुर । ६ ख सक्कती । ग सक्कत्ती । ७ ग त्तारग । ८ ग त्तो । ९ ग सुव्वर । १० ग शिव । ११ ख ग घ श्री । १२ ग सूरिजजोरी । १३ ग स्तुत्ति । १४ ग. किरिण । १५ ग चक्रवाक । १६ ग. अत्ति । १७ ग प्रीत्तम । १८ ख ग. यल । १९ ख ग नवषड । २० ग घ सूरिज । २१ ख. वस । २२ ख. ग घ नमो । २३ ख कासिवसुत । ग कासिवसुत्त । २४ ग ब्रहम । घ ब्रह्म । २५ ख पछौं । घ पछै । २६ ग विसन । २७ ग त्तम । २८ ग नाहसै । घ. न्हासै । २९ ग जोवत्तां । ३० ख. घ नाम । ३१ ग कहत्ता । ३२ ख. ग अतरीप । ३३ ख सातहमुष । ग सात्तहमुख । ३४ ख चलै । ३५ ख. ग घ स्वारथी ।

---

६ वारग — देने वाला । सुर-पत्ती — इन्द्र । त्रिपुर — त्रिपुरासुर । नारग — राक्षस, दैत्य । तारग — उद्धार करने वाला ।

८. ब्रहम — ब्रह्म । पछी — पश्चात । वप — शरीर । विसन — विष्णु । नासै — मिटते है, नाश होते है । अघ — पाप । अतरीख — आकास, आसमान । उरस — ऊपर । चचळ — घोडा, अश्व । सुरंग — सूर्यके रथका सारथि, अरुण । पग — पगु ।

अदभूत[1] चरित्र किरणां अगमि[2], सीतळ[3] जळ[4] वरसै[5] सयण ।
कर जोड़[6] वयण दाखै[7] सुकवि, नमौ नमौ[8] रवि जगनयण ।। ८

गाथा स्री[9] नारायणजीरी स्तुति[10]

आदि एक[11] अविणासी[12], तत[13] निरकार[14] दुतिय[15] तेजोमय[16] ।
प्रभु आकार प्रकासी, त्रितीय[17] स्वरूप[18] नमौ[19] कमळापति[20] ।। ९

छप्पय– पगा[21] गंगजळ प्रघळ बिंब[22] कछनी पीतांबर[23] ।
कवसति[24] मणि वयजंती[25] संख[26] चक्र गदा पदमधर ।
सुंदर तन घनस्याम[27] भुजा आजान[28] चतुरभुज[29] ।
कुंडळ तिलक मणिमुकुट[30] धरण भ्रिगुलता[31] गरुडध्वज[32] ।
मुख मंद हास आणंदमय[33], आराधित अहि नर अमर ।
दंडव्रत्त[34] तूझ मारण दयत[35], वारण तारण लच्छिवर[36] ।। १०

---

१ ग अदभूत्त । घ अदभुत । २ ख ग. घ अगनि । ३ ग सीत्तल । ४ ग जलै । ५ ग वरसै । ६ ख ग घ जोडि । ७ ग दाषै । ८ ख ग घ. नमो नमो । ९ ख ग. घ श्री । १० ग. स्तुत्ति । ११ ग ऐक । १२ ग अबिणासी । १३ ग. त्तत्त । १४ ख निकार । १५ ख दुतीय । ग. दुत्तीय । १६ ग त्तेजोमय । १७ ग. तृत्तीय । घ. तृतीय । १८ ग घ. सरूप । १९ ख ग. घ नमो । २० ग. कमलापत्ति । २१ ख पागा । २२ ख. विंच । २३ ग पीत्तांबर । घ पीतंबर । २४ ग. कवसत्ति । घ कौस्तुभ । २५ ग बैजयत्त । घ बयजंति । २६ ख ग. सष । २७ घ घनस्याम । २८ ग. आजान । २९ ग चत्तुरभुज । ३० ख ग. घ मणिमुकट । ३१ ख. ग. घ भृगुलता । ३२ ग घ गरुड़धुज । ३३ ख ग घ आनंदमय । ३४ ग दंडब्रत्त । ३५ ग दयँत्त । घ दयँत । ३६ ग. लछिवर ।

---

८. सयण – मित्र, हितैषी ।

१०. प्रघळ – अपार, असीम, बहुत । बिंब – लाल । कछनी – धोतीके स्थान पर पुरुषोका पहनावा-विशेष जो घुटनो तक ही होती है, कछा । कवसतिमणि – कौस्तुभमणि । वयजंती – वैजयन्ती नामक माला विशेष जिसे भगवान विष्णु कंठमें धारण करते हैं । वारण – गज । तारण – उद्धार करने वाला । लच्छिवर – विष्णु ।

॥ अथ दोहा पच देव एकत्र[1] स्तुति ॥

स्री गणपति स्री सारदा, स्री सिव[2] स्री ग्रहराज ।
सुप्रसन हो[3] स्रीपति सहित, स्री सुर पच्च समाज ॥ ११

अथ नि्रदोस प्रबध वरणण[4]

दूहा– आदि[5] ग्रथरै स्री* अक्षर, सुकवि कहै वुधिसार[6] ।
तठै अगरा दूखरा तिता, लगै न हेक लगार ॥ १२

स्री अक्षर पूर पिद्धम[7] वरणण[8] अनि[9] कवि प्रम्न

कठै साख[10] इरा विध[11] कही, सुणि इम कहै सुजाण ।
उत्तर– माडै[12] कायव[13] माघ मधि, पडित माघ प्रमांग[14] ॥ १३

---

१ ग. ऐक्कत्र । २ ख. श्रीशिव । ३ ख ग घ हो । ४ ख वर्नन । ग वर्नन । घ वर्णन । ५ घ आद । ६ ख बुधिसार । ७ ख ग घ पछि । ८ ख वर्नन । ग वर्नन । घ वरणन । ९ घ पुन । १० ख. ग साषि । घ नाखि । ११ ख. घ विधि । ग विधि । १२ ख ग घ माडे । १३ ख काइव । १४ ख ग प्रमाण ।

---

* ग्रथारभमे श्री अक्षर आचार्योने शुभ माना है यथा—

श्रीर्वेशरचनाशोभाभारतीसरलद्रुमे
लक्ष्म्याम् त्रिवर्गसम्पत्तिविधोपकरणेपु च ।

विशेष विवरण – ग्रथकर्ताने मेदिनी कोशके उपर्युक्त श्लोकके अर्थोके अनुसार और माघ तथा भारविके प्रयोगोके अनुसार मागलिक मान कर अपने ग्रन्थमे मंगलाचरणमे ही श्री अक्षरका प्रयोग किया है । उसकी साक्षीमे माघ व भारविके प्रयोगोका उल्लेख किया है । माघकविने अपने शिशुपालवध महाकाव्यके आरभमे ' श्रिय पति. श्रीमति शासितु जगत्'' इत्यादि प्रयोग किया है । यहा 'श्रिय प' ।ऽ। यह जगरा है । "ज सूर्यो कुरुते रुज" इस वचनके अनुसार जगराका देवता सूर्य ताप करता है । एव "जतौ तु वशस्थमुदीरित जरौ" इस छ्द शास्त्रके वचनसे जगरा लाना अनिवार्य होता है परन्तु यह दोप श्रीके प्रयोगमे नही रहता । जैसा ऊपर माघ कविका उदाहरण दिया गया है उसी प्रकार भारविके किरतार्जुनीय काव्यमे भी उसी छ्दमे ' श्रिय कुरूणामधिपस्य पालिनीम्" इत्यादि प्रथम श्लोकारभमे श्रीका प्रयोग मिलता है ।

११ ग्रहराज – सूर्य ।

१२ नि् – नर, मनुष्य । तठै – वहा । अगण – छदशास्त्रमे चार बुरे गरा—जगरा, रगरा, सगरा और तगरा, छदके आदिमे इनका रखना बुरा माना गया है ।

१३ कठै – कहा । साख – साक्षी । सुणि – सुनकर । इम – इस प्रकार ।
सुजाण – पडित, विद्वान । कायब – काव्य । माघ – शिशुपाल-वघ नामक महाकाव्य । मधि – मध्य, मे ।

दुतीय[1] साखी[2]

भार अरथ कवि भारवी[3], कायब[4] कियौ[5] किरात ।
मल्यनाथ टीका मही, वळै[6] लिखी[7] आ[8] वात[9] ।। १४

छप्पय– वळै[10] लिखी आ[11] वात[12] विमळ मलिनाथ ब्राहमण[13] ।
स्री सुर मगळ सबद[14] आदि कहिया नह अवगुण ।
ऐ[15] त्रिहु सबद[16] उदार आदि गुणरै मै[17] आंणै[18] ।
स्रीपति मगळ सरूप ब्रह्म[19] चत्रुवेद[20] वखाणै[21] ।
कवि वेदव्यास[22] बलमीक[23] कवि, करि अस्तुति वदण कियौ[24] ।
सूरज प्रकास सूरज[25] जिसौ, "अभमल" गुण आरभियौ[26] ।। १५

पुनि[27] अनि कवि प्रसन छद पद्धरी

अनि सुकवि कोइक[28] पूछै अभास ।
किण अरथ नाम सूरिज[29] प्रकास ।
जिण जतन काजि[30] साचौ[31] जबाब[32] ।
सजुगत[33] अरथ दाखू[34] सताब[35] ।

---

१ ग दुत्ती । घ दुतिय । २ ख ग साषि । घ. साख । ३ ग घ भारवि । ४ ख कायव । ५ ख. कीयौ । ग. कीयो । घ कियो । ६ ख. घ वळे । ग बले । ७ ख. लीषी । ८ ख ग या । ९ ग. वात्त । १० ख. घ बले । ११ ग या । १२ ग वात्त । १३ ख ब्राहमण । ग घ ब्रहामण । १४ ख. सवद । १५ ख ये । ग घ अे । १६ ख सवद । १७ ख घ. मैं । १८ ख आणै । १९ ख ब्रह्म । घ ब्रहम । २० ग चत्रुवेद । २१ ग वखाणे । २२ ग. वेदब्यास । २३ ख. घ वलमीक । ग वलिमीक । २४ ख कीयौ । ग. कीयो । २५ ग सूरिज प्रकास सूरिज । २६ ग आरंभीयो । २७ ग पुन । २८ ग कोईक । २९ ख घ सूरज । ३० ख काज । ३१ ख साचौ । ३२ ख जवाव । ३३ ग सजूगत्त । ३४ ख दीषूं । घ दाखं । ३५ ख. सताव ।

---

१४ भार – अर्थ-गौरव । कायब – काव्य । किरात – किरातार्जुनीय नामक महाकाव्य । वळै – फिर, पुन. ।

१५ वळै – फिर, पुन । आ – यह । ब्राहमण – ब्राह्मण । अवगुण – दोष । गुण – काव्य ।

१६ अनि – अन्य । जतन – यत्न, लिए । साचौ – सच्चा । सजुगत – युक्ति-पूर्वक, युक्तिसहित । दाखूं – कहता हूं । सताब – शीघ्र ।

उत्तर– तिम कसिप सुतन[१] मन सोहिज[२] तात ।
माता अदित यम[३] सुबुद्धि[४] मात ।
ऽया[५] हूत हुवा[६] तप जप उदार ।
परिहार निसा जडता प्रहार ।
चक हेक सुरथ चक[७] हेक चाव ।
सारथी अरुण वरणण[८] सभाव[९] ।
इह[१०] भाति रूप उज्जळ अरोहि ।
सपतास तुरग जिम उछ्रव सोहि ।
ऊगता अनै कहता उदार ।
प्रफुलत्त[११] कमळ कवि मुख अपार ।
जोवता कुमुद[१२] कुमळाइ जाइ ।
सुणताज कुकवि चख धर समाइ ।
सत करै देखि ध्यानह[१३] सनान ।
दातार सूर[१४] सुणि करै दान ।
ग्रहराज[१५] किरणि जिम वाणि[१६] ग्रथ ।
प्रेरक्क[१७] सकति कवि [१८]रसण पंथ ।
निसचरां जेम दूजा नरेस ।
सुणि[१९] दबे[२०] सूम[२१] कायर जिकेस ।
सूरिज[२२] समान[२३] जग जस उजास ।
पोह[२४] ग्रथ नाम[२५] सूरज प्रकास ॥ १६

---

१ ख ग घ सुकवि । २ ख ग सोहीज । ३ ख अदित्यम । ग आदित्य्थ । घ अदित्य यम । ४. ख सुवघ्य । ग घ सुवघ्य । ५ ख घ. या । ग. या । ६ ख ऊवा । ग. हूवा । ७ ख वक । ग घ वक । ८ ग. वरणण । घ वरणन । ९ घ सुभाव । १० ख इह । घ इण । ११ घ प्रफुलत । १२ ख कुमुदा । १३ घ ध्यानह । १४ ग सुर । १५ ख ग घ ग्रिहराज । १६ ख. घ वाणि । १७ ख प्रेरक । १८ ग कवि । १९ ख. सुणि । २० ख दवै । ग घ दवै । २१ ख सूव । ग सूव । घ सूव । २२ ख घ सूरज । २३ ख समान । २४ ख ग घ पौहौ । २५ ख ग नाम ।

---

१६ निसा – रात्रि । जडता – अज्ञान चक – चक्र । हेक – एक । इह – इस ।
चख – चक्षु, नेत्र । धर – भूमि । ग्रह-राज – सूर्य । रसण – रसना, जिह्वा ।
निसचरा – राक्षसो ।

दोहा– 'अभमल' सूरज[1] हिंदवां, जस सूरज्ज[2] उजास।
कुळ सूरिज[3] वरणै[4] सुकवि, कहि[5] सूरज[6] परकास[7] ।। १७
वरणवि कवि रघुवसियां[8], सोभा जग सिरताज।
जिण कुळ मांहै[9] ऊपजै[10], रामचद्र महाराज[11] ।। १८

राजस वस[12] वरणण[13] गाथा

निराकार निरवाण[14], जोगेस्वरां दुलभ जाग तेजोमय।
रूप विस्नु[15] रहमाण, पकज नाभ व्रहम[16] उतपन्नौ[17] ।। १९

छंद पद्धरी

जिण व्रहम[18] तणै मारीच जाणि।
मारीच तणै कासिप प्रमाणि[19]।
सुत कासिप सूरज[20] तप अमाधि।
वइवस्तु[21] सूर सुत तेज वाधि[22]।
वइवस्तु[23] तणै इक्ष्वाकु[24] वीर[25]।
सभ्रम इक्ष्वाकु[26] विकुख[27] सधीर।

---

१ ग सूरिज। २ ख. ग घ सूरज। ३ ख ग घ सूरज। ४ ख वरणे। ग वरणे। ५ ख ग कहै। ६ ख ग सुरज। ७ ख प्रकास। ८ ख रघुवसीया। ग रघुव्रसीया। ९ ख ग. घ मांहि। १० ख उपजे। ग ऊपजे। ११ ग माहाराज। १२ ग वस। १३ ख वर्नन। ग वर्ननं। घ वर्णन। १४ ग निरवाण। १५ ख घ विस्न। ग विस्न। १६ ग घ व्रहम। १७ ग उत्तपनौ। १८ ख व्रहम। ग घ व्रहम। १९ ख ग प्रमाणि। २० ख. ग. घ सूरिज। २१ ग बईवस्तु। २२ ग बाधि। २३ ग वईवस्तु। २४ ख ग इष्वाकु। २५ ग वीर। २६ ख ग इष्वाकु। २७ ख घ विक्कुख। ग. विष्वक।

---

१८ सोभा – कीर्ति।
१९ दुलभ – दुर्लभ। पकज – कमल। नाभ – नाभि। व्रहम – ब्रह्मा। उतपन्नौ – उत्पन्न हुआ।
२० नोट–पुराणोके अनुसार परमेश्वरके पुत्र ब्रह्मा, ब्रह्माके मरीचि, मरीचिके कश्यप, कश्यपके सूर्य, सूर्यके वैवस्नमनु और वैवस्तमनुके पुत्र इक्ष्वाकु हुये। इसी इक्ष्वाकु वशकी वशावली ग्रथकर्ता यहां अपने ग्रथमे दे रहा है।
व्रहम – ब्रह्मा। तणै – के। कासिप – कश्यप। वइवस्तु – वैवस्तमनु। सभ्रम – पुत्र। विकुख – विकुक्षि नामक सूर्यवशी राजा, इक्ष्वाकुके पुत्र।

सुत विकुख[1] सक्रुनिज[2] सुत स्वसाद ।
पुत्र ज[3] ककुस्थ[4] अति हित प्रमाद ।
जे[5] सुत अनन प्रथु[6] पुत्र जास ।
राजै प्रथु नदन विस्टरास[7] ।
आरद्र[8] जेयमुत[9] वंस[10] ओप[11] ।
जे सुत[12] जवनासव[13] व्रह्म[14] जोप ।
सभ्रम जवनासव[15] हुवौ[16] स्राव[17] ।
व्रहृदस्व[18] जेण सुत तप वधाव ।
व्रहृदस्व[19] तणै सुत तेण वार ।
महाराजा[20] उपजे[21] धुधमार ।
धुधमार तणै उपजै द्रढ़ासु[22] ।
सुत जयद्रढ़ासु हरिजस प्रकास ।
जे[23] सुत निकुभ कीरति उजास[24] ।
सुत निकुभ तणै नृप[25] सहितासु[26] ।

१ ग विकुप । २ ख ग घ. सकुनिजै । ३ ख. ग घ पुत्रजै । ४ ग ककुस्थु । ५ ख ग घ. जै । ६ ख ग घ पृथु । ७ ख घ विष्टरास । ग. विस्टरास । ८ ग आरद्र । ९ ख ग घ जैसुत । १० ग वंस । ११ ख औप । १२ ख. ग घ जैसुत । १३ ख. ग घ जुवनासच । १४ ख व्रहम । ग. घ व्रहम । १५ ख. घ जुवनासच । ग जुवनासच । १६ ख ग हुवो । १७ ख ग घ श्राव । १८ ग. व्रहदस्व । घ व्रहदस्व । १९ ग. व्रहदस्व । २० ख माहाराजा । २१ ख ग. घ उपजे । २२ ख ग घ अ्रढासु । २३ ख ग घ जै । २४ ख ग घ. उजास । २५ ख ग. घ नृप । २६ ख महितासु ।

२० सक्रुनिज – विकुक्षिका पुत्र, शकुनि । स्वसाद – सूर्यवंशी राजा, शशाद । अनेन – सूर्यवंशी राजा ककुत्स्थके पुत्रका नाम । प्रथु – सूर्यवंशी राजा पृथु जो अनेनका पुत्र था । विस्टरास – राजा पृथुके उत्तराधिकारी राजाका नाम जिसके शुद्ध संस्कृत नाम विश्वगन्ध, विष्टराश्व, विश्वगश्वी थे । आरद्र – विश्वगश्वके पुत्रका नाम–आर्द्र । ओप – कांति, शोभा, कीर्ति । जवनासव – युवनाश्व (प्रथम) सभ्रम – पुत्र । स्राव – युवनाश्व प्रथमका पुत्र, शावस्त, इसका दूसरा रूप श्रावस्त भी है । व्रहृदस्व – वृहदश्व । धुधुमार – सूर्यवंशी राजा कुवलयाश्वका एक नाम । द्रढसु – दृढाश्व । हरिजस – दृढाश्वके पुत्र हर्यश्व (प्रथम) । निकुभ – राजा हर्यश्वका पुत्र । सहितास – सूर्यवंशी राजा सहताश्व, इसका दूसरा नाम वहुलाश्व भी था ।

नोट–यहां पर ग्रंथकर्त्ताने दृढाश्वके पुत्रका नाम हरिजस (हर्यश्व) लिखा है परन्तु पुराणोंके अनुसार दृढाश्वके पुत्रका नाम प्रमोद था और प्रमोदके पुत्रका नाम हर्यश्व मिलता है ।

सहितासु[1] तणै पुत्र अक्रसासु(स) ।
अक्रसासु तणै पुत्र जवनासु[2] ।
सुत युव्वनास[3] सेसट[4] स्रवेस[5] ।
निज हुवौ[6] मानधाता[7] नरेस ।
पुरु-क्रुसीमांन[8] सुत वस[9] रूप ।
पुर क्रुस्समु[10] तणै[11] सभूत भूप ।
सभूत सुतण[12] मुद्धन[13] स्रिताज ।
सुधना सुत त्रिधना नूप[14] सकाज ।
त्रिधनासुत त्रिध्यारुण तपीस ।
सतव्रत[15] हुवौ जिणसू प्रथीस ।
सतव्रत[16] सुत हरिचद सत[17] जिहाज[18] ।
रोहितास चद सुत महाराज ।
रोहितास तणै ह्रित चचुराय ।
तप[19] सुत सुदेव तपभाण[20] ताय ।

---

१ ख सहितासु । २ ख जुवनासु । ग घ जूवनास । ३ ख ग घ. युवनास । ४ ग घ श्रेसट । ५ ख लवेस । ग घ श्रवेस । ६ ख ग हुवो । ७ ख घ. मानधाता । ८ ख पुरुक्रुसिमान । ग पुरुकुसिमान । घ पुरुकुस्सिमान । ९ ग घ वस । १० ख. ग पुरुकुसिसु । घ पुरकुस्सि । ११ ग घ तण । १२ घ. सुतन । १३ ख. ग सुधन । १४ ख ग घ नूप । १५ ख मतिव्रत । ग सत्तिव्रत । घ सतिव्रत । १६ ग सतव्रत । १७ ख घ सुत । १८ ख निहाज । १९ ग तस २० ख तपभाण

---

२० अक्रसासु – सूर्यवशी राजा कृशाश्व ।

नोट – पुराणोके अनुसार राजा सहताश्वके दो पुत्र हुए । एकका नाम कृशाश्व और एकका नाम अक्षयाश्व था । अक्षयाश्वका वश नही चला । सभव है यहा पर पाठ क्रसासु ही हो जिसका शुद्ध रूप कुशाश्व होता है । लेखक भूलसे ही हुआ हो परन्तु सब प्रतियोमे पाठ अक्रासु ही मिलता है ।

पुरु-क्रुसीमान – परुकुत्स नामक राजा । सभूत – पुराणोके अनुसार राजा पुरुकुत्सके पुत्र त्रसदृस्यके पुत्रका नाम । त्रिधना – त्रिधन्वा नामक राजा । त्रिध्यारुण – सभव है यह नाम त्रैयारुणके लिये प्रयोग किया गया हो जो त्रिधन्वाका पुत्र था । सतव्रत – सत्यव्रत नामक सूर्यवशी राजा । इसका दूसरा नाम त्रिशकु और सत्यरता भी मिलता है । हरिचंद – राजा हरिश्चद्र । चद – राजा हरिश्चद्र । ह्रित – राजा हरिश्चद्रका पौत्र और रोहिताश्वका पुत्र हरित । चचुराय – हरितका पुत्र चञ्चु । इसका दूसरा नाम चाप भी था ।

सभ्रम सुदेव नृप[1] विजयसूर[2] ।
पुत्र जास रुरुक तप तेज पूर ।
सुत रुरुक हुवौ[3] व्रक[4] पोह[5] सधीर ।
व्रक[6] सुतण वाहु[7] वीराधिवीर[8] ।
सुत वाहु[9] सगर परगट ससार ।
असमज[10] सगर सुत नृप[11] उदार ।
असुमान जेण सुत जस उदीप ।
दुतिवत जेण सुत नृप दलीप[12] ।
भागीरथ सुत जिण तप अभग ।
गो सुरग अहुति[13] जिण आणि[14] गग ।
भागीरथ सभ्रम सुत भुवाळ ।
नाभग[15] हुवौ[16] स्रुत सुत[17] नृपाळ[18] ।
नाभग तणै अवरीख[19] नंद ।
सिंधुदीप जेण सुत गुण समंद ।

---

१ ख ग घ नृप । २ ग दिजयसूर । ३ ख ग हुवो । ४ ग. व्रक । ५ ख. ग घ पौहै । ६ ग व्रक । ७ ख वाहु । ८ ग. वीराधिवीर । ९ ख वाहु । १० ग असमजस । ११ ख ग घ नृप । १२ ख. ग घ. दिलीप । १३ ख हूति । ग हुंत । घ हूत । १४ ग आणि । १५ ग नाभॅग । १६ ख ग हुवो । १७ ख घ श्रुतसुत । ग सुत्तसुत्त । १८ ख ग. घ नृपाळ । १९ ख अवरीप । ग. अवीराप । घ. अबरीष

---

२० सभ्रम – पुत्र । विजयसूर – पुराणोके अनुसार चचुका प्रथम पुत्र विजय । रुरुक – विजयका पुत्र, सूर्यवशी एक राजा । व्रक – रुरुकका पुत्र वृकनाम सूर्यवशी राजा । इसका दूसरा नाम घृतक भी था । पोह – प्रभु, राजा । सुतण – पुत्र । बाहु – वृकके पुत्रका नाम, इसका दूसरा नाम यादवी और असित भी मिलते है । वीराधिवीर – महावीर । सगर – प्रसिद्ध सूर्यवशी राजा सगर । इसके दूसरे नाम केशिनी और सुमति भी मिलते हैं । असमंज – राजा सगरके उत्तराधिकारी पुत्रका नाम । असुमान – असमजसके पुत्रका नाम । सभ्रम – पुत्र । सुत – राज भगीरथका पुत्र श्रुत । भुवाळ – राजा । नाभंग – भगीरथका पौत्र, राजा नाभाग । नृपाळ – राजा । अवरीख – राजा अम्बरीष । नद – पुत्र । सिंधुदीप – सिंधुद्वीप जो अम्बरीषका पुत्र था ।

सिंधुद्वीप तणै सुत रवि सजोप[1]।
उपंजे अयुताजित वंस[2] ओप।
पुत्र तासि[3] रित्रुपरण[4] बुधि प्रकास।
सुत जासु[5] रित्रुपरणरै सुदास।
सनु दास[6] तास पुत्र तप सधेज।
ते पुत्र सरवकर्मा[7] सतेज।
जिण सुतण अने रण हुवौ[8] जत्र।
तिण सुतण व्रद[9] नर विरुप[10] तत्र।
सुत भिद्धन[11] अनमित्र वंस[12] दीप।
दुलि दुहजे[13] सुत ते[14] सुत दिलीप।
सभ्रम दिलीप रघु नृप[15] सकाज।
रघुरै सुत[16] अज राजाधिराज।
अज[17] सभ्रम दसरथ अवधि ईस।
सिरताज राज सोभा सचीस।
रथ सतरि लाख चौकी विराज।
सौ लाख गयंद नग हीर साज।
भूरा[18] दतार उजवाळ साख।
लाइक वड[19] जोधा वीस[20] लाख।

---

१ ख सजोय। २ ग वस। ३ घ. तास। ४ ग. घ रितुपरण। ५ ग घ जास। ६ ख ग. घ. सउदास। ७ ख. सखकर्मा। ग सरवकर्मा। घ सरवकरमा। ८ ख ग. हुवो। ९ ख व्रध। ग व्रिघ। घ. व्रध। १० ग. घ विरूप। ११ ख निधन। ग. घ नृधन। १२ घ वंस। १३ ख ग घ दुलि दुहजै। १४ ख ग. घ तै। १५ ख ग. घ. नृप। १६ ख ग घ. पुत्र। १७ ग अजै। १८ घ सूरां। १९ ग वड। २० ग. बीस

---

२०. अयुताजित – सिंधुद्वीपका पुत्र। रित्रुपरण – ऋतुपर्ण। सुदास – ऋतुपर्णका पुत्र परन्तु पुराणोंके अनुसार ऋतुपर्णके पुत्रका नाम, सर्वकाम (आर्तपाणि) था और इस सर्वकामके पुत्रका नाम सुदास था। सुनु – (सूनु) पुत्र। दास – सुदास नामक राजा। तास – उस। सभ्रम – पुत्र। सचीस – इन्द्र। उजवाळ – उज्ज्वल करने वाला। साख – वंश।

खट कोडि थाट राजट खंधार।
पमंगां लघु किकरां नको पार।
सोभन[1] अवास सोभा सुमेर।
कोटक[2] भंडार समसर कुमेर।
फव[3] हार धार घण फरहरत[4]।
वागोचा[5] चादर जळ वहत[6]।
भर फूल फळित अढार[7] भार।
जुथ करत भ्रमर भणहण[8] गुजार।
मिळि करत नाच छत्र कोहक[9] मोर।
स्रुक[10] चात्रिग[11] कोकिल करत सोर।
थानक[12] सुरेस जिम अवधि थान।
सरजू वहत गगा समान।
कछ मछ अनेक क्रीळा करंत।
नवहस वाळ खजन नचत।
तापस अनेक तट मुनि[13] तपेस।
जोगारंभ अजपा-जप जपेस।
वइसनव[14] ग्यान[15] केवळ वियाप।
छक प्रेम त्रुलिसिका[16] तिलक छाप।

---

१ ख घ सोव्रन। ग सोव्रन। २ ग घ कोटिक। ३ ग. घ फवहार। ४ ख हरफरत। ग घ फरहरत। ५ ख वागीचा। ग वागीचा। ६ ग वहत। ७ ग घ आढार। ८ ख भणहर। ९ ख. ग घ कौहोक। १० घ सुक। ११ घ चत्रिग। १२ ख. ग थानिक। घ थानिक। १३ ख. मुनि। १४ ख वैस्नव। ग घ वईस्नव। १५ ख ज्ञान। १६ ग घ तुलसिका।

---

२०. खधार—स्कधावार=सेना। समसर—समान, तुल्य। कुमेर—कुबेर। चादर—जलकी चौडी धार जो कुछ ऊपरसे गिरती हो। जुथ—यूथ=समूह। कोहक—मोरकी आवाज। चात्रिग—चातक पक्षी। थानक—स्थान। सुरेस—इन्द्र। अवधि—अयोध्या। सरजू—सर्यू नदी। क्रीळा—क्रीडा। जोगा-रभ—योगाभ्यास। अजपा-जप—वह जप जिसके मूल मत्र हमका उच्चारण श्वास प्रश्वासके गमनागमन मात्रसे होता जाय, हंममत्र। जपेस—जपते हैं। वइसनव—वैष्णव। ग्यान केवळ—कैवल्य ज्ञान। वियाप—व्याप्त।

लायक[1] दुज वायक[2] मत्र लीध।
कुस हाथि कमडळ दड कीध।
पाटबर[3] धोयति जिग प्रवीत[4]।
उद्दार तिलक क्रांती[5] अद्दीत[6]।
सिन्नान[7] घात मधि संध्रियास।
उचरत[8] मत्र गायत्रि[9] अभ्यास।
आस्रम चत्र अरु चत्र व्रण उदार।
क्रत करत दान खोडस प्रकार।
ब्रोह[10] चंद्रवदन[11] सुलछण बतीस[12]।
सोळै स्रिगार आभ्रण छतीस।
सझि आवत पदमणि झूल साग।
उरवसी[13] सची रति लजत अग।
आनूप रूप दुति सक्रय अस।
हालत मधुर जिम थकित हस।
कोकिला कठ गावत केक।
आवत भरण जळ त्रिय अनेक।
चद्र जाणि वदन[14] धावत चकोर।
सिर करत भ्रमर गुजार[15] सोर।
वपु[16] नीलवसन[17] मझि इम[18] वखाण[19]।
जगमगत घटा मझि छटा जांण[20]।

१ ख ग लाईक। २ ग वाईक। घ बाइक। ३ ख पाटवर। ४ ख प्रवीन। ग प्रवीत्त। ५ ख ग घ. क्रान्ति। ६ ख. अद्दीप। ७ ख. ग घ सनान। ८ ख ग घ उचरत। ९ ख गायत्रे। १० ख वौह। ग घ बौह। ११ ग चद्रबदन। १२ ख वतीस। १३ ग उरवसी। १४ ग वदन। १५ ग गुजार। १६ ग व्रपु। १७ ग बसन्न। १८ ग ईम। १९ ख घ वखाणि। ग बखाणि। २० ख ग घ. जाणि।

२० चत्र – च्यार। व्रण – वर्ण। खोडस – (षोडस) सोलह। आभ्रण – आभूषण। झूल – समूह, यूथ उरवसी – उर्वशी, एक अप्सराका नाम। सची – इन्द्राणी। रति – कामदेवकी पत्नी। केक – कई। वपु – शरीर। मझि – मध्यमे मे। छटा – विजली, विद्युत।

त्रिय कोटि कोटि इम[1] सरजु तीर।
नग झटित[2] भरत घट हेम नीर।
चत्र वर वजार[3] चित्रकाम[4] चार[5]।
दुतिवत वेलि[6] गुल-रगदार।
हट[7] अटा हेम नग जटित हीर।
धज कोटि कोटि ऊपर[8] सधीर।
हिम हीर[9] गोख जाळी हजार[10]।
दमकत जोति अति जिलहदार।
जर तार[11] चिगां साइवांन[12] जास।
परगटै जाण[13] बहु[14] रवि प्रकास[15]।
सिधि अस्ट नवै निधि पति सभाय।
अणपार[16] करत वापार आय।
वाणिज्य[17] वइस[18] फवि[19] जेण वेर[20]।
कोटेक जांण[21] वप धर[22] कुमेर।
बोलत[23] उदार नर मझि वजार[24]।
एक एक नांम[25] ऊपर[26] अपार।

---

१ ख ग घ यम। २ ख. ग. घ. जटित। ३ ख वजार। ४ ख घ चित्र काम। ५ ग घ. चारु। ६ ग घ वेलि। ७ घ हटा। ८ ख. उपरि। ग घ ऊपरि। ९ घ हीर। १० ख ग घ. यहजार ११ ख ग घ. जरदार। १२ ख. साईवान। ग साईवान। १३ ख ग घ जाणि। १४ ख वहु। १५ ख प्रकाश। १६ ख. ग. घ अपार। १७ ख. घ वाणिज। ग वांणिज। १८ ख वईस। ग घ वईस। १९ ख फवि। २० ग घ वेर। २१ ख जाणि। ग घ. जाणि। २२ ग. वषध्धर। २३ ख वोलत। २४ ख. वजार। २५ ख ग घ नाम। २६ ख उपरि। ग. घ. ऊपरि।

---

२०. झटित – जड़ा हुआ। हेम – सुवर्ण, सोना। दुतिवंत – सुंदर, मनोहर। गुल-रगदार – गुलाबके फूलके रंगका, गुलाबी रंगका। हट – हाट, दुकान। अटा – अट्टालिका, महल। हेम – स्वर्ण, सोना। हिम – स्वर्ण, सोना। दमकंत – दमकते हैं। जोति – ज्योति, प्रकाश। जिलहदार – चमकदार, आभायुक्त। जर – सुवर्ण, सोना। चिग – बासकी पट्टियोंका पर्दा, चिक, चिलमन। साइवान – मकानका छज्जा। रवि – सूर्य। वइस – वैश्य। वप – शरीर। मझि – मध्य, मे।

जित एक किसब उतिम सुजाण।
पुर माहि इता ग्रह ग्रह प्रमाण।
उड्डंत[1] चंग मधि आसमांण[2]।
वर[3] जाण[4] अमर सोभित विमाण[5]।
नववती[6] राग घड़ियाळ[7] नद्द[8]।
सागर जिम नगर उछाह सद्द[9]।
अनुकूळ पुरस पतिव्रता[10] जोय[11]।
सुभ[12] करम करत कुळ ध्रम सकोय[13]।
नव खड तणा बहु अन[14] नरेस।
पगवद[15] करत धन करत पेस।
छत्रपती[16] इता मिळि जुटत[17] छत्र।
तिल मुसटि पडत नह भोमि तत्र।
कमळा कटाछि[18] नव नव प्रकार[19]।
दळ गहमह[20] उच्छब[21] राज द्वार[22]।
इद्रहू सरस राजस अमास।
प्रिय जूथ[23] सातसै मुर चास।

---

१ ख. उडत। ग. घ ऊडंत। २ ख. ग आसमाण। ३ ग. वर। ४ ख ग. घ जाणि। ५ ख विमाण। ग. विमाण। ६ ख नववति। ग घ नववत्ति। ७ ख ग घडीयाल। ८ ख. नद। ग नद्द। ९ ग सद्द। १० ख पतिवृता। ग घ पतिव्रता। ११ ख. घ जोइ। ग जोई। १२ ख श्रुभ। १३ ख. घ सकोइ। ग सकोई। १४ ख ग. घ अन्य। १५ ग पगवद। १६ ख छत्रपति। १७ ग घ जुडत। १८ घ कटाच्छ। १९ ख ग घ. प्रकारि। २० ख गहम। २१ ख ग उछव। घ. उच्छव। २२ ख. ग घ राजद्वारि। २३ ख जुथ।

---

२० चंग – वडी गुड्डी, पतग। आसमाण – आसमान। नद्द – नाद, ध्वनि। सद्द – शव्द। अन – अन्य। पेस – नजर, भेंट। छत्रपती – राजा। मुसटि – मुष्टि, मुट्ठी। भोमि – भूमि। कमळा – स्त्री, लक्ष्मी। कटाछि – कटाक्ष। गह=मह – भीड, समूह। उच्छब – उत्सव। सरस – समान। राजस – शोभा देते हैं। मुर – तीन।

निज कौसल्य[1] केकइ[2] सुमित्रा नांम[3] ।
वरियाम[4] तणँ अति हेत वाम[5] ।
दसरत्थ[6] विभै[7] इम[8] नजर[9] दीध ।
कामना[10] पुत्र धरि जिगन कीध ।
आविया[11] नाग नर सुर अमाप ।
आविया ब्रहम[12] सिव विसन[13] आप ।
आविया[14] मुनेस्वर[15] नृप[16] अपार ।
आऊठ - कोटि तीरथ उदार ।
सिध चारण गावत जस सथांन ।
गण गंध्रप गावत मधुर गांन[17] ।
कर[18] उघट कहत संगीत केक ।
नृत[19] करत वजत[20] वाजित्र[21] अनेक ।
नाखित्र सूर ससि अर मुनिंद्र[22] ।
आविया वरुण[23] कुम्मेर[24] इद्र ।
विप्र[25] वेद मत्र विधवत[26] विचार[27] ।
आहूत[28] वेद[29] सुरमुख अपार ।

---

१ घ कोसल्य । २ ख कैकई । ३ ख ग घ नाम । ४ ख ग वरीयाम । ५ ख. घ वाम । ग वाम । ६ ख. ग दसरय । ७ ग. विभै । ८ ग. ईम । ९ ग निजर । १० ख घ कामना । ग कामनां । ११ ख ग आवीया । १२ ख. ब्रह्म । ग. घ ब्रहम । १३ ग विसन । १४ ख. ग आवीयां । १५ ख. मुनेस्वर । १६ ख. ग घ. नृप । १७ ग ग्यांन । घ गान । १८ ख ग घ करि । १९ ख ग नृत । घ नृित । २० ग घ वजत । २१ ग घ. वाजित्र । २२ ख. मुनींद्र । २३ ग वरण । घ वरण । २४ ख ग. कुमेर । घ कुंमेर । २५ ग विप्र । २६ ख. घ विधिवत । ग विधिवत । २७ ग विचार । २८ ख. ग. घ आहूति । २९ ग. वेद ।

---

२० वरियांम – श्रेष्ठ । विभै – वैभव । कांमना – इच्छा । जिगन – यज्ञ । कीध – किया । अमाप – असीम । ब्रहम – ब्रह्मा । विसन – विष्णु । आऊठ-कोटि – अडसठ करोड । उघट – संगीतमें वाद्यो पर ताल देना, सम पर आना । वाजित्र – वाद्य । नाखित्र – नक्षत्र । सूर – सूर्य । ससि – चंद्रमा । सुर-मुख – अग्नि, आग ।

सुर मिळै कीध मसलति सकाज।
आखां[1] प्रभु आगळ[2] अरज आज।
सुरिइद्र[3] मिळै[4] ब्रह्मदेव[5] साथ।
हरि अग्र रहै[6] सह[7] जोडि हाथ।
दाखियौ[8] प्रभू कुण चित देव।
भाखियौ[9] सुरां दुख रांण भेव।
त्रइलोक[10] कीध रांमण[11] सत्रास।
साहाय[12] करौ[13] हरि जग निवास।
सुणि सुरां अरज बोले[14] लछीस।
आदू[15] मो सेवग अवधि ईस।
रीझियौ[16] अह दसरत्थ[17] राय।
अवतार धरूं इण[18] ग्रेह आय।
जग[19] प्रळव[20] रीछि[21] पेटे सजोड[22]।
कपि रीछ[23] धरौ वप तेत्रिस[24] कोड[25]।
सुर तजौ चित वरतौ असोक।
लकेस हणू सुख करा[26] लोक।

---

१ ख. आख। २ ख ग घ आगळि। ३ ख. सुरीयत। ग सुरीयद। घ. सुरियद। ४ ख. ग घ मिले। ५ ग घ ब्रह्मदेव। ६ ग घ रहे। ७ ख सौहो। ग. घ सौहौ। ८ ख दाषीयौ। ग दाषीयो। ९ ख भाषीयौ। ग भाषीयो। १० ग घ त्रैलोक। ११ ख ग. रामण। १२ ख साहाइ। ग सहाइ। १३ ग करो। १४ ख बोले। १५ ख. आदु। १६ ग रीझीयौ। १७ ख. ग दसरथ। १८ ख ग घ यण। १९ ख ग घ. जग्य। २० ख. प्रलव। २१ घ रींछि। २२ ख ग घ. सजोडि। २३ ख ग रीछ। २४ ख ग घ त्रितिस। २५ ख ग. ग. कोड़ि। २६ ख करो। ग. घ करौ।

---

२० मसलति – विचार। आखां – कहे। आगळ – अगाडी, सम्मुख। सह – सब। दाखियौ – कहा। कुण – क्या। भाखियौ – कहा। राण – रावण। भेव – भेद। त्रइलोक – त्रिलोक। कीध – किया। सत्रास – भययुक्त, सकटपूर्ण। साहाय – सहायता, मदद। लछीस – विष्णु। रीझियौ – प्रसन्न हुआ। अह – मैं। ग्रेह – घर, वश। वप – शरीर। चित – चिंता। असोक – आनद। लकेस – रावण।

जिग[१] हुवै सपूरण[२] एम जाप
प्रत्तेस्ट[३] वधै[४] अति नृप[५] प्रताप।
प्रभु आगळ[६] करि करि सुर प्रणांम[७]।
धरि मतौ[८] गए[९] इम धांम धांम[१०]।
सिव व्रहम[११] विसन[१२] निज पुर सिधाय।
प्रिय[१३] भूप जिगन व्रत[१४] सगि पाय[१५]।
त्रिय[१६] भूप धरम थित गरभ[१७] तांम[१८]।
कामना[१९] सफळ[२०] नृप ज्याग काम[२१] ॥ २०

श्री रामा अवतार जन्म वरणन[२२]

दोहा– भावी थित पूरण गरभ[२३], दसमै मास उदार।
जनमे कोसळ[२४] मात जदि, रांमचद अवतार ॥ १

छप्पय– मधि[२५] त्रेताजुग चैत्रमास[२६], सक्रति-मेखि[२७] सरि।
करक लगन पख सुकळ[२८], धरा[२९] पन्नवसु[३०] नखित्र धुरि[३१]।
प्रगटि[३२] ऊच[३३] ग्रह पच, राग उच्छाह[३४] निरंत्रा।
जनमे भरथ[३५] केकई, सत्रघण लखण[३६] सुमित्रा[३७]।

१ घ जग। २ ख ग घ सपूरण। ३ ख ग घ प्रतिष्टा। ४ ग. वधे। ५ ख. ग घ नृप। ६ ख ग. घ. आगलि। ७ ख प्रनाम। घ प्रणाम। ८ ग मत्तो। ९ ग गऐ। १० ख घ धाम धाम। ११ ख. व्रह्म। ग. घ व्रहम। १२ ग विसन। १३ ख ग. प्रीय। १४ ख ग घ व्रत। १५ ग पाइ। १६ ख. ग त्रीय। १७ ख. गर्भ। १८ ख ताम। १९ ख. घ कामना। ग कामना। २० ख ग घ सुफल। २१ ख. काम। २२ ख बर्नन। ग वर्नन। घ वर्णन। २३ ख. गर्भ। २४ ख कौसलि। २५ ख ग घ मझि। २६ ग चइत्रमास। घ. चईत्रमास। २७ ख. ग घ मेष। २८ ख शुकल। २९ ख ग घ धुरा। ३० ख ग पुनर्वसु। ग पुनर्वसु। ३१ ख ग घ. धरि। ३२ ख ग. घ प्रगट। ३३ ग ऊच। ३४ ख उछाह। ग उत्छाह। ३५ ख भर्थ। ग. घ भ्रथ। ३६ ख लछमण। ग घ लछण। ३७ ग. घ सुमित्र।

२० जिग – यज्ञ। प्रत्तेस्ट – प्रतिष्ठा। मतौ – विचार। विसन – विष्णु। जिगन – यज्ञ। ज्याग – यज्ञ।

१. मात– माता। जदि – जब।

२ मधि – मध्य, मे। सक्रति-मेखि = मेषसक्राति। करक लगन – कर्क लग्न। पन्नवसु – पुनर्वसु। नखित्र – नक्षत्र। ऊंच – श्रेष्ठ, उत्तम। सत्रघण – शत्रुघ्न। लखण – लक्ष्मण।

बजि[1] थाळ सकळ वांजित्र[2] वजे[3], कुसम सघण सुरियंद[4] किया[5]।
वेखियां[6] हीज आवै वणै[7], उण दिन तणी अजोधिया[8] ।। २

जन्मोच्छाह[9] वरणनं[10] छंद अरद्ध राच[11]

सिंगार सोळ सज्जयं, लखै सची सुलज्जयं।
इसी[12] न रंभ इंदरी[13], सभ्भत ग्यांन[14] सुंदरी ।। ३
संगीत नृत्त[15] सोहती, मुनेस हंस मोहती।
अनंग रंग आतुरी, प्रिया[16] नचंत पातुरी ।। ४
कुलीन[17] नारि केकयं, आणंद में[18] अनेकयं।
सुहाग भाग सू भरी[19], अनेक राग उच्चरी ।। ५
इसी[20] जबाण[21] उच्चरै, किलोळ कोकिला करै।
प्रफुल्लयं[22] प्रकासयं, हसंत के हुलासयं ।। ६
करंत के किलोहळं, महा उछाह मंगळं।
सभ्भै[23] इसो सहच्चरी[24], उरवसी[25] न अच्छरी[26] ।। ७

---

१ ख वजि। २ ख वाजित्र। ग घ बाजित्र। ३ ग. घ बजे। ४ ख. ग सुरीयंद। ५ ख ग कीया। ६ ख वेषीया। ग. वेषीयां। ७ ख. घ वणं। ग वणै। ८ ख. ग अजोधीया। ८ ख जन्मउछाह। ग जनमउछाह। घ. जन्मउच्छाह। १० ख. वर्नन। ग वर्नन। घ वर्णन। ११ ग अद्धनाराज। घ अर्धनाराज। १२ ख ईसी। १३ ख ग घ यंदरी। १४ ख ग्यान। १५ ख ग घ. नृत्य। १६ ख ग प्रीया। १७ ख ग घ कुलीण। १८ ख घ मैं। ग मैं। १९ ख. सुदरी। २० ख ग ईसी। २१ ख वाणि। ग वाणि। ग वाणि। २२ ख ग घ प्रफूलयं। २३ ख ग घ सभ्भे। २४ ख ग घ सहचरी। २५ ग उरबसी। २६ ग अछरी।

---

२ वांजित्र – वाद्य, वाजा। कुसम – पुष्प, फूल। सघण – वर्षा। सुरियंद – इन्द्र। वेखिया – देखने पर, देखने से।

३ सोळ – सोलह। सची – इन्द्राणी। रंभ – रम्भा, अप्सरा। इंदरी – इंद्राणी।

४ नृत्त – नृत्य। मुनेस – मुनीश, महर्षि। हंस – आत्मा, जीव। अनंग – कामदेव। आतुरी – आतुर।

५ केकय – कई। सुहाग – सौभाग्य।

६ वाण – वाणी। उच्चरै – उच्चारण करती है। किलोळ – क्रीडा। हुलासयं – हर्ष।

७ किलोहळं – आमोद-प्रमोद, कल्लोल। सहच्चरी – सखी। अच्छरी – अप्सरा।

वणाव[१] सोळ वामरा[२], कटाच्छ[३] वाण[४] कामरा[५] ।
उछाह मे[६] उमगय, रचत राग रंगयं ।। ८
रमै हसै नरिदर[७], मभार[८] राज मिदरं[९] ।
करै उछाह सुक्किया[१०], पचास सातसै[११] प्रिया[१२] ।। ९
छभा उछाह छक्कय, अनेक दान अप्पयं ।
सकाज अस्ट[१३] सिद्धय, नवै उदार निद्धय ।। १०
छत्रप्पती[१४] उछाह मे, धनेस माल उद्धमे[१५] ।
वेदोगत[१६] विधानय[१७], दुजा अनेक दांनय[१८] ।। ११
वसिस्ठ[१९] आदि ब्रह्मयं, करंत जातक्रमयं[२०] ।
हळद्[२१] कुकम[२२] हरी, करत छोह[२३] केसरी ।। १२
दिपै उछाह डमर, घमक घोर घुग्घर[२४] ।
वर वरं[२५] प्रभा वणी, घर घरं प्रभा घणी ।। १३

---

१ ग वणाव । २ ख घ. वामरा । ३ ख. कटाछ । ग घ कटाछि । ४ ख वाण । ५ ख घ कामरा । ६ ख ग घ मै । ७ ख ग घ नरिंदरां । ८ ख ग मभारि । ९ ख. ग घ मिंदरा । १० ख सुकीया । ग सुक्कीया । घ सुक्कि (क्खि) या । ११ ख सातैसै । १२ ख लीया । ग प्रीया । १३ ख. ग घ इष्ट । १४ ख ग. घ छत्रपती । १५ ग घ ऊधमैं । ख उधमैं । १६ ग वेदोगत । १७ ग विधानय । १८ ख ग घ. दानय । १९ ख. घ वसिष्ट । ग वसिष्ट । २० ख ग जात क्रमय । २१ ख ग हलद । २२ ख घ कुकुम । २३ ख छेल । ग. घ छैल । २४ ख ग घ घूघर । २५ ग बरबरं ।

---

८ वामरा – वामाके, महिलाके, स्त्रीके । कटाच्छ – कटाक्ष ।

९ मभार – मध्य । सुक्किया – स्वकीया, पतिसे ही अनुराग रखने वाली स्त्री ।

१०. छभा – सभा । उछाह – उत्सव, हर्ष । छक्कयं – तृप्त । अप्पय – देता है ।

११ धनेस – कुबेर । माल – धन, दौलत । उद्धमै – उपभोग करता है, दानादिमे देता है । वेदोगत – वेदोके अनुसार । विधानयं – अनुष्ठान, धर्म-शास्त्रकी आज्ञा, विधान । दुजा – द्विजो, ब्राह्मणो । दानयं – दान ।

१२ ब्रह्मयं – ब्राह्मण । करत – करते हैं । जातक्रमय – जातकर्मनामक संस्कार जो बालकके जन्मके समय किया जाता है ।

१३. घमक-घोर – ध्वनि विशेष । प्रभा – शोभा ।

डहंत केलि डालय, उपति[1] वंद्रवालय[2] ।
वहत[3] दुदभं वयं[4], जपंत देव जैजयं ॥ १४
किसू वखाण[5] कीजियै[6], लहै न पार लीजियै[7] ।
इळा सहाय अमरै[8], त्रिलोकनाथ औतरे[9] ॥ १५

दुहा[10]– राम लखण[11] सत्रघण[12] भरथ, सूरज[13] वस सिगार ।
एक अस चत्र वप[14] अवधि, ऐ चत्रधा[15] अवतार ॥ १६
उच्छव[16] वधै[17] अजोधिया, प्रभु दरसण[18] परमाणि ।
चंद्र देखि सामद्र[19] चढै, जळ राका निस जाणि ॥ १७
वीता[20] इम[21] केइक वरस, अति आणद अवधेस ।
ऊगमणै[22] रवि रूप अग, वणै[23] कुवर ससि वेस[24] ॥ १८
लघु लघु सर कर धनक[25] लघु, लघु वय[26] बाळक लार ।
रांमति सरजू तटि रमै, कीळा[27] राजकुमार ॥ १९

---

१ ख ग घ उपत। २ ख वद्रवालय। ३ ख वजत। ४ ग वय। ५ ग वखांण। ६ ख ग कीजीयै। ७ ख ग लीजीयै। ८ ख अमरै। ख ग अमरे। ९ ख. ग. ओतरे। १० ख दूहा। ग घ दोहा। ११ ख. लछमन। १२ ख. ग घ. सत्रधन। १३ ख ग घ सूरिज। १४ ग. वप। १५ ग धाम। १६ ख. उछव। ग. उत्छव। घ. उच्छव। १७ ग. ववै। १८ ग घ दरसणि। १९ ख. ग सामद। घ सामँद। २० ख वीना। ग वीता। २१ ग ईम। २२ ख उगमणे। ग. घ ऊगमणे। २३ ख ग. वणे। घ वणे। २४ ग बेस। २५ ख. ग घ धनुक। २६ ग. वय। २ ख क्रीडा। ग घ. क्रीळा।

---

१४ उपति – शोभा देती है। वंद्रवालय – वदनवार। जपत – उच्चारण करते हैं। जैजयं – जय जय।

१५ किसू – क्या, कैसे। वखांण – वर्णन। इळा – पृथ्वी। अमरै – देवता। औतरे – अवतार लिया।

१६ लखण – लक्ष्मण। सत्रघण – शत्रुघ्न। सिगार – (शृंगार) शोभा। चत्र – चार। वप – वपु, शरीर। चत्रधा – चार प्रकार के।

१७. उच्छव – उत्सव। सामद्र – समुद्र। राका – पूर्णिमा, पूर्णिमाकी रात्रि। निस – रात्रि।

१८ इम – इस प्रकार। ससि – शिशु। वेस – आयु, उम्र।

१९. सर – बाण, तीर। कर – हाथ। धनक – धनुष। वय – आयु। लार – पीछे। रामति – खेल। कीळा – क्रीडा।

गाथा– अवधिपुरी आणद, दसरथ ग्रेह गाधिसुत जिण दिन ।
निज सुत लेयण नरचदं, विस्वामित्र[1] आवियौ[2] मुनिवर[3] ॥ २०
विधवत[4] वेद[5] विधांन[6], दडव्रत[7] करे करे परदछिणा ।
सझि[8] नृप[9] बह[10] सनमान[11], आसण समपि जोड़ कर अखै[12] ॥ २१

राजा दसरथ वाक्य[13] विस्वामित्र[14] री स्तुति

छन्द नाराच[15]

भलोस[16] आज मुंझ भाग[17], आप ग्रेह आविया[18] ।
दरस्स[19] तो रघू[20] दिलीप, पुन्यहूत[21] पाविया[22] ।
कहौ मुनिंद्र[23] काज केण[24], आगिया[25] सु कीजिये[26] ।
करी[27] तुरी[28] क देस कोस[29], लछीं[30] भोमि लीजिये[31] ॥ २२
वदै[32] मुनेस जेण वार[33], देखि[34] भूप वीनती[35] ।
मख सहाय काज मेलि[36], पुत्र तो रघूपती[37] ॥ २३

---

१ ख विश्वामित्र । ग विसवामित्र । घ विसवांमित्र । २ ख आवीयौ । ग आवीयो । ३ ग मुनिवर । ४ ग विधवत । ५ ग वेद । ६ ग. विधान । ७ ग दडव्रत । ८ घ. सझ । ९ ख ग घ. नृप । १० ख वहौ । ग घ वहौ । ११ ख ग. घ सनमान । १२ ख ग घ अख्ये । १३ ख घ वाक्य । ग वाक्य । १४ ख घ. विश्वामित्र । ग विस्वामित्र । १५ ख. ग. नाराज । १६ ग घ. भलौस । १७ ख मुझ । ग घ मूझ । १८ ख. ग आवीया । १९ ख दरस्य । ग. दरस । २० ख ग घ रघं । २१ ग पुंन्य । २२ ख ग पावीया । २३ ख. मुनींद्र । ग. घ मुन्यद्र । २४ ख ग घ. केणि । २५ ख ग आगीया । २६ ख ग. कीजियै । २७ घ करौ । २८ घ तुरौ । २९ ख कौसं । ३० ख ग लछि । घ लच्छि । ३१ ग लीजीयै । ३२ ग. वदै । ३३ ग जेणवार । ३४ ग वेखि । घ वेखि । ३५ ग वीनती । ३६ ख ग घ मेल्हि । ३७ ख ग घ रघुपती ।

---

२० ग्रेह – घर । गाधिसुत – विश्वामित्र । नरचंद – नरेंद्र, राजा ।

२१ परदछिणा – प्रदक्षिणा, परिक्रमा । वह – बहुत । जोड़ कर – कर-बद्ध होकर । अखै – कहता है ।

२२. भलोस आज मूझ-भाग – मेरा आज अहोभाग्य है । दरस्स – दर्शन । काज – कार्य । केण – किस । आगिया – आज्ञा । करी – हाथी । तुरी – घोडा । कोस – खजाना । लछी – लक्ष्मी । भोमि – भूमि ।

२३ वदै – कहते हैं । मुनेस – मुनीश, महर्षि । जेण वार – जिस समय । मखं – यज्ञ ।

राजोवाच[1]

रटै नृपेस[2] हो[3] रिखेस, आप एह[4] उच्चरी।
पयस रांम नीर पेखि, पेखि मीन ज्यां[5] पुरी ॥ २४
रचे चिंतामणी सु हार, कठि रक कीजियै[6]।
पल पल विलोकि[7] पुत्र, जेण भाति जीजियै[8]।
यतो न भेद जाणियै[9] ह, ज्याग सैण दूजण।
सधाण-वांण जाण ए न[10], ताण ऐ[11] सरासण ॥ २५
कराळ देस राकसा, कुमार[12] ऐन मोकळू।
जिग[13] सहाय काज जै, चत्रुग[14] साजि[15] मै[16] चलू।
विस्वामित्रेस[17] एण[18] वात, कोपियौ[19] भयकरा।
गिरा तरा सरा गभीर, धुज्जवे[20] विसुधरा[21] ॥ २६
रोमच अग धोम रूप, व्रह्म तेज मे वर्णं।
जटास[22] छमंटा[23] जडागि, आग[24] नेत्र ऊफणै[25]।
वसिस्ठ आय जेण वार, ग्यान कीध धू-मती।
दईव सेस तूझ नद, भै न कोइ भूपती ॥ २७

---

१ ग. राजोवाच। २ ख ग घ नरेस। ३ ख ग घ हे। ४ ख ग घ येह। ५ ख ग घ ज्यौं। ६ ख ग कीजीये। ७ ग बिलोकि। ८ ख ग जीजीयै। ९ ख ग घ जाणये। १० ख ग घ येन। ११ ख ग घ ये। १२ ग. कुमार। १३ ख जिमज। १४ ख. चतुरग। ग. घ चतुग। १५ ख ग घ साझि। १६ ख ग घ हू। १७ ख विश्वामित्रेण। ग बिस्वामित्रेस। घ. विस्वामित्रेस। १८ ख एस। १९ ख कोपीयौ। २० ख. ग न धूजके(वे)। २१ ख ग विसधरा। २२ ख ग घ. जटा। २३ ख. ग. घ. छटा छटा। २४ ख ग घ आगि। २५ ख ग घ. ऊफणे।

---

२४ रिखेस – ऋषीश महर्षि। एह – यह। पयस – दूध। पेखि – देख कर। मीन – मछली।

२५ कठि – कठ मे। रक – गरीब, निर्धन। विलोकि – देख कर। जेण – जिम। ज्याग – यज्ञ। सैण – हितैषी। दूजणं – द्विज, ब्राह्मण। सधाण-बाण – धनुष पर तीर चढानेकी क्रिया। ए – यह। सरासण – धनुष।

२६ मोकळू – भेजू। जिग – यज्ञ। काज – लिये। चत्रुग – चतुरगिणी सेना। एण – इस। गिरां – पर्वतो। तरा – वृक्षो। सरा – तालावो। विसुधरा – वसुन्धरा, पृथ्वी।

२७ रोमच – रोमाच। धोम – अग्नि। जटास – रुद्र, महादेव। छमटा – आगकी लपट। जडागि – जटाकी अग्नि। दईव – देव। सेस – शेष, लक्ष्मण। तूझ – तेरा। नद – पुत्र।

कराळ श्रौ मुनिद्र कोइ, भाखसी[1] वुरौ भलौ ।
श्रहिद्र रामचद्र ऐे, मुनिद्र साथ मोकळौ ॥ २८

दुहो[2]– तदि नृप[3] पग वदि[4] मुनितणा, क्रोधज छिमा कराय ।
साथ[5] दिया[6] लछमण[7] सहित[8], रछया[9] कजि[10] रघुराय ॥ २९

गाथा– विध वलमीक विधान, रचि सखेप कहू गुण राघव ।
श्रनड - मेर उनमांन, मेरह जेम प्रिथी दत मझळी[11] ॥ ३०

दुहो– सिव[12] हणवत नरहर सुकवि, केसव[13] माधवदास ।
कहिया जिण विध हू कहू, प्रत[14] श्रनुसार प्रकास ॥ ३१

श्रीरांमचरित्रः छंद भुजगी

रिखा[15] साथि आये दुहूं भ्रात रूपं ।
भणै जत्र चाळीस संग्रांम भूपं ।
हणे ताड़िका बांण हूता सुबाहु ।
वचै[16] मूरछा[17] होय[18] मारीच वाहां[19] ॥ ३२
विस्वामित्ररै[20] ज्याग सोभा वधारी ।
त्रिया रैणपैहूंत गोतम्म[21] तारी ।

---

१ ख भापणी। २ ख दूहा। ग. घ दोहा। ३ ख ग घ. नृप। ४ ग घ वदि। ५ ख ग. घ साथि। ६ ख. ग दीया। ७ ख ग लखमण। ८ ग सहित। ९ ख रछि। ग रत्छि। घ रच्छक। १० घ. जिग। ११ ख. ग घ. मझझलि। १२ ग शिव। १३ केशव। १४ ख ग. घ प्रति। १५ ख ग घ रिषं। १६ ख ग. वचे। घ वचे। १७ ख ग घ मूरिछा। १८ ख घ होइ। ग होई। १९ ग वाह। २० ख विश्वामित्र। ग. विस्वामित्र। घ विस्वामित्र। २१ ख. ग. घ गोतम।

---

२८ भाखसी – कहेगा। वुरौ – अशुभ, अमांगलिक। श्रहिद्र – अहीन्द्र = शेषनाग, लक्ष्मण। मोकळौ – भेजिये।

२९ तदि – तब। छिमा – क्षमा। रछया – रक्षा। कजि – लिये।

३० विध – विधि, प्रकार। बलमीक – वाल्मीकि ऋषि। सखेप – सक्षेप। गुण – कीर्ति। श्रनड-मेर – सुमेरु पर्वत। मेरह – मेरु पर्वत। प्रिथी – पृथ्वी। मझळी – मध्य, मे।

३१ प्रत – प्रति।

३२ रिखा – ऋषि। दुहू – दोनो। मूरछा – मूर्च्छा।

३३ ज्याग – यज्ञ। त्रिया – स्त्री। रैणपैहूत – धूलि पर से।

पति[1] स्रापहू[2] देह पाई पखांणै ।
जिका दिव्य देहा[3] हुई स्रब्ब[4] जाणै ॥ ३३
कुटबा सहेता[5] हुती नाव कीरं ।
वळै पाय[6] रैंणा तरी रग्घुवीर[7] ।
मिथल्लेसरै[8] ज्याग आए समीप ।
दुवा[9] भूप आए[10] मिळे सात दीप ॥ ३४
उठै बाण दैंतेस लकेस आया ।
मिळै देव द्रोही उभै धूतमाया ।
इता छत्तधारी मिळे ज्याग आया ।
छित धूप लागै नही छत्रछाया ॥ ३५
मिळे छत्रछत्रां धसै भीड माचै ।
रैंणा हीर मोती झडै रूप[11] राचै ।
ओपै जोति नौलाखहूता अपारा ।
तिकै[12] जाण[13] साजोत[14] रै[15] भोमि तारा ॥ ३६
मुनिंद्रेस[16] जोगेस कव्वेस मेळा ।
भुजगेस देवेस स्रब्बेस[17] भेळा ।

---

१ ख ग पती। २ ख ग घ श्राप। ३ ख. देही। ४ ख ग श्रब। घ श्रब्ब। ५ ख. ग घ सहेत। ६ ख पाई। ग घ पाइ। ७ ख. रघुवीर। ग. रघुबीर। ८ ख ग मिथलेस। ९ ख. ग घ. दुआ। १० ग. आये। ११ ख रूप। १२ ख ग घ. तिके। १३ ख. ग. घ जाणि। १४ ख ग. घ. साजोति। १५ ख ग. घ रा। १६ ग. मुनिंद्रस। १७ ख श्रवेस। ग स्रवेस।

---

३३. पैहूंत – पैरोसे। स्रापहू – शापसे। पखाणै – पत्थररूप। स्रब्ब – सर्व, सब।

३४ सहेता – सहित। हुती – थी। वळै – फिर। पाय – पाद = चरण। रैंणा – धूलि। मिथल्लेसरै – राजा जनकके। ज्याग – यज्ञ। दुवा – दूसरे।

३५. बांण – बाणासुर = सहस्रार्जुन। दैंतेस – दैत्य + ईश। लकेस – रावण। छत्र-धारी – राजा। छित – पृथ्वी।

३६ रैंणा – पृथ्वी। जोति – नक्षत्र, तारा, प्रकाश। साजोत – ज्योतिर्मय, प्रकाशपूर्ण, प्रकाशसहित।

३७ मुनिंद्रेस – महर्षि, मुनीश। जोगेस – योगीश। कव्वेस – कवीश। भुजगेस – शेषनाग। देवेस – इन्द्र। स्रब्बेस – सर्व, सब। भेळा – सहित।

विदेह[1] प्रतंग्या कहै एम वाकं[2] ।
पुत्री जो वरै[3] सोज ताणै पिनाक ॥ ३७

लगे बाणहूं आद[4] आयौ लकेसू ।
खपे वीस हाथांज धानख खेसू ।
हलै हेक राई न को स्रम्म[5] होता ।
जती जीव चालै न ज्यू बांम जोतां ॥ ३८

तरै वाण बादे गयो देखि तासं ।
सुराराज झल्ले न हल्ले सरास ।
खसे दैत देवा दुवां पाण खूटा ।
तरै भूप दूजांतणा जोम तूटा ॥ ३९

जिकै वार बोले वडा पात जद्द ।
वडा वंस वाखांण हद्द विहद्दं[6] ।
छुटै अम्रताधार[7] अप्पार[8] छंद ।
चवै वस[9] वाखाण[10] वे भांण चदं ॥ ४०

जिकै वस[11] दाता हुवा सूर जेता ।
तिकै व्रद्द[12] बोलै सुणै भूप तेता ।
उभै वातरौ पात दाखै अहांचौ ।
खत्री ध्रम्म छाडौ क धानख[13] खाचौ ॥ ४१

---

१ ग विदेह । २ ग वांक । ३ ग वरै । ४ ख. आदि । ग वादि । घ. वादि । ५ ख ग घ श्रम । ६ ग विद्द । ७ ख. ग घ अमृतावार । ८ ख अपार । ग घ आपार । ९ ग. वस । १० ग वाखांण । ११ ग वंस । १२ ख व्रद । ग व्रिद्द । घ. व्रिद्द। १३ ख ग. घ धानंक । -

---

३७ प्रतग्या – प्रतिज्ञा । वाक – वाणी । पिनाक – शिव-धनुप ।

३८ आद – आदि । खपे – यत्न करके । धानख – धनुप । खेसूं – खींचा । स्रम्म – यत्न । जती – सयमी जितेन्द्रिय, तपस्वी, यति । बाम – स्त्री ।

३९ तरै – तव । तासं – उसको । सुराराज – इन्द्र । झल्ले – पकडा । हल्ले – हिला । सरास – शरासन = धनुप । खसे – प्रयत्न किया । पांण – शक्ति । खूटा – समाप्त हुआ, नष्ट हुआ । जोम – जोश, शक्ति, बल ।

४० पात – कवि । जद्द – जब । वाखांण – यश । हद्द-विहद्दं – अपार, असीम । चवै – कहते हैं । भाण – सूर्य । चद – चद्र ।

४१. व्रद्द – विरुद, यश । अहांचौ – शीघ्रता । छाडौ – छोडदो । क – या, अथवा ।

सुणे भूप ऐ वात[1] ऊठे सतेज ।
अचां पाण कोमंड झालै अजेज ।
ततै रोस[2] टिल्ला[3] करै गेंद तेही ।
जु मस्सै[4] न कोमड[5] ध्रू ग्यांन जेही ॥ ४२
जकै[6] भूप दीसै महासूर जाता ।
ओपै नार[7] जेहा जिकै फेर आता ।
दसा एम राजा जनकेस देखै ।
प्रतग्या धरी आप सो वात पेखै ॥ ४३
हुई भोम[8] निव्बीज[9] दाखै हुकम्मं ।
कवारो रही कन्यका लेख क्रम्म[10] ।
सुणे एम बोले जती बाण[11] साची ।
कहीजे नहीं राम ह्वै ताम काची ॥ ४४
व्रहम्मड[12] कोटेक जो रोमवास ।
स तौ जोवतां जेणि केतौ सरास ।
एको राम रौ दास जोरै अपारै ।
धरा सात दीपावती सेस धारै ॥ ४५
जोवौ दूसरौ दास कूरम्म[13] जेहौ ।
इळा सेससूधी धरै पीठ[14] एहौ ।

---

१ ग वात । २ ख. ग. रोसि । ३ ख ग घ. टिला । ४ ख ग जुम्म सैन । ५ ख कौमड । ग. कोदंड । ६ ख घ जिके । ७ ख ग घ नारि । ८ ख ग घ भोमि । ९ ख ग. नृवीर । घ निरवीर । १० ख ग क्रम । ११ ग. बांणि । घ वाणि । १२ ख. व्रहमड । ग घ व्रहमड । १३ ख. ग कूरम । १४ ख ग. घ पीठि ।

---

४२ अचा – हाथ । पांण – वल । कोमड – धनुष । अजेज – शीघ्र । मस्सै – टससे मस होना । ध्रू (ध्रुव) ध्रुव । जेही – जैसा ।

४३ नार – नारी, स्त्री । जनकेस – राजा जनक । प्रतंग्या – प्रतिज्ञा । पेखै – देखता है ।

४४ भोम – भूमि । निव्बीज – वीजशून्य । दाखै – कहता है । जती – यति, लक्ष्मण । वांण – वाणी, शब्द ।

४५ व्रहम्मंड – व्रह्माण्ड । जेणि – जिस । सरासं – शरासनः, धनुप । धरा – भूमि । दीपावती – वह जिस पर द्वीप हो । सेस – शेषनाग । सेससूधी – शेषनाग सहित ।

४६. इळा – पृथ्वी । एहौ – ऐसा ।

पांणे तांणसी राम आराम पावौ ।
मिथल्लेस[१] धानख[२] वेगौ[३] मगावौ ॥ ४६
मख ग्रेह पैठे करै भेख मल्लां ।
हमाला लखां आणियौ[४] नीठ हल्ला ।
हरी वाळ[५] चमाट जेही चहोडै ।
तमासा ज्युही[६] खाचि धानख[७] तोडै ॥ ४७
सजी तूटते बूव एही सरस्स[८] ।
पहाडा सुणी घोर वद्री परस्स ।
प्रंजा राज आणद पूगी परखा[९] ।
वधै देवता कीध फूला वरिक्खा[१०] ॥ ४८
कवी[११] छंद बोलै प्रभू अग्रकारी ।
धणी कंठि सीता वरम्माळ[१२] धारी ।
तेडे दूत अज्जोधिया[१३] जाय ताम ।
रटै बाण[१४] जीता जिग सीत राम ॥ ४९
रटैत[१५] बधाई ब्रवै दासरत्थ ।
उधम्मेस[१६] औधेस धन्नेस अत्थ ।

---

१ ख ग घ मिथलेस । २ ख ग घ धानक । ३ ख वेगो । ग घ वेगौ । ४ ख ग आणीयौ । ५ ग घ पाल । ६ ख ग जही । घ जहीं । ७ ख धानष । ग धानष । घ धानक । ८ ख ग सरस । ९ ख परीषा । ग परिषा । १० ख वरिषा । ग वरिषा । ११ ख. कवि । १२ ख घ. वरमाल । ग वरमाल । १३ ख ग. अजोधीया । १४ ख वाणि । ग वाणि । घ वाणि । १५ ख रटेता । १६ ख ग घ उधमेस ।

---

४६ पाणे – पाणि, हाथ । आराम पावो – चैन रखो । मिथल्लेस – राजा जनक । धानख – धनुष । वेगौ – शीघ्र ।

४७ मखं – यज्ञ । वाळ – केस । चमाट – चिमटी । चहोडै – उखाड देता है ।

४८. बूव – आवाज, ध्वनि । एही – ऐसी । सरस्स – समान । कीध – की । वरिक्खा – वर्षा ।

४९ धणी – पति । कंठि – कंठ मे । वरम्माळ – वर-माला । तेडे – बुलाया । वाण – वाणी । जिग – यज्ञ ।

५०. रटैतं – कहने पर । बधाई – खुशखबर । ब्रवै – कहता है । उधम्मेस – दान आदिमे द्रव्य लुटाना । औधेस – राजा दशरथ । धन्नेस – कुबेर । अत्थ – अर्थ, धन, द्रव्य ।

सभ्कै आवळाभूळ जानी सुरंगा ।
चढै दासरत्थं बजैं राग चगा[1] ।। ५०
हय रत्थ गैंजूह पायक्क हल्लैं ।
इळा जाणि सामद्र साते उभ्फल्लै ।
जिकै वार[2] स्रीराम[3] री जान जोई ।
कहै ओपमा पार पावै न कोई ।। ५१
अवद्धेस[4] राजेस जानेस आया ।
विदेहेस[5] साम्हैस आणे वधाया[6] ।
कुवारा विन्है[7] आय जूहार कीधा ।
लगे प्रीत[8] छाती पिता भीडि[9] लीधा ।। ५२
सत्यानद[10] नाळेर दीधा समत्थं ।
हुकम्म[11] पिता धारिया[12] राम हत्थ ।
भरत्थ[13] सत्रंघरणा सेस सुभेवै ।
त्रिएहै भ्रात नाळेर वदै[14] सत्रेवै ।। ५३

---

१ ख वगा। २ ग वार। ३ ख ग घ श्रीरांम। ४ ख अवधेस। ग घ अवःधेस। ५ ग बिदेहेस। ६ ग. बधाया। ७ ख घ विन्हे। ८ ख ग घ. प्रीति। ९ ख. भीड़। १० ख ग सत्याणद। ११ ख. ग हुकम। १२ ख. ग धारीया। १३ ख. ग. भरथं। १४ ख. वादै। ग बादे। घ वादे।

---

५० आवळाभूळ – सुसज्जित, पूर्ण सजा-धजा हुआ। जानी – वराती। सुरंगा – सुदर। चगा – श्रेष्ठ।

५१ हय – घोडा। गैंजूह – हस्ती दल। पायक्क – पैदल। जाणि – मानो। उभ्फल्लै – मर्यादासे बाहर हुआ हो, उमडे हुए हो। जान – बरात। जोई – देखी। ओपमा – उपमा।

५२. अवद्धेस – अयोध्यापति, दशरथ। राजेस – राजा। जानेस – वरात। विदेहेस – राजा जनक। साम्हैस – सम्मुख। आणे – आकर। वधाया – स्वागत किया। बिन्है – दोनो। जूहार – अभिवादन। कीधा – किये। लीधा – लिए।

५३ सत्यानद – राजा जनकके कुल-पुरोहित। समत्थ – समर्थ। भरत्थ – भरत। सत्रघणा – शत्रुघ्न। सेस – लक्ष्मण।

वर[1] बेहडा वाद[2] सोभा वणाई[3] ।
वदै[4] तोरणा रंग साई वधाई ।
रचै कुभ सोव्रन्न[5] थभा अरेह ।
वणै आद्रवै वस[6] सोव्रन्न वेह[7] ॥ ५४

चहूं भ्रात चौरी चढै नेह चगा ।
उचारै दुजा देव वाणी[8] उमगा ।
ज्वाळा होम आहूति सीची सजग्गी[9] ।
लखै वेद[10] वांणी[11] बधेवाद[12] लग्गी[13] ॥ ५५

वणै[14] चत्र[15] धाए रचै पत्तिव्रत्ता ।
सिया[16] मडवी[17] उरमिळा[18] सत्यक्रत्ता[19] ।
विधं[20] वेद[21] मत्रादि कीधा विवाह[22] ।
अखै जोड[23] स्रव्वेस[24] दाखै उछाह ॥ ५६

---

१ ग बर। २ ग वादि। ३ ग वणाई। ४ ग वदे। ५ ख सोव्रन। ग. सोव्र न। घ सोव्रंन। ६ ग. वस। ७ ग वेह। ८ ख घ वाणी। ९ ख. ग सजगी। १० ग वेद। ११ ख घ वाणी। १२ ख घ वदेवाद। ग वदेवाद। १३ ख ग. लगी। १४ ख ग. घ वणे। १५ ख चक्र। घ क्षत्र। १६ ख. ग श्रीया। घ श्रिया। १७ घ माडवी। १८ ख ग. उर्मला। घ उर्मला। १९ ग. घ सत्यक्रुता। २० ग विधं। २१ ग. वेद। २२ ग विवाह। २३ ख ग घ जाड़। २४ ख श्रवेस। ग श्रवेस। घ स्रव्वैस।

---

५४ वेहडा – शिर पर जलसे भरा रखा जाने वाला जल-पात्रके ऊपर दूसरा जल-पात्र। तोरणा – विवाह अवसर पर कन्याके पिताके भवनके मुख्य द्वार पर लगाया जाने वाला काष्ठकी खपच्चियोका बना एक मागलिक उपकरण जिस पर काष्ठकी वनी चिडियाए अथवा तोते बने होते है। यह रग विरगे रगोंसे सुसज्जित किया जाता है। विवाहके समय वरात लेकर दूल्हा जब कन्याके पिताके घर आता है तब मुख्य द्वार इस तोरणको वृक्षादिकी हरी टहनी ने स्पर्श करता है। कुभ – जल-पात्र, कलश। सोव्रन्न – स्वर्ण, सोना। वेह – विवाह-मडपके चारो ओर सोने, चादी अथवा मिट्टीके रखे जाने वाले कलश या वर्तन। चौंरी – विवाह मडपका यज्ञ-कुण्ड।

५६ सिया – सीता। मंडवी – राजा जनकके भाई कुशध्वजकी कन्या जो भरतको व्याही गई थी, माडवी। उरमिला – सीताकी छोटी बहिन जो लक्ष्मण को व्याही गई थी, उर्मिला। सत्यक्रत्ता – राजा जनकके भाई कुशध्वजकी कन्या जो शत्रुघ्नको व्याही गई थी, श्रुतकीर्ति। कीधा – किए। अखै – अक्षय। जोड – जोडी। स्रव्वेस – (सर्व + ईश) = सर्वेश। दाखै – कहते हैं।

कवी क्रीत दाखै जिता रोर कापै ।
अनेकां कुमेरा जिता माल आपै[1] ।
अपै[2] डायजै भूप अन्नेक अत्थं ।
राजा औधि पथं चढ़ै दासरत्थ[3] ।। ५७

जकै[4] वाररी[5] औधि[6] सोभा जगांणी ।
ब्रहम[7] सारदा होत[8] जाये वखाणो[9] ।
जनकेस[10] बोले[11] वळे[12] जान आए[13] ।
उठै धोम रूपी दुजांराय[14] आए ।। ५८

चखा झाळ तूटै मुखा झाळ चडा ।
परस्सौ फरस्सी भ्रमावै प्रचडा ।
वदै रामहू रांम वायक[15] विक्ख[16] ।
तिकै रामरा बांण जांणै सतिक्ख[17] ।। ५९

जुनौ[18] भांजि कोमड तैं भूप जीता ।
सुरा[19] मोड[20] बागौ[21] जता[22] व्याहि[23] सीता ।

---

१ ख ओपे । २ ग घ. आपै । ३ ख ग. रथ । ४ ख ग घ जिकै । ५ ग बाररी । ६ ख ग जोति । घ ज्योति । ७ ग ब्रह्मा । घ. ब्रह्मा । ८ ख हूत । ग. घ हूत । ९ ग. बषाणी । १० ख जनवेस । ११ ख. वोले । घ बोलै । १२ ख घ वले । १३ ग घ जाए । १४ ख ग घ दुजांराज । १५ ख घ. वायक्क । ग. बायक्क । १६ ख विष्य । ग विष्य । घ विष्ष । १७ ख ग. घ सतिष्य । १८ ख ग जूनौ । घ जू नो । १९ ख. घ सूरां । ग. सरा । २० ग घ. मौड़ । २१ ख घ वागौ । २२ ख ग घ जतू । २३ ग व्याहि ।

---

५७ क्रीत – कीर्ति । रोर – निर्धनता, दारिद्रय । कापै – नाश करते है । कुमेरा – कुवेरो । आपै – देते है । अपै – देता है । डायजै – दहेजमे । अन्नेक – अनेक । अत्थ – अर्थ, धन । औधि – अयोध्या ।

५८ जकै – जिस । वाररी – समयकी । जनकेस – राजा जनक । धोम – अग्नि, आग । दुजाराय – परशुराम ।

५९. चखा – नेत्रो । झाळ – ज्वाला, अग्नि । चंडा – भयकर । परस्सौ – परशुराम । फरस्सी – परशु । भ्रमावै – घुमाते हैं । वदै – कहते है । वायक – वाक्य । विक्ख – विष । सतिक्ख – अति तीक्ष्ण ।

६० जुनौ – पुराना, प्राचीन । भाजि – तोड कर । कोमंड – कोदण्ड, धनुष । मोड – मौर । वागौ – पहनावा, पोशाक ।

मुखे वास आवै अजे दूध मारा ।
धुबै[1] खेल दीठा नही फूलधारा ।। ६०
ज तू राम वाळक्क[2] मोनू न जाणै ।
पिता ताहरौ सूज[3] आछै पिछाणै ।
पिता ताहरौ[4] माहरौ साच पायौ ।
इसौ[5] पावसी तूज[6] औ जोग आयौ[7] ।। ६१
खत्री मार[8] इक्कीस मै वार[9] खोए[10] ।
जिकै देव नागा नरां खेल जोए[11] ।
लगाऊ सुरा वायका चोट लागै ।
जती बोलियौ[12] क्रोध पावक्क जागे ।। ६२
इळा[13] खत्रिया[14] आप लीधी अछेहा ।
जरै जोध हूता नही राम जेहा ।
खारा वैण बोले किसू माण खोवौ ।
जुड़े आज बवीसमी वार[15] जोवौ ।। ६३
जती दोय[16] जूटै इसी राय जांणै ।
प्रिथीनाथ कीधौ विना[17] जोड-पाणै[18] ।

---

१ ख धूवे । ग धवे । घ धुवे । २ ख बालक । ग. बाल्लक । ३ ख सूझ । ग घ मूझ । ४ ग घ. ताहरं । ५ ख ग घ यसौ । ६ ख ग तूज । ७ ख घ आयो । ८ ख ग घ वार । ९ ख ग घ. मारि । १० ख षाऐ । ग षोऐ । ११ ख ग. जोऐ । १२ ख वोलीयो । ग बोलीयौ । १३ ग. घ यला । १४ ख ग षत्रीया । १५ ग बार । १६ ख घ जोइ । १७ ख घ. विनौ । ग बिनौ । १८ ख ग घ जोडि ।

---

६० धुवै – ध्रुव, निश्चय ही, क्रोधमे होता हुआ । फूलधारा – तलवारो, शस्त्रो ।

६१ ताहरौ – तेरा । पिछाणै – जानता है । माहरौ – मेरा । औ – यह । जोग – अवसर, मौका ।

६२ जती – लक्ष्मण । पावक्क – अग्नि, आग ।

६३ इळा – पृथ्वी । जरै – जब । जोध – योद्धा । हूंता – थे । जेहा – जैसे । खारा – कटु । वैण – वचन । माण – मान, प्रतिष्ठा । खोवौ – नाश करते हो । वार – समय । जोवौ – देखो ।

५४ विना – विनय । जोड-पांणै – हाथ जोडे हुए ।

विनां कीजतां ब्रह्म[1] राजा वकारै[2] ।
धरा तूज[3] ही डीकरां ग्रब्ब[4] धारै ॥ ६४
गिणै तुच्छ[5] मात्रे[6] पुरा ग्रब्ब[7] मोडै[8] ।
तिकै खेचि भूतेस कोमंड तोड़ै ।
तरा[9] राम बोलै इसौ[10] वैण तीजौ ।
खिमा भूप बोलीजता काइ[11] खीजौ ॥ ६५
अवध्धेस[12] राजा प्रभू ध्रंम[13] असी ।
वडी रीत चालै सदा भांण-वसी[14] ।
लड़ै काळ चाळां गहे वाद[15] लागै ।
उभै हाथ जोडै गऊ विप्र[16] आगै ॥ ६६
वडा[17] वंसरी[18] रीत[19] राजा विचारै[20] ।
जिकै वासतै ब्रह्म[21] तो वैण जारै ।
महासूर धानख धानंख मेळौ ।
भली भात हूता[22] पछै[23] लोह भेळौ ॥ ६७
हरी मेल[24] धानख[25] धानख हाथे ।
सकौ[26] पाण खैंचे[27] लियौ[28] हेक साथे ।

---

१ ख. व्रह्म । ग घ. व्रह्म । २ ग घ वकारै । ३ ख. घ तूझ । ग तुझ । ४ ख ग ग्रछ । ५ ख ग तूछ । ६ ग मोत्रे । ७ ख ग्रव । ग ग्रव । ८ ग घ गोडे । ९ ख ग घ तरै । १० ख ग घ यसौ । ११ ख ग घ. काय । १२ ख. अव धेस । ग घ. अववेस । १३ ख ग ध्रम । घ ध्रम्म । १४ ग वसी । १५ ख घ वादि । ग वादि । १६ ग विप्र । १७ ग. वडा । १८ ग वस । १९ ग. रीत्ति । २० ग. विचारै । २१ ग. घ व्रह्म । २२ ख ग घ भली भाति । २३ ख ग घ पछौ । २४ ख ग. घ मेलि । २५ ग घ धानक । ख धानक । २६ ख ग घ. सको । २७ ख. खेचे । २८ ख. ग. लीयो ।

---

६४ डीकरा – पुत्रो । ग्रब्ब – गर्व ।

६५ भूतेस – महादेव । कोमंड – कोदण्ड, धनुष । तरा – तव । इसौ – ऐसा । वैण – वचन । खिमा – क्षमा । काइ – क्यो । खीजौ – कोप करते हो ।

६६ ध्रंम – धर्म । भांण-व्रसी – सूर्यवशी । काळ-चाळां – युद्धो । उभै – दोनो । गऊ – गौ, गाय । विप्र – व्राह्मण । आगै – अगाडी ।

६७ जिकै – जिस । वासतै – लिए । व्रह्म – व्राह्मण । वैण – वचन । जारै – सहन किये । धानख – धनुप ।
सकौ – सव । पाण – पाणि, हाथ, शक्ति, बल ।

मदोमत्त हाथी हुवै[1] हीण मद्दं[2] ।
जिसौ रैंणकापुत्र दीसंत जद्दं[3] ॥ ६८
दुजांराज ज्यारा धरे ध्यांन देखै ।
प्रभू सच्चिदानंद[4] स्रीरांम पेखै ।
दुर्ज[5] दीन ह्वै आसरीवाद दीधौ ।
क्रपानाथ[6] वदै विदा व्रह्म कीधौ ॥ ६९
इसा[7] रांमरौ ग्रव्व[8] हेला उतारै ।
पिता साथि छै[9] औधि सांमा[10] पधारै ।
मिळे रग उच्छाह[11] आणद[12] मेळा ।
भणै नृत्य[13] संगीतके नृत्त[14] भेळा ॥ ७०
वरं[15] नारिके कुभ नीला वदावै[16] ।
गिरा प्रेम बोलै हसै प्रेम गावै ।
धजा[17] तोरणा सोहिय धांमधामं ।
रळी रंग वाधाय जै सीत रांमं ॥ ७१
साईवान चिग्गा[18] जरी तार सोहै ।
मडे झालरी मोतियां हंस मोहै[19] ।

---

१ ख हुवो। २ ख. ग मद। घ मद्दं। ३ ख घ. जद्दं। ग दद्द। ४ ख. ग घ सच्चतानंद। ५ ख ग. घ धजं। ६ ख. ग. घ क्रिपानाथ। ७ ख ग घ. यसा। ८ ग प्रव। ९ ख ग घ ह्वै। १० ख ग. घ. सांम्हा। ११ ख. उछाह। ग उत्छाह। १२ ख आनंद। १३ ख ग घ गीत। १४ ख ग. घ. नृत्य। १५ ग वर। १६ ख. ग. घ. वदावै। १७ ख ग घ. धजं। १८ ख. ग. चिगां। १९ ख ग घ. मडे मोतिया झालरी हंस मोहै।

---

६८ मदोमत्त – मदोन्मत्त। मद्दं – मद। रैंणकापुत्र – परशुराम। दीसत – दिखाई देता है। जद्दं – जव।

६९. दुजाराज – द्विजराज। ज्यारा – जिनके। पेखै – देखते हैं। दुर्ज – परशुराम। आसरीवाद – आशीर्वाद। दीधौ – दिया। कीधौ – किया।

७० ग्रव्व – गर्व। हेला – क्रीडा, लीला। औधि – अयोध्या। सांमा – सम्मुख, सामने। नृत्त – नाच।

७१ वरं – श्रेष्ठ। कुभ – कलश, घट। वंदावै – वदना कराना। गिरा – वाणी। धजा – ध्वजाएँ। सोहियं – शोभा देती हैं। धांम-धांमं – भवन-भवन। रळी – आनद, हर्ष। रंग – प्रेम।

७२ साईवांन – मकानका छज्जा, छाजन, साइवान। चिग्गां – बांस वा सरकडोकी तीलियोंसे बना हुआ झझरीदार परदा, चिक, चिलमन।

जडी हीर पन्नां नगां हेम जाळी ।
सझै चित्र कारीगरां चित्रसाळी ॥ ७२
तई नैर ओछाडियौं[1] हेम तारां ।
हुवा भाण उद्दोत जाणै हजारां ।
सझै गायणी सोळ स्रिगार[2] साजा ।
वजावै छहै[3] तीस आणद वाजा ॥ ७३
छहै तीस ही आभ्रणां धारि साजै[4] ।
लखे रूप मैणगना रूप लाजै ।
सझै राम आमास रभा सराहै ।
चिता[5] सारदा जास तालीम चाहै ॥ ७४
भिदै जाळियां[6] रूप सोभा भळक्की[7] ।
वणै वीजळी जाण आभै वळक्की[8] ।
मदोमत्त गौखा चढ़ी हंस मोहै ।
सची इदरा मिंदरां जाण[9] सोहै ॥ ७५
हरी केसरी बोळ[10] कुकू[11] हळद्दं ।
जठै मोतिया धार वूठै जळद्द[12] ।

---

१ ख ग ओछाडीयौं। २ ख घ. शृगार। ग. शृगार। ३ ख घ छहतीस। ४ ख. ग. घ. छाजै। ५ ख ग. घ चित। ६ ख ग जालीयां। ७ ग भलकी। ८ ख. ग वल्लकी। ९ ख ग घ. जाणि। १० ख. ग घ छौल। ११ ख ग घ. कूकू। १२ ख. ग जल्लद।

---

७२ हीर – हीरा। हेम – स्वर्ण, सोना।

७३. तई – वह। नैर – नगर। जाणै – मानो। गायणी – गाने वाली।

७४ आभ्रणां – आभरणो। मैणगना – कामदेवकी स्त्री, रति। रांम – आराम। आंमास – आवास, भवन। रभा – अप्सरा। सराहै – प्रशसा करती है। जास – जिसकी। तालीम – शिक्षा।

७५. सोभा – काति, दीप्ति। भळक्की – चमकी, दमकी। जांण – मानो, जैसे। आभै – आकाशमे। वळक्की – चमकी, दमकी। मदोमत्त – मदोन्मत्त। हस – प्राण। मोहै – मोहित करती है। सची – इन्द्राणी। इदरां – इन्द्रके। मिंदरा – मदिरोंमे।

७६ बोळ – रगमे डुवोनेकी क्रिया या डुवोना। वूठै – वरसता है। जळद्दं – वादल।

इसा रग उच्छाहसू[1] राम आया ।
बधे मात कौसल्य आए वधाया ॥ ७६
सुमंत्रा[2] अनै केकई मात साई ।
भली भात[3] वध्धाविया[4] च्यार भाई ।
वहू[5] च्यार[6] पगां लगै जेण वारै ।
सुमत्रा[7] अनै केकई कोसल्यारै[8] ॥ ७७
हसै दीध आसीस आणंद हूती ।
अखै - भाग सोभाग हो पुत्रवती ।
जुवा खेल जीता हथोहत्थ[9] जूटा ।
खुभै छेहडा[10] तेहड़ा तांम खूटा ॥ ७८
जडाऊ नगां मिदरां हेम जाळी ।
सभै सेज साहेलियां चित्रसाळी ।
वणै ऊजळी सेज एहो विराजै[11] ।
लखै खीर सामदरा फेण लाजै ॥ ७९
जगाजोत[12] हीरा मणी दीप जग्गै[13] ।
लखा भात[14] तो गध सामीर लग्गै ।

---

१ ख ग उछाह । २ ख ग सुम्यत्रा । घ सुम्यता । ३ ख ग. घ भांति । ४ ख वधावीया । ग वधावीया । घ वद्धाविया । ५ ग घ वहू । ६ ख ग घ च्यारि । ७ ख. ग घ सुमित्रा । ८ ख ग. घ कोसला । ९ ग हथोहथ । १० घ नेहड़ा । ११ ग विराजै । १२ ख ग घ. जोति । १३ ख जगे । १४ ख ग ध भांति ।

---

७७ अनै – और । वध्धाविया – स्वागत किया । वहू – वधू । जेण – जिस । वारै – समय ।

७८. अखै-भाग – अक्षय-भाग । जुवा – विवाहके पश्चात् दूल्हा व दुलहिनको जुवाका खेल खिलाया जाता है जिसमे छाछमें से कौडी, मुद्रिका व छुहारा आदि डाल कर उन्हे मुद्रिका तलाश करनेको कहा जाता है । छेहड़ा – दूल्हा दुलहिनका गठ-बधन । तेहड़ा – वैसे । तांम – उनके । खूटा – छूटे ।

७९ सभै – तैयार करती है, तैयार करते हैं । सेज – शय्या, पलग । साहेलिया – सखियाँ चित्रसाळी – चित्रशाला । विराजै – शोभा देती है ।

८०. सामीर – समीर, हवा, पवन ।

चियारै[1] वसै मदरां भ्रात च्यारै ।
प्रिया[2] च्यार[3] आए जठै हेत प्यारै ॥ ८०
लछी रूप सीता प्रभू राम लीला ।
कवीपुत्र दाखै नही जेण कीला[4] ।
अगै[5] बाळमीका[6] जिसा गाय आया ।
गुणां तास सपेखि नूदोख[7] गाया ॥ ८१
किसा[8] दीह आणद-विन्नोद कीधा ।
लहै भूप आग्या[9] वनोवास लीधा ।
जती[10] राम साथै सिया[11] बाम[12] जोड़ै ।
तिका नाम लेतां अघा ओघ तोड़ै ॥ ८२
मुकट्टा[13] जटां बाधिया हस मोहै ।
सुतभूप सन्यासियां रूप सोहै ।
राजा देवलोकं वसै दासरत्थ ।
कृपानाथ[14] ऐसा सुणे भेद कत्थ ॥ ८३
लहे ग्यान राजां वडा रीति लीधी ।
क्रिया वेद[15] माहै कही जेम कीधी ।

---

१ ख ग चीयारे। २ ख ग. प्रीया। ३ ख ग घ. च्यारि। ४ ख ग. घ. क्रीला। ५ ख आगै। ६ ख घ. वालमीकां। ७ ख ग घ नूदोष। ८ ख. ग घ किता। ९ ख ग. अग्या। १० ख जति। ११ ख ग श्रीया। घ श्रिया। १२ ग बाम। १३ ख ग मुकटा। १४ ग घ कृपानाथ। १५ ग बेद।

---

८० चियारै – चारो।

८१ लछी – लक्ष्मी। दाखै – कहते है। जेण – जिस। कीला – क्रीडा। अगै – पहिले। गुणा – यश, कीर्ति, वर्णन करता हू। तास – उस। सपेखि – सम्प्रेक्ष्य, देख कर। नूदोख – निर्दोष।

८२. आणद-विन्नोद – आनद-विनोद। कीधा – किये। वनोवास – वनवास। लीधा – लिये। जती – लक्ष्मण। बाम – वाम = वामा = स्त्री, पत्नी। जोड़ै – साथ। अघा – पापो। ओघ – समूह। तोड़ै – नाश करता है।

८३ हस – प्राण, मन। सोहै – शोभा देता है। कत्थ – कथा, वृत्तात।

८४ लीधी – ली। क्रिया – अन्त्येष्टि सस्कार। जेम – जैसे। कीधी – की।

भरत्थ विदा[1] कीध दे सीख भारी ।
धरा[2] चित्रकोटां[3] वसै[4] चापधारी ॥ ८४
हले चित्रकोटा तजे तांम हेळा ।
विचै[5] व्याध[6] आए मिळै जेण वेळा ।
हळाबोळ क्रोधाळ दैतेस हच्छ[7] ।
अणी सूळमे वाधिया[8] वाघ[9] अच्छ[10] ॥ ८५
चखा चोळ मे रग[11] कोदड[12] चाढे ।
कसे वांण हेकौ बहै प्रांण काढ़े ।
तजे राकसी देह[13] व्है दिव्यतास ।
बधै देवलोक किया जेण[14] तास ॥ ८६
वना[15] दंडकारा विचे[16] पचवट्टी[17] ।
जठै धार गोदावरी आय जट्टी[18] ।
तठै[19] भ्रिग्ग[20] मारै भखै मारि तारै ।
धुरा तात अग्या तणौ नेम धारै ॥ ८७
हजारां दसां हाथिया[21] पाण हाली ।
कराळी महा राकसी घोर काळी ।

---

१ ग विदा। २ ख ग. घ धुरा। ३ ख. ग घ. चित्रकोटां। ४ ग वसे। ५ ग विचै। ६ ख. ग घ व्याधि। ७ ख. ग हछं। ८ ख घ. वेधिया। ग बेधिया। ९ ग. वाघ। १० ख ग अछं। ११ ख ग. घ राम। १२ ख. ग घ कोमंड। १३ ख देहकै। ग. देहक्कै। १४ ख. ग घ. जेणि। १५ ख. घ वन। ग वन। १६ ख. घ विचै। ग विचै। १७ ग पचवटी। १८ ग जटी। १९ ख. ग. जठै। २० ख ग. मृगा। २१ ख ग हाथीया।

---

८४ विदा – प्रस्थान, रवाना। कीध – किया। धरा – भूमि। चित्रकोटा – चित्रकूट।
८५ चापधारी – धनुषधारी। हेळा – कठिनतासे, खेल। विचै – बीचमे, मध्यमे। हळाबोळ – अत्यधिक। क्रोधाळ – क्रुद्ध, क्रोधी। दैतेस – राक्षस।
८६. चखा – नेत्रो। चोळ – लाल। रंग – युद्ध। कोदड – धनुष। कसे वाण – प्रत्यचा पर वाण चढाया। राकसी – राक्षसी। तासं – उस, वह ग्राम।
८७. वना दंडकारा – दण्डकारण्य। जठै – जहा। तठै – वहा। भ्रिग्ग – मृग, हरिण। धुरा – दृढतासे। अग्या – आज्ञा।
८८ राकमी – राक्षसी। घोर – भयकर।

जका सूपनेखा कटा फूल जाई ।
अवध्धेसरा[1] रूपसू रीझ[2] आई ।। ८८
तरै भ्रात बेवै[3] हसे दीध ताळी[4] ।
भखेवा कजे राकसी सीत भाळी ।
ग्रहे बाधसी राकसी सीत ग्रासा ।
निजोडे जती जेणरा कान नासा ।। ८९
कळाहीण ह्वै भाजि कूके कहोकी ।
चले जाय कूकी जठै रांण चौकी ।
मुणे कूक हज्जार[5] जे जैत मेल्है[6] ।
पनंगेस बांणां जती मारि पेलै ।। ९०
खरा दूखरा त्रस्सरा[7] दैत खीजे ।
भिडेवा[8] कजे आविया[9] क्रोध भीजे[10] ।
सारा[11] ओसरा[12] दीजता जूझ साके ।
चढै रांम नागेसहू ताम चाकै ।। ९१

---

१ ख ग अवधेस । २ घ. रीभि । ग. रिभि । ३ ख वेवेह । ४ ख. ताली । ५ ख ग हजार । ६ ख ग घ. मेले । ७ ख. ग. त्रसरा । ८ ग भिडेबा । ९ ख ग आवीया । १० ख. ग घ भीजे । ११ ख ग घ. सरा । १२ ख. ग वोसरा । घ वीसरा ।

---

८८ जका – वह । सूपनेखा – शूर्पणखा नामक राक्षसी जो रावणकी बहन थी । रीझ – मोहित हो कर ।

८९ तरै – तब । बेवै – दोनो । दीध – दी, दिया । भखेवा – भक्षण । कजे – लिए । सीत – सीता । भाळी – देखी । निजोडे – दूर किए, काट डाले । जती – लक्ष्मण । जेणरा – जिसके । नासा – नाक ।

९० कळाहीण – शक्तिहीन । भाजि – दौड कर । कूके – त्राहिं-त्राहि की पुकार की । मुणे – कही । कूक – पुकार । पनगेस – नाग, लक्ष्मण । पेलै – पराजित किये ।

९१ खरा – रावण तथा शूर्पणखाका भाई खर नामक राक्षस । दूखरा – दूषण नामक राक्षस जो रावणका भाई था । त्रस्सरा – त्रिशिरा नामक रावणका एक भाई जो खर दूषणके साथ दण्डकारण्यमे रहता था । दैत – दैत्य । खीजे – कोप किया । भिड़ेवा – भिडनेके । कजे – लिये । क्रोध भीजे – क्रोधपूर्ण । जूझ – युद्ध ।

तमासा जेही[१] सेस ओधेस[२] तारां[३] ।
हणे सायका बार[४] बेवे[५] हजारां ।
चवद्दै[६] हजारा किया जग[७] चौड़ै[८] ।
डळा ग्रीध गाळा[९] लिये[१०] प्रेत[११] दौड़ै[१२] ॥ ९२

लखे[१३] राकसी वधवा[१४] ज्वाळ लागी ।
भरे नैण[१५] लका गई[१६] लाज भागी ।
उभै भेख सन्यासिया[१७] दिठा[१८] अखू ता ।
हुई[१९] वात[२०] सारी कही रांणहूता ॥ ९३

सत्री हेक साथै जिया[२१] रूप साजै ।
लखै[२२] रूप कामंगना दिव्य[२३] लाजै ।
मुणू[२४] और कासू[२५] प्रभू देखि[२६] मोहै ।
सखी[२७] उरवसी[२८] दासिका रूप सोहै ॥ ९४

वडै[२९] रूप वाही जकै[३०] लच्छि[३१] बीजो[३२] ।
त्रियह[३३] लोक माही[३४] न को नार[३५] तीजी ।

---

१ ग घ जही। २ ख घ औधेस। ३ ग तारा। ४ ख घ वार। ५ ख वेवै। ग घ वेवै। ६ ग. चवदै। ७ ख ग घ. गज। ८ ख चोडै। ९ घ गालां। १० ख ग लीयै। ११ ख ग घ प्रेम। १२ ख ग. घ दोडै। १३ ख लषे। १४ ख वधवा। १५ ग नेण। १६ ग गइ। १७ ख ग घ संन्यासा। १८ ख ग घ दीठा। १९ ख हुइ। २० ग बात। २१ ख जीया। ग. जीया। २२ घ. लखे। २३ ख ग घ देव्य। २४ ग मुणू। २५ ग कासु। २६ ख. देष। २७ ख. ग घ. सची। २८ उर्वसी। ग उर्वसी। २९ ग. वडे। ३० ख कहै। ग. घ. जकै। ३१ ख. लाछे। ग. लछि। ३२ ख ग बीजी। घ बीजी। ३३ ख. ग. घ त्रिएहे। ३४ ख ग. माहे। घ माहे। ३५ ख ग घ नारि।

---

९२ जेहीं – जैसे। सेस – लक्ष्मण। ओधेस – श्रीराम। हणे – मारे, मार कर। सायकां – तीरो, बाणों। डळा – खड, टुकडा। गाळा – मासपिण्ड।

९३ लखे – देख कर। वधवा – माइया। दिठा – देखे। अखू – कहता हू। ता – तुझको। राणहूता – रावणसे।

९४. कामंगना – कामदेवकी स्त्री, रति। दिव्य – सुदर। लाजै – लज्जित होती है। मुणू – कहू। कासू – क्या, किमसे। सखी – सहेली। उरवसी – उर्वशी नामक अप्सरा। दासिका – दासी, चेट्टी।

९५ वडै – महान। लच्छि – लक्ष्मी। बीजी – दूमरी। त्रियह – स्त्री। न को – न कोई। नार – नारी। तीजी – तीमरी।

सुणे वात[1] मारीच थानं[2] सिधाए[3] ।
उभै दैत[4] मांमो[5] सु भांणेज आए[6] ॥ ६५
जुथा[7] दंडकारा[8] धरे भेख जू जौ[9] ।
दता[10] भेख हेकौ म्रिगा[11] भेख दूजौ ।
छिपा कदळी मे[12] मुनीराण छायौ[13] ।
उठै सोवनी म्रिग्ग[14] मारीच आयौ ॥ ६६
जगाजोत[15] आदीतरी जोत ओपै ।
उभै हीर चांमीरमे[16] स्रग[17] ओपै ।
स्त्रिया[18] देख[19] दाखै[20] प्रभू काज सारौ ।
म्रिगौ[21] नोख[22] रूपी ग्रहौ[23] काय मारौ ॥ ६७
दई दैत्य[24] जाणै[25] इसौ[26] जाब[27] दीधौ ।
कळा म्रिग्घरौ[28] भेख मारीच कीधौ ।
चवै सीत मोनू[29] तुचा[30] एह[31] चाहै[32] ।
वहौ[33] म्रिग्ग[34] मारीचनू बांण बाहै ॥ ६८

---

१ ग वात । २ ख जत्था । ३ ख सिधाये । ग सिधाऐ । ४ घ. दैंत । ५ ख मामौं । ग घ. मामौं । ६ ख आये । ग आऐ । ७ ख ग. घ जुथ । ८ ख. ग दडकार । घ दडकार । ९ ग. जू जो । १० ख. घ दत । ग दत । ११ ख ग घ मृग । १२ ख ग. घ मैं । १३ ग छायो । १४ ख मृग । ग मृघ । घ मृग्घ । १५ ख ग. घ. जगाजोति । १६ ख घ मैं । ग मैं । १७ ख भृग । ग भृग । घ सृग । १८ ख. ग श्रीया । घ श्रिया । १९ ग घ देखि । २० ख घ दाखे । २१ ख ग. घ मृगौ । २२ ख ग घ नौख । २३ ख ग्रही । २४ ख घ. दैंत । ग दैंत । २५ ख जाणें । घ जांणे । २६ ख इसो । २७ ख. जाव । २८ ख. ग मृग । घ मृग्घ । २९ ख मोनुं । ३० ग तूचा । ३१ ग ऐह । ३२ ख ग चाहे । ३३ ख. घ. वहौ । ३४ ख मृग । ग मृघ । घ मृग्घ ।

---

६६ जुथा – यूथो । दडकारा – दण्डकारण्य । जू जौ – पृथक-पृथक । हेकौ – एक । म्रिगा – मृग । दूजौ – दूसरा । कंदळी – एक प्रकारका पौधा जो नदियोंके किनारे पर होता है । मुनीराण – मुनिका वेश धारण किया हुआ रावण । उठै – वहा । सोवनी – स्वर्णका । म्रिग्ग – मृग, हरिण ।

६७ आदीत – रवि, सूर्य । जोत – ज्योति, प्रकाश । दाखै – कहती है । म्रिगौ – मृग । नोख – अद्भुत, विचित्र । काय – या, अथवा ।

६८ दई – देवी । इसौ – ऐसा । जाब – जवाब, उत्तर । दीधौ – दिया । कळा – प्रकार, तरह, भांति । म्रिग्घ – मृग । कीधौ – किया । चवै – कहती है । सीत – सीता । तुचा – त्वचा । एह – यह । चाहै – चाहिए ।

भळावे जती सीत ले चाप भाथै ।
सिकारी हुवा राम मारीच साथै ।
दमक्कै[1] वहै म्रिग्ग[2] ऊडाण देती ।
लखे बाणहू वेधियौं[3] डाण लेती ॥ ९९
पडते जती आव एही पुकारै ।
मह रांम[4] लकेसरै माम मारै ।
त्रिया[5] आकुळै सभळे रांम सद्द ।
जती धाय वैगौ कहै सीत जद्द ॥ १००
दखै भाख ज्यारा जती वस दीता ।
सकौ कत त्रीलोकरौ नाथ सीता ।
व्रहमड[6] कोडेक भाजै वणावै ।
इसौ[7] रांम माता कठै कामि[8] आवै ॥ १०१
अजू लागणा वैण सीता लगाए ।
धरे बाण कोमड नागेस धाए ।
जिकै वार राणै मुनी घात जांणी ।
वदै देवदत्र[9] महा वेद वाणी ॥ १०२
महामगळासे[10] हुती जोगमाया ।
छळी सीत राणै अली रूप छाया ।

---

१ ख दमगै। ग घ दमंकै। २ ग घ मृग। घ मृग्घ। ३ ख वेधीयौं। ग वेधीयों।
४ ख ग घ महाराम। ५ ख ग श्रीया। घ श्रिया। ६ ख घ व्रहैमड। ग व्रहैमंड।
७ ख ग घ यसौ। ८ घ काम। ९ ख ग घ देवदत्तं। १० ख. महामांगला।

---

९९ भळावे – सौंपते हैं। जती – लक्ष्मण। चाप – धनुष। भाथै – तरकश, तूणीर। दमक्कै – चमकता है। ऊडाण – छलाग। डाण – छलाग।

१०० एहौ – ऐसा। मह – मुझको। लकेसरै – रावणके। मांम – मातुल, मामा। त्रिया – सीता। सभळे – सुन कर। सद्द – शब्द। धाय – दौड। वैगौ – शीघ्र। जद्द – जव।

१०१ दखै – कहता हैं। भाख – भाषा वाणी। ज्यारा – जिनके। दीता – आदित्य, सूर्य। व्रहमड – ब्रह्माण्ड। कोडेक – करोडो। भांजै – नाश करता है। वणावै – रचता है।

१०२ अजू – अब भी, अभी और। लागणा – लगने वाले। वैण – वचन। कोमंड – कोदण्ड, धनुष। नागेस – लक्ष्मण। जिकै – जिस। वार – मौका, अवसर। रांणै – रावण।

१०३ महामगळा – पृथ्वी, भूमि, अग्नि। राणै – रावण।

छळे रत्थ[1] चाढ़े नभां[2] माग छूटौ ।
जठै दासरत्था[3] सखा ग्रीध जूटौ ।। १०३
भिड़े रत्थ[4] चाचा नखां भाजि भारौ ।
सुरगौ कियौ[5] राणरौ गात सारौ ।
चपेटां परा झाट पजां चहोड़ै ।
त्रए-सात लकेसरा छत्र तोडै ।। १०४
लडतौ करा वीस जट्टाय लीधौ ।
कसे पूर काया चकाचूर कीधौ ।
विढ़े[6] अवर माग आयौ व्रजाग[7] ।
विचै[8] सीत मेले[9] असोकेस वाग[10] ।। १०५
उठै वाहरू[11] राम नागेस आया ।
परा चच तूटां जटाएस पाया ।
करा गोदि[12] ले ग्रिध्ध[13] पावन्न[14] कीधौ ।
दई अंतरी वार दीदार दीधौ ।। १०६

---

१ ख ग. रथ । २ ख ग घ नभ । ३ ख. ग रथं । ४ ख रथ । ग रथ । ५ ख ग कीयो । ६ ख विटे । ग विढ़े । ७ ग. व्रजाग । ८ ग विचै । ९ ख ग घ मल्हे । १० ग वागं । ११ ग वाहरू । १२ ख ग. घ. गोद । १३ ख ग्रीध । ग ग्रिघ । घ ग्रिद्ध । १४ ख ग. घ पावन ।

---

१०३ नभां माग – आकाश-मार्ग । जठै – जहा । दासरत्थां – दशरथका । जूटौ – भिडा ।

१०४ सुरगौ – लाल । रांणरौ – रावणका । गात – शरीर । सारौ – सब । चपेटां – टक्करो । परां – पखो । त्रए-सात – दश । लकेस – रावण ।

१०५ लडतौ – लडता हुआ । जट्टाय – जटायु । लीधौ – लिया । चकाचूर – चूर्ण, नाश । कीधौ – किया । विढ़े – बढ कर, चल कर । अंबर – आकाश । माग – मार्ग, रास्ता । व्रजाग – वज्राङ्ग, शक्तिशाली । विचै – वीचमे, मध्यमे । असोकेस वागं – अशोक वागमे ।

१०६ उठै – वहा पर । वाहरू – रक्षार्थ तलाश करने वाला । नागेस – लक्ष्मण । परां – पख । चच – चचु । जटाएस – जटायु । ग्रिध्ध – गृध्र = गीध, जटायु । पावन्न – पवित्र । कीधौ – किया । दई – ईश्वर । अंतरी – मृत्यु की । वार – समय । दीदार – दर्शन । दीधौ – दिया ।

समाचार पूछे कहे भेद साहै ।
मिळै हंस जट्टाय[1] वैकुठ माहै ।
जठा अग्र हाले प्रभू क्रोध जोसा ।
कमधेस बांहां करै आठ कोसा ।। १०७
विचै आवता वधवां बांह वाळे ।
रटै राम[2] बाण जती छेदि राळे ।
मुणै रांमचद्रेस अद्वीत माया ।
कहो कोण[3] आंटै हुई दैत काया ।। १०८
कमंध—दत[4] नाम हूं गध्रप आदि देवं ।
सकौ गोरि नदी जिकै स्राप[5] स्रेव[6] ।

---

१ ख ग घ जटाय। २ ख घ रामि। ३ ख केहि। ग घ केणि। ४ ख ग घ दन। ५ ख ग घ श्राप। ६ ग घ. श्रेव।

---

१०७. हस — प्राण। जट्टाय — जटायु नामक गिद्ध। वैकुठ माहै — स्वर्गमे। कमधेस — कवध नामक दानव। वांहा — भुजाओ। विचै — वीचमे। वंधवां — भाइयो। वांह वाळे — भुजाएँ मोडदी।

१०८ छेदि राळे — काट दिये। मुणै — कहता है, कहते हैं। रामचद्रेस — रामचद्र। अद्वीत — अद्वितीय। कोण आंटै — किम लिए किस कारण। काया — शरीर।

१०९ कमध — वाल्मीकि रामायणके अनुमार दण्डकारण्यमे निवास करने वाला एक भयकर दैत्य जिमके शिर रहित शरीरमे केवल धड था। इमी कारणमे इमका नाम कवध पडा। इसके पेटमें विकराल दात थे। वक्षस्थलमे एक भयानक नेत्र था। आकार पर्वतके ममान था और भुजाएँ एक एक योजन लवी थी। यह पहले एक गधर्व था किन्तु इमने इन्द्रमे झगडा किया जिसमे इन्द्रने वज्रके प्रहारसे इसके शिर और जघाएँ पेटमे घुसेड दी। जटायुवधके समय सीताकी खोज करते हुए राम लक्ष्मणके ऊपर क्रौच वनमे मतग मुनिके आश्रमके पाम कवधने आक्रमण किया। रामने उमकी भुजाएँ काट डाली जिसमे मुमूर्षावस्थामे प्राप्त हो उसने अपना शरीर जला डालने को कहा। भस्मीभूत होने पर यह मद्गतिको प्राप्त हुआ और विश्वावसुनाम एक दिव्य शरीरधारी गधर्व हो गया। रामको मीताका पता वताते हुए सुग्रीवसे उनकी मैत्री करवा कर वह रावणके विरुद्ध जय-यात्रामे रामका वडा सहायक हुआ।

गध्रप — गधर्व। स्राप — शाप।

पुणै स्रापमो ताम बांणी प्रकासी ।
प्रभू राम ओतारि[1] तूं मोखि पासी[2] ।। १०९
एही रांम दाखे जती वैण[3] एहा ।
दना[4] ताम पाई महादिव्य देहा ।
दनां दाखियौ[5] मूक पाहाड देखौ ।
प्रभू पच[6] जोधा महासूर पेखौ ।। ११०
कहेसी जिकै आपहूता करारा ।
समाचार सीतातणा भेद सारा ।
प्रभू आय पंपा नदी मूक पासै ।
उधारी जठै सव्वरी[7] नांम आसै ।। १११
सुखेणां नल नील सुग्रीव साथां ।
हणू आदि आए मिळे जोडि हाथा ।
कहै रांम सुग्रीव तू राज काटै[8] ।
अठै पाहडामे वसै केणि आटै[9] ।। ११२
वदै[10] ताम सुग्रीव मो बाळि वैरी[11] ।
तिके[12] पाहडां हू वसू[13] धाक तेरी ।

---

१ ख ग. घ औतारि । २ ख. मोष पासी । ग घ मोषि पासी । ३ ग बैण । ४ ख ग ग. दन । ५ ख ग. दाषीयौ । ६ ख ग घ पाच । ७ ग घ. सव्वरी । ८ ग. काटै । ९ ग आटै । १० ख घ. वदै । ११ ख घ. वैरी । १२ ख तकै । ग घ. तके । १३ ग वसूं ।

---

१०९ तांम – उन्होंने । बांणी प्रकासी – अपनी वाणी प्रकट की । प्रभू राम ओतारि तू मोख पासी – श्रीराम भगवानके अवतार होने पर तेरी मोक्ष हो जायेगी ।

११०. दाखे – कहे । जती – लक्ष्मण । एहा – ऐसे । दाखियौ – कहा । मूक पाहाड – ऋष्यमूक पर्वत । पच – पाच । जोधा – योद्धा । पेखौ – देखिए ।

१११. कहेसी – कहेंगे । आपहूता – आपसे । करारा – कठोर । मूक – ऋष्यमूक पर्वत । सव्वरी – शवरी ।

११२. सुखेणा – सुषेण नामक वानर । साथां – साथमे । हणू – हनुमान । जोडि हाथां – करबद्ध होकर । केणि – किस । आटै – लिये ।

११३ वदै – कहता है । ताम – उनको । धाक – आतंक, भय ।

जती बोलियौ बाळिनू रांम जारै ।
महाबाह हेको बहै बांण मारै ।। ११३
प्रभू वाळि साझेस तो राज पावा ।
अमै[1] दास सेना सझै लार आवा ।
ग्रहां राज साखी नदी[2] ज्वाळ गाई ।
तरै राम सुग्रीवरी मित्रताई[3] ।। ११४
जिकै सीत जातां पडै[4] भोमि जाणे ।
उठै बदरा[5] झझरा चीर आणै[6] ।
सबै भेट[7] दाखै प्रभू काज सारूं ।
मने धीर दाखै हमैं बालि मारू ।। ११५
वदै[8] भाख[9] मोनू प्रभू तांम वाता[10] ।
सरा हेक वेधो तरा ताड साता ।
हणे दुद्दनू बाळि हेला अहूणौ ।
धरे भुडडां दुद्दरी देह धूणौ ।। ११६
सता[11] ताड़ वेधे[12] प्रभू हेक साथे ।
हिचोळे सता जोजना[13] दुद्द हाथे ।

---

१ ख ग अम्हे। २ ख. ग घ नदी। ३ ग मित्रताई। ४ ख पडी। ५ ख ग घ. वदरै। ६ ख आणों। ग. आणे। घ आणे। ७ ख ग घ भेटि। ८ घ वद। ग वदै। ९ ख ग. घ भाण। १० ख. वानू। ग वाता। ११ ख ग घ सत। १२ ग वेधे। १३ ख ग. घ जोजन।

---

११३ जती – लक्ष्मरण। मारै – सहार करेंगे, मार डालेंगे।

११४ साझेस – सहार करेंगे, मार डालेंगे। राज पावा – राज्य प्राप्त कर सकू गा। अमै – हम, मैं। लार – पीछे, साथ। ग्रहा राज – सूर्य। साखी – साक्षी। तरै – तव। मित्रताई – मैत्री, दोस्ती।

११५ भोमि – भूमि। झझरा – स्त्रियोके पैरोका आभूषण, झाझर। चीर – वस्त्र। आणै – लाये। मने – मनसे। धीर – धैर्य। हमैं – अभी।

११६ वदै – कहता है, कहते हैं। भाख – भाषा, वाणी। मोनू – मुझको। सरा – तीरो, वाणो। तरा – तरु, वृक्षो। हणे – मारा। दुद्दन – द्वन्द, दोनोका युद्ध। हेला – अपमान, हतक। अहूणौ – विना हुए।

११७. सता – सातो। ताड – वृक्ष विशेष। हिचोळे – हिला कर। जोजना – योजनो।

लखे रांमरा पाणरौ चाप लीधौ ।
कळहै बाळिहूता न सुग्रीव कीधौ ।। ११७
समै तेण राघौ रहे बांण साहे ।
गयौ बाळि सुग्रीवरौ पाण गाहे ।
पुणै भांण राघौ रहै केम पेखै ।
दुवै भाइयां एक सारीख[1] देखै ।। ११८
सूग्रीवा[2] ग्रीवां[3] रांमरी[4] फूल[5] सोभा ।
लड़ै फेर भाई बिनै[6] राज-लोभा ।
लडतां थका वाण राघौ लगायौ ।
वुरा[7] बालि वेधे[8] धरा बाण आयौ ।। ११९
कढे हंस बाळेसनू मोक्ष[9] कीधौ ।
दई राजके कध सुग्रीव दीधौ ।
रचै अगदेस दियौ[10] जोबराज[11] ।
क्रिपानाथ[12] छाये गुफा देव काजं ।। १२०
मिटै मोह छोळा थटै देवमाया ।
उठै थाट ले भूप सुग्रीव आया ।

---

१ ख ग. घ सारूप। २ ख सुग्रीव। ग घ सुग्रीव। ३ ख ग घ मुख। ४ ख ग घ की। ५ ख ग स्याम। घ श्याम। ६ ख विन्है। ग घ बिन्है। ७ ग बुरा। ८ ग बेधे। ९ ख. मोष। ग घ मोखि। १० ग घ दीयौ। ११ ख. ग. घ जोवराज। १२ ख ग घ कृपानाथ।

---

११७ पाणरौ – हाथका, शक्तिका। चाप – धनुष। लीधौ – लिया। कळहै – युद्ध, झगडा। कीधौ – किया।

११८ समै – समय। तेण – उस। राघौ – श्रीरामचंद्र भगवान। साहे – धारण कर के। पाण – हाथ। पुणै – कहता है। पेखै – देखा, देखो। दुवै – दोनो। सारीख– समान, सदृश।

११९ ग्रीवा – गर्दन। बिनै – दोनो। राज-लोभा – राज्यका लोभ। लडता थका – लडते हुए। राघौ – श्रीरामचद्र। वेधे – वेध कर, छेद कर।

१२० कढे – निकल कर। हस – प्राण। बाळेसनू – बालिको, वानरराजको। मोक्ष कीधौ – मुक्ति दी,
मोक्ष कर दिया। दीधौ – दिया। अगदेस – बालि-पुत्र अगद। जोवराजं – युवराज।

१२१ छोळा – तरगो। उठै – वहाँ। थाट – समूह, दल, वैभव।

अखै नाम[1] ऊभौ सुग्रीवेस आगै ।
लखै राम जोवा[2] कपी पाय लागै ॥ १२१

मतौ धारि पूरव्व[3] वन्नीत[4] मेले ।
पचीसेक रोड़ै कपी साथ[5] पेले ।
रमा वेस[6] साते वली[7] उत्तराधं ।
बिनै[8] कोडि यक्कीस[9] जे थाट वाध ॥ १२२

कपी वीस कोडेक सुक्खेण[10] कीधा ।
दिसा पाछिम[11] सोधिवा लार दीधा ।
पखा दोयरौ ठीक कीधौ प्रमाणै ।
जियां[12] पूठ[13] आवै तिया[14] वाध[15] जाणै ॥ १२३

सझै फौज कीधौ विदा[16] अगदेस ।
दिसा दिच्छिण[17] सोधिवा काजि देस ।
लहे अगद दक्खण[18] माग लीधा ।
दवादस्स सेनापती लार दीधा ॥ १२४

---

१ ख ताम। २ ख ग. घ जोधा। ३ ख पूरव। ग. पूरवि। घ पूरव्वि। ४ ख वनीत। ग वनीत। ५ ख. ग साथि। ६ ख घ रमावेश। ७ ख. घ वाली। ८ ख विन्है। ग. विन्ह। घ विन्है। ९ ख ग घ इक्कीस। १० ख सुषेड। ग सुषेण। ११ ख पछिम। घ पच्छिम। १२ ख ग जीया। १३ ख ग. घ पूठि। १४ ख ग तीयां। १५ ख वाध। ग घ वाध। १६ ग विदा। १७ ख ग दछिण। १८ ख दषिण। ग घ दक्षणं।

---

१२१ अखै – कहता है। सुग्रीवेस – सुग्रीव। आगै – अगाडी। कपी – वानर।

१२२ मतौ – विचार। मेले – भेजा। रोडै – वढिया, उत्तम। कपी – वानर। पेले – गये। उत्तराध – उत्तर दिशा। बिनै – दोनो।

१२३ सुक्खेण – सुषेण नामक वानर। कीधा – किये। पाछिमं – पश्चिम। सोधिवा – तलाश करने को। लार – पीछे। दीधा – दिये। पखा – पक्षो। ठीक – निश्चय। कीधौ – किया।

१२४. विदा – प्रस्थान। अगदेस – अगद। दिच्छिण – दक्षिण। काजि – लिये। माग – मार्ग। लीधौ – लिये। दवादस्स – द्वादश, बारह। लार – पीछे। दीधा – दिये।

जिहा[1] माहि जोधा हणूमान जेहा ।
दई मुद्दका[2] जेणनू मेघदेहा ।
प्रळंबै सत्रेवै भरै[3] छेह पाया ।
यको[4] मासरा ठीक नू नीठ आया ॥ १२५

वडौ दुग्गमी[5] देस जोधै विळूधौ[6] ।
सुधै अगद अतरानेर सूधौ[7] ।
तरै खेद होता त्रखा देह ताणो ।
प्रळंबेस लाधौ नही[8] पाख पांणी ॥ १२६

दुखीवंत भू बदरा रध्र देखै ।
पखी उड्डता[9] चक्कवा हस पेखै ।
सुरगा धसै हाथहू[10] हाथ साहै[11] ।
महा हेमरा धाम आराम माहै ॥ १२७

इसा देखि आचभिया[12] जोध एतै ।
जठै जोगणी सुदरी दीठ जेतै ।
त्रखावत देखे जिकै नीर पाया ।
इसा जोध दाखौ अठै केमि[13] आया ॥ १२८

---

१ ख ग जीया । घ. जिया । २ ख. ग घ मुद्रिका । ३ ख ग घ धरा । ४ ख ग घ इको । ५ ख ग दष्यिणी । घ दष्यिणी । ६ ग बिलूधौ । ७ ख ग. घ सुधौ । ८ ख यही । ९ ख उडता । ग घ उडता । १० ख सु । ग सू । ११ ख सोहे । १२ ख ग आचभीया । १३ ख ग घ केमी ।

---

१२५ जिहा – जिन । माहि – मध्यमे । जोधा – योद्धा, वीर । जेहा – जैसा । मुद्दका – मुद्रिका । मेघदेहा – वादलके से शरीर वाले राम । छेह – अत । नीठ – कठिनतासे, मुश्किलसे ।

१२६ वडौ – महान्, बडा । दुग्गमी – दुर्गम । जोधै – योद्धाओ । विळूधौ – दृढा । सूधौ – सहित, तक । तरै – तव । खेद – कष्ट, पीडा । त्रखा – प्यासा, तृषा । पाख – पास, निकट ।

१२७ भू – भूमि । रध्र – छेद । पंखी – पक्षी । चक्कवा – चक्रवाक । पेखै – देखते हैं । सुरगा – गुफाओ । धसै – प्रवेश करते हैं । साहै – पकडते है । हेमरा – सुवर्णके, सोनेके । धाम – भवन । आराम – वगीचा, उपवन । माहै – भीतर, मे ।

१२८ आचभिया – आश्चर्ययुक्त हुए । जोध – योद्धा । दीठ – देखी । त्रखावत – प्याससे पीडित । दाखौ – कहो । केमि – कैसे, क्यो ।

हुवा रांम ओतार[1] सीता हरांणी ।
पखैं जोइवा[2] आविया देखि पाणी ।
सत्रू[3] कोण दाखैं कपी जोध सारा ।
थटै सोवनी धांम कै देव थारा ॥ १२९

अहं नाम सोय प्रभा धाम एता ।
जिकै तात विस्वैंक्रमा[4] कीध जेता ।
हिमानी सखा माहरै एक हूंती[5] ।
अठाहूत[6] सो उद्धरी भागवती ॥ १३०

रटै मुज्झहू[7] वाणि जै उद्धरेता[8] ।
तरेसीज तू राम ओतार तेता ।
उठाहूत आणे भडा पाइ आई ।
पुणै राम सोयं प्रभा मोक्ष[9] पाई ॥ १३१

अजे जांनकी सोधवा जोध आया ।
गिरा[10] अगदेस चढे राम गाया ।
सुणे रामरौ नाम उच्छाह[11] साई ।
उठै ग्रीध सपातरै[12] पखि आई ॥ १३२

---

१ ख अवतार। २ ख ग जोववा। ग. जोववा। ३ ख ग घ सतू। ४ ख. घ वीसैंक्रमा। ग वीसैंक्रमा। ५ ख ग. हुती। ६ ख. ग हुत। ७ ख. ग मुझ। घ मुज्झ। ८ ख ग वद्धरेता। घ वद्धरेता। ९ ख मोष। ग घ. मोषि। १० ख ग घ गिरं। ११ ख उछाह। ग उत्छाह। १२ ख सपति। ग घ संपाति।

---

१२९ ओतार – अवतार। सीता हरांणी – सीताका हरण हुआ। पखैं – लिए, निमित्त। जोइवा – तालाश करनेको, देखनेको। सोवनी – स्वर्णका, सोनेका।

१३० विस्वैंक्रमा – विश्वकर्मा। कीध – किये। हूंती – थी। अठाहूत – यहासे। सो – वह। उद्धरी – मोक्ष प्राप्त की।

१३१ उद्धरेता – वह जो अपने वीर्यको गिरने न दे, ऊर्ध्वरेता, ब्रह्मचारी। ओतार – अवतार। तेता – उतने।

१३२ सोधवा – तलाश करनेको, ढूंढनेके लिये। जोध – योद्धा। गिरां – पर्वतो। अगदेसं – अगद।

सुता[1] बाळि सपाति ह्वै एक सत्थ ।
कहै आपरा[2] सीतरा भेद कत्थ ।
वणै च्यारसै[3] कोस सामद्र[4] वका[5] ।
लखा राकसा धाम तैपार[6] लका ॥ १३३

उठै वाग[7] आसोक रूखां अथाहै ।
महामाय[8] सीता वसै[9] जेणमाहे[10] ।
दसैं ही दिसा रामरी कार दीधी ।
कळा सील सामद्ररी[11] पाळि कीधी ॥ १३४

सुणे वात[12] आवै[13] जोध[14] सारा ।
इखै[15] नीर सामद्र छौळा अपारा ।
उठै संकुचै पूछ सुग्रीव[16] ऊणै ।
धरा पार दीसै नही सीस धूणै ॥ १३५

मही दीठ धारै चवै वैण[17] मद[18] ।
निरक्खे[19] भडा बोलियौ बाळि नदं ।
उलघू अह सामद्र वीस वारा ।
सभौ दीण भाखा नमौ सीस सारा ॥ १३६

---

१ ख ग घ सुतं । २ ख. आपणा । ३ ख. चारसै । ४ ख सामुद्र । ५ ग. घ. वका । ६ ख जैंपार । ७ ग. वाग । ८ ख. ग घ महमाय । ९ ग वसै । १० ख ग घ. जेणिमाहे । ११ ख सामदरी । ग घ सामद्ररी । १२ ग वात । १३ ख ग घ. आयै । १४ ख ग कपी । १५ ख ग यखै । १६ ख ग घ. ध्रू-ग्रीव । १७ ग. वंण । १८ ख ग घ मद्द । १९ ख ग निरषे ।

---

१३३ सत्थ – साथ । सीतरा – सीताके । कत्थ – कथा, वृत्तान्त । सांमंद्र– समुद्र । वका – वाका विकट । तैंपार – उसके पार ।

१३४. वाग आसोक – अशोकवाटिका । रूखां – वृक्षो । अथाहै – अपार, असीम । महामाय – महामाता । जेणमाहे – जिसमे । कार – रेखा । दीधी – दी । कीधी – की ।

१३५ इखै – देखते हैं । छौळा – तरगो । ऊणै – उदासीन, खिन्न चित्त ।

१३६. चवै – कहता है । वैण – वचन । मद – मद । निरक्खे – देख कर । वाळिनंदं – अगद । उलघूं – कूदता हू । अह – मै । सामद्र – समुद्र । दीण – उदासीन ।

उठै जामवत कहै वैण एहा ।
करै दास ऊभा धणी काज केहा ।
कपी देव असी सकौ काय कापौ[1] ।
जिसौ ह्वै तिसौ आपरौ पाण जांपौ[2] ॥ १३७

लगै वैण जामतरौ[3] सीख लागै ।
उठै आविया[4] बाळिरा नंद आगै ।
दसा[5] जोजनां[6] डाणगै नाम दाखै ।
यताहूत[7] दूणा गवाखेस आखै ॥ १३८

गवै जोजनां तीस दाखे गहीरं ।
धरै गदमादीख चाळीस धीरं ।
विदूरत्थ[8] पच्चास[9] जोजन्न[10] बाणी ।
डळा साठ[11] जोजन्न दुव्वाधि आणी ॥ १३९

धरां[12] जोजनां[13] सत्र[14] रांमैद धारै ।
असी जोजना स्रूभ[15] नामा उचारै ।
उचारै निवै जोजना जामवंतं ।
त्रिए घाटि सौए[16] नळां[17] दाखि[18] तंत[19] ॥ १३९

---

१ ख ग घ कपौ। २ ख ग घ जपौ। ३ ख ग घ जामुत। ४ ख ग आवीया। ५ ख ग. घ दस। ६ ख ग घ जोजनं। ७ ख ग घ इता। ८ ख. विदूरथ। ग विदूरथ। घ. विदूरत्य। ९ ख ग घ पाचास। १० ख ग जोजन। ११ ख. ग घ साठि। १२ ख ग घ धरं। १३ ख ग घ. जोजनं। १४ ख ग घ सतर। १५ ख ग श्रभ। घ श्रब्भ। १६ ख ग घ ये। १७ ख ग. घ नल। १८ ग राधि। १९ ख नत।

---

१३७ वैण – वचन। एहा – ऐसे। सकौ – सव। काय – क्यों। पांण – शक्ति, वल। जापौ – कहो।

१३८ नद – पुत्र। आगै – अगाडी। गवाखेस – गवाक्ष नामक वदर जो रामकी सेनाका सेनापति था। आखै – कहता है। गवै – गवय नामक रामकी सेनाका वदर। दाखै – कहता है। गहीर – गभीर। विदूरत्थ – एक वानरका नाम।

१३९ जोजन्न – योजन। दुव्वाधि – एक वानरका नाम, दुविधा।

१४०. दाखि – कहा। तत – सार।

सभ्भै सोउ[1] मैडाण[2] ऊडाण[3] सारां ।
पयोधारहूता न को होय[4] पारां ।
पुणै ताम अज्जै कपी भेद पाया ।
जतू काय बोलै न सामीर-जाया ॥ १४१

लखां जोजना जामतै भाण लीधौ ।
किसू जोजना सौतणौ सोच कीधौ ।
पुणौ[5] ताम लागौ धणी बोल पाऊ ।
जळाधाररै पार सौ वार जाऊ ॥ १४२

सकौ पाव वादै[6] कपी ह्वै हुलास ।
तिलक्क करै अगद सीस तास ।
जरै रग धारै चखा चोळ जोसा ।
कियौ अग उत्तग[7] सौ वीस कोसा ॥ १४३

जिकै वार[8] तेजोमई थाट जाडौ ।
उभै वीस[9] कोसा जितौ कीध आडौ ।
करे पाव टिल्ला पछै चूर कीधौ ।
दिसा लक आकासमे डाण दीधौ ॥ १४४

तगस्सेस नागां सिरै जाणि तूटौ ।
छछोहौ जिसौ रामरौ बाण छूटौ ।

१ ख ग. घ सौ । २ ख ग. घ महीडाण । ३ ख उडाण । ४ ख ग. घ. होइ । ५ ख ग घ पुणै । ६ ख घ वदै । ग बदै । ७ ख तग । ८ ग बार । ९ ग बीस ।

१४१ पयोधारहूता – समुद्रमे । पुणै – कहता है । काय – क्यो । सामीरजाया – पवनपुत्र, हनुमान ।

१४२. जामतै – जन्मते ही बाल्यावस्थामे ही । लीधौ – लिया । सौतणौ – सौका । सोच – चिंता, विचार । कीधौ – किया । पुणौ – कहो । लागौ – हनुमान । जळाधाररै – समुद्रके ।

१४३. सकौ – सब । हुलास – हर्ष, प्रसन्नता । तास – उसके । जरै – जब । चखा – नेत्रो । चोळ – लाल । जोसा – जोश । उत्तग – उत्तुग, ऊचा ।

१४४ वार – समय । टिल्ला – आघात, टक्कर । चूर – चूर्ण, नाश । कीधौ – किया । दिसा – तरफ, ओर । डाण – कदम, डग । दीधौ – दिया ।

१४५ तगस्सेस – गरुड । छछोहौ – तेज । जिसौ – जैसा ।

सुरस्सा[1] असी जोजना डाव साहै ।
थमाऊ निवै जोजना[2] ह्वै अथाहै ॥ १४५
चितां[3] सिघका[4] विग्रहां दाउ चाहै ।
मुखां[5] फाड़[6] गौ राकसी लंक माहै ।
सकौ लंक मजार ह्वै धाइ[7] सोधी ।
कळाकाळ दीठा घणा दैत क्रोधी ॥ १४६
मडै दीठ[8] नौ ही ग्रहा वदि माहै ।
सकौ तार नौलाख मूसाळ साहै ।
दिना[9] तेर सोई करै वास देवं ।
सकौ भूप दूजा करै पाव सेव ॥ १४७
पखाला भरै जम्म[10] भैंसौ सप्राजै[11] ।
सुराराव[12] सिक्कौ[13] छिडक्काव[14] साजै ।
सचीरूप उद्दार[15] सोभा सिंगारी ।
नरीं[16] नागणी आसुरी देव नारी ॥ १४८

---

१ ख. ग सुरसा । २ ख. ग घ जोजनं । ३ ख ग घ चित । ४ ख. सघ । ५ ख. ग घ मुख । ६ ख ग. घ. फाडि । ७ ख ग घ. धाय । ८ ख ग घ दीठि । ९ ख. ग. घ. दिन । १० ख जंम । ११ ख ग घ सुप्राजै । १२ ख ग सुराराव । १३ ख घ सक्कौ । १४ ख छटक्काव । ग छडकाव । घ खड़क्काव । १५ ख ग. घ. उदार । १६ ख. तरी ।

---

१४५ सुरस्सा – प्रसिद्ध नागमाता जो समुद्रमें रहती थी और जिनने हनुमानजीको समुद्र पार करनेके समय रोका था। थमाऊ – रोकू, रोक दू । जोजनां – योजनो। अथाह – अपार, असीम ।

१४६. सिघका – सिंहिका एक राक्षसी जो राहुकी माता थी, यह राक्षमी दक्षिण समुद्रमे रहती थी और आकाशगामी उडते जीवोकी परछाई देख कर उनको खीच कर खाती थी। इसको लका जाते समय हनुमानजीने मारा था । सकौ – सव, वह । धाइ – दौड कर। सोधी – तलाश की । कळाकाळ – महा भयकर ।

१४८ पखाला – चमडेका जल भरनेका वडा थैला जो पशुओकी पीठ पर लाद कर लाया जाता है। सुराराव – इन्द्र । छिडक्काव – पानी आदि छिडकनेकी क्रिया, छिडकाव सचीरूप – इन्द्राणीके रूप । सिंगारी – शृंगारित। नरी – नारी । नागणी – नागकन्या । आसुरी – राक्षसी ।

उठै[1] तीन लोका तणै दड आवै ।
नरां हैमरां गैमरा पार नावै ।
किला सोवनी दीठ सो वीस कोस[2] ।
जगाजोति हीरा मणी भाण जोस[3] ।। १४९
तरै सोच धारै कपी देह त्याग[4] ।
वळै आवियौ[5] आदि आसोक वाग ।
तजे रूप मजार कीला तमास ।
कपी आपरौ रूप धारै प्रकासं ।। १५०
इसी[6] लक देखे असोकेस आयौ ।
पुत्रा[7] मात सीता महा[8] मोद[9] पायौ ।
दई दीध सो मुद्रका सीत दीधी ।
लहे मुद्र[10] चूडामणी[11] दीध लीधी ।। १५१
खुघ्यावंत हू मातहू वैण[12] अक्खै[13] ।
भणै मात भौमी फळा वीण[14] भक्खै[15] ।
स्त्रिया[16] छांह राखिया[17] व्रच्छ[18] सूधा ।
अनै रास कोरा लिया[19] व्रच्छ[20] ऊधा ।। १५२

१ ख. उभै । २ ख ग घ कोसा । ३ ख ग घ जोसा । ४ घ त्यागा । ५ ग आवीयौ । ६ ख ग. घ. यसी । ७ ख ग. घ पुत्रमात । ८ ख ग घ. लखे । ९ ख ग घ हेत । १० ख ग घ मुद्रि । ११ ख चूडामणि । १२ ख ग घ वैण । १३ ख ग. अख्ये । १४ ख घ वीणि । ग बीणि । १५ ख. ग भख्ये । १६ ख ग. स्त्रीया । १७ ख. ग रापीया । १८ ख विछ । ग व्रिछ । घ व्रिच्छ । १९ ख. ग लीया । २० ख वृछ । ग वृछ । घ कृच्छ ।

१४९. हैमरा – घोडो । गैमरा – हाथियो । सोवनी – सोनेका, सोनेकी ।

१५० तरै – तब । कपी – हनुमान । वळै – फिर । आसोक वागं – अशोक वाग । कीला – क्रीडा ।

१५१ असोकेस – अशोक वाग । महा मोद – अत्यधिक आनद । दई – श्रीराम । दीध – दी । मुद्रका – मुद्रिका । दीधी – देदी । मुद्र – मुद्रिका । चूडामणी – स्त्रियोके शिरका आभूषण विशेष । लीधी – ली ।

१५२. खुघ्यावत – भूखा । मातहू – मातासे । वैण – वचन । अक्खै – कहता है । भणै – कहती है, कहता है । भौमी – सीता । वीण – चुन कर । भक्खै – खाता है । छाह – छाया । राखिया – रक्खे । व्रच्छ – वृक्ष ।

लगावै फळा भोमि आहार[1] लीधौ ।
कपी वाग[2] ऊधांमि चौगान कीधौ ।
सझै तै हजारे असी दैत साथी ।
हणे पाचसै पूर मैमत हाथी ।। १५३

हुई लकमे बूब आया हकारे ।
मत्री रांणरा सात हज्जार मारे ।
अखौ[3] राणरौ पुत्र जूटौ अछायौ ।
घणै क्रूधि[4] तेनू हणूमांन[5] घायौ ।। १५४

जळावोळ लीधां दळा राणजायौ ।
अखौ मारियौ साभळे मेघ आयौ ।
उठै रांमरा[6] जोध कूदे अमामौ ।
सझै हाथ पच्छै[7] अयौ मेघ सामौ ।। १५५

करा मेघ ब्रह्मातणी[8] पासि काढ़ी ।
चलावै कपी राजरै कठि चाढी ।
मुणै ब्रह्म[9] तोडै रखै लोपि मोनू ।
तवै तात कोई न ह्वै घात तोनू ।। १५६

---

१ ग. अहार। २ ग वाग। ३ ख अखै। ४ ख क्रोध। ग घ क्रोधि। ५ ख ग घ हणू मांनि। ६ ख ग घ रांमरौ। ७ ख. पछै। ग पछ्छै। ८ ग ब्रंह्मातणी। घ. । ९ ग ब्रह्म।

---

१५३ आहार – भोजन। लीधौ – लिया। वाग ऊधांमि – वागमे ऊधम कर। चौगांन – मैदान। हणे – सहार कर दिये। मैमंत – मस्त।

१५४ बूब – पुकार, त्राहि-त्राहि। अखौ – अक्षयकुमार। रांणरौ – रावणका। जूटौ – भिडा। अछायौ – जोशीला। क्रूधि – क्रोधमे। हणूमान – हनुमान। घायौ – मारा, सहार किया।

१५५ जळावोळ – अत्यधिक, भयकर। लीधां – लिए हुए। राण जायौ – रावण का पुत्र अखौ – रावण-पुत्र, अक्षयकुमार। साभळे – सुन कर। मेघ – इन्द्रजीत। अमामौ – उत्तम, वढिया। सामौ – सम्मुख।

१५६ करा – हाथो। ब्रह्मातणी पासि – ब्रह्माका दिया हुआ ब्रह्मपाश नामक अस्त्र। कठि – कठमे। मुणै – कहता है। तवै – कहता है। घात – प्रहार, चोट। तोनू – तुझको।

लहे ब्रह्म अग्गया ब्रदा[1] मेघ लीधौ ।
दसैकध आगै हणू आणि दीधौ ।
वदै[2] रांणनू कोण कै दास वारा[3] ।
किसै वैर[4] तै थाट मारै कँवारा[5] ।। १५७

जपै जाति नै नाम भेद जणावौ[6] ।
अठै जानकी सोधिबा[7] काज आवौ ।
लघू[8] दास हू रांमरै जूर[9] लेवौ ।
कहै वैर[10] जाणै नही सीत केवौ ।। १५८

अजै[11] राज चाहैस तौ धारि आछी ।
पगां रामरा वादि[12] दै सीत पाछी ।
महाराजरी आगिया[13] होय[14] मोनू ।
त्रणां[15] जेम राळू करे चूर तोनू ।। १५९

सकौ राकसा एकणी[16] हाथ[17] साहे ।
मेलु[18] लक साहेत पाताळ माहे ।
जपै वैण ऐहा हणूमान[19] ज्यारा ।
तेडै मान[20] वभीखणां[21] भ्रात त्यारा ।। १६०

---

१ ख ब्रद । ग घ ब्रदं । २ ग वदै । ३ ख. घ वार । ग बार । ४ ग. बैरि । घ वैरि । ५ ख ग घ. कवार । ६ ख ग. घ जणायौ । ७ ग. सोझिबा । घ सोझिवा । ८ ख लुघु । ग घ लुघ । ९ ख जूरि । ग घ जूठि । १० ग बैर । ११ ख. ग. घ. अजौ । १२ ख घ. वदि । ग वदि । १३ ख. ग आगीया । १४ ख घ होइ । ग होई । १५ ख ग त्रिणा । घ तिणा । १६ ख ग घ येकणी । १७ ग घ. हाथि । १८ ख घ. मेल्हू । ग. मेल्ह । १९ ग घ हणूमानि । २० ख. ग. घ. मात । २१ ख वभ्भीषण । ग वभीषण । घ वभ्भीषण ।

---

१५७. दसैकध – रावण । हणू – हनुमान । आणि – ला कर । दीधौ – दिया । थाट – सेना । कँवारा – अक्षयकुमारके लिये प्रयोग किया गया है ।

१५८. जपै – कहता है । सोधिबा – तलाश करनेको । काज – लिये ।

१५९ चाहैस – चाहता हो । आगिया – आज्ञा । जेम – जैसे । राळू – फेंक दू, गिरा दू । चूर – नाश, ध्वंश । तोनू – तुझको ।

१६० सकौ – सब । साहे – मार कर । साहेत – सहित । माहे – अंदर, मे । वैण – वचन । ऐहा – ऐसे । ज्यारा – जब । तेडै – बुलाता है । वभीखणां – विभीषण, रावणका छोटा भाई । त्यारां – तब ।

मतौ गुंझ[1] कीधौ जठै राण माता ।
भणै वात वभीखणा[2] तेम भ्राता ।
रैणा लक थारै किसू तोटि राजा ।
कपी सीत छाडौ करौ एह[3] काजा ॥ १६१

सुणै वात ऐ[4] मातनै भ्रात साथै ।
हसै तेम[5] लकेस दे ताळ हाथै ।
भुजा[6] वीस[7] सीस दस मूझ[8] भाई ।
खिता[9] द्रुग[10] लका जळाधार खाई ॥ १६२

वधू[11] 'कुभ' जेहौ अनै 'मेघ' वेटौ ।
खवां जोडि[12] मोनू[13] करै कोणि[14] खेटौ ।
प्रचंडेस जीता त्रहू[15] लोक पांणै ।
वियांनै[16] डरावै जतू[17] त्रुच्छ[18] जाणै ॥ १६३

मुसा दादराहूत[19] नागा मराड़ै ।
खुरा कीड़ियांहूंत[20] हाथी खुदाडै ।
कपमेसको[21] दीठ केकध काए ।
जिकै ताळिया[22] दी जता भाजि जाए ॥ १६४

---

१ ग. घ. गूझ । २ ग वभीषणं । घ वम्भीषण । ३ ख ग घ येह । ४ ख ग घ ये । ५ ख ग घ तांम । ६ ग भूजा । ७ ग. वीस । ८ ख ग मुझ । ९ ख ग घ खितं । १० ख द्रुम । ग द्रुग । घ द्रुग्ग । ११ ख वघू । १२ ग घ जोड़ । १३ ख ग घ. मोसूं । १४ ख ग घ. कोण । १५ ख ग घ त्रिहूं । १६ ख ग घ. जियांनू । १७ ख ग घ जतूं । १८ ख त्रुछ । ग त्रुत्छ । घ तुच्छ । १९ ख. ग. घ दादुराहून । २० ख. ग कीडीयाहूंत । २१ ख ग घ कपीमंसको । २२ ख ग तालीया ।

---

१६१ मतौ – विचार । गुझ – गुप्त । जठै – जहा । तेम – उसको, वैसे । रैणा – भूमि । तोटि – त्रुटि, कमी, अभाव । कपी – हनुमान । सीत – सीता । छाडौ – छोड दो । एह – यह । काजा – कार्य ।

१६२ तेम – वैसे । लकेस – रावण । मूझ – मेरे । खितां – क्षिति, भूमि । द्रुग – दुर्ग, नगर । जळाधार – समुद्र ।

१६३ कुंभ – कुभकर्ण । जेहौ – जैसा । अनै – और । मेघ – मेघनाद, इन्द्रजीत । मोनू – मुझसे । खेटौ – युद्ध । प्रचडेस – महान, प्रचंड । पाणै – भुजाओमे । वियानै – दूसरोको । त्रुच्छ – तुच्छ ।

१६४ मुसा – चूहा । दादराहूत – मेटकसे । नागां – सर्पो । मराड़ै – मरवाता है । खुरां – पैरो । कीडियाहूत – चीटियोसे । खुदाड़ै – रौंदवाना है । दीठ – देखा । केकंध – किष्किधा ।

जुडै रांम लाखंमणा[1] काजि जैता ।
दुवै रूप मांनिक्ख[2] जै भ्राख[3] दैता ।
पुणै फेरि वब्भीखणौ[4] जोडि पाणे ।
जोधा वदरा[5] यै[6] नरा यै[7] न[8] जाणे ।। १६५

सहौ सेस लाखमणां धारि सोधा ।
जगादीस[9] राघौ सकौ देव जोधा ।
इकै कीध सो तौ न[10] तै दीठ आछा ।
तिसा रामरी लार अन्नेक[11] ताछा ।। १६६

जिका[12] आविया[13] सीस तौ लक जासी ।
परा फेरि सीता कपी चैंन पासी ।
दसैकध कै कायरा[14] ध्रग्ग[15] दीधौ ।
कणेठी उरा पाव[16] प्राहार कीधौ ।। १६७

हुवौ मूरछा[17] मत्रिया[18] लीध हामा[19] ।
तके रान लेगा रथा चाढि तामा[20] ।
कहै स्त्रीमुखा राण जोधा करारा ।
हणू पूछ[21] रू ध्रत्त[22] बाधौ हजारा ।। १६८

---

१ ख ग घ लाखमणं। २ ख. ग मानिष्य। घ मानिष्य। ३ ख ग भ्रष। घ. भष्ष। ४ ख. वभ्भीषणं। ग वभीषण। घ वभ्भीषण। ५ ख वदरा। ६ ख ग घ श्रै। ७ ख ग घ. यौ। ८ ख. ग घ म। ९ ग जगदीस। १० ख ग घ. जतै। ११ ख ग आनेक। १२ ख ग. घ जिक्कां। १३ ख ग. आवीया। १४ ख ग घ. कायरं। १५ ख ग. ध्रिक। घ ध्रिक्क। १६ ख. ग घ. पावु। १७ ख ग घ मूरिछा। १८ ख ग मंत्रीया। १९ ख ग घ हाम। २० ख ग. घ. तामं। २१ ख ग घ पूछि। २२ ख. ग. घ ध्रित।

---

१६५ लाखमणा – लक्ष्मण। मानिक्ख – मनुष्य। पुणै – पुनः कहता है। वब्भीखणौ – विभीषण। पाणे – हाथ। जोधा – योद्धा। यै – ये। नरा – मनुष्य।

१६६ लाखमणा – लक्ष्मण। जगादीस – जगदीश, ईश्वर। राघौ – श्रीरामचन्द्र। सकौ – सब। तिसा – वैसे।

१६७. सीस – ऊपर। तौ – तेरी। ध्रग्ग – धिक्कार। दीधौ – दिया। कणेठी – छोटा, छोटा भाई। प्राहार – प्रहार, आघात। कीधौ – किया।

१६८ स्त्रीमुखा – स्वय। राण – रावण। करारा – बलवानो। हणू – हनुमान। रू – रूई।

घरे दव[1] पावक्करी[2] ऊक वारौ ।
महा राकसां वंदरां[3] एम[4] मारौ ।
उहे रू ग्रतां[5] राकसां ऊक दीवी ।
लगी आग[6] ज्यारां[7] कपो[8] झांफ लीवी ॥ १६९
जाळे[9] रांणरा कुंभरा ग्रेह जाळै ।
भरै डांण जाळै घणा दैत भाळै ।
अगी कोस चाळीस झाळी[10] उंचाळी[11] ।
जडाऊ[12] नगां सोवनी लंक जाळी ॥ १७०
ठहे सांमंद्रां[13] नीरमे पूछ ठारौ[14] ।
निळे कूदि सांमंद्र सेना मझारौ[15] ।
वदै[16] अंगदेसं हुवा[17] जोय वंका[18] ।
लँगा झोकरै झोक प्राजाळ लंका ॥ १७१
अड़ीखंभ[19] डांणं[20] भरंता अछाया ।
अड़े गैणसूं ढंडके कथ आया ।
प्रणांमं करै अंगदं रांम पाए ।
अनेडां सको[21] वंदिया[22] पाव आए ॥ १७२

---

१ ख. वंव । २ ख पाव्वक । ३ ख. वदरां । ग. घ वदरौं । ४ ख. ग घ एमि । ५ ख. ग. घ. त्रितां । ६ ग घ. आगि । ७ ग. जारा । ८ ख. ग घ. हयूं । ९ ख. जळे । १० ख. चाळी । ११ ख. ग. घ. उछाळी । १२ ख ग. घ जड़ाउ । १३ ख. ग घ. सामद्र । १४ ख. ग. घ ठारो । १५ ख ग. घ मझारे । १६ ग वदै । घ वंदे । १७ ख. ग घ. हुआ । १८ ग. घ. वंका । १९ ख. अणीखंभ । २० ख ग घ. डांणां । २१ ख. ग. घ. अनेरास । २२ ख वंदीया । ग. वदीया ।

---

१६९ पावक्करी – अग्निकी. आगकी । ऊक – वारा, ज्वाला । ज्यारां – जब । झांफ – कुदान, छलांग ।

१७०. जाळे – जला कर । ग्रेह – घर । डांणं – छलांग । भाळै – देखते हैं । झाळी – ज्वाला । सोवनी – स्वर्णकी, सोनेकी । जाळी – जला दी ।

१७१. ठहे – ठहर कर । सांमंद्र – समुद्र । ठारौ – ठण्डा करो । सांमंद्रा – समुद्रो । मझारौ – मध्य, में । वदै – कहता है । अंगदेसं – अंगद । लँगा – हनुमान । झोकरै झोक – धन्य-धन्य । प्राजाळ – जला कर, जलाने वाला ।

१७२. अड़ीखंभ (अडिग स्तम्भ) – जबरदस्त । डांणं – कदम, डग, छलांग । अछाया – जोशीला । गैणसूं – गगनसे, आकाशसे । अनेडां – अन्यो, दूसरों । सक्रो – सबको ।

दुवै पाव वदै[1] हणू मैण[2] दीधी ।
कपीसा हणू पाण तारीफ कीधी ।
झले राघवां[3] सेस पिन्नाक झल्ले ।
उभै तेज सामद्र जांणै उझल्ले ।। १७३

अरोहै हणू राम मैइ अनुज्ज ।
धरा वोम धुज्जै[4] सिरा लक धुज्ज ।
अडीखंभ जोधा पदम्म[5] अठारा[6] ।
पिले[7] थाट नीसांण वाजै अठारा[8] ।। १७४

भणके चलौ[9] कोमंडा तूर भेरी ।
फबै सख सहनाय[10] आनेक फेरी ।
विखम्मी[11] सुरा सिद्धवा[12] डाक वागी[13] ।
व्रह्मड[14] इक्कीसमै हाक वागी[15] ।। १७५

इता हालिया[16] थाट ते भार आगा ।
लटै सेसरा सीस कामठि लागा ।

---

१ ग बदै। २ ख. मैन। ३ ख ग घ राघव। ४ ख ग. घ धूजै। ५ ख ग घ. पदंम। ६ ख ग. घ अठार। ७ ख मिले। ग घ पिले। ८ ख. ग घ अपारं। ९ ख ग घ चिला। १० ख ग घ सैनाय। ११ ख. विषमी। ग विषमी। घ. विषमी। १२ ख ग घ सीधवा। १३ ग वागी। १४ ख. व्रहैमड। ग घ व्रहैमड। १५ ग. वागी। १६ ख ग. हालीया।

---

१७३ सेस – लक्ष्मण। पिन्नाक – धनुष। झल्ले – धारण किया। उझल्ले – उमड गये।

१७४ वोम – व्योम, आकाश। अडीखभ – जबरदस्त, शक्तिशाली। पिले – चले। थाट – सेना।

१७५. भणके – ध्वनि विशेष हुई। चलौ – प्रत्यंचा। कोमडा – धनुष। तूर – वाद्य विशेष। भेरी – वाद्य विशेष। सहनाय – वाद्य विशेष। आनेक – नगाडा। विखम्मी – विषम, भयकर। डाक – ध्वनि विशेष। वागी – बजी, हुई। व्रहमंड – व्रह्माण्ड। हाक – आवाज, ध्वनि।

१७६ कामठि – कच्छपावतार।

छछोहा कपी घूमरा एम छूटा ।
फबै जांण[1] कोटेक सामद्र फूटा ॥ १७६
महारुद्र डैरू वजै[2] जोगमाया ।
इसा थाट ले तीर सांमद्र आया ।
सरां-राज माथै ररा अक सारै ।
तरां-पत्र जेही गिरां जुत्थ[3] तारै ॥ १७७
उवै वार[4] वब्भीखणौ[5] चालि आयौ ।
लखे ते हणूमांन पावा लगायौ ।
प्रणामेस[6] वैभाखणां[7] भूप येनू ।
जपै आव लकेस स्रीरांम[8] जेनू ॥ १७८
वणै[9] सूर दाता उभै व्रद्द[10] वका[11] ।
लियांहूत[12] पैं'ली[13] दिवी दांन लका ।
दुवै छेह सांमद्र बाधौ वधारं ।
उतारेस पारं पदम्मं अठारं ॥ १७९

---

१ ख ग जाणि। २ ग घ वजे। ३ ख ग घ जूथ। ४ ग घ. वार। ५ ख वब्भीषण। ग वभीषण। घ वब्भीखण। ६ ख प्रमाणेस। ७ ख वभीष्यण। ग वभीष्यण। घ वब्भीषणं। ८ ख ग घ. श्रीराम। ९ ग वणै। १० ख व्रद। ग व्रद। घ व्रद्द। ११ ग घ. वंका। १२ ख ग लीयाहूंत। १३ ख ग घ. पैल्ही।

---

१७६ छछोहा – तेज नोत्साह। घूमरा – समूह, यूथ। एम – इस प्रकार। जांण – मानो। कोटेक – करोडो। सामंद्र – समुद्र।

१७७ डैरू – रुद्रका डमरू नामक वाद्य विशेष। सरां-राज – समुद्र, महासागर। माथै – ऊपर। ररा अक – राम नाम। तरां-पत्र – वृक्षोंके पत्ते। जेही – जैसे। गिरा – पर्वतो। जुत्थ – यूथ, समूह।

१७८ उवै – उस। वार – समय। वब्भीखणौ – विभीषण। लखे – देख कर। ते – उसे। हणू मान – हनुमान। जपै – कहते हैं। लकेस – लंकापति रावण। जेनू – जिसको।

१८९ उभै – दोनो। व्रद्द – विरुद। पैं'ली – पहिला, प्रथम। दिवी – देदी। सामद्र – समुद्र। बाधौ – पूरा।

अथ नीसांणी

पार[1] उतारे[2] पूछियौ[3], कपिराज[4] हकारे ।
कठै ब्रह्म[5] राकस[6] कहौ, इम राम उचारे ।
तवै अरज सुग्रीव ताम, वर[7] बुद्धि विचारे[8] ।
भारी ह्वै सो भूपती, भर नम्मै[9] भारे ॥ १८०
एकवार[10] मेल्हौ अगद[11], महि लक मझारे ।
दई हुकम अगद[12] दियौ[13], वप[14] ताम वधारे[15] ।
अडियौ[16] जाय मसतक्क[17] उरसि[18], धू पर दिठ[19] धारे ।
प्रचड नमाए[20] लक प्रौळ[21], आए उपरारे ॥ १८१
अट्टके[22] नह सकिया[23] अंगद[24], दहकंध दुवारे[25] ।
दइता[26] इम[27] दीसै अगद, अतक उणहारे[28] ।
आगम सपेखे अगद, माया विसतारे[29] ।
पीसोधरि[30] अरि[31] फेरि पूठि, सिल सभा सझारे ॥ १८२

---

१ ख. ग घ पारि । २ ग उतारि । ३ ख ग पूछीयौ । ४ ख ग घ कपिराव । ५ ग व्रह्म । ६ घ राकस्स । ७ ग. वर । ८ ग विचारे । ९ ग नर्म । १० ग ऐकवार । ११ ख ग. अगदि । घ अगदी । १२ ख ग घ अगिद । १३ ख ग घ दीयौ । १४ ग वप । १५ ख. वघारे । १६ ग. घ अडीयौ । १७ ग. मसतक । १८ ग घ वरस । १९ ग. दीठि । घ दिट्ठी । २० ख ग नमाये । घ नमाअे । २१ ख ग घ पौलि । २२ ख ग घ अटके । २३ ग. कीया । ख क्रिया । २४ ख. ग घ. अगिद । २५ ख ग घ दवारे । २६ ख. दइयता । ग दयता । न दयता । २७ ग घ यम । २८ ख ग घ वणहारे । २९ ग विसतारे । ३० ख. ग घ पिडसौधरि । ३१ ख. ग घ. अर ।

---

१८० हकारे – आवाज करते हैं । कठै – कहाँ । ब्रह्म राकसं – ब्रह्म राक्षस । इम – इस प्रकार । तवै – कहता है । वर – श्रेष्ठ ।

१८१ मझारे – मध्यमे । दई – ईश्वर, श्रीराम । वप – शरीर । मसतक्क – मस्तक । उरसि – आसमानमे ।

१८२ दहकध – रावण । दुवारं – द्वार पर, द्वारमे । अतक – यमराज । उणहारे – सूरत, शक्ल । आगम – आना । सपेखे – देख कर । पीसोधरि – राक्षस, असुर ।

पिंड पिड दस दस सिर परठि, सिर[1] सिर छत्रधारे ।
जगमग हीर जडाव, जोति आदित आभारे ।
देखि अगद वहौ चोपदार, अति माम वचारे[2] ।
चद मद वुद्धि धीर[3] चव[4], असतूति[5] अपारे[6] ॥ १८३
अज गुर सुत[7] भाखौ अलप, वायक[8] उच्चारे[9] ।
भौळे सूर[10] न भूलियौ[11], छकयंद्र[12] छभारे ।
एह[13] छभा असुराण इद, मुनियद्र[14] प्रहारे ।
ईखे मन हसियौ[15] अगद[16], धर[17] छळ[18] धूतारे[19] ॥ १८४
पै हिण[20] सिल फेरै प्रचड, सनमुक्ख[21] सभारे ।
रहिया[22] यक[23] अग साच राण, मिटिया[24] मायारे ।
देखि[25] छभा रुख वालिसुत्त, कथ कहै करारे ।
हू जाणू त्रए राण दह, कुण सो अधिकारे ॥ १८५
इम[26] वायक[27] सुणि अगदह[28], रामण[29] उच्चारे ।
तू[30] जाणै कपि[31] त्रण[32] तिकै, कहि राण किसारे ।

---

१ घ सिरि । २ ख ग घ. उचारे । ३ ख. वुधिघीर । ग घ दुधिघीर । ४ ख. ग घ. चवि । ५ ग घ असतुति । ६ ग आपारे । ७ ख ग घ लुत्य । ८ ख. घ वायक्क । ग वायक्क । ९ ग घ उचारे । १० ख ग घ सुरा । ११ ख ग. भूलीयै । घ भूलियं । १२ ख घ छकइद्र । ग छकईंद्र । १३ ख ग घ येह । १४ ख मुनियंद । ग घ सुतयंद । १५ ख ग हसीयो । १६ ग घ अगिद । १७ ख. घरि । १८ ख ग घ झळ । १९ ख ग ध्रुतारे । २० ख ग. घ पैं हणि । २१ ख ग सनमुज्य । घ सनमुष । २२ ख ग रहीया । २३ ख ग घ इक । २४ घ मिटीया । २५ ग वेषि । घ वेपि । २६ ख. ग घ यम । २७ ग वायक । २८ ख अगद । ग. घ अगिदह । २९ ख ग घ रामणि । ३० ख भूजाणै । ३१ ख ग ध कपी । ३२ ख ग. घ त्रिएह ।

---

१८३ आदित – सूर्य । आभारे – चमक, दमक । चोपदार – चोवदार । माम – अपनी स्थिति (?) । चव – कहते हैं, कह कर ।

१८४ छकयद्र – इन्द्रका वैभव । छभा – सभा । असुराण – राक्षस राजा, रावण ।

१८५ पैं – पैर, चरण । हिण – प्रहार कर । राण – रावण । छभा – सभा । करारे – जबरदस्त ।

१८६ इम – इस प्रकार । वायक – वाकया । त्रण – तीन ।

इक[1] बाधौ सहसा - अजणि, जळ क्रीड मझारे ।
बामणि[2] गदा विहडियौ[3], दूजौ बळि द्वारे ।। १८६
सो भखतौ दासी प्रसाद, करि करि नृत[4] कारे ।
मुणता तीजो लाज मो, आवै अधिकारे[5] ।
पित मो बाधौ पालणै, रामत[6] रिझवारे ।
इम रामण सुणि अगदह, खळ[7] वायक[8] खारे[9] ।। १८७
वदियौ[10] स्वांन वनंचरा[11], नहिं[12] लाज निहारे ।
मुख[13] भख ग्रासज मेल्हिजे[14], मस्तक[15] पर मारे ।
भूलै मार सताव भेव[16], भख चाहै . भारे ।
औ औखाणौ[17] अगद आदि, सुणता प्रसतारे ।। १८८
सो तौ दीठौ आज साच, निज चखा निहारे ।
वाळि[18] सरीखौ पित वहे[19], जै राम जुहारे ।
अम्हं विसटाळै[20] आवियौ[21], लगि ज्याहिज[22] लारे ।
कटक[23] सुणि अगद कहै, पित तूझ प्रकारे ।। १८९

---

१ ख ग. घ यक। २ ख घ. वामणि। ३ ख विडडीयौ। ग विहडीयौ। ४ ख. ग घ. नृतकारे। ५ ख. ग घ इधकारे। ६ ख ग घ रामति। ७ ख घल। ८ ख. वाइक। ग. घ. वाइक। ९ ख पारे। १० ख वदीयौ। ग बदीयौ। ११ ख. घ. वनेचरा। ग वनेचरा। १२ ख ग घ नह। १३ ग घ मुषि। १४ ख ग घ मेल्हजे। १५ ख ग घ. मसतक। १६ ख भेष। १७ ख. ग घ अवखाणौ। १८ ग घ वालि। १९ ग वहे। २० ग बिसटाळै। २१ ख ग आवीयौ। २२ ख ज्याहीज। ग जाहीज। २३ ग घ. कटिक।

---

१८६. सहसा अजणि – सहस्त्रार्जुन। वामणि – वामनावतार। विहडियौ – मारा।

१८७ नृत – नृत्य, नाच। मुणता – कहने पर, कहते हुए। रामत – खेल, क्रिडा। खारे – अप्रिय, कटु।

१८८ वादियौ – कहा। स्वान – कुत्ता। वनचरा – वनमे चरने वाला। भख – भक्ष्य पदार्थ। सताब – शीघ्र। औ – यह। औखाणौ – वाग्धारा, मुहावरा।

१८९ चखा – नेत्रो। निहारे – देख कर। सरीखौ – समान, जैसा। पित – पिता। जुहारे – अभिवादन करता है। अम्ह – हमारा, मेरा। विसटाळै – मध्यस्थता करनेको। कटक – राक्षस, रावण।

लोक लाजि[1] तजि हल्लतौ, प्रभु जेणि प्रहारे ।
उणसूं तो माहै अधिक, करसी करतारे ।
सहत भडां तो साभ्रसी, पुत्रे परिवारे[2] ।
इम सुणि रामण[3] खीजियौ[4], उडि नयण अगारे ॥ १९०
कपि पकडौ पकडौ कहै, राकस हलकारैं ।
जूटा हुकम प्रमाण जोध, कपिहू अधिकारे ।
काळ हुकमि जिम[5] काळरा, किंकर कहरारैं ।
होय लटां - चट्टा हिचैं, विकटा[6] वाकारैं[7] ॥ १९१
रोस उपट्टा रौंभ्रटा, वहौ[8] थटा वथारे ।
कोडि असुर भ्रपटा करैं, अगद[9] एकारे ।
घटियौ[10] वळ देता घणा, हटियौ[11] नह हारे ।
रांम हुकमि भड रामरै, करि भ्राटि[12] करारे ॥ १९२
उभै कोडि राकस अंगद[13], पळ माहि प्रहारे ।
कर[14] ग्रहि रामणरौ मुकट, उडियौ[15] अंवरारे ।
करि प्रसतानौ ले चले, दस सिरि जमद्वारे ।
कूदि चढे दहकधरैं[16], चित हित चौवारे ॥ १९३

---

१ ख. ग घ. लाज । २ ख परवारे । ३ ख ग घ रावण । ४ ग खीजीयौ । ५ ख जिमि । ६ ग विकटां । ७ ख वाकारे । ८ ख वहौ । ९ ग अगिद । १० ख. ग घटीयौ । ११ ख ग हटीयौ । १२ ख. भ्राट । ग. भ्रटि । १३ ख ग अगिद । १४ ख. ग करि । १५ ख ग उडीयौ । १६ ख दसकध ।

---

१९० हल्लतौ – चलता । सहत – महित । साभ्रसी – मारेगा । खीजियौ – कोप किया ।

१९१. हलकारैं – ललकारते है । जूटा – मिले, जुडे । लटा-चट्टां – गुत्थमगुत्था । हिचैं – युद्ध किया, भिडे । वाकारैं – ललकारा, जोशपूर्ण आवाज की ।

१९२ उपट्टां – वढा, उत्पन्न हुआ । रौंभ्रटा – लडाई । वहौ – वहुत । थटा – दलो, सेनाओ । वथारे – भिडे, युद्ध किया । कोडि – करोडो, अपार । भ्रपटा – टक्करो । एकारे – एक ही । घटियौ – कम हुआ । हटियौ – हटा । हारे – हार कर, पराजित हो कर भ्राटि – भ्रपट, टक्कर । करारे – जवरदस्त, भयकर ।

१९३ पळ – क्षण । माहि – मे । प्रहारे – सहार किये, मार डाले । अंवरारे – आकाशमे ।

उप[1] कनंक[2] हीरां जडाव, जग जोति जुहारे[3] ।
आच पछट करि महल ओप[4], भाजे बळ भारे ।
आयौ चाहतां अगद, मह सेन मभारे ।
प्रभु पद[5] वादे[6] जोड[7] पांण, अग्र[8] मुकट अधारे ।। १९४
स्रीपति बभ्भीखणह[9] सिर[10], सो मुकट सधारे ।
समाचार पूछे सकळ, प्रभु जेण[11] प्रकारे ।
कर जोडे अगद[12] कहै, इण भात[13] उदारे ।
राम प्रधानौ राजिरौ, रामण[14] नह[15] धारे ।
समहर माडौ[16] सूरिमा, इम[17] वयण[18] उचारे ।। १९५

गीत त्रकुटबंध[19]

इम वयण सुणि कपिरावरा[20], रघुवीर हाकलि वदरा[21] ।
दौडिया[22] लका लियण[23] दारुण, वधे[24] कपि विकराळ[25] ।।
हुय[26] बौतकारा[27] हौफरा, धर अबर थरहर धरधरा ।

१ ख ग वोप । घ ओप । २ ख ग घ कनक । ३ ग जूहारे । घ जुन्हारे । ४ ख ग. वोप । ५ ख ग घ पग । ६ ख घ वदे । ग. बदे । ७ ख ग घ जोडि । ८ ख ग घ अग्रि । ९ ख वभ्भीखर्णाहि । ग घ. वभ्भीषणहि । १० ख ग घ. सीस । ११ ग घ जेणि । १२ ग अगिद । १३ ग घ भाति । १४ ख ग घ रामणि । १५ ख नहि । १६ ख. ग घ मडौ । १७ ख ग घ यम । १८ ग. बयण । १९ ख ग घ त्रिकुटबध । २० ख रावरी । २१ ग घ बदरा । २२ ख. ग दौड़ीया । २३ ख ग लीयण । २४ ग बधे । २५ बिकराळ । २६ ख. हौय । ग घ होय । २७ ख वूतकास ।

१९४ उप – शोभा, काति । कनक – सुवर्ण, सोना । आच – हाथ । पछट – प्रहार कर, पटक कर । वांदे – नमस्कार कर । जोड़ पाण – करवद्ध होकर ।

१९५ स्रीपति – लक्ष्मीपति, श्रीराम । वभ्भीखणह – विभीषण । सधारे – धारण करवाए । प्रधानौ – प्रधानता । राजिरौ – श्रीमानका, आपका । समहर – युद्ध, समर । समहर माडौ – युद्ध रचो, युद्ध करो । सूरिमा – वीरो । इम – इस प्रकार । वयण – वचन ।

१९६(१) कपिरावरा – सुग्रीवके । हाकलि – जोशपूर्ण वचन कहे । दारुण – जबरदस्त, भयकर । हौफरा – तेज आवाज, जोशपूर्ण आवाज । धर – पृथ्वी । अंबर – आकाश । थरहर – कपायमान ।

वरतूर[1] त्रंव सर[2] अडर[3] वीफर[4] ।
भेर सँख मुर गहर धर भर ।
अमर वर रथ सोक अपछर ।
वीर हर कर डवर रिखवर ।
नहर धर पर घौख नाहर ।
धुवर[5] रज भर भँखर तप धर ।
सर जहर उडि धोम धर सर ।
रीठ तर पड़ि वजर[6] गिरउर[7] ।
चौ तरफ घमचाळ ।। १

तदि मत्रि[8] सभरि महिपती[9], रणि दीठ रामण[10] रघुपती ।
कागुरे कागुर[11] दीठ वह[12] कपि, लूविया[13] धक[14] लागि ।।
मद-गध[15] जिम सँक नहि[16] मनै, अति हाकले असुराणनै ।
दौडिया[17] खळ दळ सवळ दमगळ ।
छिव[18] कमळ नभ सकळ वळछळ ।
हुवि[19] जुगळ धुवि लोह भळहळ ।
विमळ[20] जळसर फूटि वळवळ ।

---

१ ग. बरतूर । २ ख त्रवसुर । ग घ. त्रवसुर । ३ ख अवरडर । घ. अरड । ४ ग. बीफर । ५ ख घूंवर । ६ ग वजर । ७ ख. ग घ गिरवर । ८ ख ग मन्त्रीय । घ मत्रियाँ । ९ ख ग घ. महपती । १० ख ग घ. रांमणि । ११ ख. घ कागुरे । ग कांगुरि । १२ ख वहौ । ग. घ वहौ । १३ ग लू वीया । १४ ख ग. घ धख । १५ ख ग घ मद गयद । १६ ख ग घ. नह । १७ ख ग दौड़ीया । १८ ख छिवि । ग घ छिवि । १९ ख हुव । ग घ हुव । २० ग बिमळ ।

१९९(१) त्रव – नगाडा । वीफर – भयावह । वीर – युद्धप्रिय देव । हर – महादेव । डवर – चटक-मटक, हर्ष । रिखवर – नारद । घौख – घोप । रीठ – प्रहार । गिर-उर – पर्वत । घमचाळ – युद्ध ।

१९९(२) संभरि – तैयार होकर । रणि – युद्धमे । दीठ – देखा । लू बिया – लूमे, लटूमे । धक – क्रोध । मद-गध – मदोन्मत्त हाथी । सक – भय, डर । असुराणनै – रावणको । दमगळ – युद्ध । छिव – स्पर्श । कमळ – शिर, मस्तक । नभ – आकाश । हुवि – भिड कर । जुगळ – युगल । धुवि – भयकर । लोह – शस्त्र । भळहळ – चमक, दमक । वळवळ – चारो ओर ।

बहळ[1] ससियळ[2] धमक सावळ ।
वहै[3] कळकळ प्रवळ वीजळ[4] ।
चकळ इळतळ वितळ[5] चळचळ ।
मॅंगळ झळ चॅंड धमळ मगळ ।
विढै सूर व्रजागि ।। २
बौह पड़ै धड धड वेहड़ा[6], जुधि लड़ै भड जम जेहडा ।
जुध-दुद[7] राघव अनै इद्रजित, भयाणक[8] पडि भार ।।
उण वार[9] रत नद ऊभळै[10], हुय[11] हाक धर गिर हलहलै ।
झड़ अनड उड[12] रव बाणि बहिझड[13] ।
उरड अपहड दुजड ओझड ।
कर डमर गड़ बरड[14] कर धड ।
लुडत तडफड जुटत लडथड ।
वढि[15] कँधड मुख करत बडबड[16] ।
फरड[17] फिफरड कळिज[18] फडफड ।

---

१ ख वहल । २ ख. ग. ससीयळ । ३ ग. बहै । ४ ग बीजळ । ५ ग वितळ । ६ ख घ वेहडा । ७ ख ग दूद । ८ ख ग. घ. भयाणक । ९ ग वार । १० ख उझले । ११ ख. ग घ होय । १२ ख. ग वुरडव । घ वुरवड । १२ ख ग वाण । घ वाण । १३ ख घ वहिझड । १४ ख. वरड । १५ ख कटि । १६ ख वडवड ।

नोट– ख. प्रतिमे ये पक्तिया नही है—

फरड फिफरड कळिज फडफड
फील घड पड अझड झडफड

१७ घ फडड । १८ घ. काळिज ।

१९६(२) वहळ – वहुत । ससियळ – चद्रमा । सावळ – भालाविशेष । कळकळ – भयकर, भयावह । वीजळ – तलवार । चकळ – भ्रमायमान । इळतळ – भूमडल । वितळ – सप्तलोकोमे एक लोक । चळचळ – विचलित । मॅंगळ – अग्नि, आग । चॅंड – भयकर, भयावह । विढै – वीर गति प्राप्त होते हैं ।

१९६(३) बौह – वहुत । धड – शरीर । वेहडा – एकके ऊपर एक इस क्रमसे, सर पर रख कर पानी भर लाने के वर्तन । जम – यमराज । जेहडा – जैसा । जुध-दुद – द्वद युद्ध, दो का युद्ध । – राघव – श्रीरामचन्द्र । अनै – और । उण – उस । वार – समय । रत – रक्त, खून । नद – वडी नदी । ऊभळै – उमडते हैं । हाक – वीर-ध्वनि । हलहलै – कपायमान होते हैं । अनड – योद्धा, वीर, पर्वत, पहाड । अपहड – जवरदस्त, वीर । दुजड – तलवार । ओझड – प्रहार । लुडत – युद्ध करते हैं । जुटत – भिडते है । लडथड़ – लडथडाते हैं । कॅंधड़ – कधा । फिफरड – फेफडा । कळिज – कलेजा ।

फील घड पड ग्रभ्फड भ्फड़फड़ ।
हुय[1] दडड़ रत मुनद[2] हडहड़ ।
पडे दळ ग्रणपार ।। ३

सत्र हणै बळ[3] समराथरा, रिण लडै भड रुघनाथरा ।
तदि लखण[4] ग्रगद[5] सुग्री हणवत[6], नील नळ नर नाह ।।
जामवँत क्रुध भ्फळ जळहळी[7], सुक्खेण[8] मयदह सतबळी ।
कपि कटक हूचक कटक दैतक ।
उरक वेधक[9] सरक ग्रैतक ।
ग्रँतक तक भड भचक इक[10] इक ।
पडि जरक मुद गरक पासक[11] ।
धमक सेलक बँवक[12] धकधक ।
तदि उवकि[13] पत्र चँडिक त्रपतक ।
चहक पावक वभक चहु चक ।
तद[14] ग्ररक रथ थरक कौतिक[15] ।
उदधि रण ग्रणथाह ।। ४

---

१ ख ग घ होय। २ ख ग. घ मुनिंद। ३ ख. वळ। ४ ख ग लखिण। ५ ख ग ग्रंगिद। ६ ख ग हणमत। ७ ख जळहरी। ८ ख ग सुख्येण। घ सुख्येण। ९ ग वेवक। १० ख. पक पक। ग यक यक। घ दक यक। ११ घ. वासक। १२ ख ववक। १३ ख ग. उवक। घ उवक। १४ ग. घ तदि। १५ ख ग घ. कौतिळ।

१९६(३) फील – हाथी। घड – सेना। ग्रभ्फड – गिद्ध। भ्फडफड – पक्षियोका पखोको फडफडाना क्रिया। दड़ड – द्रव पदार्थका तेज प्रवाह या इस प्रकारके प्रवाहकी ध्वनि। रत – रक्त, खून। मुनद – नारद ऋषि। हडहड – तेज हँसनेकी ध्वनि। ग्रणपार – ग्रपार, ग्रसीम।

१९६(४) सत्र – शत्रु। हणै – सहार करते हैं। समराथरा – समर्थके। तदि – तव। लखण – लक्ष्मण। सुग्री – सुग्रीव। हणवत – हनुमान। सुक्खेण – सुषेण नामक वानर। कटक – सेना। हूचक – युद्ध कर, युद्ध करते है। दैतक – दैत्य, राक्षस। उरक – हृदय। वेधक – वेधते हैं। ग्रैतक – इस प्रकार। ग्रँतक – यमराज। जरक – टक्कर। धमक – प्रहार। सेलक – भाला। बँवक – प्रहार, घाव। धक-धक – द्रव पदार्थके तेज प्रवाहकी क्रिया या ध्वनि। तदि – तव। उवकि – उमड कर। पत्र – देवीका खप्पर। चँडिक – चडिका। त्रपतक – तृप्त। वभक – भयंकर। चहु चक – चारो ओर। तद – तव। ग्ररक – सूर्य। थरक – स्थिर। उदधि – समुद्र, सागर।

बौह[1] घरट जुधि[2] अँह वाणरौ[3], रचि गयौ अद्र सट राणरौ ।
कूभिला पूजण लगौ कूवर, जठै कुंभक्रण[4] जागि ।।
वधि[5] रांण सुवप[6] वधारियौ[7], असमाण छिबतौ[8] आवियौ[9] ।
कर सूळ विकटह[10] सुभट कौचट[11] ।
रांम थट झट झपट रौझट ।
पछट वज्रघट कुघट ऊपट ।
रँगट भट फुट भ्रकुट मरकट ।
कुळट[12] नट वट उछट कटकट ।
गरट गजधर अघट गाहट ।
ग्रध[13] झपट बहु[14] मास गटगट ।
नहट हट[15] स्वर कुँभट नीछट ।
मिळे हँस स्रुगि[16] माग[17] ।। ५

सर पहर अठ जुध सारियौ[18], मेघनाद लछमण[19] मारियौ[20] ।
सझि असंख दळ बळ[21] सबळ[22] दससिर, आवियौ[23] अवनाड ।।
स्रीराम[24] खळ[25] हुय[26] सैफळा, हुब[27] बाण[28] बहजळ[29] झळहळा[30] ।

१ ख वौहौ। ग घ. वौहौ। २ ख ग घ जुध। ३ ख वाणरी। ४ ख क्रन। ५ ग घ वंधि। ६ सुवप। ७ ख वधावीयौ। ग वधावीयौ। ८ ख छिवतौ। ९ ख ग आवीयौ। १० ग विकटह। ११ ख कौचकट। १२ घ कुजट। १३ घ ग्रिध। १४ ख वहौ। ग घ वहौ। १५ ख ग घ. हस्य। १६ ख श्रुगि। ग. श्रुग। घ. शुगि। १७ ख ग घ मागि। १८ ख ग सारीयौ। १९ ख ग घ लछिमणि। २० ख. ग मारीयौ। २१ ख वल। २२ ख सवळ। २३ ख ग. आवियौ। २४ ख ग घ श्रीराम। २५ ख लख। २६ ख ग घ होइ। २७ ख घ. हुव। २८ ख वाण। २९ ख वहौजळ। ग घ वहौजळ। ३० ख ग घ जळहळा।

१९६(५) कूभिला – एक देवीका नाम जिसका कुंभकर्णके इष्ट था। रांण – रावण। सुवप – सुन्दर शरीर। वधारियौ – वढाया। छिवतौ – स्पर्श करता हुआ। रौंझट – लडाई। रँगट – राघड, वीर। भ्रकुट – मस्तक। मरकट – वानर। कुळट नट वट – नटके समान कुलाच। गरट – समूह। गाहट – सहार कर। ग्रध – गिद्ध। गटगट – निगलना क्रिया। हँस – प्राण। स्रुगि – स्वर्ग। माग – मार्ग।

१९६(६) सझि – सज कर, तैयार कर। अवनाड – वीर, योद्धा। सैफळा – अस्त्रशस्त्रो सहित। हुब – भिडे। झळहळा – दमक, चमकयुक्त।

मँड घमँड जुध थँड विहँड[1] रुँडमुँड ।
भुँड भ्रकुँड चँड त्रिपत ग्रध भुँड ।
पिड विहँड बह[2] भरत रत पँड ।
सिहँड ध्वज मुख वयँड[3] धजसँड[4] ।
प्रचँड रुँडमुँड[5] माळ परचँड ।
खँड विहँड[6] पँड[7] वयँड[8] खँडखँड ।
उचँड नवखँड तरँड ऊडँड ।
चँड कुमँड प्रभु वहे[9] सर चँड ।
पडै घाट पहाड ॥ ६

इक[10] उभय दस अयताणिय[11], पमगेस गज पिसणाणयं ।
धर[12] पडै ऊठै[13] कवध[14] इक तदि, कोटि इसा[15] इक राळ ॥
ऊठत कमध उदारय, तदि वजै[16] इक टकारय ।
रण वाण[17] घण सझि अ्रसण वरसण[18] ।
करि प्रसण घण अतण कणकण ।
कुळ हतण इद्रजितण कुभक्रण ।
मँडण पण करि हणे रामण ।

---

१ ग विहंड । २ ख वहौ । ग. घ वहौ । ३ ग घ वयड । ४ ख ग घ धुजसंड । ५ ख मुडरुड । ग मंडरुड । घ डडरुड । ६ ख घ वितड । ग वितड । ७ ख ग घ पिड । ८ ग वयड । ९ ग वहे । १० ख. ग घ यक । ११ ख ग घ अयताणय । १२ ख घ धड । १३ ख ग उठै । १४ ख कवध । १५ ख ग घ. साइ । १६ ग वजे । १७ ख वाण । १८ ग वरसण ।

१९९(६) थँड – समूह । विहँड – सहार कर, नाश कर । भ्रकुंड – मस्तक, शिर । चँड – चडिका । त्रिपत – तृप्त । ग्रध – गिद्ध । वह – वहुत । रत – रक्त, खून । रतपँड – युद्धमे वीर गति प्राप्त वीर द्वारा अपने ही रक्तसे मिट्टीके वांधे हुए गोल पिड या लोदा जो वह अपने पितरोको युद्धस्थलमे अर्पित करता है । सिहँड ध्वज – स्वामी कार्तिकेय । मुख वयँड – हस्तीका सूड या गजानन । धजमँड – महादेव । वयँड – हाथी । तरँड – वृक्ष । कुमँड – धनुष ।

१९९(७) पमगेस – घोडा । पिसणांणयं – शत्रु । टकारय – प्रत्यचाकी ध्वनि । अ्रसण – तीर, वज्र । प्रसण – शत्रु । अतण – नाश ।

वरण[१] रँभ क्रत सुमण वरखण[२] ।
मिटण दुख ग्रह बँधण[३] मोखण ।
सरण असरण ब्रदण[४] साभ्रण ।
टँकर वण किय[५] वजण[६] दिन तिण[७] ।
वार[८] तेर विशाळ[९] ॥ ७

जळ इम्रत[१०] थाट जिवाविया[११], लज[१२] सील सुध[१३] स्त्रिय[१४] लाविया[१५] ।
व्रवि[१६] वभीखण[१७] लक राज रघुवर[१८], आविया[१९] अवधेस ॥
कुल मिळे उच्छव[२०] बोह[२१] किया,[२२] अति धमळ[२३] मँगळ अजोधिया[२४] ।
वजि म्रदँग[२५] चँग रँग उपँग वारँग[२६] ।
अनँग छबि[२७] चँग उमँग अँगअँग ।
नृतँग[२८] रित[२९] अँग करँग नादँग ।
रस तरँग बह[३०] तरँग रँगरँग ।
रजँग[३१] नृप[३२] अँग सुरँग चतुरँग[३३] ।
सीत सँग करि[३४] खतँग सारँग ।

---

१ ग बरण । २ ग बरखण । ३ ख वधण । ४ ख व्रदण । ५ ख ग घ कीय । ६ ग वजण । ७ ग तण । ८ ग. वार । ९ ग विसाल । १० ख ग घ अमृत । ११ ख ग जिवावीया । १२ ख जल । १३ ख श्रुद्ध । ग सुद्ध । घ शुद्ध । १४ ख ग घ. श्रीय । १५ ख ग लावीया । घ ल्याविया । १६ ग. व्रवि । घ व्रवि । १७ ग बभीषण । १८ ग रघुबर । १९ ख ग आवीया । २० ख उछव । ग उत्छव । घ उच्छव । २१ ख वहौ । ग घ वहौ । २२ ख ग घ. कीया । २३ ख ग घ के अनुसार—

कुल मिळे उच्छव वहौ कीया अति मगळ धमळ अजोधीया ।

२४ ख ग. अजोधीया । २५ ख ग घ मृदंग । २६ ग वारग । २७ ख छवि । २८ ख ग घ नृतग । २९ ख ग घ रति । ३० ख वहौ । ग घ वहौ । ३१ ख रजत । ३२ ग घ. नृप । ३३ ख ग घ चत्रुरग । ३४ ख ग घ कर ।

१९९(७) रँभ – अप्सरा, रभा नामक अप्सरा । सुमण – देवता, पुष्प । बँधण – बंधन । मोखण – मुक्ति । व्रदण – विरुद । टँकर – प्रत्यंचाकी ध्वनि ।

१९९(८) स्त्रिय – सीता । व्रवि – दान देकर । उच्छव – उत्सव । बोह – बहुत । धमळ-मँगळ – मांगलिक गीत । नादँग – नाद, ध्वनि । बह – बहुत । तरँग – प्रकार, तरह । सीत – सीता । खतँग – बाण । सारँग – धनुष ।

मात चरणँग करँग प्रणमँग ।
सुजस गँग रँग कथँग सरवँग[1] ।
नमौ अवधि[2] नरेस ।। १९६(८)

छप्पय

अवधि राज करि इधक[3], महल[4] सुख कीध महावळ ।
सझे त्याग असमेध, दइव जीता वौह[5] नृपदळ[6] ।
भार उतारे भोमि, अवधि सैंदेह[7] उधारे ।
वसे[8] राम वैकुठ[9], विमळ[10] जग जस विसतारे[11] ।
अघ नास कहत भाजत अघ, जनम कोटि कीधा जियां ।
जिण वसि[12] राम प्रगटे जिकौ, वस[13] सुधिन[14] रघुवासिया[15] ।। १९७
सुधन्य माता कौसल्या[16], तात दसरथ धनि[17] भूपति ।
अवधि पूरि[18] धनि अवनि, प्रिया धनि सीत तासपति ।
धन्य[19] सत्रघण धन्य[20] लखण, भरथ धनि जै हर[21] भाई ।
धन[22] त्रेतायुग[23] सुधनि, वाणि[24] वाळमीक[25] वणाई[26] ।

---

१ ख सरवग। २ घ अवधि। ३ ख ग घ अधिक। ४ ख ग घ. महलि। ५ ख वहौ। ग. घ वहौ। ६ ख. ग. घ नृपदळ। ७ ग सँदेह। ८ ग. वसे। ९ ग. वैकुठि। १० ग. विमळ। ११ ग विसतारे। १२ ख घ वस। ग वंस। १३ ग वस। १४ ख ग घ सुधनि। १५ ख रघुवसीया। ग रघुवंसीया। १६ क कोसल्य। १७ ग धन्य। १८ ख ग घ पूरी। १९ ख ग घ धनि। २० ख ग घ धनि। २१ ख ग घ. हरि। २२ ख ग घ. धन्य। २३ ख ग घ त्रेताजुग। २४ ग वाणी। २५ ख वलमीक। ग वालमीक। २६ ग. वणाई।

१९६(८) चरणँग – चरण। करँग – करके। प्रणमँग – प्रणाम।

१९७ इधक – अधिक। त्याग – यज्ञ। असमेध – अश्वमेध। दइव – देवता। वौह – वहुत। अवधि – अयोध्या। सैंदेह – शरीरसहित। वसि – वंशमे। जिकौ – वह। सुधिन – सुधन्य।

१९८ अवनि – पृथ्वी। धनि – धन्य। सीत – सीता। तास – उस। सत्रघण – शत्रुघ्न।

सुग्रीव अंगद हणुमत सहत[1], आतम धनि आहसिया[2] ।
जिण वस[3] रांम प्रगटे जिकौ, वस[4] सुधिन[5] रघुवसिया[6] *।। १६८

इति रांमायण

छन्द बेअक्खरी[7]

पुन वसवरणण

राम पाट[8] कुस भूप विराजे[9] ।
सुज कुस पाटि अतिथ दिन साजे ।
सभ्रम अतिथ निखधि[10] नृप[11] सोहत ।
राजा निखध पाटि नभ राजत ।। १
पुडरीक नभ पाटि विरदपति[12] ।
सुज[13] पुत्र खेमधन्व[14] वायक[15] सति ।
देवानीक तास पुत्र दीपत ।
सुर[16] दातार अनीक तास सुत ।। २
जे सुत पारिजात ऋत ऊझळ[17] ।
बाळ नृपति[18] जे सुतण महाबळ[19] ।

---

१ ख ग. घ सहित। २ ख ग त्र आहसीयां। ३ ग बिस। घ. वसि। ४ ग बस। ५ ग घ सुधन्य। *यह पक्ति ख प्रतिमे नही है।
६ ग रघुव्रसीया। ७ ख घ बे अक्षरी। ख. बै अक्षरी। ८ ख ग घ पाटि। ९ क. विराजै। १० ख ग घ निषिध। ११ ख. ग घ नृप। १२ ग. बिरदपति। १३ ग घ. सुजि। ख सुजस। १४ ग घ खेमधन्वा। १५ ग बायक। १६ ख ग. घ सूरदतार। १७ ख. ग उभल। घ ऊजल। १८ ख ग घ नृपति। १९ ख महाबळ।

---

१९९ (१) पाट – राज्यसिंहासन। अतिथ – अतिथि। निखधि – निषध नामक राजा। नभ – राजा निषधके पुत्रका नाम। इसका दूसरा नाम पुराणोमे नल भी मिलता है। विरदपति – विरुदपति, यशस्वी।

१९९ (२) खेमधन्व – क्षेमधन्व नामक राजा। वायक – वाक्य, वचन। सति – सत्य। तास – उस। दीपत – शोभा देता है। अनीक – राजा अहिनगुके स्थान पर प्रयोग किया गया है।

१९९ (३) पारिजात – पारियात्र (पारिपात्र) नामक राजा। ऋत – कार्य, काम, कृत्य। ऊझळ – उज्ज्वल। बाळ – पारिपात्रके पुत्रका नाम दल और दलके पुत्रका नाम पुराणोमे वल मिलता है। यहाँ पर यह दलके स्थान पर प्रयोग किया गया है।

वाळ[1] सुतन नृप[2] सिथळ उवंवर[3] ।
वज्रनाभ्र[4] जिण सुतण भुपवर[5] ॥ ३
वज्रनाभ सुत सुगण[6] धरमवप[7] ।
ते सुत विध्रत[8] नरेस उग्र तप ।
सुत जय[9] हरिणनाभ सुभियांणै[10] ।
पुख[11] नृप जे सुत इद्र प्रमाणै ॥ ४
पुक्ष[12] सभ्रम ध्रुवसधि प्रथीपति[13] ।
सुत सुदरसण उदारह दति सति[14] ।
अगन[15] वरण[16] जे सुत आचारी ।
सीघ्र[17] नृपति[18] जिण सुत सतिधारी ॥ ५
मरु जिण सुतण तपोवळ[19] मडै ।
खित गलिका परगट नव खडै ।
वरण अनेक करत तप वीता[20] ।
पांणिग्रहण त्रिय[21] कीध प्रवीता[22] ॥ ६

---

१ ख वाल । २ ख ग घ नृप । ३ ख उवंवर । ४ ख ग वज्रनाभ । घ. वज्रनाभ । ५ ख भूपवर । ग घ भूपवर । ६ ख सगुण । ग घ सुगुण । ७ ग. धरमवप । ८ ख विधृत्य । ग विधृत्य । घ विधृत । ९ ग जैय । १० ख ग सुभीयाणै । ११ ख. ग. घ पुखि । १२ ख ग घ पुष्य । १३ ख प्रीयीपत्य । ग घ. प्रियिपत्य । १४ ख. ग. सत्य । १५ ख ग घ अगनि । १६ ग. वरण । १७ घ सिद्ध । १८ ख नृपति । ग घ नृपत । १९ ख तपोवल । २० ग तपवीता । २१ ख. त्रीय । २२ ग प्रवीता ।

---

१९९ (३) सिथळ– राजा वालका पुत्र, परन्तु पुराणोमे यह नाम नही मिलता है। उववर – वीर, बहादुर । वज्रनाभ – पुराणोमे वज्रनाथ नाम मिलता है ।

१९९ (४) सुगण – इसके स्थान पर पुराणोमे गखन नाम मिलता है । हरिणनाभ – हरण्यनाभ नामका राजा । नोट – यहा पर जो नाम विध्रत आदि है वे पुराणोकी वशावलीसे मेल नही खाते है । सुभियांणै – श्रेष्ठ । पुख – पुष्प नामक राजा ।

१९९ (५) पुक्ष – पुष्य नामक राजा जो हिरण्यनाभका पुत्र था । सभ्रम – पुत्र । ध्रुवसधि – ध्रुवसन्धि नामक राजा । सुदरसण – सुदर्शन नामक राजा । दति – दान । सति – सत्य, शौर्य, वीरता । अगन वरण – अग्निवर्ण नामक राजा जो पुराणोके अनुसार ध्रुवसन्धिका पुत्र था और ग्रथकर्ताने इसे सुदर्शनका पुत्र माना है । आचारी – उदार, वदान्य । शीघ्र – सुदर्शनके पुत्रका नाम, एक सूयवशी राजा । सतिधारी – सत्यको धारण करने वाला, वीर ।

१९९ (६) मरु – सूर्यवशी राजा शीघ्रके उत्तराधिकारी राजाका नाम । सुतण – पुत्र । त्रिय – स्त्री । कीध – किया, किये । प्रवीता – पवित्र ।

जे सुत हुवौ सधि हत दूजण ।
मरखण संधिसुतण कुळ मडण ।
मरखण सुत सिहसान[1] भूप मणि ।
भूप[2] विस्वासा[3] द्वै[4] ते सुत भणि ।। ७
नृपति[5] प्रसेनजीत ते नदण ।
खुनक प्रसेन सुतण खळखडण ।
बळवत[6] खुनक सुजाव व्रहदबळ[7] ।
दुझल[8] हुवौ हरवळ कैरव दळ ।। ८
पडव दळा अनेक प्रहारे ।
महाभारथ कुरखेत[9] मझारै ।
धारे[10] अणी सरीर करे ध्रित[11] ।
महिपति अभिमुनि[12] हाथळ हे म्रित[13] ।। ९
पौहतौ[14] सुरग एम करि पौरिस ।
जगत विख्यात[15] व्रहदबंळरौ[16] जस ।

---

१ ख नहसान। ग महसान। घ सहसान। २ ख ग घ. भूपत। ३ ख विस्वासा। ग बिस्वा। घ. विस्वासा। ४ ख. ग घ हूतै। ५ ख घ. नृपत। ६ ख वलवत। ग. घ बलिवंत। ७ ख व्रहदवलि। ग. घ. व्रहदवलि। ८ ख दुकुल। ९ ख उर। १० ख. ग. घ धारे। ११ ख ग घ ध्रित। १२ ख. ग. अभिमुन्य। घ. अभिमन्यु। १३ ख. ग घ. हे मृत। १४ ग पहौतौ। घ. पौहौतौ। १५ ग बिख्यात। १६ ख. व्रहदवलि। ग घ व्रहदबलि।

---

१९९ (७) सधि – मरूके पुत्र सुसधिके लिये यह नाम आया है। मरखण – राजा मर्षण जो पुराणोके अनुसार मरूका प्रपौत्र था। सिहसान – सहस्वान नामक राजा जो मर्षणका पुत्र था। विस्वासा – पुराणोके अनुसार राजा विश्रुतवान।

१९९ (८) नदण – पुत्र। सुतण – पुत्र। खळ – दुष्ट, शत्रु। खडण – नाश करने वाला। सुजाव – पुत्र। व्रहदबळ – सूर्यवंशी राजा विश्रुतवानका पुत्र वृहदव। दुझल – वीर, योद्धा। हरवळ – हरौल। कैरव – कौरव। दळ – सेना।

१९९ (९) पडव – पाडव। प्रहारे – सहार किये, मारे। कुरखेत – कुरुक्षेत्र। मझारै – मध्य, मे। धारे – तलवारें, शस्त्रोंके। अणी – नोक। ध्रित–भूमि पर। अभिमुनि – अभिमन्यु। हाथळ – हाथसे। म्रत – मृत।

१९९ (१०) पौहतौ – पहुँच गया, पहुँचा। एम – इस प्रकार। पोरिस – पौरुष, पराक्रम।

नृप[1] जे सुत वरकिय[2] कुळनाइक[3] ।
वद्धक[4] ब्रध्ध[5] ते सुत वरदाइक[6] ॥ १०

धरि[7] जे सुत प्रतव्योम[8] धुरंधर ।
सुत प्रतव्योम[9] भांण राजेस्वर[10] ।
भाण सु जादव[11] दिवा (क) तेज भर ।
सुत सहदेव हुवौ इळ समसर ॥ ११

कहि जिण सुतण वीर[12] नृप[13] केहौ ।
जग जस प्रगट भगीरथ जेहौ ।
जे सुत ब्रहदस्व[14] भूप करण जय ।
ते सुत भानुमानु[15] तेजोमय ॥ १२

प्रतीकास जिण सुत बौह[16] पौरस ।
जेण[17] सुतण सुप्रतोक उजळ जस ।
सुत जे नृप मरुदेव वयण सति ।
पुत्र जास सुनक्षत्र प्रथमि[18] पति ॥ १३

---

१ ख ग घ नृप। २ ख ग घ कीय। ३ ख. ग घ नायक। ४ ग. वल्ठक। ५ ख ग घ. वृद्धि। ६ ख घ वरदायक। ग वरदायक। ७ ख ग घ. धर। ८ ख. ग. घ. प्रति। ९ ग व्योम। १० ख राजेश्वर। ११ ख घ सुजाव। ग सुजाव। १२ ग वीर। १३ ख ग घ नृप। १४ ख. ग. ब्रहदस्व। १५ ग घ भानुमान। १६ ख वहो पोरस। ग घ वही पोरस। १७ ख. वेंण। १८ ख ग. घ प्रियमीपति।

---

१९९ (१०) वरदाइक – श्रेष्ठ।

१९९ (११) दिवा(क) – दिवाकर नामक सूर्यवंशी राजा। समसर – समान, बराबर।

१९९ (१२) सुतण – सुत, पुत्र। केहौ – कैसा। जेहौ – जैसा। ब्रहदस्व – पुराणोके अनुसार सहदेवके पुत्र वृहदश्वका नाम। भानुमांनु – पुराणोके अनुसार वृहदश्वके पुत्रका नाम, इसका दूसरा नाम भानुरथ भी था।

१९९ (१३) प्रतीकास – भानुमानके पुत्र प्रतीकाश्वका नाम। बौह – बहुत। पौरस – पौरुष, पराक्रम, शक्ति। सुप्रतीक – प्रतिकाश्वके पुत्रका नाम। मरुदेव – राजा सुप्रतीकके उत्तराधिकारी पुत्रका नाम। वयण – वचन। सति – सत्य। जास – जिसके। सुनक्षत्र – राजा मरुदेवके उत्तराधिकारी राजाका नाम। प्रथमि – पृथ्वी, भूमि।

पुत्र सुनिखत्र[1] नृपरै नृप पुक्कळ[2] ।
सुत जे[3] अतरीख दळ सब्बळ[4] ।
कहि सुतपा जिण[5] सुत अद[6] कोटिक ।
अमित्रजीत तेण सुत नृप इक* ।। १४

जे सुत ब्रहदभोज[7] जगजाहर[8] ।
हदभोज[9] सुत[10] वहन्य[11] क्रीत वर[12] ।
जिण नृप[13] वहनि सुजाव क्रतजय[14] ।
जेण सुजाव नरेस रणंजय[15] ।। १५

तिण सुत संजय रघुकुळ तारण ।
साक्य सजय सुत दुसह सघारण ।
सभ्रम साक्य[16] स्वधोद सकाजा ।
राजै जे सुत लायक राजा ।। १६

---

१ ख सुनक्षत्र। घ. सुनिक्षण। २ पुकल। ३ ख. ग घ जं। ४ ख सव्वल। ग घ सव्वल। ५ ख. पाणिज। ६. ख घ. व्रद।

*ख ग. घ. के अनुसार यह पक्ति निम्न प्रकार है—
अमित्रजित सुत पा मुत नृप यक।

७ ख. व्रिहदभोज। ग ब्रहदभाज। घ ब्रहदभोज। ८ ख. जजाहर। ९ ग ब्रहदभाज। ग ब्रहदभोज। १० ख. सुहत। ११ ख. वहति। ग बहनि। घ वहनि। १२ ग वर। घ. कर। १३ ख ग घ. नृप। १४ ख ग. घ क्रुतजय। १५ क रणजय। १६ ख ग घ साकि।

---

१४ पुक्कळ – पुराणोमे पुक्कल नामके स्थान पर किन्नर नाम मिलता है। अतरीख – अतरीक्ष नामक राजा। सुतपा – राजा अतरीक्षके उत्तराधिकारी राजाका नाम। अमित्रजीत – अमित्रजित नामक राजा।

१५ ब्रहदभोज – पुराणोके अनुसार राजा वृहद्राज। वहन्य – पुराणोके अनुसार शुद्ध नाम वर्हि जिसका दूसरा नाम धर्मी भी मिलता है। सुजाव – पुत्र। क्रतजय – कृतजय नामक राजा। रणजय – पुराणोमे शुद्ध नाम रणजय मिलता है।

१६ साक्य – राजाका नाम। दुसह – दुष्ट, शत्रु। सघारण – नाश करने वाला। सभ्रम – पुत्र। स्वधोद – राजाका नाम, पुराणोके अनुसार लागळ नामक राजा, जिसका दूसरा नाम राहुल भी पुराणोमे मिलता है।

तास सुजाव प्रसेनजीत तत्र ।
जिण सुत खुद्रक भूप हुवौ[1] जत्र ।
खुद्रक सुतण रिणक्क दहण खळ* ।
हुवौ सुरथ जिण सुत झाळाहळ ।। १७
सुतण सुरथ नृप[2] सुमित्र सरुपति ।
तपसी हुवौ राज तजि भूपति ।
आसणि[3] गलिका तीर अधारै ।
ध्यान समाधि जोगमय धारै ।। १८
भिदि खट चक्र नाळि अलि भ्रमर॰ ।
भेदे भमर गुफा नद भमर[4] ।
ऊतर भाण उदित गग उत्तर ।
पकज पख हजार तास पर ।। १९
असट पख वासी[5] चढ़ि आयौ ।
दुति निरवाण तेज[6] दरसायौ ।
प्रति सूरिज[7] कोटेक प्रकासं ।
आतम जगमग जोति उजास ।। २०

---

१ ख ग हूवौ । *ख ग और घ. प्रतियोके अनुसार यह पक्ति निम्न प्रकार है—
पुद्रक सुत नृप रिणक दहण षल ।
२ ख ग. घ नृप । ३ ख ग घ आसणी ।
॰ख. ग और घ प्रतियोके अनुसार यह पक्ति निम्न प्रकार है—
भिदि षट चक्र वक्र नाळि अनिल भर ।
४ ख. भम्मर । ग. घ भम्मर । ५ ग बासी । ६ ख तज । ७ ख ग घ सूरज ।

---

१७ तास – उस । सुजाव – पुत्र । प्रसेनजीत – प्रसेनजित नामक राजा । खुद्रक – क्षुद्रक नामक राजा । सुतण – पुत्र । रिणक्क – रणक नामक राजा । दहण – नाश करने वाला । खळ – शत्रु, दुष्ट । झाळाहळ – तेजस्वी देदिप्यमान ।

१८ सुमित्र – राजाका नाम । आसणि – आसन । गलिका – एक नदीका नाम । तीर – तट ।

२० सूरिज – सूर्य । कोटेक – करोड । आतम – आत्मा । उजास – प्रकाश ।

सीचे अम्रत[1] अग अति सजम ।
जोवन[2] लगै विकार[3] जरा जम ।
परमहस आणंद[4] मे[5] प्राणी ।
ब्रह्म[6] अकासि[7] हुई तदि[8] वाणी[9] ।। २१
कळिजुगि[10] केकि[11] वरस[12] वीता[13] कर[14] ।
वयळ[15] वस धर प्रगट त्रिया[16] वर[17] ।
वस[18] वधाय[19] वळै[20] तप बाधौ[21] ।
आतम ग्यान सचेत आराधौ[22] ।। २२
वीतां[23] केक वरस[24] नृप[25] त्रियवर[26] ।
प्रगट कियौ[27] रवि वंस[28] प्रथीपर[29] ।
सुतण सुमित्र नृपति[30] सतधारी ।
ऊपजियौ[31] कमधज अग्रिकारी[32] ।। २३
राजा कमधज सुतण पदारथि[33] ।
उण सुत गणपति भूप व्रवण[34] अथि[35] ।

---

१ ख ग घ. अमृत । २ ख ग घ जोरव । ३ ग. बिकार । ४ ख ग घ. आनद । ५ ख. ग. घ मय । ६ ख घ ब्रहम । ग ब्रहम । ७ ख ग घ आकासि । ८ घ. तद । ९ ग वांणी । १० ख ग घ. कलजुग । ११ ख ग. घ. केक । १२ ग वरस । १३ ग. वीतां । १४ ख कार । ग घ करि । १५ ख घ वयळ । १६ ख ग त्रीया । १७ ख धरि । ग. वरि । घ. वरि । १८ ख घ वस । १९ ग. वधाय । २० ग वलै । २१ ख वाधौ । २२ ख. ग घ अराधौ । २३ ग वीता । २४ ग वरस । २५ ख. ग घ. नृप । २६ ख. त्रीयवर । ग त्रीयवरि । घ त्रियवरि । २७ ख ग कीयौ । २८ ग वस । २९ ख घ प्रियीपरि । ग प्रथीपरि । ३० ख ग घ नृपति ३१ ख ग. ऊपजीयौ । ३२. ख. ग घ अग्रकारी । ३३ ख ग घ पदारथ । ३४ ग व्रवण । ३५ ग. घ अथ ।

---

२१ सजम – सयम । जरा – वृद्धावस्था । तदि – तव ।

२२. कळिजुगि – कलियुगमे । केकि – कई, कुछ । वयळ – सूर्य । वळै – फिर ।

२३. सुतण – सुत, पुत्र । ऊपजियौ – जन्मा, उत्पन्न हुआ । अग्रिकारी – अग्रगण्य, तेजस्वी ।

२४. व्रवण – दान देना, वितीर्ण करना । अथि – अर्थ, द्रव्य ।

तोगनाथ जिण सुतण भूप तवि ।
कीरति पार जेण[1] न लहै कवि ।। २४
पौह[2] भरीच[3] जिण सुतण प्रमाणै ।

इति प्रथम प्रकरण

अथ राजा पुज तथा उणरा ते'रै पुत्रा री वरणण

जिण सुत पूजराज नृप[4] जाणै ।
पूज तणै तेरह सुत दिव[5] पख ।
सुजि त्याहूत कमध तेरह सख ।। १
प्रगटे जेण[6] रीत[7] प्रथमी परि ।
ऽवा विधि[8] कहौ जुगति सुध उच्चरि ।

राजा पुजरा प्रथम पुत्र धरमवंवरौ वरणण

धरमबव[9] सुत वडौ[10] धुरधर ।
दादा[11] सूरराज छक उवर[12] ।। २
सो आखेटक गए[13] सकाजा ।
रिख[14] अगिरा मिळे तिण राजा ।
रिख पूजा करि नृपति[15] रिझाए[16] ।
भणियौ[17] वर मांगौ मन भाए[18] ।। ३

---

१ ख ग घ जेणि । २ ख. ग. पहौ । घ एहौ । ३ ग मरीच । ४ ख ग घ नृप । ५ ख घ दिव्य । ग दिव्य । ६ ख ग घ जेणि । ७ ग घ. रीति । ८ ग विधि । ९ ख. धरमवत । ग. घ धरमवंभ । १० ग घ बडौ । ११ ख ग घ दाता । १२ ख. डंवर । ग घ. डमर । १३ ग गऐ । १४ ख ग घ रिषि । १५ ख. ग. घ. नृपति । १६ ग रिझाऐ । १७ ख ग भणीयौ । १८ ग भाऐ ।

---

२४ तवि – कह, कह कर । जेण – जिस ।
१. दिव – दिव्य । पख – पक्ष । त्याहूंत – उनने । सख – शाखा ।
२ जुगति – युक्ति । सुध – शुद्ध । उच्चरि – उच्चारण कर, पढ कर । धरमवव – राजा पुजके प्रथम पुत्र धर्मधुरका नाम । वडौ – महान । धुरंधर – प्रवीण, दक्ष, महान । दादा – पितामह । सूरराज – सूर्य । छक – वैभव । उवर – तेजस्वी ।
३ सो – वह । आखेटक – शिकार । रिख – ऋषि । तिण – उस । रिझाए – प्रसन्न किये । भणियौ – कहा । वर – वरदान । मन भाए – अभीष्ट ।

कमधज वर[1] मागै जोडे[2] कर ।
हुवै दान चाहौ[3] सुज[4] हाजर[5] ।
तथास्तू[6], कहि मुनिद[7] वळे[8] तुर ।
राका दिन मिळसी राजेस्वर[9] ।। ४

प्रगट नृपति[10] राका वर[11] पायौ ।
भणै सुदन[12] आवै मन[13] भायौ ।
बारै[14] मास माझ[15] दिन बा'रै[16] ।
सुपह दान पूगौ जग[17] सारै ।। ५

तिण कांमना जाचियौ[18] तिसडी ।
जिण पामियौ[19] सु इछा[20] जिसडी ।
सतोखियौ[21] भूप जग[22] सारौ ।
जस ध्रम करि जीतौ जमवारौ ।। ६

असख्यात दत[23] कमण गिणावै ।
असि गज द्रब[24] नग पार न आवै ।
धिन[25] धिन नृप[26] नभ वांणि हुई धुर ।
स्रब[27] जग सिरै ज तू दानेसुर ।। ७

१ ग वर। २ ग जोडि। ३ ख ग घ. चाहू। ४ ख ग घ सुजि। ५ ख ग. घ. हाजिर। ६ ख. घ. तथास्तु। ७ ख. ग घ मुन्यंद। ८ ग वले। ९ ख. ग घ. राजेसुर। १० ख ग घ. नृपति। ११ ग बर। १२ ग सुदिन। १३ ख मति। ग घ मनि। १४ ख वारैं। १५ ख ग. घ माहि। १६ ग वारै। १७ ख ग. घ जगि। १८ ख ग जाचीयौ। १९ ख. ग पामीयौ। २० ख इछा। ग इंछ्या। घ इछया। २१ ग सतोषीयौ। २२ ख ग घ जगि। २३ ग. घ दन। २४ ख द्रव। २५ ख घ. धन धन। ग धन धन। २६ ख घ. नृप। २७ ख स्रव। घ सव।

४. जोडे कर – करबद्ध होकर। सुज – वह। मुनिद – मुनीन्द्र, महर्षि। वळे – लौट गये। तुर – तत्पर, शीघ्र। राका – पूर्णमासी।

५. भणै – कहता है। सुदन – श्रेष्ठ दिन। मन भायौ – अभीष्ट। बा'रै – बारह। माझ – मध्य। सुपह – राजा, नृप।

६ कामना – इच्छा। जाचियौ – याचना की। तिसडी – वैसी। पामियौ – प्राप्त किया। जिसडी – जैसी। सतोखियौ – सतुष्ट किया। जमवारौ – जीवन, जन्म।

७ असंख्यात – असख्य। दत – दान। कमण – कौन। असि – घोडा। गज – हाथी। धिन धिन – धन्य-धन्य। नभ वाणि – आकाशवाणी। धुर – प्रथम स्रब – सर्व, सब। सिरै – श्रेष्ठ, शिरोमणि। दानेसुर – दान देने वालोमे समर्थ।

उण दिनहू[1] ते रत[2] उजवाळी[3] ।
एक साख दानेसरवाळी[4] ।

राजा पुजरै बीजा पुत्र भांण उदीप रौ वरण

इण नृप[5] बभतणै[6] अधिकाई ।
भाणउदीप दूसरौ भाई ॥ ८
लखमण जात्रा हेत लगायौ ।
अभग भूप सहंसाजळि आयौ ।
मनि[7] सुधि[8] पूजे वीर[9] लखमण[10] ।
त्रिहै[11] मास रहि वळै[12] पुज तण ॥ ९
कोस आठ डेरौ नृप कीधौ ।
दरसण लखिण[13] सुपन मझि दीधौ ।
चवि नृप माग[14] सु वर उज्जळ चित ।
हूं रीझियौ[15] तूझ सेवा हित ॥ १०
पितहू जुदौ[16] राज धर पाऊ[17] ।
ज्वाळामुखी कगुडै[18] जाऊं[19] ।

---

१ ख ग घ हूत। २ ख ग घ रीत। ३ ख ग घ अजुवाळी। ४ ख घ दानेसुर। ग दानेसुर। ५ ख ग घ नूप। ६ ख ग वभ। ७ क. मुनि। ८ ख ग घ सुघ। ९ ग वीर। १० ख ग. लष्यमण। घ लष्पमण। ११ ख घ. त्रिएहे। ग त्रिएहै। १२ ग वले। १३ ख ग घ लषण। १४ ख ग घ मागि। १५ ख ग रीझीयौ। १६ ग जूदौ। १७ ग पाउ। १८ ख ग घ कागुडै। १९ ग जाउ।

---

८. उण – उस। दिनहूं – दिनसे। ते – उस। रत – रीति। उजवाळी – उज्ज्वल की। साख – शाखा। दांनेसरवाळी – दानेश्वरोकी, राठौडोकी प्रमुख तेरह शाखाओमे से प्रथम शाखा दानेसरोकी। इण – इस। नृप बंभ = धरमबंभ – धर्मधुर नामक पुजके प्रथम पुत्र। अधिकाई – विशेषता। भाणउदीप – राजा पुजके द्वितीय पुत्रका नाम।

९. लखमण – लक्ष्मण। जात्रा – यात्रा। हेत – लिये, प्रेम। अभग– वीर। सहसाजळि – एक तीर्थ-स्थान। मनि – मन। लखमण – लक्षण। त्रिहै – तीन। वळै – फिर। पुज तण – पुजतनय, राजा पुजका पुत्र।

१० डेरौ – पडाव, ठहरनेका स्थान। कीधौ – किया। लखिण – लक्ष सुपन – स्वप्न। मझि – मध्य, मे। दीधौ – दिया। चवि – कह कर, कहा। सु वर – श्रेष्ठ वरदान। हू – मै। रीझियौ – प्रसन्न हुआ।

११ पितहू – पितासे। जुदौ – पृथक।

वीर[1] लखण[2] कहियौ[3] सत वायक[4] ।
देस आय लडियौ वरदायक[5] ॥ ११
सेना कवच तुवर सघारे ।
धर कागुडै दुरंग छत्र धारे ।
वरस[6] तीसरै मेह न वूठै[7] ।
ईत[8] मरी दुरभख[9] भय ऊठै ॥ १२
कहियौ[10] नृप[11] प्रज भय किणसू ।
ज्वाळामुखी न[12] पूजै जिणसू[13] ।
भाणउदीप[14] विगत[15] सुण[16] भारी ।
विधवत[17] सकति पूजि[18] विसतारी ॥ १३
वाम दखिण[19] मति[20] दुज मुख वारिज[21] ।
चवै प्रमाण सकराचारिज ।
उवै[22] सास्त्र लखि दुज्ज[23] उचारे[24] ।
ध्यान धरेस[25] अखडित धारे ॥ १४

---

१ ग वीर। २ ख ग घ. लषिण। ३ ख ग कहीयौ। ४ ग. बायक। ५ ग बरदायक। ६ ग बरस। ७ ग. वूठे। ८ ख ग ईत। ९ घ दुरभिख। १० ख. ग कहीयौ। ११ ख ग घ नृप। १२ ख तप्त। १३ ख जिणसु। १४ ख. ग घ भाणदीप। १५ ख. ग घ. विगति। १६ ख ग घ सुणि। १७ ख ग घ विधवति। १८ ख ग घ पूज। १९ ख. दक्षिण। २० ग घ. मत। २१ ग वारिज। २२ ख ग. घ वेसास्त्र। २३ ख ग. घ दुज। २४ ख उच्चारे। २५ ख ग घ नरेस।

---

११ वायक – वचन। वरदायक – श्रेष्ठ।

१२. सघारे – सहार किये। दुरग – गढ, दुर्ग। मेह न वूठै – वर्षा नही होती है। ईत – ईति, खेतीको हानि पहुँचाने वाले उपद्रव जो सात माने जाते है, यथा—१ अतिवृष्टि, २ अनावृष्टि, ३ टिड्डीदल, ४ चूहे, ५ पक्षियोकी अधिकता, ६ दूसरे राजाकी चढाई, ७ अपने राजा द्वारा किया जाने वाला युद्ध। मरी – महामारी। दुरभख – दुर्भिक्ष, दुष्काल।

१३ प्रज – प्रजा। विगत – वृत्तान्त।

१४. चवै – कहते है। सकराचारिज – शकराचार्य। धरेस – राजा। अखडित – अखड।

एक वांम[1] अगुस्ठ[2] आधारे[3] ।
*नव दिन राति रहै निरहारे ।
कमंध मतौ सिर ढाळण[4] कोधौ ।
दरसण सकति प्रतखि तदि[5] दीधौ ॥ १५

रीझ[6] अेम[7] कहियौ सुरराणी ।
भूपति वर[8] मागौ[9] मन[10] भांणी ।
पेखे सकति वदन[11] पहपहियौ[12] ।
कर जोडे राजा इम कहियौ[13] ॥ १६

मो पुर प्रज[14] मो देस मझारै ।
मरीयत[15] दुरभख नह मारै ।
कहियौ[16] तै जिमहिज[17] मै कीधौ ।
दाखे सकति अभै वर[18] दीधौ ॥ १७

इता देस पुर[19] ज[20] तू दबावै[21] ।
इतै[22] मरी दुरभख नह आवै ।

---

१ ग वांम। २ ख ग घ अगुष्ट। ३ ख ग अधारे।

*ख ग और घ के अनुसार– नव दिन रात रहि निरहारे।

४ ख ग. घ चाढण। ५ ख. तई। ६ ग घ रीझि। ७ ख ग कहीयौ। ८ ग वर। ९ ख मांग्यौ। १० ख ग घ मनि। ११ ग वदन। १२ ख ग पहपहीयौ। १३ ख ग घ कहीयौ। १४ ख. प्रजा। १५ ख घ मरीईत। ग मरीइत। १६ ख ग कहीयौ। १७ ख ग. जिमहीज। १८ ग वर। १९ ग. पूर। २० ख मत। ग. जूं। २१ ख ग दवावै। २२ ख. ग इत घ ईत।

---

१५ निरहारे – निराहार। मतौ – विचार। ढाळण – काटना। कीधौ – किया। प्रतखि – प्रत्यक्ष। तदि – तब। दीधौ – दिया।

१६ रीझ – प्रसन्न हो कर। सुररांणी – देवी। मन भाणी – इच्छित, अभीप्ठ। पेखे – देख कर। वदन – मुख। पहपहियौ – प्रफुल्लित।

१७ मो – मेरा, मेरी। पुर – नगर। प्रज – प्रजा। मझारे – मध्य, मे। मरीयंत – महामारी। जिमहिज – जैसे ही। कीधौ – किया। दाखे – कह कर। अभै – अभय। वर – वरदान। दीधौ – दिया।

१८ इता – इतने। इतै – ईति।

इम वर पाय[1] सझे दळ श्रेहा ।
जळ सामद ऊभळिया[2] जेहा ॥ १८

कोच पु(री)डीर बैस[3] मकवाणा ।
चाढे[4] धकै तुवर चहुवाणा ।
धडछे[5] ऊमरखान खग धारे ।
साठ हजार पठांण सघारे ॥ १९

भिडिया[6] तिकै मुवा[7] काइ[8] श्रमिया[9] ।
जट लौहाण[10] खत्रो जोखमिया[11] ।
जुडि गज खेत पडै बौह[12] जिसडा ।
इकसठ[13] समर जीपियौ[14] इसडा ॥ २०

ज्वाळ घणा खळ उरा जळाई ।
तितै लीध धर मान तळाई ।
पुर करि श्रभै श्रभै व्रद[15] पाया ।
श्रभैपुरा जिणहूत[16] कहाया ॥ २१

राजा पुजरै तीजा पुत्र वीरचदरौ वरणण

तण नृप[17] पुज[18] सथानक[19] तीजै ।
वीरचद्र[20] राजा वरणीजै[21] ।

---

१ ख. ग घ पाइ । २ ख. ग ऊभळीया । ३ ख घ वैस । ४ ख चढि । ५ ख ग. घ धडछे । ६ ख ग भिडीया । ७ ख. श्रया । ग मूवा । ८ ख ग घ काय । ९ ख श्रमीया । ग श्रमीया । घ. श्रमिया । १० ख ग घ बौहाण । ११ ख. जोखमीया । ग जोपमीयां । घ जोखमिया । १२ ख वहौ । ग घ वहौ । १३ ख ग इकसठि । १४ ख ग जीपीयौ । १५ ग वृद । १६ ख ग घ. तिणहूत । १७ ख ग घ नृप । १८ ख ग घ पुज । १९ ख ग. घ. सथानिक । २० ग. बीरचद्र । २१ वरणीजै ।

---

१८ श्रेहा – ऐसा । सामद – समुद्र । ऊभळिया – उमडा । जेहा – जैसा ।

१९ बैस – एक राजपूत वंश । मकवाणा – भाला राजपूत वशकी एकशाखा । संघारे – सहार किये ।

२० जोखमिया – मारा, सहार किया । जुडि – भिड कर, युद्ध कर । जिसडा – जैसा । समर – युद्ध । जीपियौ – जीता, विजय किया । इसडा – ऐसे ।

२१ ज्वाळ – दाह, जलन । खळ – शत्रु । व्रद – विरुद । श्रभैपुरा – राठोडोके तेरह प्रमुख वशोमे से एक । जिणहूत – जिससे ।

२२. सथानक – स्थान ।

इक निस[1] भाग वीतियां आधौ ।
लगि अनुराग सुपन नृप लाधौ ॥ २२
त्रिय इक[2] अति सुदर चख तीखे ।
ऊमर वरस[3] खोडसा ईखे[4] ।
निज अग झळक दीप फानूसा[5] ।
सुरग जरी पौसाख[6] झळूसा ॥ २३
गड जडाव भूखण नव ग्रह गण ।
अठ-बि[7] सिंगार[8] छत्रीसइ[9] आभ्रण ।
अग छबि[10] रवि सिस[11] कोटि[12] उदोतां ।
जोगी ध्यान तजै तिण[13] जोता ॥ २४
छक मसताक[14] रूप अति छाजै ।
लख[15] दुति सचो उरबसी[16] लाजै ।
झोला सुगंध चहू दिस[17] झलिया[18] ।
अतर गुलाब[19] समद्र ऊझळिया[20] ॥ २५

---

१ ख ग न. निसि । २ ख ग घ यक । ३ ग बरस । ४ ख. ईये । क इषें । ५ क कानूमा । ६ ख योसाष । ७ ख अछवि । घ. अठवि । ८ ख ग शृंगार । घ. शृंगार । ९ ख छत्रीसेइ । ग छत्रीमेंइ । घ. छत्रीसेंई । १० ख छवि । ११ ख ग घ ससि । १२ ख कोट । १३ ख ग ध तिणि । १४ ख ग घ मुसताक । १५ ख ग घ लखि । १६ ख घ उरवसी । १७ ख ग घ चहूवळ । १८ ख ग झलीया । १९ ख गुलाव । २० ख ग. उझलीया ।

---

२२. इक – एक । निस – निशा, रात्रि । भाग – हिस्सा । वीतियां – व्यतीत होने पर । आधौ – आधा, अर्द्ध । अनुराग – प्रेम । सुपन – स्वप्न । लाधौ – मिला ।

२३. चख – चक्षु, नेत्र । तीखे – तीक्ष्ण । खोडसा – सोलह वर्षकी, षोडशी ।, ईखे – देखी । झलक – कांति, दीप्ति । सुरग – सुन्दर, लाल । झळूसा – शोभित ।

२४ अठ-वि – सोलह । आभ्रण – आभूषण । छवि – कांति, दीप्ति । रवि – सूर्य । सिस – चन्द्रमा । कोटि – करोड । उदोता – उदय होने पर । तिण – उस । जोता – देखने पर ।

२५ छक – उत्साह, जोश । मसताक – उत्कंठित, उत्सुक, मुश्ताक । छाजै – शोभा देता है । दुति – कांति । सची – इन्द्राणी । उरबसी – उर्वशी नामक अप्सरा । झोला – बहार । चहू दिस – चारों ओर । ऊझळिया – उमडे ।

ईखे सुपन त्रिया छिब[1] एही ।
सुपह[2] दाखियौ[3] वचन[4] सनेही ।
जपतौ[5] नाम कमण कुण जाणै ।
प्रसधि[6] नाम तो[7] जगत पिछाणै ॥ २६
आवण अठै केणि अधिकाई ।
आप वरण[8] कारण हू आई ।
करि कटाच्छ[9] इम[10] हसि[11] त्रिय कहियौ ।
चित[12] अनुराग नृपति[13] अति चहियौ[14] ॥ २७
वरमाळा[15] ले कंठि[16] वणावै ।
पलक खुली तदि[17] त्रिया न पावै ।
उण दुखहूत[18] जीव व्याकुळ[19] अति ।
पडै न जक सोचै नित भूपति ॥ २८
महल[20] सेज[21] नह रमण[22] उमाहै ।
चौकी खास न खिलबति[23] चाहै ।

---

१ ख. छवि । ग घ छवि । २ ख सुपन । ३ ख ग दाषीयौ । ४ ग घ बचन । ५ ख ग घ जपितौ । ६ ख प्रसिद्ध । ग. घ प्रसिध । ७ ख ग. घ. मो । ८ ग वरण । ९ ख ग घ कटाछि । १० ख ग. घ हसि । ११ ख ग घ. इमि । १२ ख ग चिति । १३ ख ग घ. नृपति । १४ ख ग चहीयौ । १५ ग वरमाळा । १६ ख कठ । १७ ख. ग घ जदि । १८ ख. दुखहुत । १९ ग व्याकुल । २० म. महलि । घ महणि । २१ ख. ग. घ सेझ । २२ ग.घ रमणि । २३ ख. खिल-वत । ग घ खिलवत ।

---

२६ ईखे – देखा । सुपन – स्वप्न । त्रिया – स्त्री । छिब – शोभा, सुन्दरता । एही – ऐसी । सुपह – राजा । दाखियौ – कहा । कमण – किस । कुण – कौन ।

२७ अठै – यहाँ । केणि – किस । अधिकाई – विशेपता, अधिकार । वरण – कन्या द्वारा विवाहमे वर (पति) स्वीकार करनेकी रीति । हू – मै । कटाच्छ – कटाक्ष । इम – इस प्रकार । त्रिय – स्त्री । कहियौ – कहा ।

२८ कंठि – कंठमे । तदि – तब । उण – उस । दुखहूत – दुखसे । जक – चैन, आराम ।

२९ महल – महिला, स्त्री । सेज – शय्या । रमण – मैथुन, सभोग । उमाहै–उमगयुक्त होना, उत्कंठित होना । खिलबति – एकान्त स्थान ।

कर[1] दरवार[2] न्याव नहि[3] कीजै ।
दान सौळ दुज[4] हथा न दीजै ॥ २९
भ्रम आखेट न बाण[5] अभ्यासी ।
नृत[6] सगीत न राग निवासी ।
मत्री[7] सुभट थडत नह मेळा* ।
चवै न नवरस सुकवि सचेळा ॥ ३०
प्याला सुरा पिवै[8] नह पावै ।
भोजन पान कपूर न भावै ।
दिव्य पौसाक न हुकम दिवाणै[9] ।
अत्तर जुहरि[10] नजीक न आणै[11] ॥ ३१
छिलती सलित न्याव नह छूटै ।
जेठी गयंद कुरंग नह जूटै ।
मझि जळ क्रीड न सहल विमोहै[12] ।
अस[13] सिवका[14] गज रथ न अरोहै ॥ ३२
झपट चमर छत्रछाह[15] न झेलै ।
खेल वसत[16] गुलाल न खेलै ◈ ।
हित करि वाग[17] रूस नह हालै ।
चादर हौज फुहार न चालै[18] ॥ ३३

---

१ ख ग घ करि । २ ख ग दरवार । ३ ख नही । ग घ नह । ४ ख ग घ द्विज । ५ ख. वाण । ६ ख ग घ नृत । ७ ख ग और घ के अनुसार—

*मत्री पडित सुभट नह मेळा ।

८ ख ग घ पीवै । ९ घ दीवणै । १० ख ग घ जुहार । ११ ख आणै । १२ ग बिमोहै । १३ ख ग घ अस्व । १४ ख ग सिविका । घ सिविका १५ ख छत्रा । ◈ख प्रतिमे निम्न दो पक्तिया नही है—

खेल वसत गुलाल न खेलै । हित करि वाग रूस नह हालै ॥

१६ ग वसत । १७ ग घ वाग । १८ ख हालै ।

---

२९ दुज = द्विज – ब्राह्मण । हथा – हाथ, हस्त ।
३० भ्रम – भ्रमण, परिभ्रमण । आखेट – शिकार । नृत – नृत्य, नाच । थडत – एकत्रित । चवै – कहते है वर्णन करते हैं ।
३१. सुरा – शराब । दिवाणै – दीवान, दरबार ।
३२ छिलती – उमडती हुई । सलित – नदी । न्याव – नौका । जेठी – ज्येष्ठ । गयद – गजेन्द्र हाथी । कुरग – घोडा । मझि – मध्य, मे । क्रीड – क्रीडा । अस – अश्व, घोडा । सिवका – शिविका, पालकी, डोली । अरोहै – आरोहन करता है ।
३३ चमर – चँवर । रूस – (?) । चादर – पानीकी चौडी धार जो कुछ ऊपरसे गिरती हो ।

धर अन[1] राज काज नह धारै ।
इक मुख[2] पिया[3] पिया उच्चारै[4] ।
इम त्रह[5] दिन वीता[6] तिण[7] औसर ।
वेद धरम नामा प्रोहित वर[8] ॥ ३४
आय नृपति[9] पूछी[10] विध[11] एही[12] ।
सावधांन हुय धरम सनेही ।
विखै[13] अग्यान[14] धरम[15] वीसारौ[16] ।
सूरजकुळचौ[17] धरम सभारौ[18] ॥ ३५
तो कुळ[19] भाण जगत सिरताजा ।
रामचद्र प्रगटे महाराजा[20] ।
प्रभु सूरिज[21] दुति कोटि प्रकासी ।
आतम परम ब्रहम[22] अविणासी[23] ॥ ३६
वप घणस्याम[24] नेत्र दुति वारज[25] ।
कृत[26] अवतार सुराचे[27] कारज[28] ।

---

१ ख. अति । ग घ अनि । २ ख ग मुखि । ३ ख ग प्रीया, प्रीया । घ. प्रिया, प्रिया । ४ ख ग घ. ऊचारे । ५ ख. ग त्रिण्हि । घ त्रिन्हि । ६ ख. ग घ वीता । ७ ख जिणि । ग घ. तिणि । ८ ग वर । ९ ख ग घ. नृपति । १० ख ग घ पूछे । ११ ख घ विधि । ग विधि । १२ ग ऐही । १३ ग बिषै । १४ ख अज्ञान । १५ ग धर । १६ ख विसारो । ग बीसारो । १७ ख सूरिजकुळ । १८ ख सभारो । १९ ख ग घ. कुळि । २० ख ग माहाराजा । २१ ख सुरजि । २२ ख ब्रह्म । ग ब्रहम । घ ब्रंहम । २३ ग अबिणासी । घ अवीणासी । २४ घ. घणश्याम । २५ ग वारिज । घ. वारिज । २६ ख ग घ. कृत । २७ ख ग घ सुराचै । २८ ख ग. घ. कारिज ।

---

३४. इक – एक । त्रह – तीन । तिण – उस । औसर – समय ।

३५ विखै – विषय । सभारौ – स्मरण करो, स्मृतिमे लाओ ।

३६. सूरिज – सूर्य । दुति – काति, दीप्ति । ब्रहम – ब्रह्म । अविणासी – जिसका कभी नाश न हो ।

३७ वप – वपु, शरीर । वारज – कमल । कत – किया ।

ध्रम नृप[1] उग्र सनातन धारे ।
वेद[2] म्रजाद[3] धरम विसतारे[4] ॥ ३७

होता प्रभु करता जग[5] हरता ।
कहता गुर वसिस्ट[6] जिम करता ।
धरि गुर वचन[7] वचन पित धारे ।
प्रभु[8] सिय[9] जुत वनवास[10] पधारे ॥ ३८

मणि त्रइलोक[11] प्रभा जगि[12] मंडित ।
इकपतनीव्रत[13] धरम अखंडित ।
कारज[14] सुरां करण किय[15] क्रीला ।
लीला समद[16] मानखी[17] लीला ॥ ३९

रमा हुतासणि[18] सरणि रहाए[19] ।
हथि रामण त्रिय छाह हराए ।
छाया हरण हुवा दुख छाया ।
माया अवसि मोह वसि[20] माया ॥ ४०

अवर ग्यान नह ध्यान उचारै[21] ।
आप जेम[22] प्रिय[23] प्रिया[24] उचारै[25] ।

---

१ ख ग घ नृप। २ ग वेद। ३ ख मृजाद। ४ ख विसतारे। ५ ख. ग घ जगि। ६ ख घ वसिष्ट। ग वसिप्ट। ७ ग बचन। ८ ग प्रभू। ९ ख ग श्रीय। घ श्रिय। १० ग बनवास। ११ ख. त्रयलोक। १२ ख ग घ. जग। १३ ग पतनीव्रत। १४ ख ग घ कारिज। १५ ख ग. कीय। १६ ख समुद्र। १७ ख ग. और घ मानुखी। १८ ग हुता। १९ ग रहाऐ। २० ग वसि। २१ ख ग घ उधारै। २२ ख ग घ जेमि। २३ ख. ग प्रीय। २४ ख ग प्रीय। २५ ख. ग ऊचारै।

---

३७ ध्रम – धर्म। म्रजाद – मर्यादा।

३८ सिय – सीता। जुत – युत, सहित।

३९ क्रीला – कीला, क्रीडा। समद – समुद्र। मानखी – मनुष्योंकी।

४० रमा – लक्ष्मी, सीता। हुतासणि – अग्निकी। सरणि – शरणमे। हथि – मार कर। त्रिय – श्री, लक्ष्मी, सीता।

सिव त्रिय इम प्रभु लखि तिण समियै ।
भूली चित माया ब्रित[1] भ्रमियै[2] ॥ ४१
दिब[3] नयणा परब्रहम[4] न देखे ।
पराक्रती[5] नर जिम हरि पेखे ।
जोग ध्यान सिमरै[6] सिव ज्यानू ।
औ अति भार फबै[7] नह ऽयानू[8] ॥ ४२
करे विचार[9] एम[10] सिव कामणि ।
भेख सरीर धरे हरि भांमणि ।
सुता जनंक वप करि समताई ।
इम दखि सुता छळण कजि[11] आई ॥ ४३
जिण[12] विलोकि कहियौ जगजामी ।
सिव छै मुखी 'सिवा तो स्यामी[13] ।
कहि इम प्रभु आतिथ-ध्रम कीधौ ।
दखि प्रमाण आसण त्रण[14] दीधौ ॥ ४४
करि वनफळ[15] जळ अग्र जोडि कर ।
वदन[16] करि वन[17] हले स्रियावर[18] ।

---

१ ख. घ व्रत । ग व्रत । २ ख ग भमीयै । घ. भमियै । ३ ग ख दिव्य । घ. दव्य । ४ ख. परब्रह्म । ग घ. ब्रह्म । ५ ख पराक्रीत । ग घ पराक्ति । ६ ख ग घ सुमिरै । ७ ख फवै । ८ ख ग घ यानू । ९ ग विचार । १० ग प्रेम । ११ ख. ग घ. हरि । १२ ख ग. घ जिणि । १३ ख स्वामी । ग घ सामी । १४ ख ग. घ त्रिण । १५ ग वनफळ । १६ ग वंदण । घ वदण । १७ ख. वनि । ख ग वनि । १८ ख ग श्रीयावर ।

---

४१ त्रिय – स्त्री । इम – इस प्रकार ।

४२. दिव – दिव्य । परब्रहम – परब्रह्म । पराक्रती – प्राकृतिक, जन-साधारण । पेखे – देखा । सिमरै – स्मरण करते हैं । ज्यानूं – जिनको ।

४३ कामणि – कामिनी, स्त्री । भामणि – भामिनी, स्त्री । वप – शरीर । समताई – समानता । इम – इस प्रकार । दखि – राजा दक्ष । कजि – लिए, निमित्त ।

४४. जिण – जिस । विलोकि – देख कर । जगजामी – ईश्वर, श्रीरामचद्र भगवान् । सिवा – पार्वती । तो – तेरा । स्यामी – स्वामी, पति । आतिथ-ध्रम – अतिथ्य धर्म । कीधौ – किया । दखि – कह कर । त्रण – तिनका । दीधौ – दिया ।

४५ अग्र – अगाडी । जोड़ि कर – करवद्ध होकर । स्रियावर – सीतावर, श्रीरामचद्र ।

छलतां उमा एम नह छळिया[1] ।
चित प्रणाम स्रिय राम न चलिया ।। ४५
औ मै तो प्रसताव दिखायौ ।
ज तूं भूप उणहिज[2] कुळ[3] जायौ ।
अवर घणा राजा प्रमअसी ।
वनि[4] मुनि ह्वै वसिया[5] रघुवसी[6] ।। ४६
तप ज्यां कीध भरथ समतूले ।
देखे तेज इद्रासण डूले[7] ।
दुति ज्या विघन[8] करण तप दांमा ।
विदा[9] कीध सुरपति सूरवामा[10] ।। ४७
ठाढी नृतत[11] आय मुनि वन थित[12] ।
रति अरु साथि काम वहुवै रति * ।
जुत रगराग कटाच्छ[13] करै जदि ।
तरग समदन कीध खाली तदि ।। ४८
उरवसि[14] सची बाह[15] गळि आणै ।
जिया रोख पाथर सम जाणै ।

---

१ घ छलीया। २ ख ग उणहीज। ३ ख ग घ कुळि। ४ ग बनि। ५ ग वसीया। ६ ग घ रघुबंसी। ७ घ भूलै। ८ ख विषन। ग विघन। ९ ग बिदा। १० ग सुरवांमा। ११ ग घ नृतत। १२ ख ग घ. थिति।
*ख ग और घ के अनुमार—
रति अरु काम साथि छहुवै रिति ।
१३ ख ग घ कटाछि। १४ ख उरवसी। ग उरवसि। १५ ख वांह।

---

४६. औ – यह । तो – तुझको । प्रसताव – प्रसग, प्रकरण । उणहिज – उसी । कुळ जायौ – कुलमे उत्पन्न हुआ । वनि – वनमे ।

४७. ज्यां – जिन, जिस । कीध – किया । भरथ – भरत । समतूले – समतुल्य, वरावर । डूले – कपायमान हो गया । विदा – रवाना । सुरपति – इन्द्र । सूर-वामा – अप्सरा ।

४८ ठाढ़ी – खडी रही, ठहरी । नृतत – नाचती हुई वेश्या, पतुरिया, नृत्तिका, अप्सरा । थित – स्थित । कटाच्छ – कटाक्ष । जदि – जव । तदि – तव ।

४९ उरवसी – उर्वशी नामक अप्सरा । सची – इन्द्राणी । बाह – बाहु, भुजा । गळि – कठमे, गर्दनमे । पाथर – पत्थर ।

इम करतां रभ कोड[1] इलाजा[2] ।
रिख[3] व्रत[4] चित डिगियौ[5] नह राजा ।। ४६
सूरिज-कुळ[6] सुणि एह[7] रीत[8] सति ।
प्रिया प्रिया[9] कहिबौ[10] तजि भूपति ।
कथ इम सुणे वस[11] कीरत्ती ।
प्रोहितहू बोले[12] छत्रपत्ती ।। ५०
ध्रम सनेह कुळ मारग धारा ।
प्राणहूत वधि[13] आप पियारा ।
आप वचन[14] मै सोस अधारे ।
वायक[15] प्रिया[16] कहण वीसारे[17] ।। ५१
जो मन[18] वसी[19] मोह फद जूटा ।
छूटसि तिका प्राण प्यड छूटा ।
धणी वचन प्रोहित सिर[20] धारिज ।
कहियौ[21] प्रत-उत्तर[22] नृप[23] कारिज ।। ५२
आप इसी हित चित इकतारी ।
नृपती[24] कहौ आण[25] सुजि नारी ।

---

१ ख. ग घ कोडि । २ ख ग. घ इलाजा । ३ ख ग घ रिषि । ४ ख व्रति । ग व्रित्ति । घ व्रिति । ५ ग डिगीयौ । ६ ख सूरजकुल । ७ ख घ रीत । ग रीती । ८ ख इह । ग ऐह । घ. एह । ९ ग प्रीय प्रीया । १० ख कहिवौं । ११ ग बस । १२ ख बोलै । १३ ग बधि । १४ ग वचन । १५ ग. बायक । १६ ख ग प्रीया । १७ ग बीसारे । १८ ग घ. मनि । १९ ग वसी । २० ख ग. श्रोर घ. इम । २१ ख कहीयौ । ग कीयौ । २२ ख. ग घ प्रति-प्रत्तर । २३ ख ग घ. नृप । २४ ख ग घ नृपति । २५ ख. ग घ आणा ।

---

४९ इम – इस प्रकार । रभ – अप्सरा । कोड – प्रेम । इलाजा – उपाय, उपचार ।

५० सूरिज-कुळ – सूर्यवंश । एह – यह । सति – सत्य । छत्रपत्ती – राजा ।

५१ प्राणहूत – प्राणसे । वधि – विशेष, अधिक । पियारा – प्यारा । अधारे – धारण किये । वायक – वचन । वीसारे – भूल गया ।

५२ तिका – वह । प्यड – शरीर । प्रत-उत्तर – प्रत्युत्तर । कारिज – कार्य, लिए ।

देतां द्रब[1] करता जुध[2] दावै ।
आणौ जेण तेणि विधि[3] आवै ॥ ५३

सुणि प्रोहित हित वात[4] सुहाई ।
विध[5] स्रब[6] कहि नृप[7] दसा वताई[8] ।
सोभा नाम रूप विसतारा[9] ।
सुपन चिहन कहिया[10] नृप सारा ॥ ५४

साभळि ध्यान धरे दुज साचौ ।
तिणनू वर[11] वाळा[12] त्रपुराचौ ।
करता ध्यांन सकति इम कहियौ[13] ।
लेख[14] प्रमाण सुपनि[15] नृप लहियौ[16] ॥ ५५

अलहणपुर[17] पाटण आथाणा[18] ।
चंद हमीर भूप चहुवांणां ।
तिण[19] नृप[20] घरि लीलावति तूंवरि ।
सुता जेणरै[21] कीरति[22] सुदरि[23] ॥ ५६

जनमे नखत[24] करूरां जिणसू ।
तिणनू वन[25] नांखे दुख तिणसू ।

---

१ ख द्रव । २ ख ग घ. जुधि । ३ ग विधि । ४ ग वात । ५ ग विधि । ख ग विधि । ६ ख श्रव । ग घ श्रव । ७ ख ग घ नृप । ८ ग वताई । ९ ग. विसतारा । १० ख ग. कहीया । ११ ग वर । १२ ख वाळा । १३ ख. ग कहीयौ । १४ ख ग घ लेषि । १५ ख. ग. घ सुपन । १६ ख ग लहीयौ । १७ ख ग घ अणहलपुर । १८ ख. ग घ. आथाणा । १९ ख ग. घ. उण । २० ख ग घ. नृप । २१ ख. ग घ जेणि । २२ घ कीरती । २३ घ सुदरी । २४ ख ग घ. नषित्र । २५ ख घ वनि । ग वनि ।

---

५४ सुपन – स्वप्न । चिहन – चिन्ह ।

५५ सांभळि – सुन कर । दुज – द्विज, ब्राह्मण । साचौ – सत्य । इम – इस प्रकार । कहियौ – कहा । सुपनि – स्वप्नमे ।

५६ आयाणा – स्थान, घर । सुता – पुत्री । जेण – जिस ।

५७ नखत – नक्षत्र । करूरा – क्रूर, भयकर । तिणनू – उसको । नाखे – डाल दिया ।

जिण[1] सुणि रुदन दया मनि जाणी
आस्रम[2] रिख माया जित आंणी ।। ५७
रस वन[3] फळ बौह[4] पाय रसाळी ।
पुत्रा हेत करै रिख[5] पाळी ।
वणि ससिवेस रमै माभ्फळ[6] वन[7] ।
तै वळहती[8] वेल[9] सोव्रन[10] तन ।। ५८
वनि[11] इक समे[12] रमै तिण[13] वेळा[14] ।
मिळ[15] जखि सुता कुसुम हित[16] मेळा ।
लखि तन प्रभा नयण सुख लीधौ ।
कनिया[17] दहू[18] मिळै हित कीधौ ।। ५९
वात[19] करे हित चित वरताए[20] ।
पुत्री जाण[21] नवै निध[22] पाए ।
ऊमर[23] इम[24] वरसा[25] नव आई ।
सुता जक्खि[26] जद[27] कथा सुणाई ।। ६०
मो कथ सखा[28] धारि निज मनया ।
तू इण देसपती री तनया ।

---

१ ग घ. जिणि । २ ख ग घ आश्रम । ३ ग बन । ४ ख. घ वहौ । ग बहौ । ५ ग घ रिषि । ६ ख ग घ माझळि । ७ ग बन । ८ ख ग घ उळहती । ९ ख घ वेलि । ग बेलि । १० ग. सोव्रन । ११ ग बनि । १२ ख ग घ समै । १३ ख घ. तिणि । १४ ग बेळा । १५ ख ग घ मिलि । १६ ख ग घ कुसम । १७ ख. ग कनीया । १८ ख. वहुं । ग विहू । घ विहू । १९ ग वात । २० ग वरताऐ । २१ ख ग घ. जाणि । २२ ख. ग घ. निधि । २३ ख ग घ उमर । २४ ख घ एम । ग ऐम । २५ ग बरसा । २६ ख जष्य । ग जष्यि । घ जष्यि । २७ ख ग घ जदि । २८ घ सखी ।

---

५७ रुदन – रोना, विलाप । मनि – मनमे ।

५८ बौह – बहुत । रसाळी – रसपूर्ण । रिख – ऋषि । पाळी – पालन-पोषण । ससिवेस – शिशुवयस, बाल्यावस्था । माभ्फळ – मध्य, मे । सोव्रन – सुवर्ण, सोना ।

५९ जखि – यक्ष । कुसुम – पुष्प, फूल । लीधौ – लिया । कनिया – कन्याएँ । दहू – दोनो । कीधौ – किया ।

६० सुता – पुत्री । जक्खि – यक्ष । जद – जब ।

६१. तनया – पुत्री, कन्या ।

देसी रिख पाछी चित दीजै ।
तोनू आजहूत[1] दिन तीजै ।। ६१
पति विग्रह[2] तो ग्रह परठाणा ।
लेख मिटै नह वेह[3] लिखाणा[4] ।
इण दोखण[5] नृप[6] नह आदरसी ।
भावी साखि मुनिद[7] तद भरसी ।। ६२
जोतिस रिख वायक[8] बिहु[9] जोड़ै ।
तिया[10] म्रजाद प्रभू नहि[11] तोडै ।
जोतिस लिखै विग्रह पति जिणनूं ।
अमर सुहाग कहै ते इणनू ।। ६३
कहि रिख इम कहसी नृप कीजै ।
लखि बिहु[12] वात[13] ऐह[14] पण लीजै ।
चढि तोरणि सिव सीस चढावै ।
ऽवै[15] नृप क्रीत[16] सुंदरि वरि[17] आवै ।। ६४
दिल मो ग्यान त्रकाळग्य[18] दरसी ।
वीरचंद्र राजा इण[19] वरसी[20] ।

---

१ ख ग घ लेख हात। २ ग विग्रह। ३ ग वेह। ४ ख लिषाणा। ५ ख ग घ द्रूपण। ६ ख ग घ नृप। ७ ख. ग घ मुन्यद। ८ ग वाइक। घ वाइक। ९ ख चिहु। १० ख ग तीया। ११ ख ग घ नह। १२ ख ग विहु। १३ ग वात। १४ ख ग घ एह। १५ ख ग घ. वो। १६ ख ऋत। घ कीत। १७ ग वरि। १८ ख ग घ त्रिकाळग्य। १९ ख ग इणि। २० ग वरसी।

---

६१ आजहूत – आजसे। तीजै – तीसरे, तृतीय।

६२ विग्रह – कलह। वेह – विधि, ब्रह्मा। लिखाणा – लिखे गये। इण – इस। दोखण – दोष। भावी – भवितव्यता, भविष्य। साखि – साक्षी। भरसी – भरेंगे, कहेंगे।

६३ जोतिस – ज्योतिषी। विहु – दोनों। जोडै – समान, बराबर। सुहाग – सौभाग्य।

६४ लखि – देख कर। विहु – दोनों। ऐह – यह। पण – प्रण। क्रीत – कीर्ति। वरि – वरण करके।

६५ त्रकाळग्य – भूत, वर्तमान और भविष्यको जानने वाला, त्रिकालज्ञ, सर्वज्ञ। दरसी – दरसने वाला।

ऽवै[1] सिब[2] सीस[3] चढासी आचा[4] ।
सिव रीझसी देखि व्रत[5] साचा ।। ६५
क्रपा[6] करे सरजीवत करसी ।
विध[7] इण[8] कीत सुदरी वरसी[9] ।
इम दिन व्रती[10] सु[11] सारिख[12] आणी ।
जिम स्रब[13] कियौ कहै जिखयाणी[14] ।। ६६
ऽवा जखि सुता-सुता नृप श्रेही ।
दिव्य धरि रूप अनूपम[15] देही ।
इण नृपतणा[16] सुपन[17] मझि आए ।
गई नेह औचाट लगाए ।। ६७
कहियौ[18] सकति जेम[19] दुज कहियौ ।
अति रीझे छत्रपति ऊमहियौ[20] ।
सूर[21] धरम परखण नृप[22] साखै ।
इक सरजीव करण नह आखै ।। ६८

---

१ ख. ग वो। घ दो। २ ख सीव। ग. घ सिव। ३ ख. सिस। ४ ख ग घ आछा। ५ ख पणि। ग घ. पण। ६ ख ग घ क्रिपा। ७ ख घ विधि। ग विधि। ८ ख ग इणि। ९ ग वरसी। १० ख ग घ त्रिती। ११ ग. घ सुता। १२ ख सारीख। १३ ख ग श्रव। घ श्रव। १४ ख ग घ जपियांणी। १५ ग अनूप। १६ ख ग घ. नृप। १७ ख सुपनि। १८ ख ग कहीयौ। १९ ग जेमि। २० ख ग ऊमहीयौ। २१ ग सुर। २२ ख ग घ. नृप।

---

६५. आचा – हाथी। रीझसी – प्रसन्न होगा।

६६ सरजीवत – जीवित। करसी – करेगा। विध – प्रकार, तरह। इण – इस। कीत – कीर्ति। वरसी – वरण करेगा। सारिख – समान। स्रब – सब। जिखयाणी – यक्षिणी।

६७ जखि-सुता – यक्ष-पुत्री। दिव्य – सुन्दर। देही – शरीर। नृपतणा – नृपके। सुपन – स्वप्न। मझि – मध्य, मे। नेह – स्नेह, मोह। औचाट – चिंता।

६८ जेम – जैसे। दुज – द्विज। रीझे – प्रसन्न होकर। छत्रपति – राजा। ऊमहियौ – उत्कंठित हुआ। परखण – परीक्षा करनेको। इक – एक। सरजीव – जीवित। आखै – कहते हैं।

सुणि दुजराज[1] वयण तिण सायत ।
हरखे नृपत[2] दाखियौ[3] चित हित ।
एक[4] वार[5] नयणा[6] ईखीजै ।
दीठा पछै[7] ईस सिर दीजै ॥ ६९

मुख लखि सीस तजेवा[8] सुर-मुख ।
ससी हुवै सतलोक लहा सुख ।
तेज इसौ दीठौ मैं तिणरौ ।
जळसी अवसि सदेह न जिणरौ* ॥ ७०

कथ सुण[9] दुजन गिणै तिल काचौ ।
सूर-धरम जाणै नृप[10] साचौ ।
वात[11] सजीवत करण वताए[12] ।
आप[13] करण सनमुधि[14] कजि आए[15] ॥ ७१

आय पटण देखै रीधौ अति ।
मिळियौ[16] चद हमीर महीपति ।
कागळ दे[17] विध[18] कहै सकाजा ।
रटै सीस चाढण[19] पण राजा ॥ ७२

---

१ ख ग घ द्विजराज । २ ख. ग घ नृपत । ३ ख ग. दाखीयौ । ४ ग. ऐक । ५ घ बार । ६ ग इखीज । ७ ख ग. घ पछौ । ८ ख तजा । ग घ तजा ।
*यह पक्ति ख प्रतिमे नही है ।
९ ख ग. घ. सुणि । १० ख ग घ नृप । ११ ग बात । १२ ग. वताऐ । १३ ख आय । १४ ख ग घ सनमध । १५ ग आऐ । १६ ख मिलीयौ । १७ ख देव । १८ ख ग घ विधि । १९ ख वाटण ।

---

६९. सुणि – सुन कर । दुजराज – द्विजराज, ब्राह्मण । वयण – वचन । तिण – उस । सायत – समय, क्षण । दाखियौ – कहा । ईखीजै – देखिए । दीठा – देखने पर । पछै – पश्चात् । ईस – महादेव ।

७० लखि – देख कर । तजेवा – छोडनेको । सुर-मुख – अग्नि, आग । दीठौ – देखा । अवसि – अवश्य । जिणरौ – जिसका ।

७१ कथ – कथा, वृत्तान्त । दुजन – (?) । सजीवत – जीवित । सनमुधि – सवध । कजि – लिए ।

७२. रीधौ – प्रसन्न हुआ, मोहित हुआ । मिळियौ – मिला । महीपति – राजा । कागळ – पत्र, कागज ।

लखि पण हसि माने भय[1] लहियौ[2] ।
राजा होय अचभ्रम[3] रहियौ[4] ।
सौस[5] दिवाय कहै नृप[6] सोहित ।
पति सुण[7] विघन[8] हसै किम प्रोहित ।। ७३

सुपन वात[9] तदि[10] कहे सुणाई ।
विध[11] बाळा[12] त्रपुर[13] जूवताई[14] ।
इम कथ सुणि नृप[15] हुवौ[16] अणदित[17] ।
वदे पाव फेर[18] दुज वंदित[19] ।। ७४

आतुर[20] लगन दीध दुज आए ।
वीरचद्र अति हरख वधाए[21] ।
सभ्भ[22] पौसाक[23] सुरग दळ साजा ।
राज पटण आए चद राजा ।। ७५

आय तोरण बदि[24] दीठ उछाहै ।
मूरति सकर आरति[25] मांहै ।
आछट[26] खग निज सीस उतारे ।
धरि निज करि सिव ऊपर[27] धारे ।। ७६

---

१ ख घ भष । ग मष । २ ख ग लहीयौ । ३ ख अचभम । ४ ख ग. रहीयौ । ५ क. सोस । ६ ख ग घ नृप । ७ ख ग. घ सुणि । ८ ग विघन । ९ ग बात । १० ख तद । ११ ख घ विधि । ग विधि । १२ ख. वाला । १३ ख ग घ त्रिपुरा । १४ ख युवताई । ग जुवताई । १५ ख ग घ. नृप । १६ ख. हूवो । १७ घ अनदित । १८ ख. ग घ फेरि । १९ ग वदित । २० ख आतूर । ग आत्तर । २१ ग. वधाऐ । २२ ख ग सभ्भि । २३ ख. यौसाक । २४ ख. वदि । २५ ख ग घ आरती । २६ ख ग घ. आछटि । २७ ख. घ ऊपरि । ग. उपरि ।

---

७३. लखि – समभ कर । पण – प्रण । अचभ्रम – अचभित । रहियौ – रहा । सौस – शपथ । किम – कैसे, क्यो ।

७४ सुपन – स्वप्न । तदि – तव । इम – इस प्रकार । कथ – कथा, वृत्तान्त । सुणि – सुन कर । अणदित – आनदित । वदे – नमस्कार कर । पाव – चरण । दुज – द्विज, व्राह्मण ।

७५ दीघ – दिया । दुज – द्विज । सभ्भ – धारण कर, सज्जित होकर । सुरग – सुदर, लाल ।

७६ दीठ – देखा । आछट – प्रहार कर ।

जोडि कपाळ सकर जीवाए ।
कपाळिया[1] तिणहूत कहाए ।
करि विध[2] वेद[3] उछाह नेह करि ।
सुपह वरे इम कीरति सुदरि ॥ ७७

जिण राणी चवदे[4] सुत जाए[5] ।
सो पितहूंता तेज सवाए[6] ।
दक्खिण[7] लीध जीपि खग दावै ।
कपाळिया[8] भड तिके कहावै ॥ ७८

राजा पुजरा चौथा पुत्र अमर विजैरौ वरणण—

अमर विजै[9] छक तेज अमावौ ।
चौथौ पुत्र पूजरौ[10] चावौ ।
जिकौ सिकार गयौ सुभडा जुत ।
सोभावती पंवारतणौ[11] सुत ॥ ७९

कमध साथ[12] असवार[13] करूरा ।
सात हजार महाजुध[14] सूरा ।

---

१ ख ग कपाळीया । २ ख घ विधि । ग विधि । ३ ग वेद । ४ ग घ चवदह । ५ ग. जाऐ । ६ ग सवाऐ । ७ ख ग घ दष्यिण । ८ ख ग कपाळीया । ९ ग विजं । १० ख घ पुज । ग पुज । ११ ख. ग. घ पमारि । १२ ख ग घ साथि । १३ ख ग घ जोधार । १४ ख. ग घ महाजुधि ।

---

७७ जोडि – जोट कर । जीवाए – जीवित किया । कपाळिया – राठौडोके तेरह प्रमुख वंशोमे से एक वंश । विध वेद – वैदिक विधि । उछाह – उत्साह । नेह – स्नेह । सुपह – राजा । वरे – वरण किया । इम – इस प्रकार ।

७८ जिण – जिस । चवदै – चौदह । सो – वह, वे । पितहूता – पितासे । सवाए – सवाया, विशेष । दक्खिण – दक्षिण । लीध – ली, लेली । जीपि – जीत कर । खग दावै – तलवारके बलसे । भड – योद्धा । तिके – वे । कहावै – कहलाते हैं ।

७९ छक – प्रभाव, ऐश्वर्य । अमावौ – अपार । चावौ – प्रसिद्ध । जिकौ – वह । सुभडा जुत – सुभटों सहित । पंवारतणौ – पंवारका ।

८० करूरा – जबरदस्त, शक्तिशाली । सूरा – शूरवीर ।

रनवा[1] सहित सिकार रमाणै ।
नकट[2] सथान[3] गयौ नांनाणै ॥ ८०
मझि वन सघन सकति काळी मढ ।
गगातीर प्रगट[4] कुरहैगढ़ ।
अमरविजै[5] हित करि अधिकाई ।
मद आमख[6] चाढै महमाई[7] ॥ ८१
पान खान हित भाव सपूरति[8] ।
मुख[9] बोलि[10] पाथर[11] रची मूरति ।
मोनू पुत्र सौ वरस[12] मझारा ।
पूजा वळ[13] चाढै न पमारां ॥ ८२
इण कारण[14] परमार उथप्पे[15] ।
औ मै राज तूझनू अप्पे ।
इम वर पाइ अमरगढ आए ।
वाजित्र वजता[16] लीध वधाए[17] ॥ ८३
जाणै भडा साथ[18] पहुचीजै ।
बाला[19] किलै अटकिया[20] बीजै ।

---

१ ख ग. घ रनिवा। २ ख. ग न निकटि। ३ ग सथानि। ४ ख घ विकट। ग विकट। ५ ग अमरविजैं। ६ ख. ग घ आमिष। ७ ख घ महामाई। ग माहामाई। ८ ख सपूरित। ९ ख ग घ मुषि। १० ग. घ बोली। ख बोलीया। ११ ख ग घ. पथर। १२ ग वरस। १३ ग घ वलि। १४ ग घ कारणि। १५ ख उत्थपे। १६ ख घ. वजत। ग. वजत। १७ ख घ वाधाए। ग. वधाऐ। १८ ख ग घ साथि। १९ ख वाला। २० ख ग अटकीया।

---

८०. रनवा सहित – राणियोसहित। रमाणै – खेलनेको। सथान – स्थान। नांनाणै – ननिहालके।

८१. मझि – मध्य, मे। सघन – घना। सकति – शक्ति, देवी। काळी – कालिका देवी। मढ़ – मठ, मदिर। अधिकाई – विशेपता। मद – शराव। आमख – आमिप, मास। महमाई – महामाया, दुर्गा, शक्ति।

८२ पाथर – पत्थर। मझारा – मध्यमे।

८३ इण – इस। उथप्पे – नाश किए, मिटा दिए। औ – यह। तूझनू – तुझको। अप्पे – दिया। वाजित्र – वाद्य। लीध – लिए।

८४ अटकिया – रोके।

जोधा लियण[1] अमर जिण वारा[2] ।
पुणियौ[3] बौह[4] न मने प्रतिहारा ।। ८४
अमर ताम झळ क्रोध[5] उठाई ।
वीच[6] कुरहगढ[7] खाग वजाई[8] ।
विध[9] भड एक[10] एक खग वागै[11] ।
लडतां खळा वीस[12] हुय[13] लागै ।। ८५
नवमौ[14] मैद[15] समौ नृप[16] नानौ ।
छत्रपति पडै रहै नह छानौ ।
भाण प्रताप पडे भूपत्ती ।
विच[17] गढ कमधा आण वरत्ती[18] ।। ८६
सोळ हजार पमार सघारे[19] ।
धरपत्ती[20] छत्र कुरगढ[21] धारे ।
वस[22] कुरहगढ चढै वधावै[23] ।
कुरहा कमधज जेणि[24] कहावै ।। ८७
भूपति पूँजतणै[25] दुति अदभुत ।

राजा पुजरै पचम पुत्र सजणविनोदरौ वरणण

सजणविनोद[26] नाम पचम सुत ।

---

१ ख ग. लीयण । २ ग बारा । ३ ख ग. पुणीयौ । ४ ख वहौ । ग घ. वहौ । ५ ख कोध । ६ ग. बीच । ७ ख कुरगढ़ । ८ ख वनाई । ग. घ बजाई । ९ ख वधि । ग. घ वधि । १० ग ऐक ऐक । ११ ग बागै । १२ ग वीस । १३ ख. ग घ होइ । १४ ख ग. घ नवमां । १५ ख ग घ. मांद । १६ ख ग घ नृप । १७ ग विच । १८ ग. वस्ती । १९ ख संघारं । २० ख ग घ धरपति । २१ ख ग घ. कुरहगढ । २२ ग वस । २३ ग बधावै । २४ ख जेण । २५ ख. घ पुजतणै । ग पूजतणै । २६ ग सजण विनोद । ख सजण वोध । घ सजण वोध ।

---

८४ जोधा – योद्धाओ । जिण वारां – जिस समय । पुणियौ – कहा ।

८५ झळ – ज्वाला, आग । खाग वजाई – तलवारें चलाई । खग वागै – तलवारोंसे वीर गतिको प्राप्त हुआ ।

८६ समौ – समान । नांनौ – मातामह । छानौ – गुप्त, छिपा हुआ । पडे – अवसान हुआ । भूपत्ती – राजा । कमधा – राठोडो । आंण – आज्ञा ।

८७ सघारे – सहार किये । धरपत्ती – राजा । कुरहा – राठोडोके तेरह प्रमुख वशोमे से एक वश । जेणि – जिसमे । कहावै – कहे जाते है ।

८८ पूंजतणै पूजके । दुति – काति ।

उग्र बोधि पितरै[1] अहिनाणै[2] ।
जोध जोध विदिया[3] स्रब[4] जाणै ॥ ८८
धरि वौह[5] मत्र जत्र चित धारणि ।
कर[6] इलाज देवी[7] वर[8] कारणि ।
चव[9] इम सुणी दियै[10] वर[11] चाहै ।
माला देवी[12] विंभ[13] गिर माहै ॥ ८९
दुत्री[14] नाम कुभला[15] वरदाता[16] ।
मेघना पूजै जदि[17] माता ।
लसकर डमर साथ[18] नह लीधौ ।
कमध पयाण[19] एकलै[20] कीधौ ॥ ९०
अस[21] इक चढण पच अत आगळि ।
जुगति एणि[22] आए[23] वींभाजळि[24] ।
किनिया[25] पच वरस[26] धरि काया ।
मिळे आण[27] सनमुख महमाया[28] ॥ ९१

---

१ ख अस्रबुधि । २ ख अणिनाणं । ३ ख विदीया । ग विदीया । ४ ख अव । ग अव । घ. अब । ५ ख वहौ । ग घ वहौ । ६ ख ग घ करै । ७ ख ग घ देव । ८ ग वर । ९ ख ग घ चवि । १० ख ग दीयै । ११ ग बर । १२ ख ग घ देवि । १३ ख. ग विंभगिर । ग विंभगि । १४ ख ग घ दुती । १५ ख ग. घ कुभिला । १६ ग. वरदाता । १७ ख ग घ सुजि । १८ ख ग. घ साथि । १९ ख ग घ प्रयाण । २० ख ग घ हेकले । २१ ख. अस्व । ग अस्व । २२ ग ऐणि । २३ घ. आऐ । २४ ख विंभाजळि । ग विंभाजलि । २५ ख ग. कनीया । २६ ख ग घ वरस । २७ ख ग आणि । २८ ग महामाया ।

---

८८ उग्र बोधि – तेज बुद्धिका । पितरै – पिताके । अहिनाणै – सूरत, शक्ल । जोध – योद्धा । विदिया – विद्या । स्रब – सब ।

८९ चव – कह, कह कर । विंभ गिर – विंध्याचल पर्वत ।

९० कुभळा – एक देवीका नाम । जदि – जब । लसकर – सेना । डमर – ठाठ । नह – नही । लीधौ – लिया । पयाण – प्रस्थान, रवाना । एकलै – अकेले ही । कीधौ – किया ।

९१ अस – घोडा । आगळि – अगाडी । जुगति – युक्ति । एणि – इस । वींभाजळि – विंध्याचल पर्वत । किनिया – कन्या । काया – शरीर । आण – आ कर । महमाया – देवी, दुर्गा ।

कारज[1] सिद्ध[2] सिद्ध इम कहियौ[3] ।
लख[4] कनिया[5] नृप[6] भेद न लहियौ[7] ।
जदि हसि एम[8] जीव मझि जांणे ।
पूजारीरी सुता पिछांणे ॥ ९२

पाच महर[9] स्रीफळ नृप अप्पे ।
जडसी घणौ आव मढि जप्पे ।
कनिया हसे नृपति वायक[10] करि ।
अंतरध्यान हुई तिण[11] अवसरि[12] ॥ ९३

चढि नृप गिर[13] वदण[14] करि चडै ।
मूरततणी[15] पूज वहौ[16] मडै ।
नव दिन रात[17] कीध पूजा नित ।
चेटक लागि उदास हुवौ चित ॥ ९४

उलटै नृप[18] आयौ चित ऊतरि ।
गरमो नाम गामचे गिरउरि[19] ।
अति चित सोच भांण आथमिये[20] ।
सिध जाळधर[21] मिळ[22] तिण[23] समियै[24] ॥ ९५

---

१ ख ग कारिज। २ ग. सिध सिध। ३ ख ग कहीयौ। ४ ख ग लखि। ५ ख ग. कनीया। ६ ख ग नृप। ७ ख ग लहीयौ। ८ ग प्रेम। ९ ख महौर। ग मौहौर। १० ग वायक। ११ ख तिण। ग. तिणि। १२ ख. ग औसरि। १३ ख ग गिरि। १४ ख वदण। १५ ख ग. मूरति। १६ ख वहौ। १७ ख. ग राति। १८ ख ग नृप। १९ ख ग गिरवरि। २० ख ग आथमीयै। २१ ख ग जळधरी। २२ ख ग मिले। २३ ख ग तिणि। २४ ख. ग. समीयै।

---

९२ कारज – कार्य। इम – इस प्रकार। कहियौ – कहा। लख – देख कर, समझ कर। कनिया – कन्या। भेद – रहस्य। लहियौ – लिया। जदि – जब। हसि – हँस कर। मझि – मध्य, मे। पिछाणे – पहिचान लिया।

९३ महर – मुहर, अशरफी। स्रीफळ – नारियल। अप्पे – दिए, अर्पण किए। वायक – वचन। करि – से। तिण – उस। अवसरि – अवसरमे, समयमे।

९४ मूरततणी – मूर्तिकी। वहौ – वहुत। कीध – की। चेटक लागि – अन्तमे, आखिरमे।

९५ गामचे – गाम के। गिरउरि – गिरिवर, पर्वत। भाण – सूर्य। आथमिये – अस्त होने पर। सिध जाळंधर – जालधरनाथ नामक महात्मा। तिण – उस। समियै – समय पर।

कहै सिध नृपत[1] सोच किम कीधौ ।
दाखै नृप वर सकति न दीधौ ।
वर[2] तो दियौ[3] कहै सिध वाणी[4] ।
पूजे तैं देवी[5] न पिछाणी ॥ ९६

ऽवा[6] पच वरस[7] कन्यका आई ।
मालादेवि तिका महमाई[8] ।
तो सिध सिद्ध[9] कारज[10] कहियौ[11] तिण[12] ।
जो सिधहू अभलाख[13] दखी[14] जिण[15] ॥ ९७

पग वदि[16] हरखि भूप तदि पुणियौ[17] ।
सिध[18] मैं पाव जळद्री[19] सुणियौ[20] ।
सुरग पताळि[21] समद सलितारौ ।
सिध तो हुकम माहि जळ सारौ ॥ ९८

आराधता[22] छौळ[23] ऊभाळै[24] ।
चाहू[25] जठै तठै जळ चालै ।

---

१ ख. ग नृपत । २ ग वर. । ३ ख. ग दीयौ । ४ ग वाणी । ५ ग देवी । ६ ख. ग. वा । ७ ग वरस । ८ ख. माहामाई । ग. महामाई । ९ ख ग सिध सिध । १० ख कारिज । ११ ख. ग कहीयौ । १२ ख तिणि । ग तणि । १३ ख ग अभिलाष । १४ ख दाष । ग दाषि । १५ ख. ग जिणि । १६ ग. वदि । १७ ख ग पुणीयौ । १८ ख सिद्ध । १९ ख ग जलध्री । २० ख. ग. सुणीयौ । २१ ख पताल । ग पाताळ । २२ ख आराधना । २३ ख. ग छौल । २४ उभाले । २५ ख ग चाहौ ।

---

९६ किम – क्यो, कैसे । कीधौ – किया । दाखै – कहता है । दीधौ – दिया । तो – तुझको । तैं – तूने । पिछाणी – पहिचाना ।

९७ कन्यका – कन्या । तिका – वह । महमाई – देवी, दुर्गा । कहियौ – कहा । तिण – उस । अभलाख – अभिलाषा । दखी – कही । जिण – जिस ।

९८. पग वदि – चरणोमे नमस्कार कर । हरखि – हर्षित हो कर । तदि – तव । पुणियौ – कहा । पाव जळद्री – जलधर पाद, जलधरनाथ । सुरग – स्वर्ग । समद – समुद्र । सलितारौ – सरिताका, नदीका । माहि – मे । सारौ – सब ।

९९. आराधता – आराधना करने पर । उभाळै – उमड जाय । जठै – जहा । तठै – तहा, वहा ।

दिल सुध नाथ अभै वर[1] दीजै ।
अै[2] आराध मूझ आपीजै ॥ ९९
व्रवियौ[3] सिध[4] आराध वडाळौ[5] ।
असठी[6] अक्षर[7] मत्र जपऽवाळौ[8] ।
अजमावण[9] कजि मत्र नृप[10] अक्खै[11] ।
दुगम पहाड फोडि इम दक्खै[12] ॥ १००
जळ बडवानळ[13] जिकौ जळावै ।
ऊन्हौ तिकौ समदच्चे[14] आवै ।
वात एम कहता नृप[15] वांणी[16] ।
पहाड फोडि वभकियौ[17] पाणी ॥ १०१
सिध पूजे नृप तांम सिधाए[18] ।
असहा मंड वर लख इम आए* ।
सजण[19] विनोद[20] विना[21] दळ[22] साजति ।
गयौ विदेस[23] एकलौ[24] गढपति ॥ १०२

---

१ ग. वर । २ ख ग वो । ३ ख व्रवीयो । ग व्रवीयौ । ४ ख सिद्ध । ५ ग. वडालौ । ६ ख, ग. इकसठि । ७ ख ग अषिर । ८ ख ग वालौ । ९ ख अजमाषण । १० ख ग नृप । ११ ख ग अषे । १२ ख ग दषे । १३ ख वडवानल । १४ ख समवचौ । १५ ख ग नृप । १६ वाणी । १७ ख वभकीयो । ग वभकीयौ । १८ ग सिधाऐ ।

*ख. प्रतिके अनुसार यह पक्ति —
आ इसडा मड लिप वरि इम धाए ।
ग प्रतिके अनुसार यह पक्ति —
अम हामंड लिप वरि इम आऐ ।

१९ ख सजल विनोद । २० ग सजन विनोद । २१ ग विना । २२ ख ग दलि । २३ ग विदेस । २४ ग. ऐकलौ ।

---

९९ मूझ – मुझको । आराध – आराध्य, मंत्र विशेष ।

१०० व्रवियो – कहा । आराध – मत्र । वडाळौ – वडा, महान । अजमावण – परीक्षा करनेको । कजि – लिए । अक्खै – उच्चारण करता है कहता है । दुगम – दुर्गम । इम – इस प्रकार । दक्खै – कहता है ।

१०१. बडवानळ – वडावाग्नि । ऊन्हौ – उष्ण, गर्म । तिकौ – वह । एम – इस प्रकार । वभकियौ – उमडा ।

१०२ सजण विनोद – राजा पूजके पाचवें पुत्रका नाम । विनां दळ साजति – सेना आदि तैयार किये विना ही । एकलौ – अकेला । गढपति – राजा ।

सेवा[1] कवच तणा बधव[2] सुत ।
जुडि पंच सहस अणिय[3] कढ[4] धख जुत ।
कुळ सब[5] मिळ[6] मसलति[7] इम कीधी ।
दइव फतै असमानी दीधी ॥ १०३

रिण[8] तिण[9] हिणा[10] काड[11] बदराळा[12] ।
वैर कवच सेनाचौ वाळा[13] ।
पाखर सिलह ससत्र भड पूरा[14] ।
सझि सामांन एण[15] विध[16] सूरा ॥ १०४

खैग अलगहूता[17] निस[18] खडिया[19] ।
ऊगैं[20] दीह कमधहू अडिया[21] ।
छज[22] करि गोळ चहूदिस[23] छागां ।
मुणियौ[24] वैर[25] पिताचौ मागा ॥ १०५

सुणि इम वैण[26] वीररस साजा ।
रग मजोठ कीध मुख राजा ।

---

१ ख ग सेना। २ ख वधव। ३ ख ग अणी। ४ ख ग कट। ५ ख अव। ग अव। ६ ख ग मिलि। ७ ख मसल। ग. मसलमत। ८ ख. रिमि। ग रिम। ९ ख ग तिणि। १० ख ग हणा। ११ ख ग काय। १२ ख वदिराला। ग. बदिराला। १३ ग वालां। १४ ख ग भरपूरा। १५ ग ऐणि। १६ ख विधि। ग बिधि। १७ ख. ग हूत। १८ ख ग निसि। १९ ख. ग. षडीया। २० ख ऊभै। २१ ख ग. अडीया। २२ ख. ग छजि। २३ ख वळ। ग. बळ। २४ ख. ग मुणीयौ। २५ ग. वैर। २६ ख वयण। ग. वयण।

---

१०३ अणिय – सेना। धख – क्रोध, आवेश। जुत – सहित। मसलति – विचार। कीधी – की। दीधी – दी।

१०४. पाखर – घोडेका कवच। सिलह – अस्त्र-शस्त्र। ससत्र – शस्त्र। भड़ – योद्धा। एण – इस। विध – विधि, प्रकार। सूरा – योद्धा।

१०५. खैग – घोडा। अलगहूता – दूरसे। निस – रात्रि। खड़िया – चलाए हुए। उगै दीह – सूर्योदय। कमंधहू – राठौडसे। अडिया – भिडे। छज करि गोळ – सेनामे सज्जीभूत होकर। चहूदिस – चारों ओर। छागा – काट डाले। मुणियौ – कहा।

१०६. सुणि – सुन कर। इम – इस प्रकार। वैण – वचन। रंग मजीठ – लाल रग। कीध – किया।

अगन[1] नयण धिखि नजर अगारां ।
भिडे[2] मूछ अणियां[3] भौहारा ॥ १०६

दुरत[4] निळै[5] तसळै वळ[6] दीधौ ।
कमधज धनख[7] टकारव कीधौ ।
इम गणणियौ[8] नाद अवियाटौ[9] ।
फबि[10] नरसिघ जाण[11] खभ फाटौ ॥ १०७

दास पच[12] अग्र रहै[13] दुरती ।
भारथ पाच पाडवां भती ।
भटके क्रोध झाळ घुबि[14] भूमौ (भौ) ।
अरक उठै[15] थाभे रथ ऊभौ ॥ १०८

छायौ गयण रभ रथ छाजै ।
विखमी[16] पाख[17] पाखणी[18] वाजै[19] ।

---

१ ख ग. अगनि । २ ख भीडे । ३ ख. ग अणीयां ४ ग दुरतिनि । ५ ख ग. लैत्रि । ६ ख वल । ७ ख ग धनुष । ८ ख ग गणणीयौ । ९ ख. अवियाटौ । १० ख फवि । ग फबी । ११ ख ग जाणि । १२ ख ग पाच । १३ ख. ग. तरह । १४ ख ग घुवि । १५ ख ग तठै । १६ ग वीषमी । १७ ख पंष । ग षष । १८ ख षवणी । ग पषणी । १९ ग वाजै ।

---

१०६ अगन – अग्नि । धिखि – प्रज्वलित होकर । भिड़े – स्पर्श कर । अणिया – नोकें । भौंहारा – भौंहो ।

१०७. धनख – धनुष । टकारव – धनुष चढानेसे होने वाली प्रत्यचाकी ध्वनि । कीधौ – किया । गणणियौं – गुजायमान हुआ । नाद – ध्वनि, आवाज । अवियाटौ – युद्ध, समर, योद्धा, वीर । नरसिंघ – नृसिंहावतार । जाण – मानो, जैसे । खभ – स्तम्भ । फाटौ – फटा, विदीर्ण हुआ ।

१०८ अग्र – अगाडी । दुरंती – दूर । भारथ – महाभारत । भंती – प्रकार, भांति । भटके क्रोध झाळ – क्रोधाग्नि भडकी । धुबि – क्रोधपूर्ण होकर । भूमौ – पृथ्वी पर । अरक – सूर्य । थाभे – रोक कर । ऊभौ – खडा ।

१०९ छायौ – आच्छादित हो गया । गयण – आकाश । रभ – अप्सरा । विखमी – विषम, भयंकर । पाखणी – गिद्ध, चील आदि मासाहारी पक्षी ।

बावन[1] वीर[2] नचण[3] बहबहिया[4] ।
डैरू जटी चंड डहडहिया[5] ।। १०९
धर अबर[6] रज डबर[7] अधारा ।
जोगण[8] करि चवसठि[9] जैकारा ।
आतसवाण[10] चिला मझि आणै ।
तेज अमोघ स्रवण लगि[11] ताणै ।। ११०
छोडे भूप दास खळ छोडै ।
जजर निहाव वजरचै[12] जोडै ।
छहुवा सर चहुवैवळ[13] छूटै ।
तीड अनेक जाणि दळ तूटै ।। १११
वह[14] नीसरै सिलह घट बूडै[15] ।
अहि बहौ[16] जाण[17] परा लग[18] ऊडै ।

---

१ ख बावन । २ ग. बीर । ३ ख नचह । ४ ख. वहवहीया । ग वहवहीया । ५ ख महडहीया । ग डहडहीया । ६ ख अवर । ७ ख डवर । ८ ख ग जोगणि । ९ ख चवसठ । १० ग. बाण । ११ ख लग । १२ ग वजरचौ । १३ ग चहुवे वळ । १४ ग वहौ । ख वहौ । १५ ख वूडै । १६ ख. वहौ । १७ ख ग जाणि । १८ ख ग लगि ।

---

१०९ नचण – नाचनेको । वहवहिया – उमंगित हुए, हर्षित हुए, उत्कंठित हुए । डैरू – डमरू नामक वाद्य । जटी – महादेव । चंड – चडी, दुर्गा अथवा प्रचड । डहडहिया – प्रसन्न हुए, हर्षित हुए ।

११० धर – पृथ्वी । अवर – आकाश । रज – धूलि । डंबर – घना समूह, ढेर । जोगण – रणपिशाचिनी देवी, योगिनी । चवसठि – चौसठ । जैकारा – जय-ध्वनि । आतस-वाण – अग्नि-बाण । चिला – प्रत्यचा । मझि – मध्य, मे । आणै – लेते है, लाते हैं । अमोघ – निशाने पर ठीक पहुँचने वाला, अचूक, अव्यर्थ । स्रवण – श्रवण, कान । ताणै – खीचते है ।

१११ जजर – यमराज, भयकर । निहाव – प्रहार । वजरचै – वज्रके । जोडै – समान, बरावर । सर – बाण । चहुवै-वळ – चारो ओर । तीड – टिड्डी । जाणि – मानो । दळ – समूह ।

११२ वह – वहुत । सिलह – शस्त्र, अस्त्र । घट – शरीर । वूडै – फूटते है, छिदते है । अहि – सप । बहौ – बहुत । जाण – मानो । परा – पख ।

सर औसर[1], बूठौ[2] घण सारां ।
हटके हेकण पाच[3] हजारा ॥ ११२
चलि हस कितां किता तह चाली ।
खहता हुवा तँडी-रव[4] खाली ।
आपहुता[5] नैड़ा खळ आया ।
जिण वेळा[6] जळ मत्र जगाया ॥ ११३
उभळे नीर पताळां[7] एहा[8] ।
जळनिध[9] प्रबळ[10] घटा घण जेहा ।
राजा दास कुसळहू रहिया[11] ।
वैरी[12] सकळ सुजळ महि[13] वहिया[14] ॥ ११४
बौह[15] जळ खेडि तुवर[16] डूबाए[17] ।
कमध तेणि जळखेडि कहाए[18] ।
आयौ समर जीप[19] इम आरिख ।
सभ्रणविनोदहूत[20] पचम सख ॥ ११५

---

१ ख ग. वौसर । २ ख बूठौ । ३ ख ग पच । ४ ख ग नडी । ५ ग. आपहुतै । ख आपहुत । ६ ग. वेळा । ७ ग. पातालां । ८ ग. ऐहा । ९ ख ग जलनिधि । १० ख प्रवल । ११ ख ग. रहीया । १२ ग बैरी । १३ ख ग. मझि । १४ ख वहीया । ग वहीया । १५ ख. वहो । ग. वहो । १६ ख तूवर । १७ ख डूवाए । ग डूवाऐ । १८ ग कहाऐ । १९ ख ग जीपि । २० ख सजलविनोद । ग सभ्रण विनोद ।

---

११२. औसर – वर्षना क्रिया या वर्षा । बूठौ – वर्षा । घण – बहुत । सारां – शस्त्रो, तलवारो ।

११३. हस – प्राण । किता – कितने । खहता – युद्ध करते हुए । तडी-रव – तरकश, तूणीर । नैडा – निकट । खळ – शत्रु । जिण – जिस । वेळा – समय । जळ मत्र – जल वरसानेका मत्र ।

११४. उभळे – उमड कर । पताळां – पातालोसे । एहा – ऐसा । जळनिध – समुद्र, सागर । घण – मेघ, वादल । जेहा – जैसा । महि – मे । वहिया – बह गये ।

११५ बौह – वहुत । खेडि – वहा कर । डूवाए – डूबो दिये । तेणि – तिससे । जळखेडि = जळखेडिया – राठौडोके प्रमुख तेरह वशोमेसे एक वश । समर – युद्ध । जीप – जीत कर । आरिख – समान । सभ्रणविनोदहूत – सजन विनोद नामक राजासे । पचम – पाचवी । सख – शाखा ।

राजा पुंजरा छठा पुत्र पदमरो वरणण

छठौ नरेस पूज सुत छाजै ।
राजा पदम उडीसै राजै ।
धरपति रूप इसौ प्रभु[1] धरियौ[2] ।
अनग जांण[3] दूजौ अवतरियौ[4] ॥ ११६

जिण हिज[5] वार[6] तेजमणि जादव ।
धर बुगलांण[7] पुरी नव लाधव ।
इम[8] निसि सुकळ वाग[9] नूप[10] आए[11] ।
विमळ[12] चद्रका[13] साज वणाए[14] ॥ ११७

तर गुल डवर[15] रूपमै तारा ।
विहद[16] सिंगार कोध जिणवारा[17] ।
रूपे तंत पेच अनुरागी ।
वेलि[18] रूपमे तरा विलागी[19] ॥ ११८

*फळ बौह[20] फूल रूपमे फबिया[21] ।
देखे प्रभा नखित्रगण दबिया[22] ।*
तवु[23] अनेक रूपमे[24] तणिया[25] ।
वसतणा वे रूपम वणिया ॥ ११९

---

१ ख प्रभू । २ ख ग धरीयौ । ३ ख. ग जाणि । ४ ख ग. अवतरीयौ । ५ ख. ग हीज । ६ ख ग वार । ७ ख बूगलाण । ८ ख ग. इक । ९ ग. वाग । १० ख ग नृप । ११ ग. आऐ । १२ ग विमल । १३ ख ग चद्रिका । १४ ग. वणाये । १५ ख. ग. डमर । १६ ग विहद । १७ ग वारा । १८ ख वेल । ग बेल । १९ ग बिलागी । २० ख वहो । ग बहो । २१ ख ग फबीया । २२ ग. दबीया । २३ ग तबू ।
*ये दो पक्तिया ख प्रतिमे नही हैं ।
२४ ग मैं । २५ ग तणीया ।

---

११६. छाजै – शोभा देते है । पदम – पुजका छटा पुत्र पद्म । राजै – राज्य करता है, शोभायमान होता है । धरपति – राजा । इसौ – ऐसा । धरियौ – धारण किया । अनग – कामदेव । जाण – मानो, जैसे । दूजौ – दूसरा । अवतरियौ – अवतार लिया हो ।

११७ निसि – रात्रि । सुकळ – शुक्ल । विमळ – उज्ज्वळ । चद्रका – चादकी रोशनी, चद्रिका ।

११८ तर – तरु, वृक्ष । गुल – फूल, पुष्प । विहद – बहुत, अपार । कीध – किया । जिणवारा – जिम समय । तरा – वृक्षो । विलागी – लिपट गई, छा गई ।

११९ बौह – बहुत । फबिया – शोभायमान हुए । प्रभा – कान्ति, शोभा । नखित्रगण – उडुगण, तारासमूह ।

तास कनात अनेक तणाए[1] ।
विमळ सिमान वितान[2] वणाए[3] ।
चिग पड़दामू पाल चमंकै ।
दामण[4] जाण[5] सिळाउ[6] दमकै ।। १२०
छापा रोस जरीरौ सरसतां छजि* ।
तारा धर ऊगा किर नभ[7] तजि ।
दुति बहौ[8] सरू रूपमे डंमर[9] ।
मदन फौज नीसाण मनोहर ।। १२१
तरि तरि तार रूप बौह[10] तुररा ।
उदै उछाह जाण[11] नृप[12] उररा ।
छौगा ओप[13] दुती इम छांजै ।
राजा[14] जाण[15] कोट[16] चद राजै ।। १२२
चौकी[17] रूप पिलग चढाए[18] ।
विमळ[19] पुहप[20] घण सेज विछाए[21] ।

---

१ ग. तणाये । २ ग वितान । ३ ग. वणाये । ४ ख. ग दामिणि । ५ ख ग. जाणि । ६ ख ग. सिळाव ।

*ख और ग प्रतियोमे यह पक्ति निम्न प्रकार है—
छापा जरीरौ सरस ता छजि ।

७ ख ग किरि । ८ ख वहौ । ९ ख डबर । १० ख वहौ । ग वहौ । ११ ख ग जाणि । १२ ख. ग नृप । १३ ख ग वोप । १४ ग राका । १५ ख काजि । १६ ख ग कोटि । १७ ख. ग. चवकी । १८ ग चढाऐ । १९ ग विमळ । २० ख. पहौ । ग पहोप । १२ ग विछाये ।

---

१२०. वितान – चदोआ । चिग – वास या सरकडोकी तीलियोका वना परदा, चिलमन । पडदारू – मंजावट, सज्जा, चित्रकी महीन रेखाएँ आदि, पर्दाज । पाल – तंवू, शामियाना । दामण – दामिनी, विजली । जाण – मानो, जैसे । सिळाउ – विजलीकी दमक । दमकै – चमकते हो, दमकते हो ।

१२१ छापा – ठप्पे या मुहरसे दवा कर डाला हुआ चिन्ह । धर – पृथ्वी । किर – मानो, जैसे । नभ – आकाश । तजि – छोड कर । नीसाण – झडा, ध्वजा ।

१२२ छौगा – अवतंस । दुती – द्युति, काति । छाजै – शोभा देती हैं ।

१२३. विमळ – उज्ज्वल, स्वच्छ । पुहप – पुष्प, फूल । सेज – शय्या ।

सेभ्फ पहुप प्रफुलित इम सोहै ।
मदन वसत[1] इंद्र मन मोहै ॥ १२३
विध[2] इण[3] सेभ्फ अनेक विराजै[4] ।
लखि दुति फैण खीरसर लाजै ।
आगळि वहै[5] प्रवाह अथागा ।
भळहळ सुजळ नदी चद्रभागा ॥ १२४
हँस बोलै[6] खेलै ससि हसी ।
विगसै[7] कमळ घणा चद्रवसी[8] ।
जोत[9] वाग[10] भळकै मिळ[11] नदि जळ ।
चमकै मंगर[12] उछळै चचळ[13] ॥ १२५
मल्हपै किर[14] गिर चढि हेमाळै ।
चद्रकुमार[15] खेल्ह नह[16] चाळै ।
तिण उपवनि[17] झोलै[18] नदि तीरां ।
सीतळ मद सुगध समीरां ॥ १२६

---

१ ग वसंत । २ ख. विधि । ग बिधि । ३ ग. इणि । ४ ग बिराजै । ५ ग बहै । ६ ख. बोलै । ७ ग बिगसै । ८ ग चद्रवंसी । ९ ख. ग जोति । १० ग बाग । ११ ख ग मिळि । १२ ख. ग मकर । १३ ख. वचळ । १४ ख ग किरि । १५ ख. ग चदकुमार । १६ ख ग नट । १७ ग उपबनि । १८ ख झोल । ग झ

---

१२३ पहुप – पुष्प, फूल । इम – इस प्रकार । सोहै – शोभा देते हैं । मदन – कामदेव । मन मोहै – मनको मोहित करते हैं ।

१२४. लखि – देख कर । दुति – द्युति । फैण – फेन । खीरसर – क्षीरसागर, क्षीरसमुद्र । आगळि – अगाडी । अथाग – अपार । भळहळ – देदीप्यमान, उज्ज्वल । सुजळ – श्रेष्ठ जल । चद्रभागा – हिमालयके शिखर चद्रभागसे निकलने वाली एक नदी जिसका दूसरा नाम चिनाव भी है ।

१२५. विगसै – प्रफुल्लित होते है, विकसते हैं । जोत – ज्योति । भळकै – चमकता है । मगर – घडियाल नामक प्रसिद्ध जलजतु । चचळ – मछली, मछी ।

१२६. मल्हपै – कूदते है, छलाग मारते है । किर – मानो । गिर – गिरि, पर्वत । चढि – चढ कर । हेमाळै – हिमालय पर्वत । खेल्ह – क्रीडा । चाळै – उमगमे । तिण – उस । उपवनि – वाग, वाटिका । झोलै – पवन-प्रवाह, बहार । तीरां – किनारा, तटो । समीरा – पवन ।

चादर हौज फुहार नीर चलि ।
अमृत नदी आय[1] किर[2] ऊझळि[3] ।
रजत[4] सुजळ केइक अतरामैं[5] ।
केइक होद[6] भरचा[7] कुमकुम्मैं[8] ।। १२७

जगमग जोति[9] उदोत उजासी ।
अरध सरद निस[10] पूरण ऽवासी[11] ।
राजै तठै तेजमणि राजा ।
वाजै[12] तठै[13] अनोपम वाजा[14] ।। १२८

गायण[15] तठै करै[16] नृत[17] गावै ।
लावण[18] बांणि[19] अनेक लगावै ।
छक छौह[20] रूप जोवनां[21] छाका ।
पुहपातणी[22] वणी[23] पौसाका ।। १२९

चचळ केक[24] करै नृत[25] चाळा ।
बार'[26] तेर' वरसा[27] मभि बाळा[28] ।

---

१ ख आई। ग आइ। २ ख ग किरि। ३ ख. ग उझळि। ४ ख ग रजित। ५ ख. ग अंतरमैं। ६ ख ग हौद। ७ ख ग भरीया। ८ ख ग कुंमकुमैं। ९ ख ग जेति। १० ख. ग निसि। ११ ख. ग. वासी। १२ ख वाजं १३ ग. जठै। १४ ग वाजा। १५ ग. गायणी। १६ ख गयण। १७ ख. ग नृत। १८ ख ग लावनि। १९ ख वाण। ग वाण। २० ख वहौ। ग वहौ। २१ ख. जोवना। २२ ख ग पहौपातणी। २३ ग वणी। २४ ख. केइक। ग केईक। २५ ख ग नृत नृत चालै। २६ ख. ग वार। २७ ग बरसां। २८ ख वाला।

---

१२७ चादर – जलकी चौडी धारा जो कुछ ऊपरसे गिरती हो। फुंहार – पानी उछालनेका एक यत्र या इस यंत्रसे उछलने वाले जलकण, फव्वारा। किर – मानो। ऊझळि – उमडी। रजत – शोभा देता है। केइक – कई। अंतरामैं – छेदोमे; इत्रमे। कुमकुम्मैं – केसर, कुमकुम, कुमकुमा।

१२८ उदोत – उदय। उजासी – प्रकाश। निस – रात्रि। पूरण ऽवासी – पूर्णमासी। तठै – वहा। अनोपम – अनुपम। वाजा – वाद्य।

१२९. गायण – गाने वाली, वेश्या। नृत – नृत्य, नाच। लावण – गायन विशेप। जोवनां – यौवन। छाकां – पूर्ण। पुहपातणी – पुष्पोकी, फूलोकी।

१३०. चंचळ – स्त्री, नर्तकी। नृत चाळा – नृत्यके विविध भेद, नाच। वार' – बारह। तेर' – तेरह। मभि – मे। बाळा – स्त्री।

तन पवसाक[1] जरी महताबी[2] ।
फवि चीरा किलगी[3] सिर[4] फाबी[5] ॥ १३०
चमकै रतन पेच चीरांरा ।
हार मुकत भूखण हीरारा ।
के उघटंत नचत के कामणि ।
दमकै घटा उजळ जिम दामणि ॥ १३१
अग सोलिमौ[6] कनिक[7] उणहारै[8] ।
सोळ वरस[9] वय[10] सोळ सिंगारै ।
नृत[11] पलग[12] रुच लावै नूपर ।
उरप तिरप जंग बाजी[13] ऊपर ॥ १३२
हावभाव लावै[14] मद हासा ।
त्रेवट आट[15] करंत तमासा ।
सोभा रूप गांन नृत[16] सोहै ।
महीप[17] किसूं[18] इद्र मन मोहै ॥ १३३

---

१ ख ग पौसाक। २ ख महतावी। ३ ख. ग. कलगी। ४ ख ग. सिरि। ५ ख फावी। ६ ख ग. सोलिमां। ७ ख ग. कनक। ८ ख ग उणिहारे। ९ ख बरस। १० ख ग वय। ११ ख. ग नृत। १२ ख. ग पिलंग। १३ ख वाली। १४ ख ग लाव। १५ ख ग आड। १६ ख ग नृत। १७ ख. ग. पहपति। १८ ख ग किसु।

---

१३०. तन – शरीर। पवसाक – पोशाक। जरी – सोने-चादीके तार जिन पर सुनहरा मुलम्मा हो। महताबी – सोने-चादीके तारोंसे बना हुआ कपडा, जरबफ्त। फवि – शोभायमान हो कर। चीरा – पगडी, उष्णीष। किलगी – सिरका आभूषण विशेष।

१३१. पेच – पगडीकी लपेट, पगडीका फेरा। चीरारा – पगडियोके। मुकत – मोती। भूखण – आभूषण। उघटत – ताल देना, सम पर आना। नचत – नृत्य करते हैं। कामणि – कामिनी, स्त्री। दमकै – चमकता है। जिम – जैसे। दामणि – विजली।

१३२ सोलिमौ कनिक – सोलह वार, तपा कर साफ किया हुआ स्वर्ण या सोना। उणहारै – अनुहार, समान। वय – आयु। पलंग – पैरोको इस तरह चलाना और घूघरोंसे ऐसी आवाज निकालना मानो पानीका वहाव आ रहा हो, प्लावन हो रहा हो, प्लव-गति। उरप – नाचते-नाचते पद (पैर)को अरु (जाघ) पर लेना। इस अदा को उरप कहा जाता है, ऊरुपद् भगिमा। तिरप – पैरोको तिर्यक् (टेढे कर के) खडे हो जाना जैसे श्रीकृष्ण खडे होते बताए जाते है, तिर्यक् पद भगिमा।

१३३. त्रेवट – त्रिवट। आट – यह 'अड्डुस्खलिति' कहलाती है—पैर को तिरछा फिसलाना। गान – गायन। सोहै – शोभा देता है। महीप – राजा। किसू – क्या।

दुति नृत[1] गान एम दरसावै ।
परी तिया[2] समता नह पावै ।
गुटका बळ[3] उडतै सिध गयणे ।
निरखे एह[4] कतूहळ नयणे ।। १३४

छकि ऊतरे[5] मोह मन[6] छायौ ।
एकणि[7] कुसम सेझ पर[8] आयौ* ।
पौह[9] नृत[10] गान चद्रका[11] पेखे ।
दिल[12] रीझियौ वाग[14] छिबि[15] देखे ।। १३५

जदि माया निंद्राफद[16] जडियौ[17] ।
पलक लगी गुटकौ धर पडियौ[18] ।
उणहिज[19] सेझ ताम नृप[20] आए[21] ।
पेखे सिध गुटकौ[22] धर पाए[23] ।। १३६

ओ[24] उठाय एकत[25] धरायौ ।
जठा पछै नृप[26] सिद्ध जगायौ ।

---

१ ख. ग नृत । २ ख तीया । ३ ख वलि । ग वलि । ४ ख ग येह । ५ ग उत्तरे । ६ ग चित्त । ७ ग ऐकणि । ८ ग परि ।

*ये दो पक्तिया ख प्रतिमे नही है ।

९ ख. ग पौहौ । १० ख ग नृत । ११ ख ग चद्रिका । १२ ख ग दिल्ल । १३ ख. ग रीझीयौ । १४ ब वाग । १५ ख ग छवि । १६ ख ग निंद्राफंदि । १७ ख ग जडियौ । १८ ख ग पडीयौ । १९ ख. ग उणहीज । २० ख ग नृप । २१ ग आऐ । २२ ख गुटिको । ग गुटिकौ । २३ ग पाऐ । २४ ख ग वो । २५ ग ऐकंत । २६ ख ग नृप ।

---

१३४ परी – अप्सरा । तिया – उन । समता – बराबर, समानता । सिध – सिद्धियाप्राप्त महात्मा । गयणे – आकाशमे । निरखे – देख कर । एह – यह । कतूहळ - कौतूहल । नयणे – नेत्रोमे ।

१३५ पौह – नृप राजा । नृत – नृत्य । गान – गायन । चद्रका – चद्रिका, चादकी रोशनी । पेखे – देख कर । रीझियौ – मोहित हो गया । छिबि – शोभा, सुन्दरता ।

१३६. जदि – जब । निंद्राफद – नीदरूपो जाल या फदा । जडियौ – बधनमे डाला, बाधा । पलक लगी – नींद आई । गुटकौ – एक सिद्धि जिसके अनुसार कोई सिद्ध गुटका मुहमे रख लेने पर योगी जहा चाहे वहा चला जा सकता है । उणहिज – उस ही । सेझ – शय्या, पलग । ताम – वह । धर – भूमि, पृथ्वी । पाए – प्राप्त किया ।

१३७ ओ – वह । जठा पछै – तत्पश्चात् ।

खितपति देख[1] हुवौ[2] सिध खीणौ ।
हाथी जेम महामद हीणौ ।। १३७
सिध इम देखि नृपति[3] सुकचांणे[4] ।
ओ[5] गुटकौ दीधौ नृप[6] आणे ।
सिध कहियौ[7] कहिवा[8] हस काजा ।
रीझौ[9] हू मांगौ वर राजा ।। १३८
कहियौ नृप कारिज सिध कीजे ।
दत वर मूझ पदमणी दीजे ।
वदै[10] सिद्ध नृप विसवावीसां[11] ।
पदमण[12] आंणू दीह पचीसा ।। १३९
ले मुख उडत नाग जिम लुडियौ[13] ।
ओ[14] सिध सिंघल दीप दिस[15] उडियौ[16] ।
दीप सिंघल पदमण[17] दरसाई ।
आकरखण मत्र पढे उडाई ।। १४०
जोजन अरध सिद्ध आगै जिण[18] ।
पाछै वहै[19] गयण मगि पदमण ।

---

१ ख ग देषि। २ ख. हूवौ। ३ ख ग नयण। ४ ख ग. सकुचाणे। ५ ख ग वो। ६ ख ग नृप। ७ ख. ग कहीयौ। ८ ख ग कहैवा। ९ ख ग रीझौ। १० ग. वदै। ११ ग बीसवाबीसा। १२ ख ग पदमणि। १३ ख लुडीयौ। १४ ख ग वो। १५ ख ग दिसि। १६ ख ग उडीयौ। १७ ख ग पदमणि। १८ ख ग. जिणि। १९ ग बहै।

---

१३७ खितपति – क्षितिपति, राजा। हुवौ सिध खीणौ – योगी हतप्रभ हो गया। हाथी जेम महामद हीणौ – जिस प्रकार महामदोन्मत्त हाथी मदहीन हो गया हो।

१३८ इम – इस प्रकार। देखि – देख कर। नृपति सुकचाणे – राजा भी लज्जित हुआ। दीधौ – दे दिया। आणे – ला कर। रीझौ – प्रसन्न हुआ। हूं – मै।

१३९. कारिज – कार्य, काम। मूझ – मुझको। वदै – कहता है। विसवावीसा – पूर्ण विश्वास युक्त। पदमण – पद्मिनी। आणू – ले आऊंगा। दीह – दिन।

१४० नाग – सर्प। जिम – जैसे। लुडियौ – मस्तीमे शरीरको इधर-उधर हिलाया। दिस – तरफ, ओर। उडियौ – उडा। पदमण – पद्मिनी। दरसाई – दिखलाई दी। आकरखण मत्र – आकर्षण मत्र।

१४१ जोजन – योजन। जिण – जिस। पाछै – पीछे। गयण मगि – आकाश मार्गमे।

जळक्रीडा नृप पदम रमै जदि ।
तन पदमणि उडती देखे तदि ।। १४१
ईख[1] रूप मनि इम ठहराई ।
भरता एह[2] अवर पित भाई ।
उडतौ[3] काकण[4] खोल[5] चलाए[6] ।
ओ[7] पडियौ[8] नृप[9] आगळ[10] आए[11] ।। १४२
चमतकार जण[12] हुवौ[13] सचेळौ ।
भाण हुवौ जाणै जळ भेळौ ।
छत्रपत[14] लिये[15] काकण[16] इम छाजै ।
बडवानळ[17] रवि चंद्र विराजै[18] ।। १४३
जुधि किणहिक जाता नृप[19] जाणै[20] ।
परि[21] कंकण पडियौ[22] खुलि पाणै ।
इम ही मन लखि तेज अभावा* ।
राजा[23] अचभ अचभ उमरावां ।। १४४

---

१ ग ईषि । २ ग. ऐह । ३ ख उडती । ४ ख ग कंकण । ५ ख. ग खोलि । ६ ग चलाऐ । ७ ख ग वो । ८ ख ग पडीयौ । ९ ख ग. नृप । १० ख ग. आगळि । ११ ग आऐ । १२ ख ग जिणि । १३ ख हूवौ । १४ ख. ग. छत्रपति । १५ ख ग लीयौ । १६ ख ग ककण । १७ ख वडवानळ । १८ ग विराजै । १९ ख ग नृप । २० ग झाणै । २१ ख ग परी । २२ ख. ग. पडीयौ ।

*ख. और ग प्रतिके अनुसार यह पक्ति निम्न प्रकार है—

इम हिम नग लाषि तेज अमावा ।

२३ ग राझा ।

---

१४१ रमै – खेलता है । जदि – जब । तदि – तब ।

१४२. ईख – देख कर । मनि – मनमे । भरता – पति । एह – यह । अवर – अन्य । पित – पिता । पडियो – गिरा । आगळ – अगाडी । आए – आ कर ।

१४३ जण – जिस । सचेळो – अद्भुत । भांण – सूर्य । जाणै – मानो, जैसे । जळ भेळौ – जलके शामिल । छत्रपत – राजा । काकण – कंगन । इम छाजै – इस प्रकार शोभा देता है । वडवानळ – समुद्रकी अग्नि, वाडवाग्नि । रवि – सूर्य । चद्र – चाद ।

१४४ जुधि – युद्धमे । किणहिक – किसी । परि – अप्सरा । पडियो – गिरा । खुलि पाणै – हाथमे से खुल कर । अभावा – अपार । अचंभ – आश्चर्य ।

भूपति आयौ पुर विभ्रमियै* ।
सारगविजै मिळे तिण[1] समियै[2] ।
आस्त्रीवाद[3] करे इम अक्खै[4] ।
राजा किण[5] कारण[6] भ्रम रक्खै[7] ।। १४५

दाखि पडण विध[8] ककरण दिखाए[9] ।
ईख[10] जती थानक[11] निज आए[12] ।
सुरा[13] अमी[14] तिलवट वळि[15] साधे ।
आधी निस[16] भैरव आराधे ।। १४६

चाढि छाक मद भख ले चवियौ[17] ।
तवि कथ मुज्झ[18] केम तेडवियौ[19] ।
जिम ककण विध भूप जताई ।
वीर अग्र[20] तिम जती वताई ।। १४७

---

*ख. और ग. प्रतिके अनुसार यह पंक्ति निम्न प्रकार है—

भूप अयौ पुर वित वीभ्रमीयै ।

१ ख ग तिणि । २ ख. ग समीयै । ३ ख आश्रीवाद । ग आश्रीबाद । ४ ख. ग अख्ये । ५ ख ग किणि । ६ ग करणि । ७ ख ग रख्ये । ८ ख. ग विधि । ९ ग. दिखाऐ । १० ग ईषि । ११ ख ग थानिक । १२ ग. आऐ । १३ ख सुरां । १४ ख अमिष । ग. आमिष । १५ ख वधि । १६ ख. ग. निसि । १७ ख ग चवीयौ । १८ मुझ । ग मुझ । १९ ख ग. तेडवीयौ । २० ख ग अग्रि ।

---

१४५ पुर – नगर । विभ्रमियै – भ्रमित होकर, पागल । तिण – उस । समियै – समयमे । आस्त्रीवाद – आशीर्वाद । अक्खै – कहा । किण – किस । भ्रम – भरम । रक्खै – रखा ।

१४६. दाखि – कह कर । पडण – गिरनेको । विध – विधि, ढग, तरीका । ईख – देख कर । थानक – स्थान । सुरा – शराब । अमी – दूध । तिलवट – तिल । वळि – देव विशेषको उत्सर्ग किया हुआ भक्ष्य पदार्थ । आधी निस – अर्द्ध रात्रि । आराधे – आराधना की ।

१४७. छाक – शराबका प्याला । मद – शराब । चवियौ – कहा । तवि – कह । कथ – वृत्तान्त । मुज्झ – मुझको । केम – कैसे । तेड़वियौ – बुलाया । जताई – प्रकट की । वीर – भैरव देव । अग्र – अगाड़ी ।

कहियौ[1] सुणै वीर कुदरत्ती
मेट[2] जती[3] चिंता[4] महपत्ती ।
जुगति[5] वात हूं कहू तूझ जिम ।
तू नृप मुहरि[6] वात कहिजे[7] तिम ।। १४८
धर बुगलाण[8] तेज छत्रधारी ।
समे[9] हेक चद्रिका सिंगारी ।
उण दिन ले पदमणि सिव आंणी ।
वात कही जिम जुगत[10] वखाणी ।। १४९
उण[11] पदमण[12] उडती अवरेखे ।
पदम रूप क्रीला जळ पेखे ।
राजा छबि[13] देखे अति रीधी ।
करण[14] भ्रतार[15] प्रतग्या कीधी ।। १५०
जे विण[16] पदम[17] राणिया[18] जणियौ[19] ।
भाई[20] पिता तिके[21] स्रव[22] भणियौ[23] ।
सुजळि[24] तेण[25] राळे नृप[26] साथे ।
हथळेवा मिस[27] ककरण हाथ ।। १५१

---

१ ख ग कहीयौ। २ ख ग मेट्ट। ३ ग झती। ४ ख ग चिंत। ५ ख ग जुगति। ६ ख ग मोहरि। ७ ख ग कहजे। ८ ख बुगलाण। ९ ख ग समै। १० ख. ग ग्रंथि। ११ ग. उणि। १२ ख ग पदमणि। १३ ख ग छिव। १४ ख कर। १५ ग भरतार। १६ ख ग विणि। १७ ग पदमणि। १८ ख ग राणीयां। १९ जणीया। २० ग भाइ। २१ ख जिके। २२ ख श्रव। ग भ्रव। २३ ख ग. भणीया। २४ ख. सुजळ। २५ ख ग तेणि। २६ ख ग नृर। २७ ख ग मिसि।

---

१४८ कहियौ – कहा। मेट – मिटा दे। महपत्ती – राजा। जुगति – युक्ति। हू – मैं। तूझ – तुझको। मुहरि – मुह्, फिर।

१४९ छत्रधारी – राजा। हेक – एक। चद्रिका – चद्रिका, चादकी रोशनी। सिंगारी – शृंगारयुक्त की। जुगत – युक्ति। वखाणी – वर्णन की।

१५०. अवरेखे – देख कर। पदम – राजा पद्म। क्रीला – क्रीडा। पेखे – देख कर। छबि – सुन्दरता, रूप। रीधी – मोहित हुई। भ्रतार – पति। प्रतग्या – प्रतिज्ञा। कीधी – की।

१५१ जणियौ – जना, जन्म दिया। तिके – वे। स्रव – सब। भणियौ – कहा। सुजळि – उस जलमे। तेण – उस। राळे – डाल कर। हथळेवा – पाणिग्रहण।

लेगौ सिध वा त्रिय[1] बुगलाणे[2] ।
उलट[3] गयौ आस्रम[4] आपांणे ।
सुदर[5] नृप[6] चित्रमहल[7] बसाई[8] ।
वाग चद्रिका जेणि वणाई ।। १५२
पदमणि तठै तेजमणि भूपति ।
आतुर गयौ[9] मदन सुख आरति ।
सुदरि दीठ स्रिंगार[10] सोळ सझि ।
मुरछा आय[11] पडे उपवन मझि ।। १५३
करे कटाछिन नेह सकाजा ।
रूप छाक[12] छकि पडियौ[13] राजा ।
वपु सिर धार स्रोण मे' वूठे ।
अेक[14] पहर[15] वीतां नृप[16] ऊठे[17] ।। १५४
सुभ मझि असुभ[18] लेख विध[19] साखै ।
असुभ सगुन[20] प्रथमी[21] सह[22] आखै ।
जोतिस सगुन ब्रिहू[23] विध जांणै ।
पोह[24] ज्या वरजै[25] लेख प्रमाणै ।। १५५

---

१ ख ग त्रीय। २ ख बुगलाणै। ३ ग उलटि। ४ ख श्राम। ५ ख. सुदरि। ६ ख ग नृप। ७ ख ग. चित्रमदिर। ८ ख ग. वसाई। ९ ख अयो। ग आयौ। १० ख. ग. शृंगार। ११ ख ग. आइ। १२ ग छाकि। १३ ख ग पडीयौ। १४ ग ऐक। १५ ख ग पौहोर। १६ ख ग नृप। १७ ख. ग उठै। १८ ख असुर। १९ ख. ग विधि। २० ख ग सुगन। २१ ख ग प्रिथमी। २२ ख ग सहु। २३ ख ग दुहू। २४ ख ग. पहौ। २५ ग वरजे।

---

१५२ लेगौ – ले गया। वा – उस। त्रिय – स्त्री। आपांणै – अपने।

१५३ पदमणि – पद्मिनी। तठै – वहा। आतुर – त्वरायुक्त। मदन – कामदेव। दीठ – देखी। पड़े – गिर गया। उपवन – वाग। मझि – मध्य, मे।

१५४ कटाछिन – कटाक्ष। नेह – स्नेह, प्रेम। सकाजा – लिए। छाक – मद्य पीनेका प्याला। छकि – मदोन्मत्त हो कर। पडियौ – गिर गया। वपु – शरीर। स्रोण मे' – रक्तका मेह। वूठे – बरसा। वीता – व्यतीत होने पर।

१५५ मझि – मध्य, मे। लेख – प्रारब्ध। विध – विधि, विधाता। प्रथमी – पृथ्वी, भूमि। सह – सव। आखै – कहते है। ब्रिहू – दोनो। विध – प्रकार, तरह। पोह – नृप, राजा।

वसतपचमी करौ[1] विमाहौ[2] ।
सुध निरदोख वेद विध साहौ ।
इम ठहराय[3] महल[4] नृप[5] आए[6] ।
पदमणि तांम महासुख[7] पाए[8] ।। १५६
महिल रग पदमणि उदमद्दै ।
चौकी जोध हजार चवद्दै ।
आखै वीर सरब[9] विध अेही ।
जती कहै नृपसू कथ जेही ।। १५७
सुणि कथ पदम सभै दळ साजा ।
रिण परणण उच्छब[10] करि राजा ।
जटी वीरभद्र घणा जगाया ।
आठ हजार इसा भड आया ।। १५८
भुकती कळ दावानळ भालै ।
च्यार हजार पायदळ चालै ।
फवि[11] अगि सिलह जोम ऊफणिया[12] ।
वीस मयद[13] आरोहक वणिया ।। १५९
असि धुर जोपि तेज ऊडाणै[14] ।
आगळि सहस रहकळा आंणै ।

---

१ ख ग कीजै । २ ख ग वीमाहौ । ३ ख ग ठहराइ । ४ ख ग महलि । ५ ख ग. नृप । ६ ग आऐ । ७ ग माहासुष । ८ ग पाऐ । ९ ख सख । १० ख उछ्व । ग. उछत्व । ११ ख फवि । १२ ग ऊफणीया । ख उफणीया । १३ ख ग गयद । १४ ख उडाणे ।

---

१५६. विमाहौ – विवाह । निरदोख – निर्दोष । वेद विध – वेद विधि । साहौ – लग्न, विवाह, मुहूर्त ।

१५७ उदमद्दै – आनन्द भोगते हैं । चौकी – रक्षा । जोध – योद्धा । चवद्दै – चौदह । वीर – भैरव देव । जेही – जैसी ।

१५८ पदम – राजा पद्म । उच्छब – उत्सव । जटी – महादेव । इसा – ऐसे । भड – योद्धा ।

१५९. दावानळ – दावाग्नि । भालै – पकडता है । पायदळ – पैदल योद्धाओंका दल । अगि – शरीरमे । सिलह – अस्त्र-शस्त्र । जोम – जोश । मयद – हाथी, गज । आरोहक – सवार ।

१६०. असि – घोडा । धुर – अगाडी । आगळि – अगाडी । रहकळा – घोडों या बैलो द्वारा खींचा जाने वाली तोप विशेष ।

इण तजबीज[1] चढी असवारी ।
धर बुगलाण[2] धसे[3] छत्रधारी ॥ १६०
नवलापुरी पुरी इंद्र नोखां ।
जोए[4] वाग, नदी जळ जोखा[5] ।
सुपह[6] भडा कथ कहै सनेही ।
उतन करां राजस धर एही[7] ॥ १६१
इम कहि विढण[8] दीध नृप आयस ।
दळ हालिया वाग पदमणि दिस[9] ।
रोस चढे विढिया[10] रखवाळा* ।
अठ छ हजार तेजमिण वाळा ॥ १६२
आतस दगि झड मंडे अगारा ।
निहस[11] पड़े रण तूर नगारा ।
धर अवर रज धोम अधारे ।
जोगणि चडी वीर[12] जैकारे ॥ १६३

---

१ ख. तजवीज । २ ख बुगलाण । ३ ख. धरे । ४ ग. जोऐ । ५ ग जोषा । ६ ख ग सुपोहो । ७ ग. ऐही । ८ ग विढण । ९ ग दिसि । १० ग. विढीया ।

*ये दो पंक्तियां ख प्रतिमे नही हैं ।
रोस चढे विढिया रखवाळा ।
अठ छ हजार तेजमिण वाळा ॥

११ ख निसह । ग निहस । १२ ग. बीर ।

---

१६०. धसे – प्रवेश किया ।

१६१ नवलापुरी – नवीनपुरी । नोखा – अद्‌भुत । जोखा – आनन्द, हर्ष । सुपह – राजा, योद्धा । सनेही – स्नेहपूर्ण । उतन – निवास, वास । राजस – राज्य । धर – भूमि । एही – ऐसी ।

१६२ विढ़ण – युद्ध । दीध – दी । आयस – आज्ञा । दिस – तरफ । रोस – जोश । विढिया – भिडे, युद्ध किया । रखवाळा – रक्षक, योद्धा ।

१६३ आतस – तोप, बदूक आदि । दगि – छूटी । झड़ – वर्षा । निहस – प्रहार, ध्वनि । अवर – आसमान । रज – धूलि । धोम – धुआ । जैकारे – जय-जयकी ध्वनि करते हैं ।

दगि बौह[1] कोहक-वाण[2] दायक्का[*] ।
सोक कवाण चिला[3] सायक्का ।
असि धुज सिलह[4] पखर[5] भिदि आवै ।
पंख जिका भीजण[6] नह पावै ॥ १६४
छूटै प्राण पाव नह छूटै ।
जाजुळि[7] एम[8] दहूं दळ जूटै ।
वीस सहंस दळ रीस वधाए[9] ।
आरणि जेणि तेजमणि आए ॥ १६५
हाक निहाव अबर धर[11] हुवियौ[12] ।
धुवतौ[13] समर चौगुणौ धुवियौ[14] ।
पदम हिलै[15] क छिलै[16] दध[17] पाजा ।
राजाहूंत सांमुहौ राजा ॥ १६६

---

[*] ये दो पक्तिया ख. प्रतिमे नही हैं ।

दगि बौह कोहक-वाण दायक्कां ।
सोक कवाण चिला सायक्का ॥

१ ग वहो। २ ग कोहोंक-वाण। ३ ग चिल्ला। ४ ख ग पखर। ५ ख ग सिलह। ६ ग. भीभ्रण। ७ ख जाजुळ। ८ ग ऐम। ९ ग. वधाऐ। १० ख. आरण। ११ ग धुर। १२ ख ग. हुवीयो। १३ ख धुवतो। १४ ख धुवीयो। ग धुवीयी। १५ ख ग हलै। १६ ख. ग. छिले। १७ ख ग. दधि।

---

१६४ दगि – तोपें छूटी। बौह – बहुत। कोहक-वांण – एक प्रकारकी तोप। सोक – तीरोंके तेज चलनेकी ध्वनि। कवाण – कमान। चिला – प्रत्यंचाये। सायक्कां – तीरो, वाणो। असि – घोडा। सिलह – शस्त्र, अस्त्र-शस्त्र। पखर – घोडेका कवच। भिदि – भेद कर, फोड कर। पंख – तीरके ऊपरका पखोयुक्त वह भाग जो प्रत्यचा पर चढाया जा कर तीर खीचा जाता है।

१६५. पाव – पैर, चरण। जाजुळि – भयकर। एम – इस प्रकार। दहू – दोनो। दळ – सेना। जूटै – भिडते है। आरणि – युद्धमे। जेणि – जिसमे।

१६६ निहाव – ध्वनि। हुवियौ – गुजायमान हुआ। धुवतो – भयकर रूप धारण करता हुआ। समर – युद्ध। धुवियौ – भयकर रूपमे हुआ। पदम - राठौड राजा पद्म। हिलै - मर्यादाके बाहर होना। दध – उदधि, सागर, समुद्र। पाजा – मर्यादा। राजाहूंत – राजासे। सामुहौ – सन्मुख, सामने।

ऊपर[1] वीस सहस आखाडै[2] ।
पाच सहंसहू वाग उपाड़ै ।
जुटै वागि[3] रावत नृप[4] जौळा ।
रौळा हेक माहि दो[5] रौळा ॥ १६७

इम वागा लागा असमाणा ।
कूता धमक झाट केवाणा ।
जमदढ खजर अम्होसम्ह जडिया[6] ।
लूथबथा[7] जेठी जिम लड़िया[8] ॥ १६८

खळ दस सहस अडे[9] दळ खूटा ।
तीन सहस कमधज भड तूटा ।
भभकै घाव तडफडै भूमै ।
घायल हुवा[10] किता भड घूमै ॥ १६९

जादव[11] जाणि[12] कठीर जगायौ ।
असि आफळे[13] तेजमणि आयौ ।
साबळ जुड[14] जोध समराथै ।
मसत पदम वीला[15] गज माथै ॥ १७०

---

१ ख. ग ऊपरि । २ ख अखाड़े । ३ ग बागि । ४ ख ग. नृप । ५ ख. ग. दोय । ६ ख ग जडीया । ७ ख जूथवया । ग लुथबथा । ८ ख ग लडीया । ९ ख ग पड़े । १० ख हूवा । ११ ग झादवा । १२ ग झांणि । १३ ख ग आफालि । १४ ख ग. जडे । १५ ख ग वाला ।

---

१६७ सहंस – सहस्त्र । आखाडै – युद्धमे, युद्धके मैदानमे । जुटै – भिडते हैं । रावत – योद्धा । जौळा – साथ, युक्त । हेक मांहि – एकमे ही । रौळा – युद्ध ।

१६८ वागा – युद्धमे भिड़े, वीर-गति प्राप्त हुए । असमांणा – आसमान । कूता – भालो । धमक – प्रहार, प्रहारकी ध्वनि । झाट – प्रहार । केवाणा – तलवारो । जमदढ़ – एक प्रकारकी कटार । खजर – शस्त्र विशेष । अम्होसम्ह – आमने-सामने । जडिया – प्रहार किये, वार किये । लूथबथा – गुत्थमगुत्थ, मल्लयुद्ध । जेठी – बडा, भीम ।

१६९ खळ – शत्रु । अडे – भिड कर, लड कर । खूटा – समाप्त हो गये । तूटा – वीर गति प्राप्त हो गये, टूट गये । भभकै – उमडते है । तडफडै – तडफते हैं । भूमै – पृथ्वी पर । किता – कितने ।

१७० जाणि – मानो । कठीर – सिंह । असि – घोडा । साबळ – शस्त्र विशेष । जुडे – प्रहार करते हैं । समराथै – समर्थ, शक्तिशाली । पदम – राठौड राजा पद्म । गज – हाथी । माथै – पर, ऊपर ।

मल्हपै देखि गयदहूं महपति ।
गज पर[1] गिरद कठीरतणी गति ।
ओपम[2] दुती मलैगिर[3] आणै ।
जळ झपियौ[4] हणू[5] कपि जाणै ॥ १७१

जमदढ चच तेजमणि जडियौ[6] ।
अरि अहि जाणि गरुड उडि पडियौ[7] ।
राजा हणे तेजरा[8] रावत ।
घण खग झाट पदम नृप[9] घावत ॥ १७२

वाह पदम खळ पदम विहारै ।
वाह पदम हथ पदम उचारै ।
रिण[10] घण थाळ मग[11] जिम रुळिया[12] ।
पडिया[13] किता किना खळ पुळिया[14] ॥ १७३

अछरि तेजमिण[15] भूप वराए[16] ।
पदमणि पदम भूप वर पाए[17] ।

---

१ ग पौर। २ ख. ग वोपम। ३ ख मिलै। ४ ख ग झापीयौ। ५ ग हणु। ६ ख ग जडीयौ। ७ ख ग पडीयौ। ८ ख ग. तेणरा। ९ ख ग नृप। १० ख. ग रण। ११ ख मुग। १२ ख ग रुळीया। १३ ख ग पडीया। १४ ग पुलीया। १५ ख ग तेजमणि। १६ ग वराये। १७ ग पाऐ।

---

१७१. **मल्हपै** – छलाग भरता है। **गयदहू** – हाथीसे। **महपति** – राजा। **गिरद** – पर्वत। **कठीरतणी** – सिंहकी। **गति** – प्रकार। **ओपम** – उपमा। **दुती** – दूसरो। **मलैगिर** – मलियागिर। **झपियौ** – कूदा, छलाग भरी। **हणू** – हनुमान। **कपि** – वानर **जाणै** – मानो।

१७२ **जमदढ** – कटार विशेष। **जडियौ** – प्रहार किया। **अरि** – शत्रु। **अहि** – सर्प। **जाणि** – जान कर। **हणे** – महार कर दिये। **तेजरा** – राजा तेजमणिके। **रावत** – योद्धा। **घण** – बहुत। **खग** – तलवार। **झाट** – प्रहार। **पदम** – राठौड राजा पद्म। **घावत** – सहार करता है।

१७३ **वाह** – प्रहार, या धन्य-धन्यका शब्द। **खळ** – शत्रु। **पदम** – राजा पद्म। **विहारै** – संहार करता है। **हथ** – हाथ। **रिण** – युद्ध। **घण** – बहुत। **रुळिया** – इधर-उधर हो गये, बिखर गये। **पडिया** – वीर गति प्राप्त हुए। **किता** – कितने। **पुळिया** – भग गये।

१७४ **अछरि** – अप्सरा। **वराए** – वरण किया। **पदमणि** – पद्मिनी। **पदम** – राठौड राजा पद्म। **वर** – पति।

वधै[1] उछाह वजे[2] घण वाजा ।
रण करि फतै परणियौ[3] राजा ।। १७४
धर करि ग्रमल पदम छत्रधारे ।
सुदरि[4] नवलापुरी सिंगारे ।
रगमहलि[5] दपति दुति राजै ।
छक मुसताकि[6] काम रति छाजै ।। १७५
ग्रमर सुजस दत खगि[7] ग्रधिकाई ।
साख पदमरी बधै[8] सवाई ।
वास देस करि नाम वचाणा ।
बुगलाणाहूता[9] बुगलाणा ।। १७६

राजा पुजरा सातमा पुत्र ग्रहररौ वरणण—

सपतम पुज सुजाव सकाजा ।
राणी सकति ग्रस सुत राजा ।
ग्रहर नाम कुळचै[10] उजवाळौ ।
बहसैं[11] लीध देस बगाळौ[12] ।। १७७
पोह[13] जिण[14] साख नाम प्रगटाए[15] ।
कमध[16] ग्रहरहू ग्रहर कहाए[17] ।

---

१ ग. बधे । २ ग वजे । ३ ख ग परणीयौ । ४ ख ग सुदर । ५ ख. रगमहल । ग रगमहिल । ६ ख. ग मुसताक । ७ ख ग खग । ८ ख. बधे । ९ ख बुगलांणांहूत । १० ख. ग कुलचौ । ११ ख ग वहसै । १२ वंगाळौ । १३ ख. ग. पहौ । १४ ख जिणि । १५ ख प्रगटाये । ग प्रगटाऐ । १६ ख ग कमध । १७ ग कहाऐ ।

---

१७४ उछाह – उत्साह, उमग । घण – बहुत । वाजा – वाद्य । परणियौ – विवाह किया ।

१७५ ग्रमल – ग्रविकार । रंगमहलि – कामकेलि-भवन । दपति – पति-पत्नी । दुति – काति, दीप्ति । राजै – शोभा देती है । छक – ग्रानद, हर्ष । मुसताकि – उत्कठित ।

१७६ दत – दान । खगि – तलवार । ग्रधिकाई – विशेषता । साख – शाखा । सवाई – विशेष । देस करि – देशसे । वचाणा – पढा गया । बुगलाणाहूत – बुगलाणा स्थानके कारण बुगला राठोकी शाखा हुई ।

१७७ सुजाव – पुत्र । कुळचै – कुलका । उजवाळौ – प्रकाश, उज्ज्वल करने वाला । बगाळौ – वगाल देश ।

१७८ पोह – राजा । प्रगटाए – प्रकट किए । ग्रहरहू – राजा पुजके सातवें पुत्र ग्रहरसे । ग्रहर – राठौडोके प्रसिद्ध तेरह वशोमे से एक वश ।

इणची साखि[1] रीत धरि[2] आदव ।
जदु नृपहू[3] वागा जिम जादव* ।। १७८

राजा पुजरा आठमा पुत्र वासुदेवरो वरणण—

असटम[4] पुत्र पुज[5] नृपवाळौ[6] ।
वासदेव भूपाळ वडाळौ ।
पाट भगत नृप अतर पाखै ।
राजा धरमवभ[7] हित राखै ।। १७९
एक[8] अग्र लखमण[9] अहिनाणै ।
जेठी[10] वधव[11] पिता जिम जाणै ।
अग्रज परम प्रीति[12] अधिकाई[13] ।
भगति करै नव धांम न भाई[14] ।। १८०
लघु भ्रत[15] जिम अभिलाख मु लाधै ।
समै तेणि दासा तन साधै ।
उतिम सिनांन[16] करावै आणै ।
पीतावर[17] धोता[18] वर[19] पांणै ।। १८१

---

१ ख साख। २ ख ग घर। ३ ग नृप।
*यह पंक्ति ख प्रतिमे नही है—
जदु नृपहू वागा जिम जादव ।
४ ग अष्टम। ५ ख ग. पूज। ६ ख ग. नृप। ७ ख. धरमवभ। ग. धरमवभ। ८ ख ग एकाग्र। ९ ख ग लछिमण। १० ख ग जेसट। ११ ख वधव। १२ ख ग प्रीत। १३ ग अधिकाइ। १४ ख. ग निभाई। १५ ख भृति। ग भृत। १६ ख ग सनान। १७ ख. पीतंवर। १८ ख धोत। १९ ग वर।

---

१७८ आदव – आदि कालकी। जदु – राजा यदु। नृपहूं – नृपसे। वागा – प्रसिद्ध हुए। जिम – जैसे।

१७९ असटम – अष्टम = आठवा। नृपवाळौ – नृपका। भूपाळ – राजा। वडाळौ – वडा, महान। पाट भगत – राज्य-सिंहासनका भक्त। धरमवंभ – राजा पुजके प्रथम पुत्र धर्मधुरका नाम।

१८० लखमण – लक्ष्मण। अहिनाणै – समान। जेठी – जेष्ठ। अग्रज – वडा भाई। अधिकाई – अधिकता।

१८१ लघु – छोटा। भ्रत – भाई। अभिलाख – अभिलाषा। समै – समय। तेणि – उम। दासा तन – दासके समान।

ऽवे पहराय कनक अरघाणे[1] ।
अरघण अरक गगजळ आणे ।
पतंग अरघि नूप[2] सेव पधारे ।
धाय उठाय खड़ाऊ[3] धारे ॥ १८२
सामगरी[4] अग्र धरे सुचारा ।
साजे[5] स्रब[6] साधन सोवारा ।
हर[7] पूजिया[8] पछै[9] नूप चितहित ।
खडग पात्र जळ पूर धरै खित ॥ १८३
महिपति[10] करै त्रपण[11] तिण[12] मोसरि ।
कुस मुद्रिका वणाय धरै करि ।
इम खट वरस कीध सेवा अति ।
मन सुध ताम रीझियौ[13] महिपति ॥ १८४
की बह[14] सेव राज हव[15] कीजे ।
मनसुध बधव[16] दुरग मागीजे ।
लखि वड भ्रात वचन अभिलाखे ।
आप वळे[17] प्रतउत्तर[18] आखे ॥ १८५

---

१ ख वरघाणे। २ ख ग नृप। ३ ग षडाउ। ४ ग. सांमग्री। ५ ख. ग सार्धे। ६ ख श्रव। ग श्रव। ७ ख ग. हरि। ८ ग पूजीया। ९ ख ग. पछौ। १० ख. ग महपति। ११ ख ग त्रिपण। १२ ख ग तिणि। १३ ख ग रीझीयौ। १४ ख. वहौ। ग वहौ। १५ ग हुव। १६ ख वधव। १७ ग वळे। १८ ख ग प्रतिऊतर।

---

१८२ कनक – सुवर्ण, सोना। अरघांणे – अर्घ देनेको। अरघण – अर्घ-पात्र, या अर्घ। अरक – सूर्य, भानु। पतग – सूर्य, भानु। अरघि – अर्घ देकर। धाय – दौड कर। खडाऊ – काष्टकी पादुका।

१८३ सामगरी – सामान। अग्र – अगाडी। खित – पृथ्वी।

१८४. महिपति – राजा। त्रपण – तर्पण। तिण – उस। मोसरि – अवसर। कुस – दाभ। मुद्रिका – वींटी। खट – षट छ। कीध – की। ताम – उस पर, उससे। रीझियौ – प्रसन्न हुआ।

१८५ वह – वहुत। सेव – सेवा। हव – अव। बधव – भाई। दुरग – दुर्ग, गढ। लखि – समझ कर। वड – वडा। भ्रात – भाई। अभिलाखे – अभिलाषा की। वळे – फिर। प्रतउत्तर – प्रत्युत्तर। आखे – कहा।

करू न दरस अंतर इण[1] काया ।
मो तो चरण सेव गढ माया ।
भूप कहै धनि धनि धनि भाई ।
कळजुग[2] मझ[3] सतजुग अधिकाई ।। १८६
वात इसी तूहीज विचारै ।
धारण इसी अवर कुण धारै ।
बधव[4] इक लखमण[5] तू बीजौ[6] ।
तो सिरखौ[7] वधव नह तीजौ ।। १८७
ठहिया[8] तो पिण[9] राज ठिकाणै ।
जगत मूझ[10] दिल[11] उजळ न जाणै ।
मनि हव वचन लोपसी मोनूं ।
तन[12] प्रतवाय[13] लागसी तोनूं ।। १८८
सुणि इम हुकम धारि लीधौ सिर ।
मांनै[14] अरज कीध तिण मोसरि ।
कुळ सूरज[15] मो क्रिपा करीजे ।
दाखू[16] जिकौ तिकौ पुर दीजे ।। १८९

---

१ ख ग इणि । २ ख. ग कळिजुग । ३ ख ग. मझि । ४ ख वंधव । ५ ग लपमणि । ६ ख वीजो । ७ ख मारीषो । ग. सारिषो । ८ ख ग ठहीया । ९ ख ग विणि । १० ग मुझ । ११ क दल । १२ ख ग. तनि । १३ ख ग प्रतिवाय । १४ ख ग मानै । १५ ख ग सूरिज । १६ ग दापु ।

---

१८६ मो – मेरे । तो – तेरे । सेव – मेवा । धनि धनि – धन्य-धन्य । मझ – मध्य, मे । अधिकाई – विशेपता ।

१८७ धारण – विचार, वुद्धि । अवर – ऊपर, और । वधव – भाई । इक – एक । लखमण – लक्ष्मण । वीजो – दूसरा । तो – तेरे । सिरखो – समान, तुल्य । नह–नही । तीजो – तीसरा ।

१८८ ठहियां – ठहरने पर । तो – तेरे । ठिकाणै – स्थान पर । मूझ – मेरा । मनि – मनमे । हव – अव । लोपसी – लोपेगा, उलघन करेगा । मोनूं – मुझको । प्रतवाय – वह पाप या दोप जो शास्त्रोमे वतलाए हुए कर्त्तव्योके या नित्य-कर्मके न करनेसे होता है, प्रत्यवाय, पाप ।

१८९ सुणि – सुन कर । लीधो – लिया । कीध – की । तिण – उस । मोसरि – अवसर । मो – मुझ पर । क्रिपा – कृपा । दाखू – कहू । जिको – वह । तिको – वह ।

राज कनोज सहित[1] चौरासी ।
किला पिराग अनै धर कासी ।
महपति कहै सूस[2] तो मानू ।
तू मागेस दिऊं[3] गढ तोनू ॥ १९०

ज्यां विण[4] दुवा राजरी आसा ।
ह्वै मन मझि तौ दाखि[5] हुलासा ।
जतू कहै जिण नृप[6] परि जावा ।
अरिधर मारि खगा अपणावा ॥ १९१

चित पुर नवौ वसावण चाहै ।
ओ[7] अभिलाख दाखि[8] ऊमाहै ।
अै त्रहूंवै[9] मै वात उचारी ।
तहि[10] हवि[11] तूझ रीझ इकतारी ॥ १९२

अग्रज हूं तो सेव अभ्यासी ।
पारकेत[12] सिवतणौ उपासी ।
इण कजि मूझ नवौ पुर आपौ ।
सिव सथांन[13] मो राजस[14] थापौ ॥ १९३

---

१ ख. सहत । २ ख ग सौंस । ३ ख ग दीयू । ४ ग विणि । ५ ख दाष । ६ ख ग नृप । ७ ख ग वो । ८ ख ग दाख । ९ ख ग त्रिहुवै । १० ख ग. तवि । ११ ख. ग. हव । १२ ख ग पारकेस । १३ ख ग. सथानि । १४ ख. सजस । १५ ख थायौ ।

---

१९० पिराग – प्रयाग । अनै – और । सूस – शपथ । मागेस – मागेगा । तोनू – तुझको ।

१९१. दुवा – दूसरे । मझि – मध्य, मे । दाखि – कह । हुलासा – इच्छा, उमग । अपणावां – अधिकारमे करें, अधिकारमे करू ।

१९२. नवौ – नवीन, नया । ओ – वह । अभिलाख – अभिलाषा । दाखि – कह कर । ऊमाहै – उत्कंठित हुआ । हवि – अब । रीझ – पुरस्कार ।

१९३ अग्रज – बडा भाई । हू – मै । तो – तेरी । सेव – सेवा । पारकेत – शिवका एक नाम । सिवतणौ – शिवका । उपासी – उपासना करने वाला । कजि – लिये । नवौ – नवीन । आपौ – प्रदान करो । सथान – स्थान ।

बधव अरिज[1] सुणै[2] अतुळीबळ[3] ।
हुकम कीध खग तोलि भळाहळ ।
दळ सभि लिया सिवपुरी[4] दाछटि[5] ।
*आवूगिरी[6] पंवारा आछटि ॥ १६४
ऽवा[7] निहकट करे धर आपा ।
वे सथान[8] तो राजस थापा ।
अजुगति एह[9] मतौ ऊथपियौ[10] ।
जेठीहूंता[11] कणैठि जपियौ[12] ॥ १६५
कियौ निखेध देख औ[13] कूता ।
हुवै वछ पद रस तो हूता* ।
आवू गिरंद वडै अधिकावै ।
इण[14] कारण मो चीत न आवै ॥ १६६
सपत कोस कनवजहू सोहत ।
मदन विनोद वाग मन मोहत ।
असट वील[15] तर अवर अथाहै ।
मूरत पारकेस तिण माहै ॥ १६७

---

१ ख ग अरज । २ ख सुणे । ग. सुणेह । ३ ख अतुळीवळ । ४ ख ग शिवपुरी । ५ ख ग दावटि ।

*ये सात पंक्तिया ख प्रतिमे नही हैं ।

६ ग गिरद । ७ ग वा । ८ ग सथानि । ९ ग ऐह । १० ग ऊथपीयौ । ११ ग जेठीहूत । १२ ग वीजपीयौ । १३ ग इण । १४ ख ग इणि । १५ ख. वील ।

---

१६४ अरिज – प्रार्थना । अतुळीवळ – अतुल्य वलशाली । कीध – किया । भळाहळ – देदिप्यमान, चमकदार । सिवपुरी – सिरोही नगरका एक नाम, वनारस या काशीका एक नाम । आछटि – पछाड कर, पराजित कर ।

१६५ निहकट – निष्कटक । धर – भूमि । आपा – प्रदान करू । तो – तेरा । राजस – राज्य । थापा – स्थापन करू । जेठीहूत – वडे भाईसे । कणैठि – छोटा भाई । जपियौ – कहा ।

१६७ सपत – सप्त, सात । कनवजहू – कनौजमे । मूरत – मूर्ति । पारकेस – महादेवका एक नाम । मोहत – मोहित करता है ।

पसरी मुकति वेल[1] रूपहरी ।
गगा वहै[2] इसी छबि[3] गहरी ।
उठै वसाय दीजिये[4] आतुर ।
पारकेस नामै पारकपुर ॥ १९८

कहियौ[5] बंधव[6] तेम[7] नृप[8] कीधौ ।
दुति निज-नगर नगर रुचि[9] दीधौ ।
वाग निवाण[10] अवास वणाए[11] ।
लार सहस दस[12] गाम[13] लगाए[14] ॥ १९९

सुदन खाग उज्जळ जस सधियौ[15] ।
वासुदेव[16] नृपरौ[17] कुळ वध्रियौ[18] ।
वसि[19] पारक सिव साखि[20] वधाए[21] ।
कमधज पारक तेण[22] कहाए[23] ॥ २००

राजा पुजरा नवमा पुत्ररौ वरणण—

जिण नृप पूज[24] तणै रवि जोपै[25] ।
उग्रप्रभा नवमौ सुत ओपै ।
सो सेवै नृप सुबुध[26] प्रकासी ।
सोमभारथी नाम सन्यासी ॥ २०१

---

१ ग बेलि । २ ख. तहै । ३ ख. ग छवि । ४ ख ग दीजीयै । ५ ख ग कहीयौ । ६ ख वधव । ७ ख ते । ८ ख ग नृप । ९ ख. ग रचि । १० ख निवास । ११ ख. ग वणावै । १२ ख तृण । ग त्रण । १३ ख. ग गाव । १४ ग. लगाऐ । १५ ख ग सधीयौ । १६ ख वासदेव । १७ ख ग नृप । १८ ख ग वधीयौ । १९ ग वसि । २० ख ग. साष । २१ ग वधाऐ । २२ ग तेणि । २३ ग कहाऐ । २४ ख ग पुज । २५ ग. जौपै । २६ ख सुवुधि । ग सुबुधि ।

---

१९९ **कहियौ** – कहा । **वधव** – भाई । **तेम** – वैसे । **कीधौ** – किया । **वाग** – वाग, वाटिका । **निवाण** – जलाशय । **अवास** – भवन । **लार** – पीछे । **सहस** – सहस्त्र ।

२००. **सुदन** – श्रेष्ठ दिन, श्रेष्ठ समय । **जस** – यश । **सधियौ** – सिद्ध हुआ । **वधियौ** – वृद्धि हुई, वढा । **पारक** – पारकरा = राठौडोकी प्रमुख तेरह शाखाओमे से एक ।

२०१ **उग्रप्रभा** – राजा पुजके नवें पुत्रका नाम । **ओपै** – शोभा देता है । **सोमभारथी** – सोमभारती नामक सन्यासी ।

एक[1] अग्र चित सुध आरावे ।
सेवा वरस दवादस सावे ।
सिव[2] रीझे इम वयण कहे सति ।
मझि गंगा करि[3] धार[4] महीपति ॥ २०२

इम सुणि वचन नृपत[5] इकतारे ।
धारा गग वीच कर धारे ।
फोतकार फण जोर फवाए[6] ।
अहि[7] पर धर छत्रधर कर आए[8] ॥ २०३

राजा देखि तरह विकराळे ।
अहि[9] चित भैचकि दीध उछाळे ।
चंद्रप्रभा झळके अहि चंचळ ।
मिळियौ वीच गगजळ निृम्मळ[10] ॥ २०४

सिध हसियौ नृप चख सकुचांणे ।
आतमघात वात चित आणे ।
आतमघात न करि सिध आखे ।
राजा सुणि धीरज चित राखे ॥ २०५

---

१ ख. ग एका । २ ख सिधि । ३ ख. ग कर । ४ ख घर । ग. धारि । ५ ख. ग नृपत । ६ ख. फवाए । ग फव्राऐ । ७ ख ग. अहै । ८ ग आऐ । ९ ग अह । १० ख ग. नृमल ।

---

२०२ आरावै – आराधना की । दवादस – द्वादश = बारह । रीझे – प्रसन्न हो कर । वयण – वचन । सति – सत्य । मझि – मध्य । महीपति–राजा ।

२०३ इम – इस प्रकार । सुणि – सुन कर । नृपत – नृपति, राजा । इकतारे – एक समय । गग – गगा । वीच – मध्य, मे । कर – हाथ । फोतकार – सापके मुहसे निकलने वाली फूंक, फुफकार । अहि – सर्प ।

२०४ देखि – देख कर । तरह – प्रकार । विकराळे – भयकर । भैचकि – भयभीत हो कर । दीध उछाळे – फेंक दिया । चंद्रप्रभा – चादकी रोशनी । झळके – चमका, दमका । निृम्मळ – निर्मल, स्वच्छ ।

२०५ चख – नेत्र । सकुचाणे – सकुचित । आतमघात – आत्महत्या । वात – विचार । सिध – सन्यासी । आखे – कहा । धीरज – धैर्य । राखे – रखा ।

धारण तूझ धड़ै नृप[1] धूकै ।
चक्रिन भ्रम छळहूत[2] अचूकै[3] ।
तजि[4] अपसोच राख[5] दिल ताजा ।
रजवट धरम अडिग तू राजा ।। २०६
इम सिध वयण सुणे उदमदियौ[6] ।
वदन[7] करे नरेसुर[8] वदियौ[9] ।
औ हव वळे तक्षक हुय आवै ।
पांणहूत तो जांण न पावै* ।। २०७
सिध दाखियौ[10] झळाहळ सूरत ।
पौरस नृपत[11] तूझ भरपूरत
राजा ज तू अवस ठहरावै ।
अवै[12] समे विण[13] हाथ[14] न आवै ।। २०८
किसौ समै हव वेग कहीजे ।
दाखै नृप[15] सिध उत्तर दीजे
अकळ पथ मग दीह अढारा ।
ऽवो लहलण[16] करि अलप अहारा[17] ।। २०९

---

१ ख ग. नृप। २ ख ग छलहूंन। ३ ग हचूकै। ४ ख तपि। ५ ग राषि। ६ ख ग उदमादीयौ। ७ ग वंदण। ८ ख. सुष। ९ ख वदीयो। ग वदीयौ।

*ख. प्रतिमे यह पक्ति इस प्रकार है—

किसोहु सेती जाए न पावै ।

१० ख ग दाखीयो। ११ ख ग. नृपत। १२ ख अवै। १३ ख. विणि। ग विणि। १४ ग हाथि। १५ ख ग नृप। १६ ग. वोणहलण। १७ ग. आहारा।

---

२०६ चक्रिन – सर्प, साप। अपसोच – चिंता। रजवट – क्षत्रियत्व।

२०७ इम – इस प्रकार। सिध – सन्यासी, महात्मा। वयण – वचन। उदमदियौ – हर्षित हुआ, उमगयुक्त हुआ। वंदन – नमस्कार। वदियौ – कहा। औ – यह। वळे – फिर। तक्षक – सर्प। पाणहूत – हाथसे।

२०८. दाखियौ – कहा। झळाहळ – देदीप्यमान, चमकदार। पौरस – शक्ति। अवस – अवश्य। ठहरावै – ठहरा देवें।

२०९. किसौ – कौनसा। समै – समय। हव – अब। वेग – शीघ्र। दाखै – कहता है। सिध – महात्मा, सन्यासी। अकळ पंथ – अगम्य मार्ग, दुर्गम मार्ग। मग – मार्ग। दीह – दिन।

जोगणि हिंगळाज इम जोसी ।
हली[1] चंद्रकूप समै वळि होमी ।
कहियौ[2] जिम जात्रा नृप कीधी ।
दिठ चंद्रकूपतणै मझि दीधी ॥ २१०

झाळाधोम तेज झळहळियौ ।
अगन[3] सरूप पनंग ऊछळियौ[4] ।
जझके नहो भयाणक जाणे ।
पनग जिकौ ग्रहियौ[5] नृप पांणे[6] ॥ २११

तिण ग्रहता अहिरौ वप[7] तजियौ[8] ।
छत्रपति हाथि[9] खडग हुय[10] छजियौ[11] ।
रूप खडग अदभुत दुति राजै ।
तडित सिळावत्र धोम[12] तराजै ॥ २१२

ईस कडा सुद्रसण[13] चक्र ओपम[14] ।
अरध चंद्र आकार अनोपम ।
करण प्रताप विजै जुध कांमौ ।
नांम चंदेल खडग पर नांमौ ॥ २१३

---

१ ग हलि । २ ख. ग कहीयो । ३ ख ग अगनि । ४ ख ग. उछळीयो ५ ख. ग ग्रहीयौ । ६ ख जाणे । ७ ख. वत । ८ ख ग तजीयो । ९ ख हाथि । १० ख ग होई । ११ ख. ग छजीयो । १२ ख. जोम । १३ ग सूद्रसण । १४ ख. ग वोपम ।

---

२१० जोगणि – देवी, दुर्गा । जोसी – दर्शन करेगा । हली – चल कर । कहियौ – कहा । जात्रा – यात्रा । कीधी – की । दिठ – दृष्टि, नजर । मझि – मे, मध्य । दीधी – दी ।

२११ झाळाधोम – अग्निकी ज्वाला, या लपट । झळहळियौ – देदीप्यमान हुआ, चमका । अगन – अग्नि । सरूप – समान, तुल्य । पनग – सर्प । जझके नहीं भयाणक जाणे – भयानक समझ कर चौंकना मत । जिकौ – वह । ग्रहियौ – पकडा । पांणे – हाथमे ।

२१२ तिण – उस । ग्रहता – पकडने पर । अहिरौ – सर्पका । वप – शरीर । तजियौ – छोड दिया । छत्रपति – राजा । खडग – तलवार । छजियौ – शोभित हुआ । दुति – द्युति, कांति । राजै – शोभायमान होती है । तडित – बिजली । सिळावत्र – बिजलीकी दमक, दमकके समान । धोम – अग्नि, आग । तराजै – समान ।

२१३ ईस – महादेव । कडा – वलय । सुद्रसण – सुदर्शन चक्र । ओपम – समान । अनोपम – अद्‌भुत । नामौ – नाम ।

जिण वांचे[1] उच्छब[2] नृप[3] जांणे ।
आरभ समर करण धख आणे ।
मोसर उण चंद्रकूप मभारे ।
आकसमात[4] बाणि[5] उच्चारे[6] ॥ २१४

अदभुत गति हिंगळाज[7] अवाजा ।
रटियौ इम सुणियौ[8] जिम राजा ।
पर त्रिय गमण म्रिखा[9] परकासी ।
ज-दिन एह[10] खग ऊप्रमि जासी ॥ २१५

लडि नृप[11] दखिणतणी धर लीजै ।
करण प्रतापहूत जुध कीजै ।
वाणी[12] सकति एम सुणि वाचा ।
सुपह धरे दुहुवै[13] पण साचा ॥ २१६

आए[14] तठै तुरग ऊकढिया[15] ।
चाढण खळा धकै जुध चढिया[16] ।
जळनिध[17] तीर आविया[18] ज्यारा[19] ।
करण प्रताप कहै हलकारां[20] ॥ २१७

---

१ ग. वांचे । २ ख. उद्धव । ग उत्छव । ३ ख ग नृप । ४ ख ग आकसमात्र । ५ ख वाणि । ६ ख. उचारे । ग. ऊचारे । ७ ख. ग. हिंगुळाज । ८ ख ग. सुणीयौ । ९ ख. ग मृषा । १० ग ऐह । ११ ख ग नृप । १२ ग. वाणी । १३ ख ग डुहूवै । १४ ग आऐ । १५ ख ग. ऊकढीया । १६ ख ग. चढ़ीया । १७ ग जळनिधि । १८ ख ग. आवीया । १९ ख ग जारा । २० ख हरकारा । ग हरललकारां ।

---

२१४ जिण – जिस । वाचै – पढता है । उच्छब – उत्सव, हर्ष । समर – युद्ध । धख – इच्छा । मोसर – अवसर । मभारे – मध्यमे । आकसमात – अकस्मात, अचानक ।

२१५ अवाजा – आवाज, ध्वनि । रटियौ – कहा । सुणियौ – सुना । जिम – जैसे । पर त्रिय-गमण – पराई स्त्रीसे सभोग । म्रिखा – असत्य, मृषा । परकासी – कहेगा । ज-दिन – जिस दिन । एह – यह । खग – तलवार । ऊप्रमि – ऊपर, आकाशमे । जासी – जायेगा ।

२१६ लडि – युद्ध कर । दखिणतणी – दक्षिण की । धर – भूमि । एम – इस प्रकार । सुणि – सुन कर । सुपह – राजा, नृप । दुहुवै – दोनो । पण – प्रण । साचा – सत्य ।

२१७. तठै – वहा पर । तुरग – घोडा । ऊकढिया – निकले हुए (?) । जळनिध – समुद्र । आवियौ – आया । ज्यारा – जब ।

करण प्रताप सुणे दळ[1] कीधा ।
लडवा[2] कटक सांमुहा लीधा ।
असी सहंस विकटां असवारां ।
वाग उपाडि[3] लड़े जिण वारा ॥ २१८

आतस-बांण[4] दगे नह इतरै ।
जड़िया सेल पमारां जितरै ।
पाच सहंस कमधज दळ पूरा ।
सकति प्रताप आहुड़ै सूरा ॥ २१९

वीजळ सेल गुरज घण बाजै[5] ।
गाज त्रबाळ[6] सघण घण गाजै ।
अरण वभक कोपर धड उरिया[7] ।
छकिया[8] घाव कटारा छुरियां[9] ॥ २२०

घड रत वहै घाव[10] कर[11] घूमै ।
घायल पड़े हौफरै[12] घूमै ।
हद ओपमा[13] तेण[14] रिख हासां[15] ।
पवन भुलै किर[16] फुलै[17] पळासा[18] ॥ २२१

---

१ ग दळि । २ ख ग लडिवा । ३ ग उपाड । ४ आतस वाण । ५ ख वाजै । ६ ख त्रवाळ । ७ ख ग उरीयां । ८ ख. ग छकीया । ९ ख ग. छुरीयां । १० ग. पाव । ११ ख तर । १२ ख होकरै । १३ ख. वोषमा । ग. वोपमा । १४ ख. ग. तेणि । १५ ख ग हास । १६ ख ग किरि । १७ ग फूलै । १८ ख ग पलासं ।

---

२१८ दळ – सेना, फौज । कीधा – किये । लड़वा – युद्ध करनेको । कटक – सेना । सामुहा – सम्मुख, सामने । लीधा – लिया । सहस – सहस्त्र । विकट – जबरदस्त । जिण वारा – जिस समय ।

२१९ आतस-वाण – अग्नि बाण । दगे – छूटे । जड़िया – प्रहार किये । सेल – भाला । जितरै – जब तक । आहुडै – भिडे, युद्ध किया । सूरा – वीर ।

२२० वीजळ – तलवार । सेल – भाला । गुरज – शस्त्र विशेष । घण – बहुत, मेघ । गाज – गर्जन । त्रवाळ – नक्कारा । सघण – घना, वर्षा । अरण – युद्ध । वभक – भडकना । कोपर – कपाल, कोहनी ।

२२१ घड – घट = शरीर । रत – रक्त, खून । हौफरै – तेज या जोशपूर्ण आवाज करते हैं । ओपमा – उपमा । तेण – उसमें । रिख – नारद ऋषि । किर – मानो, जैसे । पळासां – ढाकके वृक्षो ।

सहंस पड़े कमधज भड़ सारां ।
पड़े इकीस सहंस परमारां ।
चडी वर पाए[1] दळ चढ़िया[2] ।
वीस गुणा दुसमण[3] तिण[4] वढिया ॥ २२२
लटिया[5] अवर धरा नृप[6] लीधी ।
करण प्रताप मार[7] जय कीधी ।
पोह[8] सांमद्र खड़ग पाखाळे ।
अरक वंस विरदा उजवाळे[9] ॥ २२३
उण खग नाम खेत जुध आवर ।
दुय पुर रचै चद्री[10] चद्रावर[11] ।
सामंद तट करि राज समाजा ।
रिधू तपे तेरह व्रख[12] राजा ॥ २२४
वर चदेल खग वंस[13] वधाया[14] ।
कमधज तेणि चदेल कहाया ।

राजा पुजरा दसमा पुत्र सुबुधिरौ वरणण—

पुत्र दसमौ चित सुबुधि प्रकासी ।
भूप मुकट मिण[15] खळां[16] अमासी[17] ॥ २२५

---

१ ग पाऐ। २ ख ग चढ़ीया। ३ ख दुसण। ४ ख ग. तिणि। ५ ख ग लटीया। ६ ख ग. नृप। ७ ख. ग मारि। ८ ख ग पोहो। ९ ख ग अजुवाले। १० ख. ग चंदी। ११ ख.ग. चदावर। १२ ख ग व्रषि। १३ ग. वस। १४ ग बधाया। १५ ख. ग. मणि। १६ ख. ग पेल। १७ ख. अभासी। ग. अभ्यासी।

---

२२२. सहस – सहस्त्र, हजार। पड़े – वीर गति प्राप्त हुए। कमधज – राठौड। भड – योद्धा। सारा – सब, तलवारोंसे। तिण – उस। वढ़िया – वीर गति प्राप्त हुए, कट मरे।

२२३ लीधी – ले ली। जय – विजय। कीधी – की। पोह – राजा। सामद्र – समुद्र। खड़ग – तलवार। पाखाळे – प्रक्षालन किया। अरक वस – सूर्यवश। विरदां – विरुदो, यश, कीर्ति। उजवाळे – उज्ज्वल की।

२२४ उण – उस। खग – तलवार। खेत जुध – युद्धस्थल, युद्ध-भूमि। दुय – दो। सामंद – समुद्र। रिधू – अटल, निश्चय। तपे – ऐश्वर्यका उपभोग किया, राज्य किया। व्रख – वर्ष, साल।

२२५ चदेल – राठौडोके प्रमुख तेरह वशोमे से एक वश। सुबुधि – राजा पुजके दशवें पुत्रका नाम। खळां – शत्रुओ। अमासी – असह्य।

असि चढि विस[1] वनि[2] रमै अकेलौ ।
चौकी दास खवास न चेलौ ।
जळ वन जंतु रमंता जोवै ।
हरख उछाह ताम[3] चित होवै ॥ २२६
सावर[4] सूर वाघ दरसाणा ।
वहसै[5] तिया सघारे[6] वांणा ।
प्रेतालुघ[7] माया झळ पेखे ।
लखि आतसवाजी सम लेखे ॥ २२७
विण[8] सिर धड़ ऊठै विकराळा[9] ।
चिरत गिणे बाळक जिम[10] चाळा ।
रुख इम[11] केक[12] दीह नृप[13] रमतां ।
भैचकि[14] चित नभि देवनि[15] भमता[16] ॥ २२८
इम इक निसा अमावस आधी ।
लाल रुधिर सरिता[17] नृप[18] लाधी ।
उभै तटा झळ रीठ अरावै[19] ।
फाटा सीस कमळ बहु[20] फावै[21] ॥ २२९

---

१ ख ग. निसि । २ ख वन । ग. वन । ३ ख नाम । ४ ख. सावर । ५ ख ग वहसे । ६ ग सिघारैं । ७ ग प्रेतालुध । ८ ख ग. विणि । ९ ग. विकराळा । १० ख. ग सम । ११ ख ग इणि । १२ ख. ग केइक । १३ ख ग. नृप । १४ ग. भैचक । १५ ग देव । १६ ख. निरभता । १७ ख ग सलिता । १८ ख ग नृप । १९ ख अरावैं । ग आरावै । २० ख वहो । ग. वहो । २१ ख फावै ।

---

२२६ असि – अश्व, घोडा । विस – विषम । वनि – वनमे । चौकी – रक्षा । चेलौ – सेवक । रमता – खेलते हुए । जोवै – देखता है । हरख – हर्ष । उछाह – उत्साह । ताम – उस ।

२२७ सावर – एक प्रकारका मृग, साभर । सूर – वराह, सूअर । दरसाणा – देखे गये । वहसै – (?) । तिया – उनको । सघारे – सहार किये । प्रेतालुघ – प्रेतोयुक्त । माया झळ – मायाकी अग्नि । पेखे – देख कर । लखि – देख कर । सम – बराबर, समान । लेखे – समझा ।

२२८ विण – विना, रहित । विकराळा – भयंकर, भयावह । चिरत – चरित्र । गिणे – समझे । चाळा – खेल, कौतूहल । केक – कई । दीह – दिन । भैचकि – भयभीत होकर । नभि – आकाशमे ।

२२९. इक – एक । निसा – रात्रि । रुधिर – खून, रक्त । सरिता – नदी । लाधी – मिली । झळ – अग्नि । रीठ – प्रहार, युद्ध । अरावै – तोपें । बहु – बहुत ।

फळ बहु[1] सेल मर्छा दुति फाबी[2] ।
मभि जळ ग्रीभ[3] तिरै मुरगाबी[4] ।
चच चच जिण[5] अगनि चमकै ।
दामणि जाणि अनेक दमकै ।। २३०
लख लख नाव[6] महिख[7] धड लाधै ।
सीकोतर तिण पर[8] नृत[9] साधै ।
कटिया[10] सीस अनेक जियाकरि[11] ।
निहसै हसै भाळ मुख[12] नीसरि ।। २३१
सरप वाघ[13] गज रीछ सरीखा ।
तुड कुदाळ मगर सम तीखा ।
छिलती नदि इसड़ा वौह[14] छाजै ।
राकस म्रतक[15] सतेसा राजै ।। २३२
डायण[16] चढी जिया परि[17] डकरै ।
वाणी[18] विकट[19] भयंकर वकरै ।

---

१ ख वहौ। ग वहो। २ ख ग फावी। ३ ख ग ग्रीध। ४ ख ग मुरगावी। ५ ख. ग जिणि। ६ ख. ताव। ७ ख ग महुष। ८ ग पूर। ९ ख ग नृत। १० ख ग. कटीया। ११ ख जीया। १२ ख मुषि। १३ ग वाघ। १४ ख वहौं। ग वहो। १५ ख ग मृतक। १६ ख डायल। १७ ख ग पर। १८ ग वाणी। १९ ग विकट।

---

२३०. फळ – शस्त्रकी नोक। सेल – भाला। मर्छा – मत्स्यो, मछलिया। मभि – मध्य, मे। ग्रीभ – गिद्ध। मुरगावी – मुर्गेकी जातिका एक पक्षी जो पानीमे तैरता है और मछलियो को पकड कर खाता है। यह पानीके भीतर वहुत समय तक गोता मार कर रह सकता है, जलमुर्गा। चच – चचु, चोच। जिण – जिस। दामणि – विजली, दामिनी। जाणि – मानो, जैसे। दमकै – चमकती है।

२३१ महिख – महिष, भैसा। सीकोतर – शीकोतरी। तिण – उस। नृत साधै – नृत्य करती है। जियाकरि – जिनसे। निहसै – सहार करते हैं। भाळ – आगकी लपट।

२३२. वाघ – व्याघ्र। गज – हाथी। सरीखा – समान। तुड – मुख। कुदाळ – एक प्रकारका शस्त्र या कृषि उपकरण। छिलती नदि – उमडती हुई नदीमे। इसडा – ऐसे। वौह – वहुत। छाजै – शोभा देते हैं। राकस – राक्षस। म्रतक – मरा हुआ।

२३३. डायण – डायनी, डाकिनी। जिया – जिन। डकरै – जोशपूर्ण या भयावनी आवाज करता या करती है। वाणी – आवाज। विकट – जवरदस्त। वकरै – क्रोध करता या करती है।

रोम[1] जटा ऊभा विकराळा ।
काळा रोम रोम अहि काळा ॥ २३७
मिणधर फण कीधा चित मोहै ।
सहस किरण[2] बारह घण सोहै ।
सुजि पौचिया[3] भुजग दुय[4] सधिया[5] ।
बाजूबंध[6] भुजग दुय बधिया[7] ॥ २३८
पाच[8] माळ अहिरी[9] गळ पहरी[10] ।
अविसवि दहू[11] जनेऊ अहिरी ।
कट[12] मेखळ अहि धरै सकाजै ।
रिधू पाव[13] सांकळ[14] अहि राजै ॥ २३९
अहि गज वाघ वदन उणिहारै ।
जोगणि[15] असट छपन जयकारै ।
गज अबराळ[16] हगा[17] अणगिणिया ।
वाघबरा[18] चीर सिर वणिया[19] ॥ २४०
रीछ खाल अगिया[20] विकराळी ।
कसि[21] जिम[22] कसै भुजगम[23] काळी ।

---

१ ग. रौम । ४ ग किरणि । ३ ख ग पौंचीया । ४ ख ग दोय । ५ ख ग. सधीया । ६ ख वाजूवध । ७ ख वधीया । ग. वधीया । ८ ग पच । ९ ख अहरी । १० ख. ग पहिरी । ११ ख ग । १२ ख ग कटि । १३ ख ग पाय । १४ ख ग सकळ । १५ ग. जोगण । १६ ख अवराल । १७ हरप । १८ ख. वाघंवरां । १९ ख ग वणीया । २० ग अगीया । २१ ग. कस । २२ ख ग जिणि । २३ ख ग भुजगणि ।

---

२३७ रोम – वाल । ऊभा – खडा । विकराळा – भयकर । अहि – सर्प ।

२३८. मिणधर – मणिधारी सर्प । फण – फन । कीधा – किये हुए । घण – मेघ । सुजि पौंचिया – कलाईका आभूषण विशेष । भुजग – सर्प । दुय – दो ।

२३९ अहिरी – सर्पकी । गळ – कंठ । कट – कटि, कमर । मेखळ – करधनी । अहि – सर्प । रिधू – निश्चय, अटल । राजै – शोभा देता है ।

२४० असट छपन – चौसठ । जयकारै – जय-जयकी ध्वनि । अणगिणिया – अपार, असीम । वाघवरा – व्याघ्रचर्म । चीर – ओढनेका वस्त्र ।

२४१ अंगिया – कचुक । विकराळी – भयकर । कसि – कचुक कसनेका फीता । भुजगम – सर्प ।

आभूखण[1] वज्रतणा अथाहै ।
माथातणा हार गळिमाहै ॥ २४१
ठहिया[2] भूखण सरव[3] ठिकाणै ।
अहि काकळि पुहपा[4] अहिनाणै ।
चोळ रुधर[5] मद पियै[6] सचाळी ।
विकट करै नाटक[7] विकराळी ॥ २४२
पाय[8] गयद तूटा घण पावै ।
जेणि[9] करे मरदग[10] वजावै ।
मुरळी नळी सख धुनि माथा ।
हाथी कान ताळ वजि[11] हाथा ॥ २४३
असि पग थडा[12] सहित उठावै ।
लघु असता तोरणा[13] लगावै ।
विकट अतकरि तत वजाणै[14] ।
इसडा कडक[15] तबूरा[16] आणै ॥ २४४

---

१ ग आभूषणि । २ ख ठहिआ । ग. ठहीया । ३ ख नरव । ४ ख ग पहौपा । ५ ख ग रुधिर । ६ ख ग पीवै । ७ ख ग नाटिक । ८ ख ग पाव । ९ ख. ग जिणरी । १० ख ग. मृदंग । ११ ख ग. वज । १२ ख ग पीडा । १३ ख. ग मोरण । १४ ग वजाणै । १५ ख ग केइक । १६ ख. तबूरा ।

---

२४१ आभूखण – आभूषण, गहना । वज्रतणा – वज्रके, हीरोके, हीरो जटित । अथाहै – अपार । माथातणा – मस्तकके । गळि – कठ, गला ।

२४२. ठहिया – रहे । भूखण – आभूषण । ठिकाणै – स्थान पर । अहि – सर्प । कांकळि – अस्थि-पजर । पुहपां – पुष्पो, फूलो । अहिनांणै – समान, बरावर, चिन्ह । चोळ – लाल । रुधर – रक्त, खून । मद – शराव । सचाळी – चचल (देवि) । विकट – भयंकर । विकराळी – विकराल रूप धारण करने वाली ।

२४३. पाय – पैर । गयद – हाथी । जेणि – जिनको । मरदग – मृदंग । मुरळी – वशी । नळी – पैरमे घुटनेके नीचेकी सीधी हड्डी । माथा – मस्तको । ताळ – वाद्य विशेष ।

२४४ असि – अश्व, घोडा । थडां – शरीर, धड । असता – अस्थियें । अतकरि – आतकी । तंत – ततु । वजाणै – वजाते हैं । इसडा – ऐसे । कइक – कई । तबूरा – वाद्य विशेष ।

तूटा गज सिर करै त्रबाका[1] ।
दातूसळा वजावै डाका ।
गत[2] नृत[3] करि सिधू सुर गावै ।
वयड सूडची भेर[4] वजावै ॥ २४५

भाव वताय[5] सामुही[6] भाळै ।
अगनि झाळ विकराळ उछाळै ।
वीर रीझ[7] इण विध[8] नृप[9] वामा ।
अहि भूखण बगसत[10] इनामां ॥ २४६

चवसठ मझि वावन[11] चिरताळा ।
मदछकिया[12] रमै मतवाळा[13] ।
धड वह[14] जठै ऊठि नृत धारै ।
ऊघट[15] सगीत सीस उचारै[16] ॥ २४७

राजा देखि कतूहळ रीधौ ।
दुगम जांणि चित सोच न दीधौ ।

---

१ ख त्रवाका । २ ख. ग गति । ३ ख ग नूत । ४ ख ग. भेरि । ५ ग. वताय । ६ ग सामुहां । ७ ख. ग. रीझि । ८ ख ग विधि । ९ ख ग नूत । १० ख ग. वगसत । ११ ख वावन । १२ ख ग छाकीया । १३ ख. ग. मतिवाला । १४ ख वहौ । ग वहौ । १५ ख ग उघट । १६ ख ग ऊचारै ।

---

२४५ त्रबाका – वाद्य विशेष, नगाडा । दातूसळां – हाथीके बाहर निकले हुए दात । डाका – नगाडा वजानेका डका । गत – नृत्यमे शरीरका सचालन विशेष और मुद्रा । नृत – नृत्य । सिधू – वीर रसका राग विशेष । सुर – स्वर । वयड – हाथी । भेर – भेरी नामक वाद्य विशेष ।

२४६ सामुही – सम्मुख । भाळै – देखते हैं । अगनि झाळ – आगकी लपट । विकराळ – भयकर, भयावह । वीर – भैरव । रीझ – प्रसन्न हो कर । बगसंत – प्रदान करते हैं ।

२४७ चवसठ – चौसठ योगिनियाँ । मझि – मध्य, मे । बावन – भैरव जिनकी सख्या राजस्थानीमे वावन ही मानी जाती है, यद्यपि सस्कृत साहित्यमे इनकी सख्या चौसठ मानी गई है । चिरताळा – चरित्र करने वाला । मदछकिया – मदोन्मत्त । रमै – खेलते है । मतवाळा – मस्त । वह – बहुत । जठै – जहा पर । नृत – नृत्य । ऊघट – ताल देना, सम पर आना ।

२४८. देखि – देख कर । कतूहळ – कौतुहल । रीधौ – प्रसन्न हुआ, खुश हुआ । दुगम – दुर्गम, भयकर । जाणि – जान कर । दीधौ – दिया ।

धारण वीर ताम इम धरियौ ।
देखे मूझ भूप नह डरियौ ॥ २४८

कीधी विगुण[1] भयाणक काया ।
मायाहूत चौगुणी[2] माया ।
पवन अगन[3] वाजै[4] परवाई ।
अगनि सरूप घटा चढि आई ॥ २४९

सघण ताम वूठौ समराथा ।
मगळ प्रजळ अमगळ माथां ।
वब[5] घोर पाहड़ बरड़ूकै[6] ।
कोडि-कोड़ि वीजळ करड़ूकै[7] ॥ २५०

धर अबर[8] गिर तरा धिकावै[9] ।
अगनि विना अनि निजरि[10] न आवै ।
झाळ[11] देखि दहसत चित झालै ।
हैवर धर पड़ियौ[12] हस हालै ॥ २५१

तौ पण[13] नूप[14] नह डरै हेक तिल ।
देखै हसै उछाह करै दिल ।

---

१ ख ग विगुण । २ ख चौगणी । ३ ग अगनि । ४ ग वाजै । ५ ख. वंब । ६ ख. वरडूकै । ग वरडुकं । ७ ग. करडुकं । ८ ख अवर । ९ ख ग धिषावै । १० ख ग नजरि । ११ ख झालि । १२ ख. ग. पडीयौ । १३ ख ग पणि । १४ ख ग नृप ।

---

२४८ देखे – देख कर । मूझ – मुझको । नह – नहीं । डरियौ – डरा, भयभीत हुआ ।

२४९. कीधी – की । विगुण – द्विगुणित । भयाणक – भयानक, भयावह । काया – शरीर । परवाई – पूर्व दिशाका ।

२५० सघण – घना । वूठौ – बरसा । समराथां – समर्थ । मगळ – अग्नि । प्रजळ – प्रज्वलित हो कर । वंब – ध्वनि, आवाज । घोर – भयकर । बरड़ूकै – बडकते हैं । कोड़ि-कोड़ि – करोडो । वीजळ – बिजली, तलवार । करड़ूकै – कडकती है ।

२५१ धर – पृथ्वी । अबर – आकाश । गिर – पर्वत । तरां – वृक्षो । अनि – अन्य । झाळ – आगकी लपट । देखि – देख कर । दहसत – भय, डर । झालै – धारण करता है । हैंवर – घोडा । पड़ियौ – गिरा । हस – प्राण ।

२५२ तौ पण – तो भी ।

ऽवौ[1] पल गिर नैडौ नृप आंणै ।
जपियौ[2] वीर वीरपण जांणै ॥ २५२
थट औ सरब[3] तूझ कजि थटियौ[4] ।
राजा आव वीर इम रटियौ[5] ।
गह वळ[6] पूर कठीरतणी गति ।
पळ गिर चढे आवियौ[7] भूपति[8] ॥ २५३
रटियौ[9] वंदण वीर तदि रीधौ ।
देहित अरध सिंघासण दीधौ ।
वाह वाह नृप[10] वीर उचारे ।
नर तो सम मै नको निहारे ॥ २५४
विच[11] इम[12] छळ माया वरताणै ।
इद्र कुमेर वरुण सक आणै ।
सो ते गिणी नहि बळ[13] साजा ।
रीधौ हू कारण[14] तिण[15] राजा ॥ २५५
दीधौ नाम वीर वरदाई ।
समर हुसी तौ[16] वीर सहाई ।

---

१ ख. ग वोपल। २ ख. ग जपीयौ। ३ ख सरव। ४ ख ग थटीयौ। ५ ख ग रटीयौ। ६ ख. वल। ७ ख ग आवीयौ। ८ ख ग. छत्रपति। ९ ख ग रटीयौ। १० ख ग नृप। ११ ख. ग. विधि। १२ ख. इण। ग इणि। १३ ख. वल। १४ ख ग कारणि। १५ ख ग. तिणि। १६ ख. सो।

---

२५२ नैड़ौ – निकट। जपियौ – कहा। वीरपण – शौर्य।

२४३ थट – वैभव, टाठ, समूह। औ – यह। तूझ – तेरे। कजि – लिये। थटियौ – एकत्रित हुआ। इम – इस प्रकार। रटियौ – कहा। कठीरतणी – सिंहकी। आवियौ – आया।

२५४ रटियौ – कहा। वदण – नमस्कार। तदि – तव। रीधौ – प्रसन्न हुआ। सिंघासण – सिंहासन। दीधौ – दिया। वाह वाह – शाबास, धन्य-धन्य। तो – तेरे। सम – समान। निहारे – देखा।

२५५ छळ – कपट। वरताणै – होने पर। संक – भय। हूं – मै। तिण – उस।

२५६ वरदाई – वरदान देने वाला। समर – युद्ध। हुसी – होगे। वीर – भैंरवदेव। सहाई – सहायक।

इम वर दे माया ऊडाई[1] ।
देस[2] भूमि भूपत[3] दरसाई ।। २५६
पोह[4] निज रंगमहल पधराए[5] ।
ऊप्रमि वीर सथांनक[6] आए ।
वीर नृपत[7] दत खाग वदीतौ[8] ।
जुडियौ[9] जिता तिता जुध जीतौ ।। २५७
भाण तुंवर हणि फौज भंजाई ।
परवत[10] राजधरा अपणाई ।
पोह[11] इम वीर[12] विजै[13] वर पाया ।
कमध वीर तिण हूत कहाया ।। २५८

राजा पुजरा ग्यारमा पुत्र भरथरौ वरणण—

सुतण पूज दत खाग सनेहौ ।
एकादसम पुत्र रवि एहौ[14] ।
भरथ नाम रवि कुळ व्रद[15] भारे ।
धर पूरव[16] पट्टण[17] छत्र धारे ।। २५९
इकसठ[18] वरस अवसता आई ।
वैद[19] तांम इम जुगति वताई ।

---

१ ख उडाई । २ ग. देसि । ३ ख ग. भूपति । ४ ख. ग. पौहौ । ५ ख पवराये । ग पधराऐ । ६ ख ग मथानिक । ७ ख. ग. नृपत । ८ ग. वदीतौं । ९ ख ग जुडीयौ । १० ख. परवत । ११ ख. ग. पहौ । १२ ग वीर । १३ ग विजै । १४ ग ऐहौ । १५ ग. व्रद । १६ ख. पूरव । १७ ख पटण । १८ ख ग इकसठि । १९ ख. वदई । ग. वदई ।

---

२५६ भूपत – राजा । दरसाई – दिखलाई ।
२५७. पोह – राजा । रगमहळ – रति-क्रीडा-भवन । पधराए – गये । ऊप्रमि – ऊपरसे । सथानक – स्थान । दत – दान । वदीतौं – प्रसिद्ध । जुड़ियौ – भिडा, युद्ध किया ।
२५८. हणि – संहार कर । अपणाई – अपने अधिकारमे की । वीर – राठौड़ोंके तेरह प्रमुख वशोंमे से एक वंश ।
२५९. सुतण – सुत, पुत्र । दत – दान । खाग – तलवार । सनेहौ – स्नेह करने वाला । रवि – सूर्य । एहौ – ऐसा । व्रद – विरुद । भारे – समूह ।
२६०. अवसता – आयु, अवस्था । वैद – वैद्य । ताम – उसको । इम – एक । जुगत–युक्ति ।

तत गुर वचन प्रताप सूज[1] तप ।
वरस पचीस समान करू वप ॥ २६०
सुणि इम उच्छब[2] करै सकाजा ।
रटै हुकम स्रीमुख[3] इम राजा ।
अरज तूझ नह[4] कहे[5] उथापू ।
आधौ राज तूझनूं आपू ॥ २६१
विध[6] स्रब[7] करि जिम ग्रथ बतावै ।
ओखद[8] ज तू कहै सुजि आवै ।
सुणे राज दत हुकम सनेही ।
अरज वयद[9] कीधी फिर[10] एही[11] ॥ २६३
करण फतै जुध दाळिद[12] कापण ।
अचिरज किसौ राज अधि[13] आपण ।
वस तूझ रघुवर व्रद[14] वका[15] ।
लियां[16] हूत पहली दिय[17] लका ॥ २६३
जग कामना पूर जग जाहर ।
धरमवत[18] तो बँधव[19] धुरधर ।

---

१ ख ग. तूझ । २ ख. उछव । ग उत्छव । ३ ख ग. श्रीमुपि । ४ ख ग. नद । ५ ख ग कदे । ६ ख ग विधि । ७ ख ग श्रव । ८ ख ग वौषद । ९ ग बयद । १० ग फिरि । ११ ग ऐही । १२ ग दाळिद्र । १३ ख अद । ग अध । १४ ग. व्रद । १५ ग बका । १६ ख. लीया । ग लयां । १७ ख. ग. दीय । १८ ग. धरम-बंभ । १९ ख वध ।

---

२६० वप – वपु, शरीर ।

२६१ उच्छव – उत्सव । तूझ – तेरी । उथापू – उल्लघन करू । तूझनू – तुझको । आपूं – दे दूं ।

२६२ ओखद – औषधि । सुजि – वह । वयद – वैद्य । कीधी – की । एही – ऐसी ।

२६३ दाळिद – दारिद्रय । कापण – नाश करनेको, मिटानेको । अचिरज – आश्चर्य । अधि – आधा । आपण – देनेको । तूझ – तेरा । व्रद – विरुद । वंका – वाकुरे ।

२६४. कामना – इच्छा । तो – तेरा । बंधव – भाई ।

मुणै[1] सुजस इण वार लोक मुर[2] ।
सुरग वाणि कहियौ[3] दांनेसुर ।। २६४
अवर नकौ पूजै नृप[4] ओड़ै[5] ।
जेठी भूप कणेठी जोड़ै ।
मागू सुज दीजै चवि स्रीमुख ।
सरब राज सम तूळ मूझ सुख ।। २६५
कथ मुणि नृप[6] दाखियौ[7] क्रिपा[8] करि ।
हवि[9] तू माग कहै सुजि हाजरि[10] ।
एक वार ओखद तत एहौ[11] ।
जपियौ[12] मै वेखाँ गुण जेहौ ।। २६६
दत मौ पछै अभै नृप[13] दीजे ।
कासीवास सदाव्रत कीजे ।
हरि करि भजन लहूं पुर हरचौ ।
पह[14] मो राज कोटि सुख परचौ ।। २६७
अत वार[15] कहि[16] अंत उधारसि ।
तारग[17] मत्र समपि सिव तारसि ।

---

१ ख सुणे । २ ग सुर । ३ ख ग कहीयौ । ४ ख ग. नृप । ५ ख. ग वोडै । ६ ख ग नृप । ७ ख दाषीयौ । ८ ख ग कृपा । ९ ख ग हव । १० ख हाझरि । ११ ग. ऐहो । १२ ख. ग. जपीयौ । १३ ख ग नृप । १४ ख ग पौहो । १५ ख. वारि । ग वार । १६ ख ग. करि । १७ ख तरिग । ग तारिग ।

---

२६४ मुणै – कहते हैं । इण – इस । वार – समय । लोक मुर – तीनो लोक । सुरग वाणि – आकाशवाणी । दानेसुर – राठौडोके प्रमुख तेरह वशोमे से एक वश ।

२६५ ओडै – समान, बराबर । जेठी – जेष्ठ । कणेठी – कनिष्ठ । जोड़ै – बराबर । सुज – वह । दीजै चवि – कह दीजिये ।

२६६ दाखियौ – कहा । क्रिपा करि – कृपा करके । हवि – अब । एहौ – ऐसा । जपियौ – कहा । वेखाँ – देख लू । जेहौ – जैसा ।

२६७ दत – दान । मौ – मुझको । अभै – अभय । हरचौ – महादेवका । पह – राजा ।

२६८ तारग मत्र – रामका षडाक्षर मत्र जिसे गुरु शिष्यको कानमे कहता है और जिससे मनुष्य तर जाता है, तारकमत्र । तारसि – उद्धार करेंगे ।

भिखुक[1] अरज भूपति मन भाए[2] ।
पुर[3] हर वास सदाव्रत पाए[4] ॥ २६८
दुज[5] दे आस्त्रिवाद विधि दक्खै[6] ।
आणौ एह[7] सामग्री अक्खै[8] ।
बाळ[9] जती दुज एक महाबळ[10] ।
जोवन[11] पूर क्रिया ध्रम ऊजळ[12] ॥ २६९
जप[13] गायत्री[14] आंण[15] विध[16] जुती ।
आ[17] अधसरद निसा रुद्रवती ।
गंगा वसौ धार गयणाणी ।
पतिवरता आणै भरि पाणी ॥ २७०
जिती भोम[18] लीधा जळ जावै ।
आनन[19] राम रटती आवै ।
सो रुद्रवति जळ गग समाणै ।
एकण[20] कनक कळस मझि आणै ॥ २७१

---

१ ग भेषज । २ ग भाऐ । ३ ख. पुरहार । ४ ग पाऐ । ५ ख द्विज । ६ ख ग दष्पे । ७ ग ऐह । ८ ख ग. अष्पे । ९ ख वालजती । १० ख महावल । ११ ख ग जोवन । १२ ख ग. उझ्झल । १३ ख ग जपि । १४ ग गायत्रि । १५ ख ग आणै । १६ ख ग विधि । १७ ख ग ओ । १८ ख ग भोमि । १९ ख ग. आननि । २० ग ऐकण ।

---

२६८ भिखुक – भिखारी ।

२६९ दुज – द्विज = ब्राह्मण । आस्त्रिवाद – आशीर्वाद । विधि – ढग, तरीका । दक्खै – कहता है । आणौ – लाओ । एह – यह । सामग्री – सामान । अक्खै – कहता है । बाळ जती – बाल्यावस्थासे ही सयमशील, बाल्यावस्थासे ही जितेन्द्रिय । जोवन – यौवन । ऊजळ – उज्ज्वल ।

२७०. आण – लाओ । विध जुती – विधियुक्त, विधिपूर्वक । रुद्रवती – (?) । गयणाणी – आकाशकी ।

२७१ आनन – मुख । रटंती – रटती हुई । जळ गंग – गगाजल । एकण – एक । कनक – स्वरण, सोना । मझि – मे ।

अगनिहोत्र दिढ वरस इकीसा ।
रहै निरत तिण[1] ग्रेह रिखीसा ।
उण मगळ घट कनक अधारे[2] ।
बाळै[3] चँदण काठ दिन बारै[4] ॥ २७२

दीपक लोय आच सम दीजे ।
दिन तेरमै खोल[5] देखीजे ।
ओपम[6] काच भळक अधिकावौ ।
मिळ[7] जळ जड़ी बधै[8] तिण[9] मावौ ॥ २७३

भाग त्रगुण[10] पंकज पर भेळै ।
मघई पान छगुण रस मेळै ।
पाव भाग धरि लवंग प्रमाणै ।
आधै भाग मृगाअक[11] आणै ॥ २७४

इतरी [12]वसत कनक घट आणै ।
सपुट दियै[13] कियै[14] सहनाणै ।
बाळ जती पतिवरता बेवै[15] ।
सपत निसा जाग्रण करि सेवै ॥ २७५

---

१ ख ग तिणि । २ ग आधारे । ३ ख वालै । ४ ख. वारै । ५ ख ग षोलि । ६ ख ग वोपम । ७ ख ग मिलि । ८ ख वधै । ९ ख ग तिणि । १० ख ग तृगुण । ११ ग मृगाक । १२ ख इतनी । १३ ख. दीयौ । ग दीयै । १४ ख. ग. करै । १५ ख. ग वेवै ।

---

२७२ अगनिहोत्र – वेदोक्त मत्रोसे अग्निमे आहुति देनेकी क्रिया, अग्निहोत्र, एक यज्ञ। निरत – नित्य । तिण – उस । ग्रेह – घर । रिखीसा – महर्षियो ।

२७३. दीपक लोय – दीपक-शिखा । आच – गर्मी, ताप । ओपम – समान । भळक – दमक, चमक । अधिकावौ – अधिकता प्रकट करे । तिण – उस । मावौ – मावा ।

२७४ त्रगुण – तिगुना । पकज – कमल । भेळै – मिला देवे । अगा अक – मृगाक रस ।

२७५ कनक – स्वर्ण, सोना ; सपुट – कपडे और गीली मिट्टीमे लपेटा हुआ वर्तन जिसके भीतर कोई रस या औषधि फूकते हैं । सहनाणै – निशान, चिन्ह । बाळ जती – बाल्यावस्थासे ही जितेन्द्रिय हो । सपत – सात । निसा – रात्रि । जाग्रण – जागते रहनकी क्रिया ।

अनि नर नारि पसू पखि वाळी ।
वप[1] छाया न पड़ै विगताळी ।
करि सिनांन अस्टम[2] दिन काढै ।
चचळ सोळ मास[3] मझि[4] चाढै ॥ २७६
कचन[5] खभ[6] निरतर कीजै ।
दीपक आच[7] फेरि तिम दीजै ।
अस्ट[8] पहर[9] मझ[10] तेज अमावौ ।
चक्राकार बधै[11] दळ चावौ ॥ २७७
सोम[12] धूप खेवै सतवारै ।
एकमुखी रुद्राछ[13] अधारै ।
बीजौ[14] धूप खेवि[15] तिण[16] बेलै[17] ।
मझ[18] दाहिणा-वरत सख मेलै ॥ २७८
मझि तिण[19] कनक सकति धरि मूरति ।
आसापुरी[20] धूप खेवै अति ।
इण[21] विध[22] धूप अघट खेईजै ।
ताम्रवरण चक्र ह्वै दिन तीजै ॥ २७९
जदि द्विज पति निरँत्र करि जोजन ।
भूप समापै मनसा भोजन[23] ।

१ ग बप । २ ख अष्टम । ग असटम । ३ ग मासा । ४ ख चढि । ५ ग काचण । ६ ख ग षाभ । ७ ख ग. आचि । ८ ख ग. अष्ट । ९ ख पौहोर । ग पहोर । १० ख ग मझि । ११ ख वधै । १२ ग सोम । १३ ख ग रुद्राच । १४ ख वीजौ । १५ ग षेवै । १६ ग तिणि । १७ ख ग वेलै । १८ ख ग. मझि । १९ ख ग. तिणि । २० ख ग आसावरी । २१ ग इणि । २२ ख ग. विधि । २३ ग भौजन ।

२७६ अनि – अन्य । वप – शरीर । विगताळी – (?) । चंचळ – पारा, पारद । सोळ – सोलह । मास – माशा । मझि – मध्य, मे ।
२७७ कंचन – सुवर्ण, सोना । अमावौ – अपार, खूब ।
२७८ एकमुखी – एक मुखकी । रुद्राछ – रुद्राक्ष । दाहिणा-वरत सख – दक्षिणावर्त शख ।
२७९. मझि – मध्य, मे । तिण – उस । कनक – सुवर्ण, सोना । आसापुरी – एक प्रकारका धूप विशेष । अघट – निरतर, लगातार । ताम्रवरण – ताम्बेके रगका ।
२८० जदि – जव । द्विज – ब्राह्मण । पंति – पक्ति । समापै – प्रदान करे, देवे ।

तोय भूप पग धोयत[1] तखिणा ।
दस दस मौहर समापै[2] दखिणा ।। २८०
आस्त्रिवाद[3] द्विज रीझ उचारै ।
राजकाज सिध ह्वौ[4] राजारै ।
भणता इम ह्वै ताम्र बिनांभा[5] ।
ओ[6] चक्र धरै रूप दुति आभा ।। २८१
तजि स्यामता जाणि वपि[7] ताजै[8] ।
राकापति निकळक छबि[9] राजै[10] ।
ओ[11] चक्र एण[12] रूप वणि आवै ।
आचहूत पतिव्रता उठावै ।। २८२
स्याम गऊचै दूधि[13] समोवै ।
धोवै पछै[14] गगजळि[15] धोवै ।
केसरि[16] कुकुम चदण चाढै करि ।
अगर धूप खेवै तिण[17] औसरि ।। २८३
कोतूहळ नृत[18] गान[19] करावै ।
वाजित्र घरि[20] घरि नगरि[21] वजावै ।

---

१ ख. धोइत । २ ख समापौ । ३ ख ग आश्रिवाद । ४ ग. हौ । ५ ख ग विनाभा । ६ ख दो । ग. वो । ७ ख ग वप । ८ ग ताझै । ९ ख विलक । १० ख ग विराजै । ११ ख वो । ग वौ । १२ ख एणि । ग ऐणि । १३ ख. ग दुधि । १४ ग पछौं । १५ ग. गगजल । १६ ख केसर । १७ ग तिणि । १८ ख ग. नृत । १९ ग ग्यान । २० ख. ग घर घर । २१ ख. ग नगर ।

---

२८०. तोय – जल । तखिणा – तत्क्षिण । दखिणा – दक्षिणा ।

२८१. आस्त्रिवाद – आशीर्वाद । बिनाभा – काति–रहित । दुति – काति । आभा – चमक ।

२८२. स्यांमता – कालापन । वपि – शरीर । राकापति – चद्रमा । छबि – शोभा । राजै – शोभायमान हो । आचहूत – हाथसे ।

२८३. गऊचै – गायका । दूधि – दूधमे । समोवै – भिगो देवे । तिण – उस । औसरि – अवसर ।

२८४. कोतूहळ – खेल, कुतूहल । नृत – नृत्य । गान – गायन । वाजित्र – वाद्य । घरि घरि – घर-घरमे ।

गढपति न्हाय[1] गंगजळ[2] गहरै ।
पीतांबर[3] खीरोदक पहरै ॥ २८४

सहस समपि कपिला इक साथै ।
हळद दोब चंदण दधि हाथै ।
आवै चक्र निकट ऊमहतौ[4] ।
किसन प्रदूमन[5] नाम कहतौ ॥ २८५

वेखे चक्र करै नृप[6] वंदण[7] ।
चाढै हळद दोब दध[8] चंदण ।
पूजे इम दस दिन परमांणै ।
आतमदिढ लछमण अहिनाणै ॥ २८६

जो अरथी दस दिन मझि जाचै ।
समपै तेणि सुदत चित साचै ।
दसमै दिन चक्र दिये दिखाई ।
तविया[9] कनक तणी समताई ॥ २८७

अनंग अस वरतै चक्र आए[10] ।
जिणची जोत[11] तिमर उडि[12] जाए[13] ।

---

१ ख ग न्हाइ । २ ख. ग गंगजलि । ३ ख पीतंवर । ४ ख ग उमहंतौ । ५ ख. ग परदुमन । ६ ख. ग. नृप । ७ ग बंदण । ८ ख ग दधि । ९ ख ग तवीया । १० ग आऐ । ११ ख ग. जोति । १२ ख पूजि । १३ ग जाऐ ।

---

२८४ गढ़पति – राजा । न्हाय – स्नान कर । खीरोदक – एक प्रकारका श्वेत वस्त्र विशेष ।

२८५. सहस – सहस्र, हजार । समपि – देकर । कपिला – एक प्रकारकी गाय, गाय । दधि – दही । ऊमहतौ – उत्कंठित । कहंतौ – कहता हुआ ।

२८६. वेखे – देख कर । वंदण – प्रणाम, नमस्कार । दध – दही । आतमदिढ – आत्मदृढ़ । लछमण – लक्ष्मण । अहिनाणै – समान ।

२८७ अरथी – याचक । मझि – मध्य, मे । जाचै – याचना करे । समपै – देवे । तेणि – उसको । सुदत – श्रेष्ठ दान । साचै – सच्चे । तविया – कहा गया । कनक – स्वर्ण, सोना । समताई – समानता ।

२८८ अनंग – कामदेव । जिणची – जिसकी । तिमर – अंधेरा ।

वज्र देवळ त्रण[1] हाथ वणावै ।
जिण मझि धरि वज्र सिला जडावै ॥ २८८
छरहै मास सेत गज छाया ।
कारण[2] एण[3] कळप ह्वै काया ।
पट देवळ भिदि जोत प्रकासै ।
जिम भोडळ मझि दीप उजासै । २८९
भिदि वज्र सिखर चकर इम भळकै ।
झीण वदळ[4] मांझळ रवि झळकै ।
ईख[5] सिला वज्र दूर करावै ।
उणहिज[6] तरह[7] लियण[8] नृप[9] आवै ॥ २९०
करि चक्र पूज हेत अधिकारै ।
धरपति कनक थाळ मझि धारै ।
उर[10] नदनंद प्रद्रुमन[11] आराधै ।
साधन एह[12] नखित्र[13] पुख साधै ॥ २९१
सवा टाकि[14] जल जदि चक्र वरसै ।
सो सवाद[15] अम्रतहू[16] सरसै ।

---

१ ख ग त्रिण । २ ग. कारणि । ३ ख एणि । ग ऐणि । ४ ग वदळ । ५ ग. ईषि । ६ ख ग उणहीज । ७ ख ग तरै । ८ ख ग लीयण । ९ ख ग नृप । १० ख. ग उरि । ११ ख. ग प्रद्रुमण । १२ ख एह । ग ऐह । १३ ख नषत्र । ग नक्षत्र । १४ ख ग टाकि । १५ ख सवादि । १६ ख. ग अमृत ।

---

२८८ देवळ – देवालय । त्रण – तीन । जिण – जिस । मझि – मध्य ।

२८९. सेत गज – श्वेत हाथी । एण – इस । भोडळ – अभ्रक । मझि – मध्य, मे । दीप उजासै – प्रकाश करता है ।

२९०. भिदि – भेदन करके । भळकै – चमकता है । झीण – पतला, महीनतम । वदळ – बादल, वारिद । मांझळ – मध्य, मे । रवि – सूर्य । झळकै – चमकता है । ईख – देख कर । उणहिज तरह – उसी प्रकारसे ।

२९१ धरपति – राजा । नदनद – श्रीकृष्ण । आराधै – आराधना करता है । नखित्र – नक्षत्र । पुख – पुष्य नक्षत्र ।

सुजि जळ पियै[1] जरत[2] विण[3] मूरति ।
मगर पचीस[4] हुवै दिब[5] मूरति ॥ २९२
जोम अनँग सौ गुणौ जवानी ।
वप ह्वै कनक सोळिमा वांनी[6] ।
रवि ऊगता[7] जिसौ मुख[8] राजै ।
वारिज प्रफुलति[9] नेत्र विराजै ॥ २९३
उपर[10] जिया[11] धनूख[12] उणिहारै ।
भमर वंक[13] पकति भवहारै ।
मौसर भमर अहर परवाळक ।
बिहुवै[14] जुलफ जांण[15] अहि बाळक[16] ॥ २९४
गिरदै उदै चहुर[17] गहराई ।
अनग जाणि[18] परदाज वणाई ।
चचळ नेत्र कटाछि चलावै ।
अनंग बाण समता नह आवै ॥ २९५

---

१ ख ग पीयै । २ ख ग जरठ । ३ ख. विधि । ४ ग पचीसी । ५ ख ग. दिव्य । ६ ग बानी । ७ ख उगता । ग उगतौ । ८ ख ग मुखि । ९ ख ग प्रफुलित । १० ख. ऊपरि । ग. उपरि । ११ ख जीया । १२ ख ग धनुष । १३ ग वक । १४ ख विहुँवै । १५ ख ग. जाणि । १६ ख अहिवालक । १७ ग चिहुर । १८ जाण ।

---

२९२. सुजि – वह । जरत – वृद्धावस्था । मगर पचीस – पूर्ण युवा । दिब – दिव्य ।

२९३ जोम – जोश, उमग । अनग – कामदेव । सौ गुणौ – सौ गुना । जवानी – युवास्वथा । वप – शरीर । कनक – सुवर्ण, सोना । सोळिमा – सोलह वार तपाया हुआ सुवर्ण या सोना । वानी – काति, दीप्ति । रवि – सूर्य । ऊगता – उदयका । जिसौ – जैसा । राजै – शोभा देता है । वारिज – कमल । विराजै – शोभा देते है ।

२९४ जियां – जिनके । धनूख – धनुष । उणिहारै – समान । भवहारै – भौहो । मौसर – मूछ । भमर – श्याम । अहर – होठ, अधर । परवाळक – प्रवाल, मूगा, विद्रुम । विहुवै – दोनो । जुलफ – कनपटीके पास वाले बाल, अलक, जुल्फ । अहि – सर्प । गिरदै – गर्दनका पीछेका भाग ।

२९५. चहुर – बाल, केश । गहराई – घनापन । अनग – कामदेव । परदाज – सजावट, चित्रकी महीन रेखाएँ, पर्दाज । कटाछि – कटाक्ष । समता – समानता ।

आभा तेणि छांह मझि आवै ।
दुति धर तिका कनक दरसावै ।
सनमँध[1] पूजि ठौड़ विणसारी[2] ।
निरखै सुजि वछै[3] वर नारी ॥ २६६
इण सोभा वपु[4] तेज -उफाणै ।
जोवन मसत कठीरव जाणै ।
द्विज दिनकर जिम विधि कहि दीधी ।
कायाकळप सौज नृप[5] कीधी ॥ २६७
चर वहुवै[6] दिस नृपत[7] चलावै ।
पटभ्रर सेत रग नह पावै ।
केइक[8] दिन फिरता हिक क्यकर ।
जोए[9] जग कीधौ नृप जाहर ॥ २६८
उत्तर दिसि[10] गिरवर तर आवर ।
रास्ट कनक सैहर[11] वरियावर ।
सुभट लाख दरगाह सकाजा ।
रुद्रसेन वडगूजर[12] राजा ॥ २६६

---

१ ग सनिमध । २ ख. विधिसारी । ग. विणिसारी । ३ ग वछै । ४ ग वप । ५ ख ग. नृप । ६ ख. ग. वहुवै । ७ ख ग नृपति । ८ ग केईक । ९ ग जोऐ । १० ग दिस । ११ ख. ग सहर । १२ ग वडगुजर ।

---

२६६ आभा – काति. दीप्ति । तेणि – उस । मझि – मध्य, मे । दुति – द्युति, काति । तिका – वह । कनक – सुवर्ण, सोना । विणसारी – (?) । निरखै – देखता है, देखते हैं । वंछै – इच्छा करते हैं । वर – श्रेष्ठ ।

२६७ वपु – शरीर । उफाणै – जोशमे आता है, उमडता है । जोवन – यौवन, जवानी । मसत – मस्त । कंठीरव – सिंह । जाणै – मानो, जैसे । द्विज – ब्राह्मण । दिनकर – सूर्य । विधि – ढग । कहि दीधी – कह दिया ।

२६८ चर – दूत, राजदूत । वहुवै – दोनो । पटभ्रर – हाथी । सेत रंग – श्वेत रगका । नह पावै – प्राप्त नही करता है । केइक – कई । हिक – एक । क्यकर – किंकर, अनुचर, दूत । जोए – देख कर । कीधौ – किया । जाहर – प्रकट ।

२६९ सैहर – शहर । वरियावर – नगरका नाम । सुभट – योद्धा । दरगाह – दरबार । वडगूजर – एक राजपूत वंश ।

धरियां[1] नृप[2] दत खाग विरद धज ।
ग्रह तिणरै इक रग सेत गज ।
सुणि नृप सचिव मेल्हिया[3] साचा ।
वित[4] वहु[5] दियण[6] कहे[7] तिण[8] वाचा ।। ३००
ग्राय मिळै वहु[9] कीध इलाजा ।
रुद्रसेन मानै नह राजा ।
वाहुडि[10] ग्राय मत्री इम वोलै[11] ।
तुलि[12] मेधा धरि धरि वौह[13] तोलै ।। ३०१
छ़ळवळ[14] कीध प्रगट बहु[15] छांनै ।
रुद्रसेन[16] गज दियण[17] न मानै ।
कथ इम सुणे कोप नृप[18] कीधौ ।
दावानळ जाणै ग्रत[19] दीधौ ।। ३०२
गाजै घण वाजै त्रंबागळ[20] ।
दुगम रूप विमरीर[21] सभै दळ ।
हरख सनेह करे ध्रम हितनू ।
पट्टण राज दीध प्रोहितनू ।। ३०३

---

१ ख ग. धरीया । २ ख ग नृप । ३ ख ग. मेल्हीया । ४ ग वित । ५ ख वहौ । ग वहौ । ६ ख ग दीयण । ७ ख. ग कहण । ८ ख ग हित । ९ ख वहौ । ग वहौ । १० ख वाहुड़ि । ११ ख. वोले । १२ ख. ग तुल । १३ ख वहौ । ग वहौ । १४ ग छळवळ । १५ ख वहौ । ग वहौ । १६ ख ग रुद्रसेण । १७ ग. दीयण । १८ ख ग. नृप । १९ ख ग. घृत । २० ख त्रावागल । ग त्रावागळ । २१ ग विमरीर ।

---

३०० दत – दान । खाग – तलवार । विरद धज – विरुद-ध्वज । तिणरै – उसके । इक – एक । रग सेत – श्वेत रंग । गज – हाथी । सचिव – मत्री । मेल्हिया – भेजे । वित – धन । वहु – वहुत । दियण – देनेको । तिण – उसकी । वाचा – वचन ।

३०१ कीध – किये, किया । इलाजा – उपाय । वाहुडि – वापिस । ग्राय – ग्रा कर ।

३०२ छांनै – गुप्त । मानै – मानता है । कथ – वृत्तान्त । कीधौ – किया । दावानळ – ग्रग्नि, ग्राग । जाणै – मानो । ग्रत – घृत, घी । दीधौ – दिया ।

३०३ घण – मेघ । त्रवागळ – नगाडा । दुगम – दुर्गम, भयकर, जवरदस्त । विमरीर – भयकर, जवरदस्त । दळ – सेना । दीघ – दे दिया ।

उत्तम[1] नांम वंस उजवाळौ ।
वेद[2]-धरमचौ वंधव[3] वडाळौ ।
धरपति जेणि सीस छत्रधारै ।
एम[4] प्रसंग्या[5] करे उचारै[6] ॥ ३०४
स्त्रवण[7] इण गज मोहरि[8] स्याऊं[9] ।
वरियावर निज राज वणाऊं ।
कहि इम सिलह सनद्ध नृप[10] कसिया[11] ।
अंबर[12] छिवण[13] भुजा ऊससिया[14] ॥ ३०५
वधि[15] भळ क्रोध नयण इम वणिया[16] ।
अगनिकुंड जाणै ऊफणिया[17] ।
मूछ भोंह भिड़िया[18] खळ मारण ।
वणि इम रूप चढे नृप[19] वारण ॥ ३०६
झळहळ पखर सिलह अत्र सालै ।
हय असवार दोय लख हालै ।
सीहा नेग पराक्रम सहतै ।
दरकदाग[20] दोय लख वहतै[21] ॥ ३०७

---

१ ख उत्तिम । २ ख वेद । ३ ख, बधव । ४ ग ऐम । ५ ख प्रसंगा । ६ ख उचारै । ७ ख ग स्रवणि । ८ ख ग मोहरि । ९ ग रिझाऊ । ग स्याऊ । १० ख ग नृप । ११ ख ग कसीया । १२ ख अंबर । १३ ख. ग. छिवण । १४ ख ग, ऊससीया । १५ ग वधि । १६ ख ग वणीया । १७ ख, ग ऊफणीया । १८ ख भिड़ीया । ग भिड़ीया । १९ ख ग नृप । २० ख दरकदाग । ग दरकमदाग । २१ ख ग वहतै ।

[illegible]

भाथा[1] कटि करगां[2] झलि भाले ।
हेक लाख धानखर[3] हाले[4] ।
जँगी हवद जड़िया[5] जमजाळा ।
पाच हजार गयद पखराळा ।। ३०८

ज्या पर सिलह ससत्र तन जडिया[6] ।
कळहण जोस चठठती[7] कडिया[8] ।
ओपम[9] नयण धिखतां आरण ।
दोय दोय चडिया[10] भड[11] दारण ।। ३०९

पच[12] एक[13] कर वाण[14] प्रचडै ।
च्यार च्यार तरकस चवड़डैं ।
कळहण विकट गिरा सँज कीधा ।
लारा तिण[15] आरबा[16] न लीधा ।। ३१०

इम हालियौ[17] थाट दिस[18] उत्तर ।
कमळा नभ रज चढै भयकर ।
एण[19] समूह मझ[20] अकुळावै ।
पंछी अहि उडता अत[21] पावै ।। ३११

---

१ ख. ग भाता । २ ख करणा । ३ ख ग धानषधर । ४ क. झालै । ५ ख ग. जडीयां । ६ ख. ग. जड़ीया । ७ ख वठठती । ग वठठती । ८ ख ग कडीया । ९ ख. वोपम । ग वोपम । १० ख ग चडीया । ११ ख भय । १२ ख ग पाच । १३ ग ऐक । १४ ख वांण । १५ ख. ग तिणि । १६ ख आरवा । १७ ख हालिया । ग हालीयौ । १८ ख. ग दिसि । १९ ग ऐणि । ख एणि । २० ख ग मूझि । २१ ख ग नृत ।

---

३०८ भाथा – तर्कशो । कटि – कमर । करगा – हाथोमे । धानखर – धनुषधारी योद्धा । हवद – हौदा, हाथीका चारजामा । जमजाळा – एक प्रकारकी तोप विशेष, एक प्रकारकी वडी वंदूक । गयद – हाथी । पखराळा – कवचधारी ।

३०९ कळहण – युद्ध । चठठती – तेज ध्वनि । कडिया – रवाने हुए । धिखता आरण – प्रज्वलित अग्निके समान, क्रोधपूर्ण नेत्र । भड – योद्धा । दारण – दारुण, जवरदस्त ।

३१० कर – हाथ । प्रचडै – प्रचंड । तरकस – तर्कश, भाथा । चवडडै – (?) । लारा – साथ । आरबा – तोप, सेना ।

३११ थाट – सेना, दल । कमळा – भूमि । नभ – आकाश । रज – धूलि । एण – हरिण । मझ – मध्य, मे । पछी – पक्षी । अहि – सर्प ।

हाक डाक त्रबक[1] धमहमिया[2] ।
भाखर विकट असटकुळ[3] भ्रमिया[4] ।
कमधज दळ हालता कराळा ।
दहसत पडै दसै द्रगपाळां[5] ।। ३१२

इम गढ निकट विकट थट आया ।
छपन कोडि जांणै घण छाया ।
सुजळ[6] जाणि ऊभळै समराथै ।
समद सात नवसै नदि साथै ।। ३१३

अनड[7] लोप तर झंगर अथागा ।
लडण[8] दुरँग वरियावर लागा ।
धरपति रुद्रसेन पाटोधर ।
कियौ[9] विदा चूडामणि कूवर ।। ३१४

हाथी हणै वाहि खग हाथै ।
साठ हजार इसा भड साथै ।
उरडै थट पौरस अणथाहै ।
मुहरि[10] अराब[11] कोस त्रण[12] माहै ।। ३१५

---

१ ख त्रावक । ग. त्रावक । २ ख. ग धमहमीया । ३ ग अष्टकुल । ४ ख ग भमीयां । ५ ख ग द्रिगपालां । ६ ग सुजलि । ७ ग अनडि । ८ ख उलड़ । ९ ख ग कीयो । १० ख ग मौहरि । ११ ख अराव । १२ ख ग तृण ।

---

३१२ हाक डाक — तेज आवाज । त्रंबक — नगाडा । धमहमिया — ध्वनि हुई । असटकुळ — अष्टकुल । कमधज — राठौड । हालता — चलने पर । कराळां — भयंकर । दहसत — डर भय खौफ । दसै — दश ही । द्रगपाळां — दिक्पालो ।

३१३ थट — सेना, दल । घण — मेघ । सुजळ — जलसहित श्रेष्ठ जल । ऊभळै — उमड गये । समराथै — समर्थ । समद — समुद्र ।

३१४ अनड — पर्वत । तर झंगर — घने वृक्ष, घनी झाडी । अथागा — अपार । दुरँग — दुर्ग, गढ । धरपति — राजा । पाटोधर — राज्यसिंहासनाधिकारी । विदा — रवाना । कूवर — कुमार ।

३१५ हणै — सहार करते हैं । खग — तलवार । हाथै — हाथसे । इसा — ऐसे । भड — योद्धा । उरडै — बलात् शत्रु-समूहमें धँस जाते हैं । थट — समूह, दल, सेना । पौरस — बल, पौरुष । अणथाहै — अपार । मुहिर — अगाडी । अराब — तोप । त्रण — तीन ।

दगै अराब[1] तांम दइवाणा ।
अगनि चढै धर गिर असमाणां ।
दुगम रीठ गोळा दरसाई ।
वीरभद्र जिम घटा वणाई ।। ३१६

सिलह पखर धारक समराथै ।
सौ सौ उडै एकहिज[2] साथै ।
उडतां जिकां ओप[3] कवि आणै ।
अनळ दखिण वादळ अहिनाणै ।। ३१७

वहता घण गोळा विकराळा ।
हाथी उडै जँगी हवदाळा ।
धोम दुरग[4] दारू धडहड़िया[5] ।
पाहड सिखर जाणि उडि पड़िया[6] ।। ३१८

रौळौ[7] दोय[8] पहर[9] इम रहियौ[10] ।
क्रोधअनळ[11] भटके नूप[12] कहियौ[13] ।
जळ अचवू[14] तूटै गढ जारा ।
धोम लोपि जूटै[15] खगधारा ।। ३१९

---

१ ग. अरावां । २ ख ग ऐकही । ३ ख. ग वोप । ४ ख ग. सुरग । ५ ख ग धडहडीया । ६ ख ग पडीया । ७ क. रोळौ । ८ ग. दोइ । ९ ख. पौहौर । ग पहोर । १० ख ग रहीयौ । ११ ख अल । १२ ख. ग नूप । १३ ख ग. कहीयौ । १४ ग अचवू । १५ ग जूटौ ।

---

३१६ दगै – छूटती है । अराव – तोप । ताम – उन । दइवाणां – राजा । गिर – पर्वत । असमांणा – आसमानमे । दुगम – दुर्गम, भयकर । रीठ – प्रहार, युद्ध । दरसाई – दिखलाई दी ।

३१७ सिलह – अस्त्र-शस्त्र । पखर – कवच । धारक – धारण करने वाला । समराथै – समर्थ । उडता – उडते हुए । जिका – जिनकी । ओप – उपमा । अनळ – अनिल = पवन, हवा । दखिण – दक्षिण । अहिनाणं – समान ।

३१८ वहतां – चलते हुए । घण – वहुत, मेघ-घटा । विकराळा – भयकर । जँगी – वडा । हवदाळा – अवारी या चारजामासहित (हाथी) । धोम – अग्नि, आग । दारू – वारूद । धडहडिया – प्रतिध्वनित हुए । जाणि – मानो, जैसे ।

३१९ रौळौ – युद्ध । क्रोधअनळ – क्रोधाग्नि । भटके – भडक कर । कहियौ – कहा । अचवू – आचमन करू । जारा – जव ।

वदतां एम[1] ऊपडै[2] वागां ।
उदधि जांणि[3] जळ छिलै अथागा ।
घेंधीगर हू लै धुज धाखा ।
पाहड़ि[4] जाणि उडै विण[5] पाखा ॥ ३२०

झट खग सकट जंजीरा जड़िया[6] ।
लोपि अराब[7] कमध थट लड़िया[8] ।
कमधा वडगूजरा कराळा ।
पडै निहाव सोक पंखाळा ॥ ३२१

असि धुज[9] गयद सिलह भिद[10] अगा ।
तडफै पडै सुमारख तगा ।
झपट जाणि लीधी मछ झाखै ।
नट बह[11] जाण[12] दोवड़ी नाखै ॥ ३२२

घण अम्हसम्हा सिलहबंध[13] घाटा ।
वजि साबळा[14] धमक अवियाटां[15] ।

---

१ ग ऐम । २ ग उपाडैं । ३ ग जाण । ४ ख ग पाहड़ । ५ ख ग. लगि । ६ ख ग झडीया । ७ ख अराव । ८ ख ग लड़ीया । ९ ख ग धुज । १० ख. ग भिदि । ११ स वहो । ग वहो । १२ ख. ग जांणि । १३ ख सिलहवध । १४ ख. ग सावळा । १५ ख. अविपाटां । ग अवियाटा ।

---

३२० उदधि – समुद्र । जाणि – मानो । छिलै – उमडता है, मर्यादाके बाहर होता है । अथागां – अपार, असीम । घेंधीगर – हाथी । पाहडि – पर्वत । विण – विना । पांखां – पर, पख ।

३२१ झट – शीघ्र । जडिया – बावे । लोपि – उल्लघन कर । थट – सेना, दल । कमधा – राठौडा । वडगूजरां – वडगूजर नामक राजपूतवंशके व्यक्तियो । कराळा – भयकर, भयावह । निहाव – प्रहार । सोक – ध्वनि-विशेप । पखाळा – पक्षियो, तीरो, वाणो ।

३२२ असि – अश्व, घोडा । गयद – हाथी । सिलह – शस्त्र । भिद – भेदन कर । जाणि – मानो । लीधी – ली । मछ – मछली । दोवडी – दुगुनी । नाखै – डालता है ।

३२३ घण – बहुत । अम्हसम्हा – आमने-सामने, एक दूसरेके सम्मुख । सिलहबंध – योद्धा, सिलहधारी । वजि – प्रहार हो कर । साबळां – भालो, शस्त्र विशेप । धमक – प्रहार । अवियाटा – तलवारो ।

अँग भिदि पड़ै एण[1] अहिनाणै[2] ।
जुड़ि[3] जांमवंत भीच लक जाणै ।। ३२३
लोही घड वहि वहि फळ लोहां ।
छड गहि गहि ऊठत छछोहां ।
धड़छै दुसह केइक[4] खगधारा ।
केक[5] जड़ै इम खँजर कटारां ।। ३२४
इम बेभ्‍कडा[6] लोह धुवि[7] आरण ।
घाव जाणि वरसै[8] वारह[9] घण ।
वीज[10] अनेक रूप खग वागी ।
लाय जाणि सूकै वनि लागी ।। ३२५
वीर भरथवाळा विकराळा ।
चूड़ामणिवाळा कळिचाळा ।
कमधज वडगूजर[11] भड केहा ।
जुटै रांम रावण भड़ जेहा ।। ३२६
कमधज भांण पाटवी कूवर ।
गजहू गज मिळियौ[12] खत्री गुर ।

---

१ म ऐण । २ ख अणिताणे । ३ ख जुडी । ४ ग केईक । ५ ख केइक । ६ ख वेभडा । ७ ख. धुवि । ८ ग. वूठं । ९ ख वारह । १० ग वीज । ११ ग वडगूजर । १२ ख. ग. मेलीयौ ।

---

३२३ भिदि – भेदे जा कर, भेद कर । एण – इस । अहिनाणै – प्रकार, समान । भीच – योद्धा । लक – लका ।

३२४. घड़ – शरीर । वहि वहि – वह-वह कर । फळ – शस्त्रका नोकदार भाग, शस्त्रका पैना भाग । लोहां – शस्त्रो । छछोहां – शीघ्र, तेज । धडछै – काटे जाते हैं । दुसह – शत्रु । केक – कई । जड़ै – प्रहार करते हैं । खँजर – शस्त्र विशेष ।

३२५ वेभ्‍कड़ा – दोनो ओर । धुवि – तेज हो कर । आरण – युद्ध । घाव – प्रहार । जांणि – मानो । घण – मेघ । वीज – विजली । वागी – प्रहार किया गया । लाय – दावाग्नि । वनि – वनमे ।

३२६ भरथवाळा – भरतके । विकराळा – भयकर । चूडामणिवाळा – चूडामणिके । कळिचाळा – योद्धा । भड़ – योद्धा । केहा – कैसे । जुटै – युद्ध करते हैं, भिडते हैं । जेहा – जैसे ।

३२७. भांण – भानु । पाटवी कूवर – राज्याधिकारी कुमार, जेष्ठ कुमार ।

दमक[1] जंगी हवदा खग दांमणि ।
मिळिया[2] लोह भाण चूडामणि ॥ ३२७
सूरां बिहू[3] काटि खगि[4] साही ।
वदे[5] पहल चूडामणि वाही ।
लागण[6] न दी ढाल परि[7] लीधी ।
दूजी भाण झाट[8] खग दीधी ॥ ३२८
झिलम टोप सूधौ सिर झडियौ[9] ।
पटझरहू चूडामणि पडियौ[10] ।
करि जय धसे नगर मझि लसकर ।
अटके नह भिळियौ[11] वरियावर[12] ॥ ३२९
आयौ रुद्र महलहूं ऊतरि[13] ।
बाला[14] किलाहूंत नृप[15] बाहरि[16] ।
वीस हजार साथि[17] भड वंका ।
अटके दळ आवता अटका ॥ ३३०
अति धख क्रोध दुहू दळ आंणै ।
जूटा खगा डडेहड[18] जाणै ।

---

१ ख ग दमकि । २ ख ग मिलीया । ३ ख. विहूं । ४ ख ग खग । ५ ख. वडे । ग वधे । ६ ख लाजागण । ७ ख ग पर । ८ ख. जाट । ९ ख. ग झडीयो । १० ख ग पडीयौ । ११ ख ग. भिळीयो । १२ ग वरियावर । १३ ख. उतर । १४ ख वाला । १५ ख ग. नृप । १६ ख. वाहिर । ग वाहिर । १७ ग साथ । १८ ख. डडहर ।

---

३२७ दसक – चमक कर । जंगी – वडा । हवदां – हाथियोंके चारजामो । खग – तलवार । दामणि – दामिनी, विजली ।

३२८ सूरा – वीरो, वहादुरो । विहूं – दोनो । वदे – कहते हैं । पहल – प्रथम । वाही – प्रहार किया । झाट – प्रहार । खग – तलवार । दीधी – दी ।

३२९ झिलम टोप – युद्धके समय शिर पर धारण करनेका टोप । सूधौ – सहित । झडियौ – कट गया । पटझरहूं – हाथीसे । पड़ियौ – गिर गया, वीर गति प्राप्त हुआ । जय – विजय । धसे – प्रवेश किया । मझि – मध्य, में । लसकर – सेना । भिळियौ – शत्रुओ द्वारा लूटा गया ।

३३०. वाहरि – वाहर । भड – योद्धा । वका – वाकुरा । अटका – जवरदस्त ।

३३१ धख – क्रोधाग्नि । जूटा – भिडे । खगा – तलवारो । डडेहड – होलिका नृत्य विशेष, डडारास ।

घण खग गजरि[1] जांण[2] घडियाळां[3] ।
वागी फजर कनोज[4] विचाळां ।। ३३१
वदि[5] रुद्र खाग स्त्रीहथां वाहै ।
सूर थभि[6] रथ हाथि[7] सराहै ।
सुपह[8] भरथ सुहड़ां निज साखै ।
अरि जीवतौ ग्रहौ इम आखै ।। ३३२
असि पटझराहूत ऊतरिया[9] ।
धारां पछट सामुहा धरिया[10] ।
आयस भरथ लड़ै भड एहा[11] ।
जगि[12] दखितणै वीरभद्र जेहा ।। ३३३
चद्रहास झट धके चहोड़े ।
तेर' हजार दुसह भड तोड़े ।
हड़हड ताम जत्रधर हसिया[13] ।
लडता सात सहस भड लसिया[14] ।। ३३४

---

१ ख ग. गजर । २ ख ग जाणि । ३ ख ग घडीयाला । ४ ख ग कनौज । ५ ख ग वधि । ६ ख ग थाभि । ७ ख. ग हाथ । ८ ग सूपह । ९ ख. उतरीया । ग ऊतरीया । १० ख ग धरीया । ११ ग ऐहा । १२ ख ग. जिगि । १३ ख ग हसीया । १४ ख ग लसीया ।

---

३३१ गजरि – आवाज, ध्वनि । वागी – वजी । फजर – प्रातःकाल ।

३३२ वदि – वढ कर । सूर – सूर्य । थभि – रोक कर । हाथि – हाथोसे । सराहै – प्रशसा करता है । सुपह – राजा । सुहड़ा – योद्धाओ । अरि – शत्रु । जीवतौ – जीवित । ग्रहौ – पकड लो । आखै – कहता है ।

३३३ असि – घोडा । पटझराहूंत – हाथियोसे । धारा – तलवारो । पछट – प्रहार कर । सामुहा – सम्मुख, सामने । आयस – आज्ञा । भड – योद्धा । एहा – ऐसे । जगि – यज्ञमे । दखितणै – राजा दक्षके । जेहा – जैसा ।

३३४. चद्रहास – तलवार । झट – प्रहार । चहोडे – काटते हैं । तेर' – तेरह । दुसह – शत्रु । तोड़े – सहार कर दिये । हड़हड – हँसनेकी ध्वनि । जत्रधर – नारद मुनि । लसिया – शोभित हुए ।

करि ढालां झट ओट कजाकां ।
होळी थंभ जेम करि हाकां ।
जरद धरा ऊंडळ वंध जकडे[1] ।
पह[2] रुद्रसेन[3] जीवतौ पकड़े ॥ ३३५

तेरह लोह अग रातवर[4] ।
पह[5] आंणै अग्र सेत पटाभर ।
पौहचि[6] तठै सिवका[7] पौढाणै ।
इम पण पूर[8] भरथ अग्र आंणै ॥ ३३६

नौवत[9] वजै जैत सद नोखा ।
जमै राज वरियावर[10] जोखा ।
लड़ि इम देस दुरग गढ[11] लीधौ ।
कायाकळप[12] कहे जिम कीधौ ॥ ३३७

आभा रूप जोम ऊफांणिक[13] ।
वणियौ[14] अनग दूसरै वांणिक ।
वीर तदिन[15] कीरति वाधारी ।
भरथ साख वधियौ[16] कुळ भारी ॥ ३३८

---

१ ग झकड़े । २ ख ग. पौहो । ३ ख सेन । ४ ख. रातंवर । ५ ख ग पौह । ६ ख. ग पौहवि । ७ ग. सिविका । ८ ग पूरि । ९ ख नौवति । ग नौवति । १० ख. ग वरीयावर । ११ ख गज । १२ ख कायाकल्प । १३ ग. ऊफांणिक । १४ ख वणीयौ । १५ ख ग तिदन । १६ ख वधीयौ । ग वधीयौ ।

---

३३५ कजाकां – एक प्रकारका कोट जिसमे कच्चा रेशम लपेटा जाता है । इस पर तलवारका प्रहार असर नहीं करता; कजाकद । हाकां – आवाज । जरद – कवच । जकड़े – वाव कर । पह – राजा । जीवतौ – जीवित । पकडे – पकड कर ।

३३६. लोह – शस्त्र-प्रहार । रातंवर – लाल । आंणै – ला कर । अग्र – अगाडी । सेत – श्वेत । पटाभर – हाथी । पौहचि – पहुँच कर । तठै – वहा । सिवका – शिविका । पौढांणै – शयन कराया गया । इम – इस प्रकार । पण – प्रण ।

३३७ जैत – विजय, जीत । सद – शब्द । नोखा – वढिया । जोखां – आनन्द, हर्ष । लीधौ – लिया । कीधौ – किया ।

३३८ आभा – चमक, दमक । जोम – जोश । वणियौ – वना, वन गया । वाणिक – सूरत । तदिन – उस दिन । कीरति – यश, कीर्ति । वाधारी – वढाई । साख – शाखा । वधियौ – वढा । भारी – वहुत ।

'गढ वरियावर विरद अथागा ।
वरियावर[1] कमधज[2] इम वागा ।

राजा पुजरै बारमा पुत्र कृपासिंधुरो वरणण

बारमौ[3] सुत पूज[4] महाबळ ।
कृपासिधु[5] जिण[6] नाम अणकळ[7] ।। ३३६
महपति धरमवभ[8] कुळ जगमिणि ।
तीरथराज राज दीधौ तिणि ।
ध्रमसासत्र[9] मारग दिढ धारै ।
सदावरत समपै जग सारै ।। ३४०
आखै आय[10] क्षुधत[11] निज आरत[12] ।
मनसा भोजन दियै[13] महामत ।
मनि[14] नवधा[15] पूजै परमेसुर ।
खट-रुत[16] धरम करै खत्रियागुर[17] ।। ३४१
उपवन करि अति[18] ग्रेह उसीरा ।
नोख गुलाब छड़क[19] घण नीरा ।
जळ गुलाब[20] वेळुका[21] जमावै ।
विमळ पटी सीतळ विछवावै । ३४२

१ ख. वरीयावरा । ग वरियावरा । २ ख. कमध । ग कमंध । ३ ख ग. वारहमौ । ४ ख. ग पुज । ५ ख ग. कृपासिंधु । ६ ख ग. जिणि । ७ ख अलकल । ८ ख धरम वभ । ६ ख ध्रमससत्र । ग ध्रमसास्त्र । १० ख. ग. आइ । ११ ख ग क्षुधित । १२ ग आरति । १३ ख ग दीयै । १४ ख ग मन । १५ ख. वध । १६ ख ग षटऋतु । १७ ख ग षत्रीयागुरु । १८ ख वहो । ग वहौ । १६ ख ग छड़कि । २० ख गुलाव । २१ ग बेलुका ।

३३६. विरद – विरुद । अथागा – अपार, महान । वरियावर – राठौड़ोके प्रमुख तेरह वशोमे से एक वश । वागा – प्रसिद्ध हुए ।

३४० अणकळ – वीर । महपति – राजा । जगमिणि – श्रेष्ठ । तीरथराज – प्रयाग । दीधौ – दिया । तिणि – उस । दिढ – दृढ । समपै – देता है ।

३४१ आखै – कहता है । आय – आकर । क्षुधत – भूखा । आरत – दुख । मनि – मनमे । नवधा – नौ प्रकार । खट-रुत – षड्ऋतु । खत्रियागुर – क्षत्रियोमे श्रेष्ठ ।

३४२ उसीर – गाडर नामक घासकी जड, खस । नोख – श्रेष्ठ । घण – वहुत । नीरां – पानी ।

रसी उसीर पख ठहराणै ।
उठै[1] प्रणांम करै रिख आणै ।
आतम ग्यान समुद्र अथागी ।
रमता परम हस वैरागी ।। ३४३
छत्रपति प्रेम भाव सुख छाजे ।
विमळ इसा मुनि तठै विराजै ।
थिर करि पाइ[2] मिस्ट[3] जळ थाटै ।
चदणादि ले पर[4] वह[5] चाटै ।। ३४४
जीमण सिखरण भाथ जिमावै ।
मेवा नूत अनेक मिळावैं[6] ।
पावै त्रिखत हुवै तद[7] तद त्रिप्त[8] ।
हिम सर करां नीर अति चित हित ।। ३४५
त्रपति[9] होइ मुख विमळ करै तदि ।
जुत मुखवास अग्र धारै जदि ।
मिरच सीत एळच[10] मधि पावै[11] ।
खितपति पांन कपूर खुवावै ।। ३४६

---

१ ख उभै। २ ख ग पाय। ३ ख मिष्ट। ग. मिसट। ४ ख. ग. लेपण। ५ ख वहो। ग वहो। ६ ग मिल्हावै। ७ ख तदि। ग तदि तदि। ८ ख ग प्रति। ९ ख. त्रिपत। ग त्रिपति। १० ग ऐळच। ११ ग मावै।

---

३४३ अथागी — अपार, गहरा। रमता — भ्रमण करता हुआ।

३४४ छत्रपति — राजा। छाजै — शोभित होता है। विमळ — पवित्र। इसा — ऐसे। तठै — वहा। विराजै — शोभा देते हैं, बैठते है।

३४५ जीमण — भोजन। सिखरण — दही और चीनीका बनाया हुआ एक प्रकारका मीठा पेय पदार्थ विशेष अथवा एक प्रकारका शर्बत्र जिसमे केसर कपूर तथा मेवे आदि डाले जाते है। भाथ — पकाये हुए चावल, भात। जिमावै — भोजन करवाते है। त्रिखत — तृपित, प्यासा। तद — तब।

३४६ त्रपति — तृप्ति। जुत — युक्त, सहित। मुखवास — अनेक प्रकारकी सुगधित औषधियो आदिको मिला कर बनाया हुआ चूर्ण जिससे मुहकी दुर्गंध दूर होती है। जदि — जब। एळच — इलायची। मधि — मे। खितपति — राजा। खुवावै — खिलाते है।

पौढै ताम उठावै ऊपरि ।
केसर चदण भीण वसतरकरि ।
पवन त्रिविध[1] भोला दे कर पह[2] ।
बादग सत पाखा[3] हूंता बह[4] ।। ३४७

सुख इण[5] विध[6] बौह[7] भात[8] समाजा ।
रित[9] ग्रीखम सेवै[10] मुनिराजा ।
दारु रग चित्र मिदर[11] दिपावै ।
विहद जियां नवखंड वणावै ।। ३४८

ज्या मझि तखत नमद जमाता ।
सबज[12] जिया ऊपरि सिकळाता ।
कमळि पाइ बाजू[13] कोसीसा ।
सेबळ फमधरै वोसीसा ।। ३४९

खीरकद मिस्रित हित खती ।
भोजन अवर दियै[14] बह[15] भती[16] ।
जुगत अरध भक्ष त्रिखा[17] जतावै ।
अधर झेल पुक्कर[18] अचवावै ।। ३५०

---

१ ख ग त्रिविधि । २ ख ग पौंहो । ३ ख. ग पषा । ४ ख. वौहो । ग बोहो । ५ ख ग इणि । ६ ख ग विधि । ७ ख वहो । ग वहो । ८ ख ग भाति । ९ ख रिति । १० ख वसै । ११ ख ग मदिर । १२ ख. ग सवज । १३ ख वाजू । १४ ख ग दीये । १५ ख वहो । ग. बहु । १६ ग भाति । १७ ख ग तृषा । १८ ख. युकर ।

---

३४७ ताम – उनको । भीण – महीन । वसतरकरि – वस्त्रसे । त्रिविध – तीन प्रकारका । भोला – प्रवाह । पह – राजा ।

३४८ रित – ऋतु । ग्रीखम – ग्रीष्म । दारु – काष्ठ । मिंदर – भवन । दिपावै – शोभित करता है । विहद – वढिया, बहुत । जिया – जिन ।

३४९ ज्या – जिन । मझि – मध्य, मे । सबज – सब्ज, हरा । जिया – जिन । सिकळाता – विशेष प्रकारकी बहुमूल्य ऊनी बनातें, सिक्लातो । कमळि – एक प्रकारका पहननेका वस्तर, कम्बल ।

३५०. खीरकद = खीरकंद – क्षीर विदारी । मिस्रत – मिश्रित । अवर – अन्य, और । बह – बहुत । भती – भाति, प्रकार । त्रिखा – तृषा, प्यास । पुक्कर – पुष्कर, जल । अंचवावै – आचमन कराता है, पिलाता है ।

करि अचवन जळ चळू करावै ।
भक्ष परपचक[1] चुरण[2] भुगतावै ।
रस हरि कथा कथित मन रजण ।
मुखवासादि दियै[3] मुख मजण ॥ ३५१
इण[4] आणद[5] निंद्रा तदि आवै ।
अरुण झीण सिकलाति[6] उढावै ।
इण विध[7] धरम प्रीति[8] तत आरति ।
राजा रिख सेवै वरखा[9] रिति ॥ ३५२
कपडकोट उज्जळ वह[10] कीजै ।
वर वगळा[11] रावटी वणीजै ।
वणि त्रह[12] त्रह मडप विसतारा ।
दुति[13] स्रव[14] उमर पभा दारां ॥ ३५३
खडगह खभदार गदरा खित ।
सीरख[15] झडप उसीस टोप सित ।
चोळा चादर सेत चढावै ।
भात मूग घ्रत कंद भुगतावै ॥ ३५४

---

१ ख ग. परपक । २ ख ग चूरण । ३ ख ग दिदीयै । ४ ख ग. इणि । ५ ख आनंद । ६ ख ग सिकलात । ७ ख ग विधि । ८ ख प्रीत । ९ ख. वरिषा । १० ख वहौ । ग वहौ । ११ ख. वंगला । १२ ख त्रण्ह । ग त्रण्ह त्रण्ह । १३ ख दुजि । १४ ख श्रव । १५ ग सिरष ।

---

३५१ अचवन – आचमन, जलपान करना । चळू – भोजनके बाद हाथ-मुंह धोना । परपचक – पाचक । मुखवासादि – मुखको सुगंधित करनेके निमित्त अनेक प्रकारके सुगंधित पदार्थो युक्त चूर्ण विशेष । मुख मंजण – मुखको स्वच्छ करनेकी औषधि विशेष ।

३५२ तदि – तब । सिकलाति – बहुमूल्य ऊनी बनात, सिकलात । रिख – ऋषि । वरखा – वर्षा । रिति – ऋतु ।

३५३ कपड़कोट – खेमा, तंबू । उज्जळ – उज्ज्वल । वह – बहुत । रावटी – भवन विशेष, एक प्रकारका छोटा तंबू विशेष । त्रह त्रह – तरह-तरह । दुति – कांति, दीप्ति ।

३५४ खभदार – जरा बांका या तिरछा । गदरा – गद्दा । खित – पृथ्वी, भूमि । सीरख – ओढनेका वस्त्र विशेष । झड़प – हवा करनेका वस्त्र विशेष । उसीस – तकिया । चोळा – सन्यासियोंके पहिननेका वस्त्र विशेष । चादर – ओढनेका वस्त्र । सेत – श्वेत । भात – पकाये हुए चावल । घ्रत – घृत, घी ।

मधि जळ नूमळ[1] पियै[2] हित मन्नै ।
अनि भोजन बहधा[3] अवअन्नै[4] ।
नव अन्नादि[5] रसालू सकळ नव ।
प्रपक साक बहुधा[6] नव पल्लव ॥ ३५५

मोदकादि[7] बहु[8] चक्र मझारा ।
पाक अनै अवलेह अपारा ।
प्रति भोजन क्रत[9] पांन प्रफूलै ।
तक्र मठा अम्रित[10] सम तूलै ॥ ३५६

आनन विमळ मुखोप अपारा ।
ताबूलादि दियै[11] तिण वारां ।
एहिज[12] सदन सिसर[13] हिमवता ।
आसण पखी पसम अनता ॥ ३५७

पैहरण घण ओढण[14] पसमीना ।
नोख तोस घणमोल नवीना ।

---

१ ख ग नूमल । २ ख ग पीयै । ३ ख वहुधा । ग. वहूधा । ४ ग. नदअन्नै । ५ ग अन्नादिक । ६ ख वहुधा । ७ ग मोदिकादि । ८ ख वह । ९ ख ग कृत । १० ख ग अमृत । ११ ख ग दीयै । १२ ग ऐहिज । १३ ख ग ससिर । १४ ख वोटण । ग वौटण ।

---

३५५ मधि – वीचमे । नूमळ – निर्मल । अनि – अन्य । बहधा – बहुत प्रकारके । अ(न)वअन्नै – नवान्न । प्रपक – परिपक्व ।

३५६ मोदकादि – लड्डू आदि । बहु चक्र – जलेबी या फेनी । मझारा – मध्य, मे । पाक – पकवान । अनै – और । अवलेह – लेई जैसा लेस पदार्थ जो न अधिक गाढा और न अधिक पतला होता है और चाटा जाता है । तक्र – छाछ । अम्रित – अमृत । सम – समान ।

३५७. आंनन – मुख । विमळ – स्वच्छ । मुखोप – मुखकी कान्ति । तावूलादि – पान आदि । तिण – उस । वारा – समय । एहिज – यही । सदन – भवन, घर । सिसर – शिशिर ऋतु । हिमवता – हेमन्त ऋतु । पखी – एक प्रकारका ऊनी कपडा जो पहाडोमे भेडके वालोसे वुना जाता है । पसम – वहुत मुलायम तथा वढिया ऊन जो प्राय कश्मीर, पजाव और तिव्वतकी भेडो परसे उतारा जाता है । इससे दुशाले तथा पश्मीने आदि बनते हैं ।

३५८. पसमीना – एक प्रकारका वहुत वढिया ऊनी कपडा जो वडा मुलायम और मजवूत होता है, पश्मीन । नोख – वढिया । तोस – कपडा, वस्त्र । घणमोल – वहूमूल्य, वेसकीमती । नवीनां – नया ।

सपत दसह भोजन व्रत[1] सनिगध ।
साग छतीसा[2] वान[3] वांन सध ।। ३५८
तत मनसा[4] भोजन दिव[5] तिम तिम ।
जळ मुखवास अगै कहिया जिम ।
धोमपात्र कळिधूत अरावै[6] ।
धूणी • चदण अगर धुकावै[7] ।। ३५९
महपति[8] करि[9] वदन[10] उज्जळ मन ।
त्रण[11] रित[12] इम साधे दासातन ।
सर सरिता[13] वहु[14] वाग सडव्वर[15] ।
मझि तिण[16] सिंगी काम चित्रमदिर ।। ३६०
जरदोजी कतिला कारीजर ।
साइवान[17] पडदा चिग सुदर ।
परदुज वर भरपूर प्रचडै ।
मुखमलतणी विछायत मंडै ।। ३६१

---

१ ख ग घृत । २ ख ग छतीम । ३ ख ग वन वन । ४ ख ग मनछा । ५ ख दिवै । ग दिव । ६ ग. करावै । ७ ख. ग धिपावै । ८ ग महिपति । ९ ग कर । १० ग वदण । ११ ख. ग तृण । १२ ख ग रिति । १३ ख ग. सलिता । १४ ख वहौ । ग वहौ । १५ ख सडवर । १६ ग तिणि । १७ ख. ग साईवान ।

---

३५८ सपत – सात । दसह – दश । सनिगध – स्निग्ध । साग – शाक । वान वान – तरह-तरहके । सध – सद्य, ताजा ।

३५९ मनसा – इच्छा । दिव – दिव्य । मुखवास – मुखको सुगंधित करनेका चूर्णविशेष । अगै – पहिले । कहिया – कहे । जिम – जैसा । धोमपात्र – धूम पात्र, धूपदानी । कळिधूत – कलधौत, सोने-चादीके । धूणी – सन्यासियोका अग्निकुण्ड जिसके पास बैठ कर वे तपस्या करते हैं ।

३६० महपति – राजा । वदन – नमस्कार । उज्जळ मन – स्वच्छ हृदय । त्रण रित – तीन ऋतु । दासातन – दासत्व । सर – तालाव । सरिता – नदी । सडव्वर – सघन घना । सिंगी – शृगी, योगियोका वजानेका सीगका वना वाद्य । चित्र मदिर – चित्रशाला ।

३६१ जरदोजी – कारचोवी, सल्मा-सितारा और जरीका काम । कतिला – एक प्रकारका वहुत महीन कपडा विशेष, कतान । कारीजर – ज़रकारी, ज़री कशीदा । साइवान – मकानका छज्जा । पडदा – पर्दा । चिग – वाँस या सरकडोकी तीलियोका वना झझरीदार पर्दा चिलमन । परदुज – सजावट, पर्दाज़ । भरपूर – पूर्ण । मुखमलतणी – मखमलकी । विछायत – विछानेका वस्त्र ।

अनि स्रब वसत विछाइत[1] आंणै ।
पौसाका राजसी प्रमाणै ।
जिण उपगरै सुरंत चाहै जन ।
भख तिम[2] दियै[3] राजसी भोजन ।। ३६२
अंब[4] हिम विध[5] सुस्रत[6] अचवावै[7] ।
पूरण[8] हुय[9] चूरण सुध पावै ।
सजुत[10] वसत वाणरस[11] सोखा ।
नागलता मघई पत्र नोखा[12] ।। ३६३
आरोगाइ[13] स्रीहथा अधपति ।
सेवा वंदण[14] स्तूति[15] करै सति ।
वनसपती पुहपति[16] विसतारै[17] ।
भवर[18] गुजार करै सुर भारै ।। ३६४
कोकिल सोर मोर तडवि[19] क्रत[20] ।
नटवर गांन[21] सगीत करै नृत[22] ।

---

१ ख ग. विछायत । २ ख तिन । ३ ख ग दीयै । ४ ख अव । ५ ख विधि । ग विधि । ६ ख ग सुश्रित । ७ ख असवावै । ८ ख पूर । ९ ख होइ । ग होई । १० ग संयुत । ११ ग वाण । १२ ख ग नौषा । १३ ख ग आरोगाय । १४ ख. वदण । १५ ख. ग सूति । १६ ख ग पहोंपति । १७ ग. विस्तारे । १८ ख. भविर । १९ ग तडव । २० ख ग कृत । २१ ग गुना । २२ ख ग नृत ।

---

३६२ अनि – अन्य । स्रब – सर्व, सव । वसत – वस्तु । विछाइत – वैठनेके कमरेमे विछानेका वडा वस्त्र विशेष, जाजम । राजसी – रजोगुणी । जिण उपगरै चाहै जन – जिस भोजनका उपयोग करके मनुष्यकी सुरतेच्छा (कामवासना) जागृत हो ।

३६३ अव – पानी । हिम – वर्फ । सुस्रत = सुशृत – गर्म, उष्ण, उत्तम नदी । अचवावै – आचमन कराता है । सजुत – सयुक्त, सहित । वाणरस – वाराणसीका । नागलता – पानकी लता । मघई – पानकी एक जातिविशेष जो अत्युत्तम मानी जाती है । मतान्तरसे माघ मासमे होने वाला वनारसका पान । नोखा – श्रेष्ठ ।

३६४ आरोगाइ – भोजन करते है । स्रीहथा – अपने हाथसे । अधपति – राजा । वनसपती – वनस्पति । पुहपति – पुष्पपति । सुर – स्वर । भारै – वढिया ।

३६५ सोर – आवाज, ध्वनि । तडवि – नृत्य, नाच । नटवर – नाट्यकलामे प्रवीण । गान – गायन । नृत – नृत्य ।

गांन पान इम्रत[1] सम गावै ।
ईस्वर विण[2] दुतिया[3] नह आवै ।। ३६५
तीरथराज राजवेता[4] तत ।
सुख निज राज करै धरियां[5] सत ।
सिध[6] मुनिराव[7] सेव इम[8] साधै ।
इम रितराज समै आराधै ।। ३६६
धरपति वहु[9] सेवै[10] अवरधर[11] ।
वह[12] सेवै अवधूत[13] दिगवर[14] ।
कोयक[15] दिन सेवा इम करता ।
ध्यांन नरेस सियावर[16] धरता ।। ३६७
अटक पारहूता जोरावर ।
आया गयद खरीदण आसुर ।
विहुदूणां[17] सिरदार वहादर[18] ।
लारां बार[19] हजार लसक्कर[20] ।। ३६८

---

१ ख. ग अमृत । २ ग. विणि । ३ ख ग दुतीया । ४ ख. ग राजवेता । ५ ख. ग धरीया । ६ ग सिधि । ७ ख. ग मुनिराज । ८ ख ग. अति । ९ ख वहौ । ग वहौ । १० ख. वसै । ११ ख अवरधर । १२ ख. वहौ । ग वहौ । १३ ख. ग. अवधूत । १४ ख दिगवर । १५ ख. ग कोइक । १६ ख ग. श्रीयावर । १७ ख विहुदूणा । १८ ख वहादर । १९ ख. वार । २० ख ग लस्सकर ।

---

३६५. इम्रत – अमृत । सम – समान । ईस्वर' नह आवै – उनके गायनका विषय ईश्वरके अतिरिक्त दूसरा नहीं था अर्थात् देवकाव्यका ही गायन करते थे ।

३६६ तीरथराज – तीर्थराज, प्रयाग । राजवेता – राजनीतिज्ञ । धरियां – धारण करने पर । सत – सत्य । मुनिराव – मुनिराज । सेव – सेवा । इम – इस प्रकार । रितराज – ऋतुराज बसंत । आरावै – आराधना करता है ।

३६७ धरपति – राजा । वहु – वहुत । अंवरधर – वस्त्र धारण करने वाला । अवधूत – महात्मा, ब्रह्मज्ञानी । कोयक – कोई । सियावर – श्रीराम ।

३६८ अटक – सिंधु नदी, सिंधु नदी पर स्थित एक नगर । पारहूता – पारसे । जोरावर – शक्तिशाली । गयद – गज हाथी । खरीदण – खरीदनेके लिये । आसुर – असुर, म्लेच्छ । विहुदूणा – चार । लारा – पीछे । बार – बारह । लसक्कर – सेना, लश्कर ।

रवद पिराग देखि छिब[1] रीधा ।
डेरा आय गग तदि[2] दीधा ।
पहरै जवन सवज पौसाका ।
असि चहुवै चढिया[3] एराका[4] ॥ ३७०
केहिक[5] तर्णा[6] खडे केकाणा ।
कुजर चाढै चिला कबांणां[7] ।
दाणव त्रासत[8] मोर दवाया[9] ।
एकणि[10] मुनि आस्रम[11] मझि आया ॥ ३७१
उपवन[12] मुनि मेल्है सिख इतरै ।
जवन सक्रोध आविया[13] जितरै ।
सभ्रम दिल आस्रमां[14] सिकारा ।
पीडत[15] मुनि कीधा अणपारा ॥ ३७२
मुनि सुणि त्रास धरम महिपत्ती[16] ।
कीधौ विदा कुवर कामत्ती[17] ।
भिड़णि[18] साथ[19] हालिया[20] भयकर ।
दस हजार असवार बहादर[21] ॥ ३७३

---

१ ख ग. छवि । २ ख. नदि । ग तटि । ३ ख ग. चढ़ीया । ४ ख ग. अंराका । ५ ख. ग केकीह । ६ ख ग तण । ७ ख कवाणा । ८ ख सत्रासत । ग त्रास । ९ ख दवाया । १० ख एकण । ग. ऐकण । ११ ख ग. आश्रम । १२ ख ग उपवनि । १३ ख ग आवीया । १४ ग. आसिका । १५ ख ग पीड़ित । १६ ख ग महपती । १७ ख. ग कामती । १८ ख भीड़ण । १९ ख ग साथि । २० ख ग हालीया । २१ ख वाहादर ।

---

३७० रवद – मुसलमान । पिराग – प्रयाग । छिब – सुन्दरता । रीधा – मोहित हो गये । गग – गंगा नदी । तदि – तव । दीधा – दिये । जवन – यवन, मुसलमान । सवज – हरा, हरी घास या हरी घासके रगका । असि – घोडा । चहुवै – चारो । एराका – ईराक देशोत्पन्न घोडे ।
३७१ केकाणा – घोडो । कुंजर – हाथी । चिला – प्रत्यचा । एकणि – एक । मझि – मध्य, मे ।
३७२ सिख – शिष्य । इतरै – इतनेमे । जवन – यवन, मुसलमान । जितरै – जव तक । सभ्रम – भ्रमित । पीडत – पीडित, कष्टपूर्ण । कीधा – किये । अणपारा – असीम ।
३७३ त्रास – सकट । महिपत्ती – राजा । कीधौ – किया । विदा – प्रस्थान । कुवर – कुमार । कांमत्ती – कातिवान । भिडणि – युद्ध करनेको ।

लाल वदन अंबर सिर लागौ ।
विक्रमादित जवनाहू वागौ ।
विखम धमक साबळ खग वाहै ।
मुनि छुडाय लीधा पल माहै ॥ ३७४

हुवै निहाव घाव भड हाका ।
आगि झड़ै पडता ऐराका ।
किलम हजार पाच अनि कटिया[1] ।
अलीहुसेन खगा आछटिया[2] ॥ ३७५

हर क्रत[3] हार मुनद[4] क्रत हासै ।
पडिया[5] जुध कमधज पनरासै[6] ।
सेर उवर[7] दारण घण सारा ।
धुबिया खिजे विगुण[8] खग धारा ॥ ३७६

वव[9] नयण विक्रम गजवोहा[10] ।
लागा लडै असीचत्र लोहां ।
धारण चित सिरदार नजर धरि ।
असि तौरियौ[11] सेरखां ऊपरि ॥ ३७७

---

१ ख ग कटीया । २ ख ग. आछटीया । ३ ख. ग कृत । ४ ख ग मुन्यद । ५ ख ग पडीया । ६ ख पदरासै । ७ ग उवर । ८ ख विगृण । ९ ख वंव । १० ख गजवोहां । ११ ख तोरीयौ । ग तोरीयौ ।

---

३७४ अवर – आसमान । जवनांहू – मुसलमानोसे । वागौ – जा भिडा । विखम – विपम, भयकर । धमक – प्रहार । सावळ – एक प्रकारका भाला । खग – तलवार । लीधा – लिये । पल माहै – क्षरण भरमे ।

३७५ निहाव – प्रहार । भड – योद्धा । हाका – आवाज । अगि – अग्नि । ऐराका – घोडो । किलम – मुसलमान । अनि – अनी, सेना । कटिया – कट गये । खगा – तलवारो । आछटिया – प्रहार किया, वार किया ।

३७६ हर – महादेव । क्रत – कृते, लिये । हार – यहा मुडमालाके लिये आया है । मुनद – मुनीन्द्र, महर्षि नारद । हासै – हंसा । धुबिया – अत्यन्त क्रोधमे हुए । खिजे – क्रोध किया । विगुण – दुगना ।

३७७ वव – लाल, रक्तपूर्ण । गजवोहा – गज-व्यूह, हाथी-समूह । असीचत्र – चौरासी । लोहा – शस्त्रो । तौरियौ – घोडेको भौंका त्वरित गतिमे हमला किया ।

चढतां धकै बाण[1] कसि 'चदर' ।
ध्रवियौ[2] असुर[3] सीस पड़ियौ[4] धर ।
उतमग मार मार दाखै इम ।
त्रिजड उरड वाहै[5] धड तिम तिम ।। ३७८
असि सेरराहूत भिडियौ[6] असि ।
असमर[7] कमध आछटी[8] ऊससि ।
झट खग खान सीस असि झडियौ[9] ।
पमग सहेत सेरखां पडियौ[10] ।। ३७९
धर[11] तदि[12] पडे[13] पछट खगधारा ।
उतमग अग्रक्रम[14] सोळ अठारा ।
सवा पहर राजा हरि सेवे ।
दूजौ जितै अरज नह देवै ।। ३८०
वीता[15] पहर[16] कवर विग्रहियौ[17] ।
करि वह[18] रुदन हेक भ्रत[19] कहियौ[20] ।

---

१ ख वाण। २ ख ग ध्रवीयौ। ३ ख असुरि। ४ ख. ग पडीयौ। ५ ग वाहै। ६ ख ग भिडीयौ। ७ ग असिमर। ८ ख ग आछटीयौ। ९ ख ग झडीयौ। १० ख ग पडीयौ। ११ ख ग धड। १२ ख नदि। १३ ख पछे। १४ ख. ग. अग्रिक्रम। १५ ग. बीता। १६ ख ग पहोर। १७ ग वीग्रहीयौ। १८ ख. वहौ ा. वही। १९ ख ग भृत। २० ख. ग कहीयौ।

---

३७८. ध्रवियौ – मारा, सहार किया। बाण कसि चदर – चन्द्रवाण कस कर। असुर – यवन। उतमंग = उत्तमाङ्ग – शिर, मस्तक। दाखै – कहता है। इम – इस प्रकार। त्रिजड – तलवार। उरड – उलट-उलट कर दाए बाए। धड – विना शिरका शरीर। तिम तिम – तैसे-तैसे।

३७९ असि – घोडा। भिडियौ – भिडा, टक्कर ली। असमर – तलवार। आछटी – वार किया। ऊससि – जोशमे आकर। झडियौ – वीरगति प्राप्त हुआ। पमग – घोडा। सहेत – सहित। पडियौ – वीर गति प्राप्त हुआ।

३८० पछट – प्रहार कर। दूजौ – दूसरा। जितै – जब तक।

३८१ वीता – व्यतीत होने पर। कवर – कुमार। विग्रहियौ – युद्ध करता हुआ वीरगति प्राप्त हुआ। करि – कर के। वह – वहुत। रुदन – करुणा-क्रन्दन, विलाप। हेक – एक। भ्रत – भृत्य, नौकर। कहियौ – कहा।

धरपति सुणि तिल सोच न धारै ।
विध[1] करि[2] पांण[3] समस्या बारै ॥ ३८१
दासातन अतराइ[4] न दोधी ।
करतौ सदा सेव तिम कीधी ।
सझि सेवा दळ सझे सकाजा ।
रण[5] कजि सस्त्र कसे तन राजा ॥ ३८२
हरचंद[6] वीर मुनंद[7] हडहडिया ।
खेत समर साम्हा असि खडिया ।
पुर बाहिर[8] इकवार वधूपुर[9] ।
आया उठै नृपति[10] दळ आतुर ॥ ३८३
घण जोबन[11] धन रूप घरे[12] घरि ।
स्रवचै सिरै चद्रमति सुदरि ।
उण ग्रह अग्र[13] तन कनक अरोगो ।
जाजुळमान[14] तपै इक जोगी ॥ ३८४
भूपति हसै देखि सिध[15] भेसा[16] ।
असि कसि वाग कीध आदेसा[17] ।

---

१ ख ग. विधि । २ ख ग कर । ३ ख ग पाणि । ४ ख ग अतराय । ५ ग रिण । ६ ग हरचद्र । ७ ख ग मुन्यद । ८ ख. वाहिर । ग वाहिरि । ९ ग वधूपुर । १० ख ग नृपत । ११ ख ग जोवन । १२ ख. घरि घरि । ग घर घरि । १३ ख ग अग्रि । १४ ख ग जाजुल्यमांन । १५ ख ग अध । १६ ख ग. भेषं । १७ ख आदेस । ग. आदेशं ।

---

३८१ धरपति – राजा ।

३८२ दासातन – दासत्व । अतराइ – विघ्न, वाधा । दीधी – दी । सदा – नित्य, सदैव । सेव – सेवा । तिम – वैसे ही । कीधी – की । सझि सेवा – सेवा कर के । दळ – सेना । सझे – तैयार किया । रण – युद्ध । कजि – लिये ।

३८३ वीर – युद्धप्रिय भैरव । मुनद – मुनीन्द्र, नारद मुनि । हडहडिया – अट्टहास किया, हँसे । खेत – युद्धस्थल । समर – युद्ध । साम्हा – सम्मुख । असि – घोडा । खडिया – चलाये । आतुर – शीघ्र ।

३८४. स्रवचै – सबके । सिरै – श्रेष्ठ । उण – उस । ग्रह – घर । अग्र – अगाडी । जाजुळमान – जाज्वल्यमान, तेजस्वी । तपै – तपस्या करता है ।

३८५ असि – घोडा । कीध – किया । आदेसां – नमस्कार, प्रणाम ।

हसतौ नृप[1] देखे सिध हसियौ[2] ।
विभ्रम[3] ताम नृपति[4] उर वसियौ[5] ।। ३८५
कहियौ[6] नृप सिधहू जोडे कर ।
ग्रायस[7] हसे चौक किण[8] ऊपर ।
इम सुणि सिध नृपहूत उचारे ।
पहल हसे नृप केणि प्रकारे ।। ३८६
सुणे हास्य विध[9] कहै नरेसुर ।
गनिका ग्रेह ग्रासण जोगेसुर ।
वनखड गिर भगर नह वसियौ[10] ।
हू ग्रौ देख[11] कतूहळ हसियौ[12] ।। ३८७
धरि चित खिमा दोस मत धारौ ।
ग्राप हसणचौ ज्वाव उचारौ ।
सुणे नृपति हित वात मुहाणी ।
विधिवत कहण लगौ सिध वाणी ।। ३८८
सासत्र[13] विध सतसग समाजा ।
राजनीति जाणै स्रब[14] राजा ।
पह[15] तू सदा भेख पद[16] पूजै ।
दइव[17] विना उपदेस न दूजै ।। ३८९

१ ख ग नृप । २ ख. ग हसीयौ । ३ ग वीभ्रम । ४ ख ग. नृपति । ५ ख ग वसीयौ । ६ ख ग कहीयौ । ७ ख ग ग्राइस । ८ ख ग किणि । ९ ख ग. विधि । १० ख ग. वसीयौ । ११ ख ग देषि । १२ ख. ग हसीयौ । १३ ख सास्त्र । १४ ख सव । ग श्रब । १५ ख ग पहो । १६ ख ग षट । १७ ख ग दईव ।

३८५ विभ्रम – भ्रम । तांम – उस ।
३८६ कहियौ – कहा । सिधहू – सिद्धसे । जोडे कर – करबद्ध हो कर । ग्रायस – सिद्ध, सन्यासी । चौक – भूल चूक, ग्राश्चर्य । नृपहूत – राजासे । केणि – किस ।
३८७ हास्य विध – हँसनेका कारण । नरेसुर – नरेश्वर, राजा । गनिका – वेश्या । ग्रेह – घर । गिर – पर्वत । भगर – भाडी । हू – मै । ग्रौ – यह । कतूहळ – कौतूहल ।
३८८ खिमा – क्षमा । हसणचौ – हँसनेका । ज्वाव – जवाब, उत्तर । मुहाणी – सुहाई ।
३८९ स्रब – सव, सर्व । पह – राजा । भेख – सन्यास ।

रौद्रव दुख सुत विघन सुणे रिख[1] ।
खडित[2] सेव कीध हेकणि[3] पख[4] ।
इसौ वमेक सद्रढ[5] मत ऐहौ[6] ।
जोगेसुरा[7] दुलभ अति जेहौ ।। ३६०

तू स्रब[8] जाण[9] राज प्रभुताई ।
अजे अतीत परख नह आई ।
दिब[10] नयणा चेतने[11] दरसियौ[12] ।
हू नृप[13] तूझ[14] देखि इम हसियौ[15] ।। ३६१

इम सुणि नृप छोडे अस्व आयौ ।
लगि सिध पावा सोस लगायौ ।
आयस गिणे भूप आपाणौ ।
पावा[16] सीस ताम परवांणौ ।। ३६२

धू परि आड वभूत[17] तिलक धरि[18] ।
कदळी पत्र दीध राजा करि ।
जोय खेत्र[19] सिर धड जोडावौ ।
इण पत्र छिवे[20] कुवर ऊठावौ[21] ।। ३६३

---

१ ग रिण। २ ख ग पडित। ३ ख ग हेक। ४ ख. ग पिण। ५ ख ग सदिढ़। ६ ख ऐहौं। ७ ख ग जोगेस्वरां। ८ ख सब। ९ ख जाणि। १० ख ग दिव्य। ११ ख चेत। ग चेतन। १२ ख ग दरसीयौ। १३ ख ग नृप। १४ ख. तूझ। ग तुझ। १५ ग हसीयौ। १६ ख पजौ। ग पंजो। १७ ख ग भभूति। १८ ख परि। १९ ख ग खेत। २० ख ग छिवे। २१ ग. उठावौं।

---

३६०. रौद्रव – भयंकर। विघन – विघ्न, बाधा। सेव – सेवा, अर्चना। हेकणि – एक। इसौ – ऐसा। वमेक – विवेक। सद्रढ – सुदृढ, दृढ। मत – विचार। ऐहौ – ऐसा। जोगेसुरां – योगीश्वरो। दुलभ – दुर्लभ। जेहौ – जैसा।

३६१ स्रब – सर्व, सब। जाण – जानने वाला। अजे – अभी तक। अतीत – सन्यासी। परख – परीक्षा। दिब – दिव्य। नयणा – नेत्रो। दरसियौ – दिखलाई दिया। हू – मैं। तूझ – तुझको। हसियौ – हँसा।

३६२ अस्व – घोडा। आयस – महात्मा, सन्यासी। आपाणौ – अपना। पावा – चरणो।

३६३ धू परि – शिर पर, भालमे। आड – आडा तिलक। वभूत – सन्यासीके अग्नि-कुडकी भस्मी, विभूति। कदळी – केला। पत्र – पान। दीध – दिया। करि – हाथमे। खेत्र – युद्ध-भूमि।

इम कहि धरे गोळ घड आगै ।
ले वभूत तिण[1] लोह न लागै ।
तिलक आड जोधा स्रब[2] तांणै ।
जोध सक्रोध वणे सिध जाणै ।। ३६४
साधि[3] अनेक जवन सत्रपतिनू ।
छडी गुलाब दीध छत्रपतिनू ।
जावौ विजै करौ राजा जुध ।
इण विध[4] मति झालौ अनि आवध ।। ३६५
इक धारण तो जिम चित आवै ।
पूजै भेख जिकौ वर पावै ।
सुणि नृप करे प्रणाम सकाजा ।
रैंवत चढि आए[5] जुधि राजा ।। ३६६
ऊमर ताम सामुहौ आए ।
विखम सरां पावस वरसाए[6] ।
छिवि छिवि सर तूटै इम छाजै ।
भाखर सिखर काच जिम भाजै ।। ३६७
बहु[7] करि कोप लोप[8] झड बांणा[9] ।
आडै लोह मिळै असुरांणा ।

---

१ ख ग तिणि । २ ख सव । ३ ग साध । ४ ख विधि । ग विणि । ५ ग आऐ । ६ ग. वरसाऐ । ७ ख. वहौ । ग वहौ । ८ ग लोपि । ९ ख वाणां ।

---

३६४. आड – आडा, त्रिपुण्ड्र तिलक विशेष ।

३६५ जवन – यवन, मुसलमान । दीध – दी । छत्रपतिनूं – राजाको । झालौ – धारण करिये । अनि – अन्य । आवध – आयुध ।

३६६ रैंवत – घोडा । जुधि – युद्धमे ।

३६७ सामुहौ – सम्मुख, सन्मुख । विखम – विषम, भयकर । सरां – बाणो । पावस – वर्षा । सर – बाण । भाखर – पर्वत । जिम – जैसे ।

३६८. झड – वर्षा । असुराणां – यवन, मुसलमान ।

कमधज लोह करै जवनां करि ।
पड[1] वढि[2] पड़ै तांत[3] सावण[4] परि ॥ ३९८

त्रजड[5] जवन वाहे[6] सुजि तूटै ।
छाट[7] एक रततणी न छूटै ।
घण खळ नृप[8] छटिका करि घावै ।
इद्र वजर[9] जिमि[10] खळां उडावै ॥ ३९९

उवर[11] आदि राजा पाडे अरि ।
किलम हजार गुलाब छड़ी करि ।
झट खग जवन कवट धड़ झाड़े ।
पाच हजार रावतां पाडे ॥ ४००

एक सहस मुखि त्रिणा अधारै ।
वचिया[12] जवन भूप भड बारै[13] ।
रण करि फतै त्रवक डड रोड़े ।
जोए कुवर सीस धड़ जोडे ॥ ४०१

ले कदळी पत्र अंगि लगाए[14] ।
जिम ऊठे[15] तिम[16] नीद जगाए[17] ।

---

१ ख ग यड । २ ग वढ़ि । ३ ख. तंत । ४ ग सावण । ५ ख ग त्रिजड । ६ ग वाहै । ७ ख छांण । ८ ख ग नूप । ९ ग. वज्र । १० ख ग जिम । ११ ग उंमर । १२ ख वचीया । ग वचीया । १३ ख ग वारे । १४ ग लगाऐ । १५ ख. ग उठे । १६ ख जिम । १७ ग जगाऐ ।

---

३९८ पंड – शरीर । वढ़ि – कट कर । सावण – सावुन ।

३९९ त्रजड़ – तलवार । वाहे – प्रहार कर । सुजि – वह । छांट – छींटा । रततणी – खूनकी । घण – वहुत ।

४००. पाड़े – सहार कर, मार कर । अरि – शत्रु । किलम – मुसलमान । झट – प्रहारा । खग – तलवार । कवट – (?) । झाड़े – काट दिये । रावतां – योद्धाओ । पाडे – गिरा दिये, मार दिये ।

४०१ मुखि – मुखमे । त्रिणा – तिनका । त्रंवक – नगाड़ा । डंड – डडा । रोड़े – वजा कर । जोडे – जोड कर ।

४०२ कदळी – केला । अगि – शरीर ।

वहता रगत देखि खळ वाढ़े[1] ।
चद्रप्रहास ग्रहै धक[2] चाढ़े ॥ ४०२
कवर[3] देखि खत्रवट[4] अधिकाई ।
सुपह रीझ[5] सब कथा सुणाई ।
सुण[6] पित वात कुवर कहियौ[7] सति ।
मो सिध दरस कराजे महपति[8] ॥ ४०३
मिळ सुत सुभड जूथ जुत महपति ।
सिध[9] आसण[10] आए[11] तिण सायति ।
असिहूं क्रम चत्र[12] दस ऊतरिया[13] ।
धू[14] नमाय पावा सिध धरिया[15] ॥ ४०४
सुतपति[16] सिर सिध हाथ सधारे ।
एम[17] प्रसन[18] ह्वै वचन[19] उचारे ।
*असि तजि बिहू तठै ऊतरिया[20] ।
भूमौ दरस हेत क्रम भरिया[21] ॥ ४०५

---

१ ग. वाढे । २ ख ग धष । ३ ख ग. कुवर । ४ ग. षत्रवटि । ५ ख रीझि । ६ ख ग. सुणि । ७ ख ग. कहीयौ । ८ ख ग महपति । ९ ग सिधि । १० ख. ग. आश्रम । ११ ग आऐ । १२ ख. ग चक्र । १३ ख ग ऊतरीया । १४ ख. धूत । १५ ख ग धरीया । १६ ख ग सुरपति । १७ ख. एव । ग ऐम । १८ ख. ग वचन । १९ ख ग प्रसन ।

*ये चार पक्तिया ख प्रतिमे नही हैं ।

२० ग ऊतरीया । २१ ग भरीया ।

---

४०२ रगत – रक्त, खून । खळ – शत्रु । वाढे – काट दिये । चंद्रप्रहास – तलवार । धक – क्रोध, जोश ।

४०३ खत्रवट – क्षत्रियत्त्व, शौर्य । अधिकाई – विशेषता । सुपह – राजा । रीझ – प्रसन्न हो कर । पित – पिता । मो – मुझको । दरस – दर्शन । महपति – राजा ।

४०४ सुभड – योद्धा । जूथ – समूह, दल । जुत – युक्त । तिण – उस । सायति – समय । असिहू – घोडेसे । क्रम – पैर, चल कर । चत्र – चारो । धू – शिर । पावां – चरणोमे ।

४०५. सुतपति – पिता पुत्र । प्रसन – प्रसन्न । ह्वै – हो कर । असि – घोडा । बिहूं – दोनो । तठै – वहा । ऊतरिया – उतरे । भूमौ – भूमि पर । दरस – दर्शन । हेत – लिये । क्रम – कदम, चरण ।

नृप[1] होसी तो जोड नरेहण ।
इला नृपति[2] तो वंस[3] अरेहण ।*
वधसी[4] कुळ वह[5] कीत[6] वडाई[7] ।
अस[8] मरदन खत्रवट[9] अधिकाई ॥ ४०६

जवन अनेक वैर धक जुडसी ।
मरसी तिकौ काय जुध मुडसी ।
असुर अनेक लागि धक आसी ।
जुधि जुधि तिकै प्रळै हुइ जासी ॥ ४०७

सहस गुणा लडसी घण[10] सारां ।
भिडतौ[11] पण[12] पड़सी गज भारां ।
चक्रवत[13] तो पीढी लग चवदा ।
रवदां खय करसी खैरवदा ॥ ४०८

मुजस तूझ वदसी[14] वह[15] साखै ।
अह नांम गोरख इम[16] आखै ।
जोए[17] नृप[18] वंदण[19] किय[20] जितरै ।
अंतरध्यांन हुवौ सिध इतरै ॥ ४०९

---

१ ग नृप । २ ग नृपत । ३ ख वंत । ४ ग ववसी । ५ ग वहौ । ६ ग कृत । ७ ग वडाई । ८ ख ग असि । ९ ख ग पत्रवट । १० ख भड़ । ११ ख ग. भिडितौ । १२ ख पडग । १३ ख. ग चक्रवति । १४ ख वधसी । ग वधसी । १५ ख वहौ । ग वहौ । १६ ग ईम । १७ ग. जोऐ । १८ ख ग. नृप । १९ ग वदण । २० ख. ग. कीय ।

---

४०६ नरेहण – पवित्र, निष्कलक, राजा । अरेहण – अरियोका नाश करने वाला, योद्धा, वीर । अस – घोडा । खत्रवट – क्षत्रियत्व, शौर्य । अधिकाई – अधिकता, आधिक्य ।

४०७ जवन – मुसलमान । धक – जोश, क्रोध । मरसी – मरेगा । तिकौ – वह । काय – या, अथवा । मुड़सी – मुड जायेगा । जुधि – युद्धमें । प्रळै – नाश । जासी – जायेंगे ।

४०८ सारां – तलवारों । गज – हाथी । भारां – समूह । चक्रवत – चक्रवर्ती । पीढ़ी – पुस्त । लग – तक । चवदा – चौदह । रवदां – मुसलमान । खय – नाश । करसी – करेंगे । खैरवदा – यवनोका नाश करने वाले, राठौडोके प्रमुख तेरह वशोंमें एक वश ।

४०९ तूझ – तेरा । वदसी – बढेगा । वह – बहुत । अहं – मैं । आखै – कहता है । जोए – देख कर । वंदण – नमस्कार । जितरै – जब तक । हुवौ – हो गया । इतरै – इतनेमें ।

जपियौ[1] सिध जिण विध[2] जुध जीता ।
वधै[3] वस[4] खैरौद वदीता ।
असुर हणै व्रद[5] वणै[6] अथागा ।
वर सिधकरि खैरोदा[7] वागा ॥ ४१०

राजा पूंजरै तेरमा पुत्र चंदरौ वरणण—

तेरहमौ[8] सुत पुज तवीजै[9] ।
वळ दत खग जिण[10] जोड न बीजै[11] ।
उभै गयद बळ[12] तेज अमावौ ।
चद नाम प्रथमी[13] जस चावौ ॥ ४११
धरम बभ[14] लघु भ्रात हेत धरि ।
कासीराज तेणि दीधौ करि ।
हित देखे नृप[15] राग हुलासी ।
करै विलास इद्र जिम कासी ॥ ४१२
दुतिय[16] अनग रूप दरसांणा ।
पाण पाच दीरघ निज पाणा ।
बाह[17] अजान[18] तेज अतुळीबळ ।
हर चख झळ मधि जेठ हळाहळ[19] ॥ ४१३

---

१ ख ग जपीयौ । २ ग. विधि । ३ ग वधे । ४ ग बस । ५ ग व्रद । ६ ग वणे । ७ ख ग वैरवदा । ८ ख तेरहौ । ९ ख नवीजै । १० ख ग तिण । ११ ख नवीजै । ग नावजै । १२ ख वलै । १३ ख ग प्रिथमी । १४ ख वभ । १५ ख ग नृप । १६ ख दुतीय । ग दूतीय । १७ ख वाह । १८ ख ग आवन । १९ ख ग झळाहल ।

---

४१० खैरौद – राठौडोके तेरह प्रमुख वशोमे से एक वश । वदीता – प्रसिद्ध, विदित । हणै – नाश करते हैं, सहार करते है । व्रद – विरुद । अथागा – अपार । वर सिधकरि – सिद्धके वरदानसे । वागा – प्रसिद्ध हुए ।

४११ तवीजै – कहा जाता है । दत – दान । खग – तलवार । जिण – जिस । जोड – वरावर । बीजै – दूसरेके । अमावौ – अपार, असीम । प्रथमी – पृथ्वी । चावौ – प्रसिद्ध ।

४१२. राग – प्रेम ।

४१३ दुतिय – द्वितीय । अनग – कामदेव । दरसांणा – दिखाई दिया गया । वाह आजांन – आजानुवाहु । अतुळीबळ – अतुल्य वलशाली ।

वारण सिर तोड़ै खग वकी[1] ।
ताणै स्रगणि[2] अढ़ारह[3] टंकी ।
ताणै तठी जोम खळ तूटै ।
फील पांच एकणि[4] सर[5] फूटै ॥ ४१४

अठताळीस[6] तोड़े कर एकण[7] ।
मुदगर अठताळीसतणा मण ।
आगै जोम पराक्रम[8] इसडौ ।
जुग[9] द्वापुरि[10] जोधां मझि जिसडौ ॥ ४१५

जोगी नेमनाथ सेवँ जिण[11] ।
तेरह रती दीध पारद तिण ।
भखियौ[12] पत्र मधि[13] ईसम भारां ।
सात दिवस सामल[14] घण सारा ॥ ४१६

वपु दस गुणै जोर नृप[15] वधियौ[16] ।
सौ गुण अनंत[17] पराक्रम सधियौ[18] ।
आगाहूत[19] खुधा त्रीखण[20] अति ।
भोजन करै दसगुणौ भूपति ॥ ४१७

---

१ ग वंकी । २ ख ग श्रृंगणि । ३ ग अढ़ार । ४ ग ऐकणि । ५ ग. सरि । ६ ग अठतालिस । ७ ग ऐकण । ८ ख. क्रम । ९ ख ग जुगि । १० ख ग द्वापुर । ११ ख तिण । १२ ख ग भषीयौ । १३ ग. मध । १४ ख सामिलवा । ग सामिल । १५ ख ग. नृप । १६ ख वधीयौ । ग वधीयौ । १७ ख ग अनग । १८ ख ग. सधीयौ । १९ ख आगहूतु । २० ख ग त्रीछण ।

---

४१४ वारण – हाथी । तोड़ै – काटता है । वंकी – वांकुरी । तांणै – खींचता है । स्रंग्रणि – धनुष । अढ़ारह टकी – अठारह टंकी या टांकका धनुष । तठी – उस ओर । जोम – शक्ति, बल । तूटै – नाश होता है, टूटता है । फील – हाथी । एकणि – एक । सर – वाण ।

४१५. मुदगर – मुगदर । आगै – पहिले, पूर्व । जोम – जोश । इसडौ – ऐसा । मझि – मध्य, मे । जिसडौ – जैसो ।

४१६ भखियौ – खाया, भक्षण किया । दिवस – दिन ।

४१७ वपु – शरीर । वधियौ – बढा । सधियौ – सिद्ध हुआ । आगाहूंत – पहिलेसे । खुधा – भूख । त्रीखण – तीक्ष्ण, तेज, प्रदीप्त ।

आरण[1] करणि[2] रूप अधिकारौ ।
चरै महिख[3] गूदगिरी[4] चारौ ।
मैदा घ्रत[5] मेवा मिसरीरा ।
सौ महखिया[6] भखै नित सीरा ॥ ४१८

ग्यारहसै डड करि[7] अवगाढौ ।
थणकढ पियै[8] दोय मण थाढौ ।
भख अधमण[9] अधमण घ्रत भोगै ।
आमख[10] सेर चौतीस अरोगै ॥ ४१९

पौढै तेण[11] वखत[12] नृप[13] पावै ।
महखी दूध सवामण मावै ।
सौ सौ पांनतणा बीडा सब ।
नित[14] जिण[15] माहि मुसाला जुगनव ॥ ४२०

दे दे पान[16] पान तिण[17] दोळा ।
तिण मझि वरक[18] वोसपंच[19] तोळा ।
तार रहित[20] मघई पत्र ताजा ।
रातिबबंध[21] भखै नित[22] राजा ॥ ४२१

---

१ ख आरण । ग आरणि । २ ख. करण । ३ ख ग महकि । ४ ख ग. गूंदगरी । ५ ख ग घृत । ६ ख. सोमहखीयां । ग. सोमहीयां । ७ ग कर । ८ ख. ग पीवै । ९ ग अनमण । १० ख ग अमख । ११ ख तेणि । १२ ग. वखत । १३ ख ग नृप । १४ ग निज । १५ ग तिण । १६ ख ग पानि पानि । १७ ख ग तह । १८ ख वरक । १९ ग वीस । २० ख ग रहत । २१ ग. रातिववघ । २२ ख. ग. निति ।

---

४१८. करणि – करण, गात्र । चरै – भोजन करता है, खाता है । महिख – भैंसा । गूदगिरी – एक प्रकार का गन्ना । चारौ – भोज्य पदार्थ ।

४१९ महखियां – भैंसें । अवगाढौ – शक्तिशाली, बलवान । थणकढ़ – धारोष्ण । थाढ़ौ – खडा खडा । भख – भोजन । अधमण – आधा मन । घ्रत – घृत, घी । आंमख–आमिष, मास । अरोगै – खाता है ।

४२० महखी – भैंस । मावै – खुराकमे । जुगनव – नौ के दुगुने अट्ठारह प्रकारके ।

४२१ दोळा – चारो ओर । तिण – उस । मझि – मध्य । मघई पत्र – जाति विशेषका पान । रातिबबध – नित्यप्रतिका वधा हुआ साधारण भोजन, रातिब ।

तेज इसौ दीसै झळहळ तन ।
किर[1] तावियौ[2] सोळमौ[3] कचन[4] ।
जोता रूप जोड नह जितरै ।
उदियाचळ[5] असताचळ इतरै ।। ४२२
तिणहिज वार दुतिय[6] छत्रपत्ती ।
करै राज झळहळ क्रामत्ती ।
एक[7] नगर अदभुत दिसि उत्तर ।
पचसठि[8] कोस गिरद तारापुर ।। ४२३
महल निवाण वाग मन[9] मोहै ।
सुरपति तिकर दुवौ पुर सोहै ।
थटपति चाहुवांण[10] तिण थाहर ।
जगत छत्रनांमै जग[11] जाहर ।। ४२४
कुळभूखण तिणरै मुर कम्मर ।
अभैसेन वीरोचन अम्मर ।
दिल मझि नृप[12] अभिलाख न दूजै ।
पुत्री होण काज[13] सिव[14] पूजै ।। ४२५

---

१ ख ग. किरि । २ ख. ग तावीयौ । ३ ख ग सौळिमौ । ४ ग. कांचन । ५ ख. उदीयाचळ । ग. उदयाचळ । ६ ख. ग दुतीय । ७ ग ऐक । ८ पचिसठ । ६ ख ग चित । १० ग चहूवांण । ११ ख. ग. जगि । १२ ख ग. नृप । १३ ख. काजी । ग. काजि । १४ ख शिव ।

---

४२२ इसौ – ऐसा । दीसै – दिखाई देता है । झळहळ – देदीप्यमान । तन – शरीर । किर – मानो । तावियौ – तपाया हुआ । सोळमौ कंचन – सोलह वार तपाया हुआ शुद्ध सोना । जोतां – देखने पर । जोड – वरावर । जितरै – जितनी दूरीमे । उदियाचळ – वह कल्पित पर्वत जिस तरफ सूर्य उदय होता है । असताचळ – वह कल्पित पर्वत जिस तरफ सूर्य अस्त होता है । इतरै – इतनी दूरीमे ।

४२३ तिणहिज – उस ही । वार – समय । दुतिय – द्वितीय । छत्रपत्ती – राजा । झळहळ – देदीप्यमान । क्रामत्ती – काति, दीप्ति । गिरद – पर्वत ।

४२४ निवाण – कुआ, तालावादि जलाशय । सुरपति – इन्द्र । दुवौ – दूसरा । पुर – नगर । थटपति – वैभवशाली, राजा, नृप । थाहर – गढ, स्थान ।

४२५. मुर – तीन । कम्मर – कुमार । अभिलाख – अभिलाषा । काज – लिये ।

मधि खट मास अनै वासुर[1] मुर ।
उमया सहित दीध वर ईसर[2] ।
सकतिहूत कहियौ[3] हसि संकर[4] ।
घरणि धरौ अवतार नृपति[5] घर[6] ॥ ४२६
आखै सकति हसै प्रति - उत्तर ।
हू[7] जामात आप घरि नृपहर ।*
सिव[8] सेवै पुत्र हेत[9] सयाणी ।
पुज नरेसतणी पटराणी ॥ ४२७
अद्विती उवरि आप अस आवौ ।
मो अमि[10] उद्र[11] त्रिपुरा मेलावौ ।
तथासतू कहियौ[12] सिव तारा ।
तत दुहु हुवा[13] अस अवतारा ॥ ४२८
निज दिनहूत मास इक नमै ।
जादिन[14] अद्वती[15] चद जनमैं ।

---

१ ग वासुर। २ ख. ग ईसुर। ३ ख ग कहीयौ। ४ ग सकरि। ५ ख ग नृपति। ६ ख ग घरि। ७ ख ग हौ।

*ख और ग. प्रतिमे यह पक्ति निम्न प्रकार हैं—

हौ जामात आप नृप घरि हर।

८ ख सिवि। ९ ख ग हेति। १० ख ग. अस। ११ ख ग. उद्रि त्रिपुर। १२ ख. ग कहीयौ। १३ ग हुआ। १४ ख जामद। ग जादमि। १५ ख. ग अद्विती।

---

४२६ मधि – मध्य, मे। खट – छ। अनै – और। वासुर – दिन। मुर – तीन। उमया – उमा, पार्वती सहित। दीध – दिया। वर – वरदान। ईसर – शिव, महादेव। सकतिहूत – शक्तिसे, पार्वतीसे। कहियौ – कहा। हसि – हँस कर। घरणि – गृहिणी।

४२७ आखै – कहती है। प्रति-उत्तर – प्रत्युत्तर। हू – मै। जामात – दामाद। नृपहर – राजा। सेवै – सेवा करता है। हेत – लिए। सयांणी – चतुर, सज्जन। नरेसतणी – पुज राजाकी। पटरांणी – पट्ट महिषी।

४२८. मो – मेरा। तथासतू – तथास्तु। तारा – तव।

४२९ इक – एक। नमै – नववा।

सकति रूप अदभुत[1] दुति सज्जे ।
उद्र[2] त्रपुरा[3] परमार[4] उपज्जे[5] ॥ ४२९
पहुप[6] भार दुख जननि न प्रंमै ।
जोगणि असटम[7] वरस जनमै ।
अदभुत[8] तेज रूप ओपती[9] ।
जुध होसी कहियौ[10] जनमती ॥ ४३०
भय भ्रम[11] सोच चकित[12] चित भारी ।
निकटव्रती कहु ईसव-नारो[13] ।
मालम हुई घडी तिण[14] माझळि ।
इचरज वात जगत छत्र आगळि ॥ ४३१
राजा सुणि तेडे राजस्सी[15] ।
जोध मत्री समणी जोतस्सी[16] ।
थटपति चहूहूत मत्र थपियौ[17] ।
जनमती कनिया[18] जुध जपियौ[19] ॥ ४३२

---

१ ख अदभुति । ग अदभूत । २ ख अद्धि । ग उनि । ३ ख ग त्रिपुरा । ४ ख षटमारि । ग परमारि । ५ ग उपजे । ६ ख ग. पहोप । ७ ख अष्टम । ग. अष्टमि । ८ ग अदभूत । ९ ख ग वोपती । १० ख ग कहीयौ । ११ ख क्रम । १२ ख. ग चक्रित । १३ ख ईस्रवतारी । क. इस्टवनरी । १४ ख ग तिणि । १५ ग राजसी । १६ ग जोतसी । १७ ख ग थपीयौ । १८ ख ग कनीया । १९ ख. ग जपीयौ ।

---

३२९ दुति – द्युति । उपज्जे – उत्पन्न हुआ ।

४३० पहुप – पुष्प, फूल । जोगणि – देवी, पार्वती । असटम – आठवाँ । ओपती – चमक-दमक करती हुई, शोभा देती हुई । जनमती – जन्म लेती हुई ।

४३१ भ्रम – शका, सदेह । चकित – चक्रित, आश्चर्ययुक्त । तिण – उस । माझळि – मध्यकी । इचरज – आश्चर्य । छत्र – राजा । आगळि – अगाडी ।

४३२ सुणि – सुन कर । तेडे – बुलाया । राजस्सी – राजर्षि । जोध – योद्धा, वीर । समणी – शकुन शास्त्रज्ञ । जोतस्सी – ज्योतिषी । थटपति – वैभवशाली राजा । चहूहत – चारो ओर । थपियौ – स्थापित किया । जनमती – जन्म लेती हुई । कनिया – कन्या । जपियौ – कहा ।

कारण कवण[1] वयण लघु काया ।
महमा प्रबळ ईस्वरी[2] माया ।
पुणै भडा[3] विगपति धरि पौरस ।
जुध होसी तो विजै हुसी जस ।। ४३३
कर जोडे महिमा[4] हित चित करि ।
मत्रिया[5] अरज करि[6] तिण[7] मौसरि ।
त्रिण जुध करि दूखण उतरावौ ।
जेठी पायक[8] गयद जुटावौ ।। ४३४
धारण सबद[9] दिसा चित धारै ।
अरज त्रितिय[10] सवणिया[11] उचारै ।
दिस पूरब[12] कनिया[13] जुध दाखै ।
भाण उगाण टळै नह भाखै[14] ।। ४३५
पुणै निजूम अरज मत प्राजौ[15] ।
सनि रवि राह केत दन साजौ[16] ।

---

१ ख. ग कमण । २ ख ग ईसुर । ३ ख. पडा । ४ ख ग महमा । ५ ख ग. मत्रीया । ६ ख ग कीध । ७. ख ग तिणि । ८ ख पाय । ९ ख सवद । १० ख ग. त्रितीय । ११ ख सवणीया । ग सावणीया । १२ ख. पूरव । १३ ख ग कनीयां । १४ ख दाखै । १५ ख. प्राझौ । १६ ख ग साझौ ।

---

४३३ कवण – क्या, कौन । वयण – वचन । लघु – छोटी । काया – शरीर । महमा – महिमा । ईस्वरी माया – ईश्वरकी माया । पुणै – कहता है । भड़ा – योद्धाओ । विगपति – विज्ञप्ति, विज्ञापन । पौरस – बल, शक्ति । होसी – होगा । तो – तेरा । हुसी – होगी ।

४३४ कर जोडे – करवद्ध हो कर । तिण – उस । मोसरि – अवसर । दूखण – दोष । जेठी – वडा । पायक – सेवक । गयद – हाथी । जुटावौ – तैयार करो ।

४३५ अरज – प्रार्थना । त्रितिय – तृतीय । सवणिया – शकुन शास्त्रज्ञो । कनिया – कन्या, पुत्री । दाखै – कहती है । भाण उगाण – सूर्योदय । नह – नही । भाखै – कहती है ।

४३६ पुणै – कहते हैं । निजूम – ज्योतिष (नोट–अरबीमे नज्म तारोको कहते हैं । उसी नज्मसे नुजूम, नुजूमदा, नुजूमी शब्द बनते है जिनका अर्थ क्रमश. तारा तथा ज्योतिषी होता है । इसीका अपभ्रंश शब्द निजूम कविने प्रयोग किया है ।) मत – राय । प्राजौ (झौ) – जवरदस्त । सनि – शनिश्चर । रवि – सूर्य । राह – राहु । केत – केतु । साजौ – साथ, एकत्र ।

लिखिया[1] वडा ग्रंथ इम[2] लेखा ।
विघन टळै पुनि किया विसेखां ॥ ४३६
चहुवा इम चहुमत्र उचारै ।*
पह[3] साभळि निज महल[4] पधारै ।
बूझै[5] राजलोक मुर वीजै[6] ।
करै अरज मन[7] ह्वै सुजि कीजै ॥ ४३७
जदि नृप[8] कहै सुता ले जावौ ।
उरवी[9] रध्र मगन करि आवौ ।
कनिया[10] ग्रहे हालिया किंकर[11] ।
वदै अरज प्रोहित मेधावर ॥ ४३८
पूजै सिव वरहू नृप पाई ।◎
कनिया हतण अजोग्य कमाई ।
अनुचित काज न कीजै ऐहौ[12] ।
जुध नृप उचित काज तौ[13] जेहौ[14] ॥ ४३९

---

१ ख ग लिखीया । २ ग इण । *ख तथा ग प्रतियोके अनुसार यह पक्ति निम्न प्रकार है—

चहुवा इम मत्र चहू उचारे ।

३ ख ग पौहौ । ४ ख. महलि । ग महिल । ५ ख बूझै । ६ ख ग वीजै । ७ ख. ग. मनि । ८ ख ग नृप । ९ ख ग उरवी । १० ख कनीया । ११ ख. ग क्यकर । ◎ख. प्रति यह पक्ति मे निम्न प्रकार है—

पूजे शिव नृप हू वर पाई ।

१२ ख ग. एहौ । १३ ग तो । १४ ग जेहो ।

---

४३६ लिखिया – लिखे है । इम – इम । विघन – विघ्न । पुनि – फिर । विसेखा – विशेष वात ।

४३७ चहुवां – चारो ओर । पह – राजा । सांभळि – सुन कर । बूझै – पूछता है । राजलोक – राणियो । मुर – तीन । सुजि – वह । कीजै – कीजिये ।

४३८ जदि – जव । सुता – पुत्री । उरवी – भूमि, पृथ्वी । रध्र – छेद, गड्ढा । मगन करि आवौ – गाड कर आ जाओ । कनिया – कन्या, पुत्री । हालिया – चले । किंकर – दास । वदै – कहता है । मेधावर – बुद्धिमान, मेधावी ।

४३९ वरहू – वरदानमे । हतण – मारना । अजोग्य – अयोग्य । कमाई – कर्म, कार्य । ऐहौ – ऐमा ।

पडिया[1] जुध प्रथमी[2] जस पावैं ।
कनिया हतण अजोग्य कहावै ।
हृद नृपनीति अरज किय[3] प्रोहित[4] ।
भावी वस[5] मांनी नहि भूपति ॥ ४४०
कनिया[6] भोमि विवर[7] लघु काया ।
आयस जेम दास धरि[8] आया ।
वदियौ[9] वळि धर मगन[10] बाळ[11] वय[12] ।
जय मम वर, मम पिता पराजय ॥ ४४१
कथ सुणि अचभ धाविया[13] किंकर[14] ।
जोडे कर कीधी[15] नृप[16] जाहर ।
भ्रमचित सोच वात अणभाई ।
महपति[17] कनिया फेर[18] मगाई ॥ ४४२
काढी धर खोदे मुळकंती ।
भूलै कनक तणै भूलती ।
आणी भूला सहित उठाए[19] ।
परगह मत्री अचभ नृप[20] पाए[21] ॥ ४४३

---

१ ग पडीया । २ ख. ग प्रिथमी । ३ ख ग कीय । ४ ख. प्रोहिति । ग प्रौहित । ५ ख वसि । ग बसि । ६ ख ग. कनीया । ७ ग बिबर । ८ ग. घर । ९ ख वदीयौ । ग. वदीयौ । १० ख ममन । ११ ख. वाळ । १२ ख. बय । १३ ख ग धावीया । १४ ख ग क्यकर । १५ ख दीधी । १६ ख ग नृप । १७ ख महिपति । १८ ख ग फेरि । १९ ग उटाऐ । २० ख ग नृप । २१ ग पाऐ ।

---

४४० पडिया जुध – युद्धमे वीर गति प्राप्त करने पर । प्रथमी – भूमि, ससार । हतण – हत्या करना, मारना । अजोग्य – अयोग्य ।

४४१ भोमि – भूमि । विवर – रध्र, गढ्ढा । आयस – आज्ञा । जेम – जैसा । वदियौ – कहा । वळि – फिर । धर – भूमि । मगन – दफनाना क्रिया, या भाव । बाळ-वय – बाल्यावस्था । मम – मेरा । वर – पति ।

४४२ कथ – शब्द, वृत्तान्त । सुणि – सुन कर । अचभ – आश्चर्ययुक्त । धाविया – दौडे । किंकर – दास । जोडे कर – करवद्ध हो कर । कीधी – की । जाहर – प्रकट । अणभाई – अप्रिय । महपति – राजा ।

४४३. मुळकती – हँसती हुई । भूलै – भूलेमे । कनक – सुवर्ण, सोना । भूलंती – झूलती हुई । अचंभ – आश्चर्य । परगह – परिग्रह, नौकर-चाकर ।

तदि स्रव छभा कहै नृप[1] तिणनू[2] ।
अविवाहिता राखिजै इणनू[3] ।
बोलै[4] कुदर मत्री पडित बुध[5] ।
जो वर[6] हुसी त फतै हुसी[7] जुध ॥ ४४४
अनि सुणि कोइक[8] वरण नृप आसी ।
पांण - ग्रहण पहिला अत[9] पासी ।
जिणसू लड़ण सीम धर जावां ।
अस्त्र सस्त्र करि सीस उडावा ॥ ४४५
खितपति सुणे अधिक हरखाणौ ।
ठीक वात निहचौ[10] ठहरांणौ ।
*जपियौ[11] मधि कनिया[12] ले जावौ ।
करि रछिया[13] पय पान करावौ* ॥ ४४६
उमर वरस[14] एकादस आई ।
अठै सुणो नृप[15] चद्र अवाई ।
सुणतां मात्र कूच नृप सधियौ[16] ।
वेल समुद्र[17] जेम दळ वधियौ[18] ॥ ४४७

---

१ ख. ग. नृप। २ ख तिणनु। ३ ख इणनु। ४ ख वोले। ५ ख वुध। ६ ख. घर। ७ ख ग. होसी। ८ ख कोई। ९ ख ग. मृत। १० ग नहचौ। ११ ग जपीयौ। १२ कनीयां।

*ये पक्तिया ख. प्रतिमे नही है।

१३ ग रिछीया। १४ ग. वग्स। १५ ख ग नृप। १६ ख सवीयौ। ग सवीयौ। १७ ख ग समंद्र। १८ ग. वधीयौ।

---

४४४ तदि – तव। स्रब – सव। छभा – सभा। इणनूं – इसको। बुध – विद्वान्। वर – पति, वरदान। हुसी – होगी।

४४५ अनि – अन्य। वरण – पाणिग्रहण करनेको। पांण – पाणि। अत – मौत।

४४६ खितपति – राजा। हरखाणौ – हर्षित हुआ। निहचौ – निश्चय। ठहराणौ – ठहराया गया। जपियौ – कहा। मधि – अन्त पुरमे। रछिया – रक्षा। पय पान – दूध पिलाना।

४४७ अवाई – खबर, सन्देश। सधियौ – सजा, तैयारीकी। वेळ – तरग, हिलोर। जेम – जैसे। वधियौ – बढा।

केजिम सिलह सस्त्र[1] अग[2] कसिया[3] ।
असी सहस आवध[4] ऊससिया[5] ।
वपि केसरिया[6] साज वणाया ।
उभै सहस सिधुर धुज[7] आया ॥ ४४८

हुतभुक[8] सस्त्र धनुख धर हाथै ।
सहस पचास पायदळ साथै ।
फबि[9] बिस[10] सहस[11] गयद[12] धज फरहर ।
धरै[13] महौरि वि सहस वजित्र[14] धर ॥ ४४९

राजा सम गज धुज राजारै ।
अडसठ[15] सुकवि विरद उच्चारै[16] ।
बह[17] धुर धमळ जूट बहु[18] बेलै[19] ।
पाच हजार तोप गज पेलै ॥ ४५०

भिडज जूथ[20] बिजई[21] भाराथै[22] ।
सहस अठार रहकळा साथै ।
धिख चख सुतर भार धारूदा ।
वह[23] सामान सकट बारूदा ॥ ४५१

---

१ ग सस्त्र । २ ग अगि । ३ ग कसीया । ४ ख ग आवधुज । ५ ख ग ऊससीया । ६ ग केसरीया । ७ ख धुन । ८ हूतभुका । ९ ख फवि । १० ख ग विस । ११ ख ग सहस । १२ ख. ग गयदा । १३ ख ग धरै । १४ ख ग. वाजित्र । १५ ख. ग अडसठि । १६ ख ऊचारे । ग उचारे । १७ ख वहौ । ग वहौ । १८ ख. वहौ । ग वहौ । १९ ख वलै । २० ख ग जूप । २१ ख ग विजई । २२ ख ग भाराथे । २३ ख वहौ ।

---

४४८. केजिम – (?) । सहस – सहस्त्र । ऊससिया – उत्साहित हुए, जोशमे रवाना हुए । वपि – शरीर । साज – पहनावा, पोशाक । सिंधुर – हाथी । धुज – घोडा, अगाडी ।

४४९ हुतभुक – अग्नि, आग । पायदळ – पदाति । फबि – शोभित हो कर । विस – बीस । गयद – हाथी । धज – ध्वजा । महौरि – अगाडी । वि – दो । वाजित्र – वाद्य ।

४५० विरद – विरुद, कीर्ति । वह – बहुत । धुर – अगाडी । धमळ – बैल । जूट – जुत कर । पेलै – खीचते हैं ।

४५१ भिडज – घोडा, योद्धा । जूथ – यूथ । भाराथै – युद्धमे । रहकळा – शकट विशेष । धिख – क्रोध, क्रोधाग्नि । चख – नेत्र । सुतर – ऊँट । धारूंदा – धारण करने वाला । सकट – रथ, छकडा । बारूदा – बारूदके ।

इळ धुकि लचक[1] सीस अहिवाळा ।
चद कटक खड़िया[2] कळचाळा[3] ।
जगत छत्रदिस[4] लिखे[5] जवाबां[6] ।
सझौ विमाह कि समर सताबां[7] ॥ ४५२
सुणि चहुवाण कटक सालळिया[8] ।
महिसिर किर बारह[9] घण मिळिया[10] ।
जडि अग[11] सिलह सस्त्र[12] अग[13] जकडै ।
कसे तंडीर[14] कवाणा[15] पकडै ॥ ४५३
कर भाला क्यभळै कराळा ।
मझि कर सावळ[16] भूप[17] मुसाला ।
ढहती कहू ढळकती ढाला ।
चालै गज खुटहड जिम चाला ॥ ४५४
बह[18] वायक सिंघ जिम बोलंता[19] ।
तायक भुजा गयण तोलता[20] ।

---

१ ख. मचिकि । ग मचकि । २ ख. ग पडीया । ३ ख चलिकाला । ग कलिचाला । ४ ख ग छत्रदिसि । ५ ख. लिख । ६ ख जवाव । ग जवावं । ७ ख सताव । ग सतावं । ८ ख ग सालुलीया । ९ ख वाहर । १० ख ग मिळीया । ११ ख. ग. अगि । १२ ग ससत्र । १३ ख ग अगि । १४ ख तवीर । ग तंडीर । १५ ख. कवाणा । १६ ख सावल । १७ ख. ग भूत । १८ ख वहीं । ग वहीं । १९ ख वोलत । २० ख तोलता ।

---

४५२. इळ – इला, पृथ्वी । धुकि – झुकी । अहिवाळा – शेषनागके । कळचाळा – युद्ध । सझौ – तैयार करो । विमाह – विवाह । कि – अथवा । समर – युद्ध । सतावा – शीघ्र ।

४५३ कटक – सेना, दल । सालळिया – जोशपूर्ण चले । महि – पृथ्वी । सिर – ऊपर । किर – मानो । घण – घटा, मेघ । तडीर – तर्कश, तूणीर ।

४५४ कर – हाथ । क्यभळै – चमकते है । कराळा – भयकर । मझि – मे । सावळ – एक प्रकारका भाला विशेष । मुसाला – (?) । कहूं – कही । ढळकती – लुढकती हुई । खुटहड – (?)

४५५ वह – बहुत । वायक – वचन, वाक्य । तायक – (?) । गयण – आसमान । तोलता – उठाते हुए ।

भेख तखिक खीजिया[1] भमगा ।
दुरत रोस चख झडै दमगा ॥ ४५५
वदन मजीठ रूप विकराळा ।
पमगा चढे पूर पखराळा ।
कहि[2] चहुवाणतणा भड केहा ।
जमहू लडै चाळबध जेहा ॥ ४५६
जुडि भड़ खडा धिखै चख ज्वाळा ।
इकसठ[3] लाख जगत छत्रवाळा ।
लख लख अरध जियां दळ लारै ।
राजा छपन साथि राजारै ॥ ४५७
बडौ[4] हरौळ बाजुवा[5] बिहुवै[6] ।
त्रेसठि लाखहूत सुळ त्रिहुवै ।
राजा छपन जगत छत्रराजा ।
सिंधुर धज त्रिह[7] कुवर सकाजा ॥ ४५८
सहस वार गज धुज अनि साथी ।
हथनाळिया[8] मुहर[9] लख हाथी ।

---

१ ख ग षीजिया । २ ख ग कहै । ३ ख ग इकसठि । ४ ख ग वहो । ५ ख वाजुवा । ६ ख विहुवै । ७ ख ग त्रिण्ह । ८ ख हथनालिवां । ग. हथनालीयां । ९ ख ग मुहरि ।

---

४५५ भेख – वेश । तखिक – तक्षक नाग । खीजिया – कुपित, क्रुद्ध । भमगा – सर्प । दुरत – (?) । चख – चक्षु, नेत्र । झडै – झडते हैं । दमगा – अग्निकण ।

४५६. वदन – मुख । मजीठ – लाल, रक्त वर्ण । विकराळा – भयकर । पमगां – घोडो । पंखराळा – कवचधारियो । भड – योद्धा । केहा – कैसे । जमहू – यमराजसे । चाळबध – वस्त्र पकडने वाला । जेहा – जैसा ।

४५७ धिखै – प्रज्वलित होती है । चख – चक्षु, नेत्र । ज्वाळ – अग्नि । छत्रवाळा – राजा । जियां – जिन । लारै – पीछे ।

४५८. हरौळ – सेनाका अग्र-भाग, हरावल (यहाँ सेना अर्थ ठीक बैठता है) । बाजुवां – बाजू । बिहुवै – दोनो ओर । त्रिहुवै – तीनो । सिंधुर – हाथी । त्रिह – तीन ।

४५९ सहस – सहस्र । गज – हाथी । धुज – घोडा । अनि – और । हथनाळिया – बंदूको, तोपें । मुहर – अगाडी ।

जोड जबूर[1] रहकळा[2] जमला ।
*इसी तरह दोहू दिस अमला ॥ ४५९
धनख[3] बदूक[4] बीस[5] लख धारा ।
अभि[6] नीसाण[7] हजार अठारा ।
फबै अनेक रग रग फरहर ।
भार अढार जाणि पुहपा[8] भर[9] ॥ ४६०
दसत चाप अरु रास दसत्ता ।
महा प्रबळ नदि सुजळ मसत्ता ।
धरपति गोळ[10] हरोळ[11] तोप[12] धुरि[13] ।
पूठि पहाड दुरग तारापुरि[14] ॥ ४६१
इम चहुवाण प्रबळ[15] दळ ओपै[16] ।
लहरि[17] अजाद जाणि दध[18] लोपै ।
जाणै छपन कोडि[19] जळ जाळा ।
मडि उमडै वरसण[20] घणमाळां ॥ ४६२

---

१ ख जवूर । २ ख रहवाला ।

*नोट—(अ) यह पक्ति ख प्रतिमे नही है ।

(व) इस पक्तिके स्थान पर ग प्रतिमे निम्न पक्ति है—

हालै तोप लाख गज हमला ।

३ ग धनुष । ४ ख वंदूष । ५ ख वीस । ६ ग अनि । ७ ख नीसार । ८ ख ग पहोपा । ९ ख नर । १० ग गौळ । ११ ग हरौल । १२ ग तौप । १३ ख. ग धुर । १४ ख. ग तारापुर । १५ ख प्रवल । १६ ख वोपै । ग वौपै । १७ ख. ग लहर । १८ ख ग दधि । १९ ख कोटि । ग कोट । २० ख. वरस ।

---

४५९ जंबूर – एक प्रकारकी वेडी वदूक । रहकळा – एक प्रकारका शकट या गाडी । दोहू – दोनो । दिस – ओर, तरफ । अमला – कार्याधिकारी वर्ग ।

४६० धनख – धनुष । जाणि – मानो । पुहपा – पुष्पो, फूलो ।

४६१ दसत – हाथ । चाप – धनुष । रास – (डोर ?) । धरपति – राजा । गोळ – सेना, फौज । हरोळ – हरावल । पूठि – पीछे । दुरग – गढ ।

४६२ लहरि – लहर, तरग । अजाद – मर्यादा । दध – उदधि, समुद्र । जांणै – मानो । जळ जाळा – मेघमाला, घन-घटा । उमंडै – उमडा हो । घणमाळा – घनघटाएँ, मेघमाला ।

चद उठी दळ वेग चलाया[1] ।
आई ठीक नजीक[2] सु आया ।
प्रळैकाळ जिसडा दळ पावस ।
दळपत[3] छत्रहूत कोसा दस ।। ४६३

महपति चँद उबटण[4] करि मजण ।
कर डोरडौ कसे खग[5] कंकण ।
सझे सुरंग पौसाक सकाजा ।
राज धरे भूखण सब राजा ।। ४६४

वीर सिंगार[6] चढे रस वाना[7] ।
पहरै[8] अतर अरोगै पाना[9] ।
छौगा पाघ[10] जवाहर छाजै ।
रवि सिर किर साजोति[11] विराजै ।। ४६५

जोतवत कसि मोड जवाहर ।
असमर[12] तौलि छिबै[13] सिर अंमर[14] ।
दळपति अमर विदा करि दीधा ।
कूरम नृपति[15] हरोळां[16] कीधा ।। ४६६

---

१ ख चलीया । २ ख नकी । ३ ख दल । ग. दळजग । ४ ख उटवण । ग उवटण । ५ ख ग. पगि । ६ ख. सवार । ७ ख वान । ग वानं । ८ ख पहिरे । ९ ख. ग पान । १० ख पाग । ११ ख. साजेति । १२ ख ग असिमर । १३ ख. विछे । ग छिवे । १४ ख ग अम्मर । १५ ख ग नृपति । १६ ख. हरालो । ग हरौलां ।

---

४६३ दळ—सेना । वेग — शीघ्र । प्रळैकाळ—प्रलयका समय । जिसड़ा — जैसा । पावस — वर्षा ।

४६४. महपति — राजा, नृप । उबटण — मालिश । मजण — स्नान । कर डोरडौ — विवाहके समय दूल्हा-दुल्हिनके हाथमे धारण करनेका कंकण । कसे — बाँध दिया । खग — तलवार । कंकण - कगन । सझे — धारण कर । सुरंग — सुन्दर, लाल । सकाजा — कायके लिये । भूखण — आभूषण ।

४६५. सिंगार — शृंगार । छौगा — साफा या पगडी का छोर जो साफा धारण करते समय पीछे लटकता है या सिर पर खडा रहता है । पाघ — पगडी । जवाहर — जवाहरात, हीरा, पन्ना मोती आदि । छाजै — शोभा देते हैं । रवि — सूर्य । किर — मानो । साजोति — ज्योतिसहित । विराजै — शोभा देता है ।

४६६ जोतवत — ज्योति सहित । कसि — कस कर । मोड — मौर । असमर — तलवार । तौलि — उठा कर । छिबै — स्पर्श करता है । अंमर — आसमान । दळपति — सेनापति । विदा — प्रस्थान । दीधा — दिये । कूरम — कछवाह । हरोळां — हरावल, सेनाके अगाडी । कीधा — किये ।

बिहु[1] कूरमा साथ[2] विरदाळा ।
जोध हजार वीस जरदाळा ।
त्रिह[3] रावळ गहलोत भाण तड ।
भीम हठी[4] उग्रसेन महाभड़ ॥ ४६७

काळा कीट[5] साथि दळ काजू ।
वार[6] हजार दाहणी[7] बाजू ।
जादम भाण पठाण जुमल्ला ।
सैद रहीम सेख सादुल्लां ॥ ४६८

वामै समदळ[9] दखिण वडाळौ ।
हणमत राव वघेल[10] हठाळौ ।
पछटण खळा समर जै पायत ।
ऐ सिरदार पांच अड़पायत ॥ ४६९

च्यार पमार धार छत्र चमर[11] ।
धीर हमीर मुकद राजधर ।
भूप चदोल ठहै भाराथै ।
सोळ हजार जरदबध साथै ॥ ४७०

---

१ ख विहुं । ग विहू । २ ख ग. साथि । ३ ख ग त्रिण्ह । ४ ख उठी । ५ ख. कीठ । ६ ख वार । ७ ख ग दाहिणी । ८ ख ग सादूल्लां । ९ ग सांमदळ । १० ग. वघेल । ११ ग. चम्मर ।

---

४६७ विरदाळा – विरुदवारी, यशस्वी । जरदाळा – कवचवारो । जोध – योद्धा । तड़ – वश-दल ।

४६८ काळा कीट – अत्यन्त श्याम । काजू – वढिया, श्रेष्ठ । दाहणी – दाहिनी । बाजू – तरफ, ओर । जुमल्ला – जुमले एक माथ । सादुल्लां – सिंह, वीरो, शार्दूलो ।

४६९ वामै – वाम पार्श्व । दखिण – दक्षिण । वडाळौ – महान, वहुत । वघेल – प्रसिद्ध राजपूत वंश । हठाळौ – हठ पर दृढ रहने वाला, हठी । पछटण – पछाडनेको । खळां – शत्रुओको । समर – युद्ध । जै – जय । पायत – प्राप्त करने वाला । अड़पायत – वीर, शक्तिशाली ।

४७० चदोल – सेनाके पीछेका भाग । ठहै – रहे । भाराथै – युद्धमे । जरदवंध – कवचधारी । साथै – साथमे ।

उभै सहस अठसठ[1] धुज ऊतग ।
वीस सहंस हैमर धुज वैछग ।
निज पौसाक[2] सु केसरि नौखा ।
जवहर अतर म्रिगंमद[3] जौखा ।। ४७१
आवध कसि दुति[4] इद्र अदत्ती[5] ।
मेघाडमर[6] चढै महिपत्ती[7] ।
ओपै[8] फौज वीच सोभा अति ।
गोळ कमळ केसरातणी गति ।। ४७२
आगै धरि वाजित्र धर[9] आतुर ।
धज बहरखै[10] अरावा[11] सिंधुर[12] ।
धखि[13] दहकध सीस रघुपति धरि ।
इम चद[14] खडे[15] जगत छत्र ऊपरि ।। ४७३
धोम तोप दहु दळ धडहडिया[16] ।
खित पुडि जाणि गयण खडहडिया[17] ।
धुबि[18] गोळा वरसतौ[19] अबर[20] धर ।
ओळा किर बारह[21] घण[22] ओसर ।। ४७४

---

१ ख ग अठसठि। २ ख पौसाष। ३ ख मृदगद। ग. मृगमद। ४ ख. ग दती। ५ ख. ग अदुती। ६ ख मेघाडवरि। ग. मेघाडबरि। ७ ख महपती। ग महपत्ती। ८ ख ग वोपै। ९ ख घरि। १० ख ग. वहरषा। ११ ख आरावा। १२ ख. ग सींधुर। १३ ख ग घष। १४ ख चद्र। १५ ख षडै। ग षडे। १६ ख ग घड़हडीया। १७ ख. ग. खड़हडीया। १८ ख ग धुवि। १९ ग बरसतां। २० ख अवरधर। २१ ख वाहर। ग वारह। २२ ख घड।

---

४७१ उभै – उभय, दो। धुज – झडा, ध्वजा। ऊतंग – उत्तुग, ऊँचा। हैमर – घोडा। केसरि – केसरिया रग। नौखां – वढिया। म्रिगंमद – मृगमद। जौखा – आनन्द।

४७२ आवध – आयुद्ध, अस्त्र-शस्त्र। दुति – द्युति। अदत्ती – (?)। मेघाडमर – हाथीका नाम। महिपत्ती – राजा, नृप।

४७३ वाजित्र – वाद्य। धज – ध्वजा। बहरखै – फहराते हुए, चमकती है। अरावा – तोप। सिंधुर – हाथी। धखि – कोप कर। दहकध – रावण। सीस – ऊपर।

४७४ धोम – अग्नि, आग। दहु – दोनो। धडहडिया – ध्वनि की। खित पुडि – पृथ्वी-तल। जाणि – मानो। गयण – आकाश। खडहडिया – गिरा। धुबि – आग उगल कर। वरसतौ – वर्षा करता हुआ। अबर – आकाश। धर – पृथ्वी। ओळा – वर्षाके समय गिरने वाले हिम-पाषाण। किर – मानो। घण – मेघ, घन। ओसर – अवसर।

गुफा ध्यान लवलीन गिरोवर ।
ताळी खुलि[1] ऊठिया[2] तपेसुर ।
जाणै निसा अमावस[3] जळधर[4] ।
भाद्रव मैमट[5] घटा भयकर ॥ ४७५

अहि[6] खग म्रिग[7] दम हस अळूझै ।
मुणै[8] न सवद गात नह सूझै ।*
दहू[9] दळा वळि हुवै दिखाई ।
रँजक झळा गोळा रुसनाई ॥ ४७६

कुहक[10] वाण[11] झड़वांण[12] भयकर ।
औसर इद्र जाणि व्रज[13] ऊपर ।
ह्वै घण रूप जगत छत्र हट्ठै ।
पौरस[14] गिरहर[15] चद परट्ठै ॥ ४७७

वागा लोप अराव[16] वीरवर[17] ।
अभैसेन दळपति अर अमर[18] ।

---

१ ग पुली । २ ख ग ऊठीया । ३ ख ग. अमावसि । ४ ख ग. जळहर । ५ ख मैघट । ग मैमत । ६ ख ग अह । ७ ख ग मृग । ८ ग. सूणै ।

*यह पक्ति ख प्रति मे नही है ।

९ ग दहु । १० ख ग कहौ । ११ ख कवाण । १२ ग झडवांण । १३ ख वृज । ग वज्र । १४ ख ग पौरिस । १५ ख ग गिरहरि । १६ ख अराव । १७ ग वीरवर । १८ ख ग अम्मर ।

---

४७५ लवलीन – लीन मग्न । गिरोवर – पर्वत । ताळी – ध्यान, समाधि । तपेसुर – तपस्वी । जाणै – मानो । निसा – रात्रि । जळधर – वादल । भाद्रव – भादो मास । मैमट – वर्षा ।

४७६ अहि – सर्प । खग – पक्षी । म्रिग – मृग । दम – श्वास । हंस – प्राण । अळूझै – अमूझता है । दहू – दोनो । वळि – तरफ ओर । रँजक – वारूद । झळा – आगकी लपटो । रुसनाई – रोशनी, प्रकाश ।

४७७ कुहक वाण – एक प्रकारका वाण, अग्नि-वाण, एक प्रकारकी तोप । झडवाण – एक प्रकारकी तोप । औसर – अवसर । जाणि – मानो । व्रज – व्रज-भूमि । पौरस – वल, शक्ति । गिरहर – गिरिवर, श्रीकृष्ण । परट्ठै – (?) ।

४७८ वागा – वजे, ध्वनित हुए ।

कळह बिहू[1] कूरमा कजाका ।
हिणियौ[2] अभैसेन करि हाका ॥ ४७८
करि धक[3] क्रोध हणै करि चाळा ।
इक लख जोध जगत छत्रवाळा ।
जगछत्र सुणै कुवर[4] जोखमिया[5] ।
धैंधीगर हूलै चख धमिया[6] ॥ ४७९
उरडे दळ समहर उदमादा ।
मूकी किर[7] सामदा[8] म्रजादा ।
चूरे दुसह सहस पच चहुवै ।
दळपति अमर विहडवा[9] दहुवै ॥ ४८०
पेखे चद हरवळ खळ पाडे ।
उरडै फौजा[10] वाग[11] उपाडे[12] ।
गजहू लिया[13] सक्रोध गरूरा ।
पडता बाण[14] सघण भरपूरा ॥ ४८१

---

१ ख विहू । २ ख ग हिणीयौ । ३ ख ग धष । ४ ग. कुवरि । ५ ख. ग. जोषमीया । ६ ख ग धमीया । ७ ख ग किरि । ८ ग सामद । ९ ख विहडीयौ । ग बिहडीया । १० ख ग फौज । ११ ख वाम । ग वाग । १२ ख ग ऊपाडै । १३ ख ग. लीया । १४ ख वांण ।

---

४७८ कळह – युद्ध । विहू – दोनो । कूरमा – कछवाहो । कजाका – योद्धाओ । हिणियौ – प्रहार किये ।

४७९ जोखमिया – सहार हो गया, मर गया । धैंधीगर – हाथी ।

४८० उरड़े – जबरदस्तीसे घँस गये । समहर – युद्ध । उदमादा – उन्मादित । मूकी – छोड दी । किर – मानो । सांमदा – समुद्रो । म्रजादा – मर्यादा । चूरे – ध्वस कर दिये । दुसह – शत्रु । चहुवै – चारो ओर । दळपति – सेनापति । विहंडवा – नाश करनेको, मारनेको । दहुवै – दोनो ओर ।

४८१ पेखे – देख कर । चद – राजाका नाम । हरवळ – सेनाका अग्र भाग । खळ – शत्रु । पाडे – मार दिये, सहार किये, गिरा दिये । गजहू – हाथीसे । सघण – घना । भरपूरा – पूर्ण, पूरा ।

वाजू[1] गोळ चदोळ महाबळ[2] ।
कळगळ बीच[3] धमं धकि दमगळ ।
धमक सेन[4] आछट दग धागा ।
हैमर गज धुज पड़ै उछागा ॥ ४८२
त्रिचख अनेक लिये सिर ताजा ।
रव थामै गैणै ग्रहराजा ।
पड़ै रुधिर पल भरै प्रचडा ।
चवसठ[5] नहिन पिवै[6] नामटा ॥ ४८३
भेदै मडळ सूर बहू[7] भागा ।
वर वहू चाहै परी विमाणा[8] ।
भूकै[9] चकै[10] वहो[11] गळि आलै ।
भेदै खजर[12] पहरि उर भालै ॥ ४८४
के जमदढा[13] जडै कळिचाळा ।
वर[14] वरमाळ पगा[15] अंत्राळा ।

---

१ ख वाजू। २ ख महाबल। ३ ख बीचि। ग बीचि। ४ ख सेन। ग सेन।
५ ख ग चवसठि। ६ ख ग पीवै। ७ ख वहो। ग वहो। ८ ग विमांणा।
९ ख भुकै। १० ख ग चकै। ११ ख वाहो। ग वाहा। १२ ग खजरि।
१३ ख जांमदढा। १४ ख ग. वरि। १५ ख पगां।

---

४८२ वाजू — तरफ। गोळ — सेना। चदोळ — सेनाके पीछेका भाग। बीच — मध्य, मे। गळ — युद्ध। धमक — प्रहार। आछट — प्रहार करके। हैमर — घोड़ा। गज — हाथी। धुज — ध्वजा।

४८३ त्रिचख — महादेव। सिर — मस्तक। ताजा — बढ़िया। थामै — रोकता है। ग्रहराजा — सूर्य। पड़ै — गिरता है। रुधिर — रक्त, खून। प्रचडा — बड़ा। चवसठ — कुलप्रिय योगिनियोंका समूह जिनकी संख्या चौसठ ही है।

४८४ भेदै — भेदन करते हैं। मडळ सूर — सूर्यमडल। वर — पति। परी — अप्सरा। विमांणा — वायुयान। चकै — चकती है। वहो — वाहु। भेदै — भेदन कर देती है। खजर — एक प्रकारका शस्त्र विशेष।

४८५. जमदढां — एक प्रकारका कटार विशेष। जडै — प्रहार करते है। कळिचाळा — युद्ध, योद्धाओ। अंत्राळा — आँतें।

तडभड धड आथड गैतूळां ।
झडफड[1] ग्रीध उरड़ रभ झूळा ॥ ४८५
पुर तारा कासीपतिवाळा[2] ।
मसत केइक[3] घूमैं मतवाळा[4] ।
चढि खग झटा जवन हस चालै[5] ।
हूरा वरा वरे[6] बह[7] हालै ॥ ४८६
उठै 'चद' गज दत उपाड़ै ।
झुकत[8] गजां खळां सिर[9] झाड़ै ।
थभ[10] सिर भज पडै अणथाहै ।
मोती गज पडै जुध माहै ॥ ४८७
जुध[11] सिर कर ग्रहि ग्रहि जरदैता ।
बह[12] गज धुजां[13] सूर बिरदैता[14] ।
अरि गजघटा पीठि पछटै[15] इम ।
जळ सिल तटा रजक[16] दुपटा जिम ॥ ४८८
कमधज जुध[17] दूलह[18] केसरियौ[19] ।
उठै चद गजहू ऊतरियौ[20] ।

---

१ ग झडपड़ । २ ख कासीषलिवाला । ३ ग केईक । ४ ग. मतिवाळा । ५ ख ग वालै । ६ ग. वरे । ७ ख. वाहौ । ग. वहौ । ८ ग झूकता । ९ ख ग सिरि । १० ख. ग अमि । ११ ख ग जुधि । १२ ख वहौ । ग वहौ । १३ ख घूसा । १४ ख. ग विरदैतां । १५ ख. पछमै । १६ ग रजिक । १७ ख जुधि । १८ ख. दूलहै । ग दुलह । १९ ख ग केसरीयौ । २० ख ग ऊतरीयौ ।

---

४८५ तडभड़ – ममान, वरावर । धड – सेना । आथड – भिडकर, टक्कर लेकर । गैतूळा – सेनाओ, समूहो । झड़फड – पक्षियोके परोके फडफडानेकी आवाज झडफडाहटकी आवाज ।

४८६. हस – प्राण । हूरां – अप्सराएँ, परियें । बह – वहुत । हालै – चलते है ।

४८७. उठै – वहां । गज – हाथी । दत – दांत । उपाड़ै – उखेडता है । खळा – शत्रुओ । सिर – ऊपर । झाडै – प्रहार करता है । अणथाहै – अपार । गज – ढेर, राशि ।

४८८ जरदैता – कवचधारी योद्धा । सूर – वीर । विरदैता – विरुदधारी, यशस्वी । अरि – शत्रु । पछटै – प्रहार करता है, गिराता है । सिल – शिला । तट – ऊपर । रजक – धोवी । दुपटा – वस्त्र या वस्त्र विशेष । जिम – जैसे ।

४८९. दूलह – दूल्हा । उठै – वहां । गजहू – हाथीसे ।

अभि ओयण[1] ग्रहि[2] चद उलाळै[3] ।
रत[4] दरियावतणै[5] मंझि राळै ॥ ४८९
किर[6] रघु हुकम मतै विकराळै ।
अगद[7] समद मझि गिरद उछाळै ।
कवचधार गौडव[8] जुध केका ।
ऊडावै पखरैत[9] अनेका ॥ ४९०
ओपम तिका भमतां अच्छर ।
पमगां जांण[10] फेर आई पर ।
जँग छत्रदळां विधूसै चँद जुड़ि ।
महि पुडि[11] भार गया अहि फुण[12] मुड़ि ॥ ४९१
ऊधम[13] किर[14] राळै धर[15] अदर[16] ।
वाग असोक लागडै[17] वानर[18] ।
दहुवै[19] जुवां भडां खळ दहिया[20] ।
वीरोचन अमर[21] दळ[22] वहिया[23] ॥ ४९२

---

१ ख वोयणि । ग वोयण । २ ख ग ग्रहि ग्रहि । ३ ख ग. ऊलाळै । ४ ख रति। ५ ग दरीपाव । ६ ख ग किरि । ७ ख ग अगिद । ८ ख ग गोडवि । ९ ख ग पतरैत । १० ख ग जाणि । ११ ख ग. पडि । १२ ख फडि । ग फण । १३ ग ऊधमि । १४ ख ग किरि । १५ ख. धरि । १६ ख ग. अदरि । १७ ख. ग लागडै । १८ ख ग वदरि । १९ ख ग दहूवा । २० ख. ग दहीया । २१ ग अम्मर । २२ ख. धग । ग धगि । २३ ख. ग वहीया ।

---

४८९ अभि – उभय, दोनो । ओयण – पैर । उलाळै – उलटा फेंकता है । रत – रक्त, खून । दरियावतणै – समुद्रके । मंझि – मध्य, मे । राळै – फेंकता है, गिराता है ।

४९० किर – मानो । रघु – श्रीरामचन्द्र । विकराळै – भयकर, भयावह । समद – समुद्र । मझि – मध्य, मे । गिरद – पर्वत । उछाळै – फेंकता है, गिराता है । कवचधार – कवचधारी । केका – कई । ऊडावै – गिराता है, फेंकता है । पखरैत – योद्धा, वीर ।

४९१. ओपम – उपमा । तिका – उनके । पमंगा – घोडो । जांण – मानो । पर – पख । जँग – युद्ध । छत्रदळां – राजाका दल या सेना । विधूसै – विध्वस करता है । महि पुडि – पृथ्वीकी तह । अहि – शेषनाग ।

४९२ ऊधम – उत्पात । राळै – गिराता है । लागडै – हनुमान ने । दहुवै – दोनो । जुवां – ओर, तरफ । भडा – योद्धाओ । खळा – शत्रुओ । दहिया – नाश किये । वीरोचन – राजा बलिके पिताका नाम । अमर – देवता ।

सुत चहुवाण सुणे त्रहु[1] साझे ।
दावानळ औरिस उर[2] दाझे ।
फीलहूत जग छत्र फरहरियौ[3] ।
इन्द्र किर उरसिहूत[4] ऊतरियौ[5] ।। ४९३

सुज[6] धर पडि ऊठै खग[7] साहै ।
एक[8] खाग चद परि आबाहै[9] ।
झट चद तिका गयद रद झेलै ।
महिपति[10] गहि[11] सिवका मझि[12] मेलै ।। ४९४

पह[13] चहुवाण खेत[14] परमाणै ।
जाती[15] समर जगत छत्र जाणै ।
दछि[16] अंस आप सुता दखियाणी ।
जटधर अस चद विध[17] जाणी ।। ४९५

त्रखा[18] रही जुध[19] अगै करण तिण ।
जुध[20] कामना कीध पूरण जिण ।
पेखे एम[21] जोडि दहु पाणा ।
चँद पग वँदै[22] भूप चहुवाणा ।। ४९६

---

१ ख. विहु । ग त्रिहूं । २ ख ग उरि । ३ ख फरहरीया । ग फरहरीयौ । ४ ख ग उरस । ५ ख ऊसरीयौ । ६ ख ग सुजि । ७ ख ग धष । ८ ग. ऐक । ९ ख आवाहे । ग आवाहै । १० ख. महपति । ११ ख ग्रह । ग. ग्रहि । १२ ख. मझ । १३ ख ग पहौ । १४ ख ग लेष । १५ ख जाति । ग ज्याती । १६ ख दवि । १७ ख विधि । ग. बिधि । १८ ख ग त्रिषा । १९ ख ग जुधि । २० ग जुधि । २१ ग ऐम । २२ ग वदे ।

---

४९२ औरिस – आकाशका ।

४९३ त्रहु – तीनो । साझे – महार किये । फीलहूंत – हाथीसे । किर – मानो । उरसिहूत – आकाशसे ।

४९४. सुज – वह । ऊठै – उठता है । खग – तलवार । साहै – धारण करता है । खाग – तलवार । आवाहै – प्रहार करता है । झट – शीघ्र । तिका – वह । गयद – हाथी । रद – दांत । झेलै – पकडे । महिपति – राजा । सिवका – शिविका पालकी । मझि – मध्य, मे ।

४९५. पह – राजा । खेत – युद्धस्थल । समर – युद्ध । दछि – राजा दक्ष । दखियांणी – दक्षकी पुत्री, सती । जटधर – महादेव ।

४९६. त्रखा – तृष्णा, प्यास । अगै – पहिले, पूर्व । कांमना – इच्छा । कीध – की । पेखे – देख कर । दहूं – दोनो ।

धारण सलज चखां चंद धारै ।
आच उठाय[1] वडिम उच्चारै[2] ।
विच[3] पुर धसे विजय[4] वजि[5] वाजा ।
जगपत[6] सुता वरै[7] चंद[8] राजा ।। ४९७

राजस पुर देखे चंद रीधौ ।
कनियादांन[9] जगत छत्र कीधौ ।
वर कनिया गठजोड[10] वणाए ।
आसापुरा[11] दरस[12] चद आए[13] ।। ४९८

कहियौ[14] मूरति हसे क्रपा[15] करि[16] ।
अखै कमध जयचद[17] उजागरि[18] ।
प्राण - दांन जगछत्रनू आपै ।
थिर राजस तारापुर[19] थापै ।। ४९९

इम चद कीरति जगत उजासी ।
करि जुध फतै आवियौ[20] कासी[21] ।
कुळ चंद साख वधै इधकाई[22] ।
दिनकरि[23] वस सकति वरदाई ।। ५००

---

१ ग उठाइ । २ ख उचारे । ग ऊचारे । ३ ख विधि । ग विचि । ४ ख. वज । ग वज । ५ ख ग विजय । ६ ख ग. जगछत्र । ७ ख वरे । ग वरे । ८ ग. चदि । ९ ख ग कनीयादान । १० ख. मठजोड । ११ ख आसापुर । १२ ख. ग दरसि । १३ ग आऐ । १४ ख ग. कहीयौ । १५ ख क्रिपा । ग कृपा । १६ ख कर । १७ ख ग जयवंत । १८ ख ऊजागर । ग उजागर । १९ ग तारापूर । २० ख ग आवीयो । २१ ख काशी । २२ ख ग अधिकाई । २३ ख दिनकर ।

---

४९७. सलज – लज्जापूर्वक । चखां – नेत्रो । आच – हाथ । वडिम – वडाई । विच – मध्य, मे । वरै – वरण करता है ।

४९८ राजस – राज्य-वैभव । रीधौ – प्रसन्न हुआ । कनियादान – कन्या का दान । छत्र – राजा । कीधौ – किया । वर – पति । गठजोड़ – गठबंधन । आसापुरा – एक देवीका नाम । दरस – दर्शन ।

४९९ कहियौ – कहा । अखै – कहता है, अक्षय । उजागरि – समर्थ, शक्तिशाली । जगछत्रनू – राजाका नाम । थिर – स्थिर । राजस – राज्य ।

५००. उजासी – फैली, प्रकाशित हुई । इधकाई – विशेषता । दिनकरि – सूर्य । सकति – शक्ति । वरदाई – विरुदधारी, यशस्वी ।

मिळि जुध जय वर दत महमाया[1] ।
कमध तेण[2] जयवत कहाया ।
महि इम कुळ पैंतीसह मौडां ।
राज साख तेरह राठौडा ।। ५०१

अै सुत पुज तेरह अग्रकारी[3] ।
धरमबभ[4] जेठौ छत्रधारी ।
चवि ध्रम बभ[5] जे सुतण अजैचद ।
अपभड[6] जेण सुतण अति आणद ।। ५०२

विजयचद जे सुत वरदायक ।
नृप[7] पूरब[8] धर कनवज नायक ।
विजयचदरौ[9] राज वखाणे ।
जग सिर[10] सुपह दुवौ इद्र जाणे ।। ५०३

कवित्त छप्पय[11] पूरपक्ष वरणण[12]

कोइक[13] सुकवि[14] इम कहै, वरस वह[15] नृप[16] किम[17] वरणै ।
वेदव्यास[18] वायकां, साख[19] भारथ[20] संभरणै ।

---

१ ख. ग माहामाया । २ ग. तेणि । ३ ग अग्रहकारी । ४ ख धरमवंत । ५ ख धरमवंभ । ६ ख अभपण । ७ ख ग नृप । ८ ख पूरव । ९ ग विजैचंदरौ । १० ख ग सिरि । ११ ख. छपै । ग छप्पै । १२ ख ग. वर्नन । १३ ग कोयक । १४ ग कुकवि । १५ ख ग वहो । १६ ख ग नृप । १७ ख. कमि । ग किमि । १८ ग वेदव्यास । १९ ग साषि । २० ग भारत्य ।

---

५०१ दत – दिया । महमाया – देवी, दुर्गा । जयवंत – राठौड वशकी एक शाखा । महि – पृथ्वी । मौडां – मौर, अवतस ।

५०२ अग्रकारी – अग्रगण्य, तेजस्वी । जेठौ – जेष्ठ, वडा । छत्रधारी – राजा । चवि – कह, कह कर । सुतण – पुत्र । अपभड़ – वीर, वहादुर । जेण – जिस ।

५०३ वरदायक – ऐश्वर्यवान । कनवज – कनोज । वखांणै – प्रशसा करते हैं । सिर – ऊपर, पर । सुपह – राजा । जांणै – मानो ।

५०४. किम – कैसे । साख – साक्षी । भारथ – महाभारत । सभरणै – स्मरण कर के ।

सतजुग आव[1] सुलच्छि[2], आव त्रेताजुग ग्रैत[3]।
सहस वरस द्वापुरसु, कळू सत वीस कहैतं[4]।
करि जोरि[5] सुवर राखी किता, अमर देह अग्रकारिया[6]।
सदेह तजौ कवि इम सुवस, रघुवसी छत्रधारिया[7] ॥५०४

दूहो[8]– रामचद्ररा वस मझि, विजयचद सुत वीर ।
जग[9] राजा जयचद हुवौ[10], सूर दतार सधीर ॥ ५०५

राजा पुंज तथा उणरा तेरै पुत्रारौ वरणण समाप्त ।

इति तृतीयौ प्रकरण ।

*

अथ राजा जयचदरौ राज वरणण—

छप्पय– सिलह-पोस लख असी, पमग असवार सपक्खर[11]।
कोड़ि तीन पायक्क[12], धोम धानख फरसधर[13]।
दोय लाख दताळ, मसत गाजत[14] मदज्झर[15]।
सात लाख नीसाण, घुरै दुदभि[16] लख घुम्मर[17]।
नित[18] करै सेव दुय[19] सहस नृप[20], कवि हजार दस गुण करै।
सिरताज इद्र सोभा सरस, राज भूप जैचदरै॥ १

---

१ ख आवसि। २ ख सुलछि। ग. सुलषि। ३ ग अैतह। ४ ग कहतह। ५ ग जोग। ६ ख ग अग्रकारीया। ७ ख ग. छत्रधारीयां। ८ ग दूहा। ९ ख जगि। १० ख. हूवौ। ११ ख ग सपष्पर। १२ ख. पायक। ग पाइक। १३ ग. धरसीधर। १४ ख. जागत। १५ ख मदझर। ग मद्दझर। १६ ख. दुंदुभि। १७ ख घुमार। ग. घुम्मर। १८ ग निति। १९ ख ग. दोय। २० ख. ग नृप।

---

५०४ मझि – मध्य, मे। दतार – दानवीर, दातार। सधीर – धैर्यशाली।

१ सिलह-पोस – शस्त्रधारी। लख – लाख। पमंग – घोडा। सपक्खर – कवचधारी। पायक्क – अनुचर, पदाति। धानख – धनुष। फरसधर – परशु नामक शस्त्रको धारण करने वाला। दताळ – हाथी। गाजत – गर्जना करते हैं। मदज्झर – हाथी। नीसांण – नगाडा विशेष। घुरै – ध्वनि करते है, वजते हैं। सेव – सेवा। दुय – दो। सहस – सहस्र। गुण – कीर्ति। सरस – श्रेष्ठ।

छन्द[1] नाराच

अनेक पद्मणी[2] अवास, रूप भोमि[3] रच्चए[4] ।
अनेक रागरग ओप, नृत्तकार[5] नच्चए[6] ।
भरै अनेक दड[7] भूप, केक वीनती करै ।
करै अनेक दांन कोडि, पगराज भूपरै ।। २
छजत भूपती छभा[8], सलांम भूपती सजै ।
कपूर पानदांन केक, राखि[9] भूपती रजै ।
खडग्ग[10] ढाल ले खडा, जळा[11] सपात्र सजती ।
भजै खवास पासवान, चौपदार भूपती ।। ३

छद कुसविचत्रा[12]

भूपती सकळ नमै[13] डंड भरै ।
कुळ खट त्रीस[14] सेव सह[15] करै ।
दस द्रगपाळ[16] देखि दळ डरै ।
कमधज इण[17] विध राजस करै ।। ४

छद अम्रतगति[18]

अनि नृप[19] कोय[20] न ग्रेहौ[21] । जग मझि जैचद जेहौ ।
कुळ दळ बळ[22] अग्रकारी । धर पूरब[23] छत्रधारी ।। ५

---

१ ख ग. छंद। २ ख पदमणी। ३ ग भौमि। ४ ग रच्चऐ। ५ ख ग नृत्य-कार। ६ ख नच्चये। ग नच्चऐ। ७ ख ग डड। ८ ख सभा। ९ ख राष। १० ख षडग। ग षडग। ११ ख जल। ग जळ। १२ ख ग कुसुमविचित्र। १३ ख. ग नमे। १४ ख ग. तीस। १५ ख सर्व। ग सर्व। १६ ख. ग द्रिगपाळ। १७ ख इणि। ग ईणि। १८ ख ग अमृतगति। १९ ख ग नृप। २० ख कोइ। २१ ग ऐहौ। २२ ख बल। २३ ख पूरव।

---

२ पद्मणी – पद्मिनी। अवास – भवन। भोमि – भूमि। नृत्तकार – नृत्यक। पगराज – राजा जयचद। वि वि राजा जयचदकी सेना बहुत ही बडी थी। जब राजा जयचद अपने दल-बल सहित प्रस्थान करता तो योद्धाओका लम्बा ताता बँध जाता था। इससे लोगोको ऐसा अनुभव होता था कि मानो सेना पगुवत् चल रही हो।

३ छजत – सजता है। छभा – सभा। केक – कई। खवास – नौकर। पासवान – कृपापात्र, ए डी सी। चौपदार – छडी लेकर अगाडी चलने वाला, चोवदार।

४ सकळ – सब। खट त्रीस – छत्तीस। सह – सब। द्रगपाळ – दिक्पाल। दळ – सेना। राजस – राज्य।

५ अनि – अन्य। ग्रेहौ – ऐसा। मझि – मध्य, मे। जेहौ – जैसा। अग्रकारी – अग्र-गण्य, अग्रगामी। छत्रधारी – राजा।

छप्पय– दिवस एक जैचद, वीर[1] मिसलति[2] विचारी ।
जीपि[3] किया[4] सव[5] जेर, धरा हिंदू[6] छत्रधारी ।
अटक पार मो अगै, इळा[7] नहिं[8] नमै विलायति[9] ।
जवन वसै[10] जिण[11] माहि, आठ मगरूरा[12] असपति ।
ज्या हणू काय पकडूं जिया[13], प्रथी[14] वदै तद पांणरौ ।
खग पांणि दड[15] ल्यां[16] तदि खत्री, खित[17] छ खड खुरसांणरौ ॥ ६

छन्द रूपमाळा

ताम जयचंद तेडिया[18], परधांन बुद्ध[19] प्रकास[20] ।
खग[21] झाट[22] ल्यू खुरसांण हू, जुध पूछि मिसलति[23] जास ।
करि सलाम सजोडि कर इम, बोलिया[24] स वजीर[25] ।
हुकम माफक होवसी, वरियांम हित चित वीर ॥ ७
नववीस सांत नमाविया[26], परचद कुल खग पाण ।
जुध आप दळ वळ[27] जोवता, खळ किसू[28] दळ खुरसाण ।

---

१ ख विर । २ ख ग मसलति । ३ ख जीप । ४ ख ग कीया । ५ ख ग. सहु । ६ ख हींदू । ७ ख ग यळा । ८ ख. ग नह । ९ ख विलाअति । ग विला-अति । १० ग वमै । ११ ख जिणि । १२ ख ग मगरूर । १३ ख ग जीयां । १४ ख ग प्रिथी । १५ ख ग डड । १६ ख ल्यू । ग. लू । १७ ख क्षिति । ग. क्षित्रि । १८ ख ग तेडीया । १९ ख बुद्धि । ग बुधि । २० ख. ग परकास । २१ ख ग खाग । २२ ख ग झट । २३ ख ग मसलति । २४ ख वोलीया । ग बोलीया । २५ ख ग उजीर । २६ ख ग. नमावीया । २७ ख. वळ । २८ ग. किसु ।

---

६. मिसलति – ऐसी गुप्त युक्ति या विचार जिसका सहसा किसीको पता न चल सके, मसलहत । जीपि – जीत कर । जेर – वलहीन, अधीन, तावे । छत्रधारी – राजा । अटक – सिंधु नदी या सिंधु नदीके उस पार वसने वाला एक नगर । मो – मेरे । इळा – पृथ्वी । मगरूरा – गर्व वाले, अभिमानी । असपति – वादशाह । ज्यां – जिन । हणूं – सहार कर दू । काय – अथवा । जिया – जिन । प्रथी – पृथ्वी । वदै – कहै । पांणरौ – वलका, शक्तिका । खग – तलवार । पांणि – वलसे । तदि – तव । खत्री – क्षत्रिय । खित – पृथ्वी । खुरसांणरौ – खुरासानका, मुसलमानोके ।

७ ताम – तव, उन । तेडिया – बुलाये । खग – तलवार । झाट – प्रहार । मिसलति – गुप्त मन्त्रणा । जास – जिसकी । सजोडि कर – करवद्ध हो कर । इम – इस प्रकार । बोलिया – बोले । वजीर – वजीर, मंत्री । माफक – अनुकूल । होवसी – होगा । वरियाम – श्रेष्ठ ।

८ परचड – प्रचण्ड । खग पांण – तलवारके वलसे । दळ – सेना । वळ – शक्ति । जोवतां – देखने पर । किसूं – क्या । खुरसाण – वादशाह, यवन, खुरासान देश (?) ।

तौ वेग[1] लिखि फुरमाण तेडौ, सूर जोध सकाज ।
करि त्रिण सलांम सताम कहियौ[2], जो हुकम महाराज[3] ।। ८
चौतरफ लिख[4] फुरमांण[5] चलवे, डाकदार उदार ।
धाविया[6] बह[7] जूग - धारक, पैक वड[8] अणपार ।
अधिक दसदिस[9] पैक आतुर, धरा पर इम धाय ।
जोय ग्रीखम[10] सुजळ[11] जाणिक[12], जूथ म्रिग[13] वन[14] जाय ।। ९

छन्द पद्धरी

दस दिसा एम[15] फुरमाण दीध ।
लायका भड़ां सिर[16] चाढ[17] लीध ।
जुध सराजाम सझि सझि व्रजागि ।
लौहमै[18] सरसि भुज उरसि[19] लागि ।। १०
चढि चढि गज भिडजां नयण चोळ[20] ।
बह[21] हलै प्रघळ जळ दळा[22] बोळ ।
निस[23] दिवस इसा बहु[24] बहु[25] नरेस ।
परचड करत कनवज प्रवेस ।। ११

---

१ ख ग वेगि । २ ख. ग कहीयौ । ३ ख ग माहाराज । ४ ख लिषि । ग लषि । ५ ख फरमाण । ६ ख ग. धावीया । ७ ख ग वहौ । ८ ख वणि । ग वडि । ९ ग दससीस । १० ग ग्रीष्म । ११ ख सुलज । १२ ख जाणिकै । १३ ख. ग मृग । १४ ख वौहो । ग वौहो । १५ ग ऐम । १६ ख सिरि । १७ ख चाढि । ग. चाडि । १८ ख ग सरस । १९ ख ग उरस । २० ख. चोला । ग चौल । २१ ख वौहो । ग वहो । २२ ख जवावोळ । ग जळावोळ । २३ ख निसि । २४ ख. वौहो । ग वोहो । २५ ख दर । ग दळ ।

---

८. तौ – तव । वेग – शीघ्र । फुरमाण – फरमान । तेडौ – बुलाओ । त्रिण – उन ।

९ चौतरफ – चारो ओर । डाकदार – सदेशवाहक । धाविया – दौडे । जूग धारक – शुतुरसवार, ऊँटसवार । पैक – दूत, चतुर । वड – वडा । अणपार – असीम । जोय – देख कर । ग्रीखम – ग्रीष्म । सुजळ – श्रेष्ठ, जलयुक्त । जाणिक – मानो, जैसे । जूथ – यूथ, समूह ।

१० एम – इस प्रकार । दीध – दिये । लायका – योग्य । भडा – योद्धाओ । सराजाम – प्रवध, सामग्री । सरसि – (?) । उरसि – आसमान ।

११ भिडजां – घोडो । चोळ – लाल, रक्त । वह – वहुत । हले – चले, गतिमान हुए । प्रघळ – वहुत । दळाबोळ – अपार । निस – रात्रि । दिवस – दिन । कनवज – कनोज ।

चतुरंग मिळै दरगाह चंद ।
सांभळै[1] जाणि घणि[2] नदि समंद ।
पह[3] कमँध हुकम[4] मिळि[5] समंद पूर ।
सामिळे वस खटतीस सूर ॥ १२

वाहरू सीत जाणै व्रजागि ।
लसकर कपि मिळिया[6] वेध[7] लागि ।
जैचंद दळावळ[8] देखि जाम ।
तोले खग बोले[9] एम[10] ताम ॥ १३

मंत्रियां[11] लिखौ फुरमांण मेक ।
असुराण तरफ करि मंत्रि एक ।
जिण[12] माझि[13] लिखौ उमराव जेम ।
तिण[14] सुणै खिजे सुरतांण तेम ॥ १४

पत्र जेण[15] लिखौ इण विध[16] प्रियोग[17] ।
भेजौ सताव[18] खुरसांण भोग ।
मो पाटि वइठा[19] पछौ माल ।
उपजेस सकळ भेजौ अपाल ॥ १५

---

१ ख ग सामिलै। २ ख ग घण। ३ ख पौ। ग पहौ। ४ ख हुकमि। ५ ख. ग. दळ। ६ ख. ग मिलीया। ७ ख. वेधि। ८ ख रलवळ। ग. दलवळ। ९ ख. बोले। १० ग. ऐम। ११ ख ग मत्रीयां। १२ ख ग जिणि। १३ ख ग. माझ। १४ ख तिणि। १५ ग जेणि। १६ ख ग विधि। १७ ख ग प्रयोग। १८ ख. सताव। १९ ख वईठां। ग वैठा।

---

१२ चतुरंग – चतुरगिनी सेना, सेना। दरगाह – दरवार। चंद – जयचद। घणि – वहुत। समंद – समुद्र। पह – राजा। सामिळे – शामिल होते हैं। सूर – वीर।

१३ वाहरू – रक्षक। सीत – सीता। व्रजागि – वज्रांग, हनुमान। लसकर – सेना। वेध – युद्ध। जांम – जव। ताम – उन, तव।

१४ मेक – एक। असुरांण – मुसलमान। मांझि – मध्य, मे। खिजे – कोप करे। सुरताण – वादशाह।

१५ सताव – शीघ्र। भोग – राज्य-कर, दण्ड। पाटि – राज्यसिंहासन पर। बइठा – वैठने पर। उपजेस – जो उत्पन्न होता है। अपाल – विना रुकावट।

दसकत[1] सिर[2] चाढौ करि अदाब[3] ।
सझि फौज सेव आवौ सताब ।
अठ तखत छत्र अठ चमर आंणि ।
पहु[4] करौ निजर[5] मिळता प्रमाणि ॥ १६
आविया[6] सेव पावौ उतन्न[7] ।
धर सहत[8] वधारा बिगुण[9] धन्न[10] ।
ऽयां हूत दूण कीमति उदार ।
दे तखत चमर छत्र जिलहदार ॥ १७
दे तखत चमर छत्र सीख देस ।
निज कुरब[11] सिरै बिस हस[12] नरेस ।
इळ[13] रूम सामपति दळ अथाह ।
सातसू वडौ पररेज साह ॥ १८
उण तरफ लिखौ फुरमाण एह[14] ।
लसकरि[15] सझि[16] सामौ[17] आय लेह ।
इण[18] माहि एक[19] न मनौ अदाब[20] ।
सग्रांम करण आवौ सताब[21] । १६

---

१ ख दसकति । २ ख ग सिरि । ३ ख. अदाव । ४ ख ग पौहो । ५ ग. निज । ६ ख. आवीयौ । ग आवीया । ७ ख उतग । ग उभन । ८ ग सहित । ९ ख ग. विगुण । १० ख धन । ग धन । ११ ख. कुवर । १२ ख. विसहंस । ग विसहस । १३ ख यल । ग थल । १४ ग ऐह । १५ ग लसकर । १६ ख ग सजि । १७ ख. ग सांम्हौ । १८ ख ग. यण । १९ ग ऐक । २० ख अदाव । २१ ख सताव ।

---

१६ दसकत – दस्तग, कर वसूल करनेका परवाना । अदाब – प्रतिष्ठा, इज्जत । सझि – सज कर । अठ – आंठ । चमर – चँवर । आणि – ला कर । पहु – राजा, बादशाह ।

१७ आवियां – आने पर । सेव – सेवा । उतन्न – वतन । धर – भूमि, धरा । सहत – सहित । वधारा – वृद्धि, उन्नति । बिगुण – द्विगुन, दुगना । धन्न – द्रव्य, धन-दौलत । दूणा – दुगने । जिलहदार – चमकदार ।

१८ कुरब – मान, प्रतिष्ठा । सिरै – श्रेष्ठ । बि – दो । सहस – हजार ।

१९ उण – उस । फुरमांण – फरमान, आज्ञापत्र । एह – यह । लसकरि – सेना, फौज । सामौ – सम्मुख । सग्राम – युद्ध । सताब – शीघ्र ।

विध[1] सुणे वजीरां एम[2] वांणि[3] ।
पग वदि[4] कहै आयस प्रमाणि[5] ।
तत वीर लिखे फुरमाण ताम ।
जगमुकट तेडियौ[6] मत्रि[7] जाम ॥ २०

काबिल[8] किताव[9] मत्री कुलींण ।
पारसी आरबी[10] मझि प्रवीण ।
दळ पच[11] सहस दळ[12] साथि[13] दीध ।
किलमाण मुलक दिस[14] विदा कीध ॥ २१

जगमुकट केक[15] दिन माहि जाय ।
असपती रूम निजदीक[16] आय ।
ऐ[17] समाचार तपसीलवार ।
दीधा असपतनू[18] खबरदार[19] ॥ २२

सुणि खबर[20] सझै दळवळ[21] सकाज ।
रैंवत सिणगारे गजां राज ।

---

१ ख. ग विधि । २ ख ग यम । ३ ख. ग. विनांण । ४ ग वदि । ५ ख ग प्रमाण । ६ ख ग तेड़ीयौ । ७ ख ग षत्री । ८ ख काविल । ९ ख किताव । १० ख अरव्वी । ११ ख ग पाच । १२ ख जिणि । ग जिण । १३ ख. ग साथ । १४ ख ग. दिसि । १५ ख ग केकि । १६ ख ग. नजदीक । १७ ख ग ये । १८ ख असपती । ग. असपति । १९ ख पवरदार । २० ख षवर । २१ ख ग दळवळ ।

---

२० विध – कार्यक्रम, विधि । वजीरां – मन्त्रियो । आयस – आज्ञा । प्रमांणि – अनुसार । तेड़ियौ – बुलाया । जांम – उस समय ।

२१ काबिल – विद्वान, कुशल, योग्य । कुलींण – श्रेष्ठ कुलका, कुलीन । आरबी – अरबी भाषा । मझि – मध्य, मे । दळ – सेना । साथि – साथमे । दीध – दिया । किलमांण – मुसलमान, कलमा पढने वाला । दिस – तरफ । विदा – प्रस्थान । कीध – किये ।

२२. केक – कई, कुछ । असपती – बादशाह । निजदीक – निकट । तपसीलवार – ब्योरेवार, विस्तारपूर्वक । दीधा – दिये । असपतनू – बादशाहको । खबरदार – दूत, सदेशवाहक ।

२३. रैंवत – घोडा । सिणगारे – सुसज्जित किये ।

जगमग करि दरगह नग जहूर[1] ।
पुर करे चित्र औछाड पूर ।। २३
हवसी[2] करूर दसदस हजार ।
मेले[3] दरवाजा दस मझार ।
काळा जम रूपी उप[4] कराळ ।
वाणी कराळ बोलै[5] विसाल ।। २४
जरदैत लोह मझि कडाजूड ।
अवनाड भूप[6] गिडकँध अड्ड ।
जगमुकट आवियौ[7] वार जेण ।
तत खबर दीध फुरमाण तेण ।। २५
इम सुणे रूम असपति अमान ।
खूदालम[8] तेड़े[9] खबर[10] खांन ।
सामले[11] बबर पररेज साह ।
इण भांति कीध मसलति अथाह ।। २६
ऐळचो[12] हिदसे इहा आय ।
जिस पास करो रद वदळ जाय ।

---

१ ख हूर । २ ख हवसी । ३ ख मेल्हे । ग म्हेलै । ४ ख ग वप । ५ ख वोलै । ६ ख. भूत । ७ ख ग आवीयौ । ८ ख ग षौंदाळम । ९ ख ग तेजै । १० ख षवर । ग बवर । ११ ख ग सामिले । १२ ख एलची ।

---

२३. जगमग – देदीप्यमान, चमकयुक्त । दरगह – दरवार । जहूर – प्रकाश, जुहूर । औछाड – विस्मय (?) । पूर – पूर्ण, पूरा ।

२४ करूर – भयकर , जवरदस्त । मझार – मध्य, मे । उप – वपु, शरीर ।

२५ जरदैत – कवचधारी । लोह – अस्त्र-शस्त्र । कडाजूड़ – सुसज्जित, जडे हुए । अवनाड – योद्धा । गिडकंध – जबरदस्त, गिरिस्कध, विशालकाय । अड्ड – श्रेष्ठ । वार – समय । जेण – जिस । तत – सार, तत्व, तत्काल । दीध – दी । तेण – उस ।

२६ असपति – वादशाह । अमान – मानरहित । खूदालम – वादशाह, खुदा-ए-आलम । तेडे – वुलाये । सामले – साथ, शामिल । बबर – एक वादशाहका नाम, जवरदस्त । कीध – की । मसलति – मस्लहत, सलाह, विचार । अथाह – अपार ।

२७ ऐळची – राजदूत । हिंदसे – हिन्दुस्तानसे । इहा – यहाँ ।

निज[1] रूप व्रिखायस[2] जलह[3] नूर ।
जवरी[4] अक्रूफ[5] दी[6] जम[7] जहूर ।। २७
तहवीक करी जिस तळू वात[8] ।
तारीफ मताळव[9] ईस तात ।
सुणि एम ववर चालै रावीर ।
महि दिया साथि पँच सहस[10] मीर ।। २८
विडरूप चले[11] असि चढि कुवाणि[12] ।
जागिया[13] प्रेत रणखेत जाणि[14] ।
दरयाव[15] रूप[16] हू कोस दोय ।
जगमुकट कीध डेरास[17] जोय[18] ।। २९
उण ठौड ववर[19] उजछवक[20] आय ।
ताजीम[21] न की जगमुकट ताय ।
दौलत्त - नजर कह[22] चौपदार ।
जोवियौ[23] नीठ सांम्हौ जियार ।। ३०

---

१ ख ग नीज । २ ख. वरपायस । ग वरपायस । ३ ख जिलह । ४ ख जवरी । ५ ग अक्रूफ । ६ ख ग. दीद । ७ ख ग मजहूर । ८ ख ग तलूवात । ९ ख. मतालव । ग मातासव । १० ख ग सहल । ११ ख. ग. हले । १२ ख कुवाणि । ग कुवाण । १३ ख ग. जागीया । १४ ख ग. जाणि । १५ ख. ग दरयाव । १६ ग रूम । १७ ख ग डेरा । १८ ख. ग सुजोय । १९ ख ववर । २० ख ग उजछक । २१ ग. ताकी । २२ ख ग कहै । २३ ग जोवीयो । ख जोवीयो ।

---

२७ व्रिखायस – (?) जलह – चमक । जवरी – (?) । जम – (?) । अक्रूफ – (?) जहूर – जुहूर, प्रकट, जाहिर ।

२८ तहकीक – जाच, पडताल । मताळव – मतलव । मीर – अमीर, योद्धा, वीर ।

२९ विडरूप – भयकर । असि – घोडा । कुवाणि – वक्र, टेढे (?) । रणखेत – युद्धस्थल, युद्धभूमि । कीध – किया ।

३० ठौड – स्थान । ताजीम – सम्मान, सन्मान । दौलत्त नजर – वादशाहकी सवारीके अगाडी चलते समय चोवदारसे उच्चारण किये जाने वाले शब्द । चौपदार – चोवदार । जोवियौ – देखा । नीठ – मुश्किलसे । साम्हौ – सम्मुख, सामने । जियार – जव ।

उजबक[1] परजळियौ[2] अंग अग ।
रवदाळ कीध चख चोळ[3] रग ।
दळनाथ हुकम पर नजर[4] दीध ।
कूवा सछांह जिम क्रोध कीध ।। ३१

चढ़ि मसंद बैसि[5] इम कहै[6] चौज ।
कुण देस नगर पूरब[7] कनौज ।
निज धणी कमण जयचद नरेस ।
दे भेजे कुछ फुरमाण देस ।। ३२

किस पर पररेजह नाम कोय ।
है असपति इम[8] हां रैति होय[9] ।
अयसे[10] कोई है उह[11] अनेक ।
कौ गजनी माडव आदि केक ।। ३३

सो भरत डड अरु करत सेव ।
भटकियौ[12] बबर इम सुणे भेव ।
मुणियौ[13] खिज[14] दै फुरमाण मूझ[15] ।
तू नौकर न दियू[16] हाथ तूझ[17] ।। ३४

---

१ ख उजवक । २ ख. ग. परजलीयौ । ३ ख. ग घोम । ४ ग नजरि । ५ ख वैठि । ग. वैठि । ६ ग वाहै । ख. कहे । ७ ख. पूरंव । ८ ख ग सोउ । ९ ख होइ । ग हौय । १० ख ग. अइसे । ११ ख ग उर्हां । १२ ख ग भटकीयौ । १३ ख. ग. मुणीयौ । १४ ख विजै । ग षिजि । १५ ख ग मुझ्झ । १६ ख ग दीयौ । १७ ख. ग तुझ्झ ।

---

३१ उजबक – यवन, बादशाह का नाम । परजळियौ – क्रोधित हुआ । रवदाळ – मुसलमान बादशाह । चख – नेत्र । चोळ – लाल । दीध – दी । कूवा – कूप । सछाह – छाया-सहित ।

३२ मसद – अमीरोंके बैठनेकी गद्दी, मसनद । बैसि – बैठ कर । चौज – रसकी बात, आनन्दकी बात, गर्वपूर्ण उक्ति । धणी – स्वामी, मालिक । कमण – कौन । दे – दे कर । फुरमाण – आज्ञापत्र ।

३३ असपति – बादशाह । रैति – प्रजा । उहं – वहाँ ।

३४ भरत – अदा करते है, देते हैं । भटकियौ – कुपित हुआ, भडका । बबर – यवन । भेव – भेद, रहस्य । मुणियौ – कहा । खिज – कुपति हो कर । मूझ – मुझको । तूझ – तुझको ।

असल तौ[1] दियूं जद साह आय ।
विध[2] नकल तास दीधी वणाय ।
तजि नूर मांणले नकल तांम ।
हालियौ[3] हीणमद तजे हांम ॥ ३५

आवियौ[4] जठै पतिसाह आप ।
तिण देखि[5] साह[6] वर[7] वधे[8] ताप ।
क्रोधमे ववर[9] नह अरज कीध ।
दसकत्त नकल फुरमांण दीध ॥ ३६

जयचंद वचन वांचे व्रजागि ।
उर आखर[10] सुणियां[11] लगी आगि ।
पररेज धरे दाढ़ स पांण ।
*
कमवजां ग्रहूं गौसे[12] कवांण[13] ॥ ३७

---

१ ख असलि तौ । ग असिलि तौ । २ ख. ग विधि । ३ ख ग. हालीयौ । ४ ख. ग. आवीयौ । ५ ख. देसि । ६ ख ग साहि । ७ ख. ग. उर । ८ ग. वधे । ९ ख. वरन । १० ख ग. अधिर अविर । ११ ख ग. सुणि ।

*यहां पर निम्न पंक्तियां ख. तथा ग. प्रतियोंमें अधिक मिली हैं ।—

वोलीयौ वयण किरि जहर वाण ।
जंग करू पारसी लवज जाय ।
मगरूर हिंदू गरद हि मिलाय ।
पेलेस दुदळ वल पाग प्राण ।

१२ ख गोसं । ग. गोसे । १३ ख कमाण ।

---

३५ जद – जव । साह – वादशाह । विध – विधि । तास – उसकी । दीधी – दी । हीणमद – मदहीन हो कर । हांम – इच्छा ।

३६. आवियौ – आया । जठै – जहां पर । वर = उर – हृदय । वधे – वढ़ा । ताप – कोप । दसकत्त – हस्ताक्षर, अक्षर । दीध – दी, देदी । कीध – की ।

३७. वांचे – पढ़े । व्रजागि – जबरदस्त । आगि – अग्नि । दाढ़ीस – ठुड्डी और दाढ़ पर के बाल, श्मश्रु । पांण – पाणि, हाथ । गोसे – धनुषकी कोटि ।

छप्पय– एक[1] कहै असपत्ति, लिखे खत हफत बिलायत[2]।
हफत नकल लिख[3] हफत, कमध फुरमाण[4] हकीकत।
हफत-हजारी[5] हफत[6], सभै हक सद[7] जै सायत।
आय हफत ईसफां[8], मिळौ हफतम सझि हिम्मत[9]।
जव्वाब[10] साह[11] जयचद दिसि, माड[12] दियौ[13] इम जगमुकट।
सताब[14] लेहु करि गुसल सब[15], तेग आय[16] मेलाव[17] तट ॥३८

दोहा– फतै तुमै[18] कै हम फतै, मदत[19] जिसै रहमाण।
अब[20] ह्वैगे घर एक ही, खुरासांण[21] हिंदवाण ॥ ३९
इम[22] लिखि[23] मिळिया[24] साह अठ, करि इसफहा कटक्क[25]।
करण जग मसलति करे, उतरे पार[26] अटक्क[27] ॥ ४०
महि कनवज महि[28] जगमुकट, आयौ मंत्र[29] उदार।
छक चढियौ[30] चढियौ[31] छभा, जैचद करण गुहार ॥ ४१

---

१ ग. ऐम। २ ख ग विलायत। ३ ख ग. लिषि। ४ ख. ग हकीकत। ५ ख ग हजारां। ६ क. हफल। ७ ख. ग. रुक। ८ ख. ग इसफ। ९ ख हिंमत। ग हिमत्त। १० ख जव्वाव। ग. जव्बाब। ११ ख ग साहि। १२ ख ग माडि। १३ ख. ग दीयौ। १४ ख सातावा। ग. साताव। १५ ख सव। १६ ख. आवनी। ग आवनी। १७ ग लाव। १८ ख ग तुम्है। १९ ख. ग तिजि। २० ख अव। २१ ग षुरसांण। २२ ख ग यम। २३ ख ग लिषि। २४ ख. ग. मिलीया। २५ ख ग कट्टक। २६ ख ग पारि। २७ ख ग अट्टक। २८ ख ग मझि। २९ ख. ग. मंत्री। ३० ख ग चढ़ीयै। ३१ ख ग चढीयौ।

---

३८ असपत्ति – वादशाह। हफत – सात। बिलायत – देश। कमध – राठौड। फुरमांण – फरमान। हकीकत – यथार्थता, सच्चाई। हफत हजारी – सातहजारी, मुगलकालीन एक पदवी। हक – सत्य, यथार्थ। सद – आड, रुकावट, वाधा। जव्वाव – जवाव। दिसि – तरफ, ओर। मांड – लिख कर। सायत – समय।

३९. रहमाण – ईश्वर, रहीम।

४० मसलति – गुप्त मत्रणा, मत्रणा, सलाह। अटक्क – सिंधु नदी।

४१ महि – भूमि, मे। कनवज – कनौज। मंत्र – मन्त्री। छक – जोश। छभा – सभा। जुहार – अभिवादन।

धरपति जोवै धारणा, जगमुकटह[1] जैचंद[2] ।
मेलत नह आणंद मन[3], अणमेलत आणंद ॥ ४२
करि सलाम द्रव[4] नजरि[5] करि[6], समाचार कहि साह ।
द्रवे पत्र नृप[7] वाचियौ[8], उझळे क्रोध अथाह ॥ ४३
तांण[9] मूछ[10] तोले तिजड[11], विसन सकति कर वद ।
कूच नगारां हुय[12] कटक, चवै हुकम जयचंद ॥ ४४

छंद पद्धरी[13]

वजि[14]ध्रीह नगारां जेण[15] वार ।
धर अंबर थरहर जहर-धार ।
अन्नेक[16] भार भर कठठ[17] ऊठ ।
जाजुळ[18] अनेक आराब[19] जूट ॥ ४५
सिंधुरां मेघडंबर[20] सकाज ।
सझि पाखर हौदा जंग साज ।
वड[21] तुरी[22] जीण पाखर[23] वणाइ[24] ।
झूलाळ भड़ां नख सिख झिलाइ ॥ ४६

---

१ ख. जगमुकटल । ग. जगमुकटह । २ ख. हैंचद । ३ ख. ग मनि । ४ ख. द्रव । ५ ख ग. निजर । ६ ख कर । ७ ख. ग नृप । ८ ख वांचीयौ । ग वांचीयौ । ९ ख ग तांणि । १० ग मुछ । ११ ख. ग पड़ग । १२ ख. ग. होय । १३ ख पद्धडी । १४ ग वजि । १५ ख. ग. जेणि । १६ ख अनेक । १७ ग कठट । १८ ग. जाजुलि । १९ ख आराव । २० ख मेघडंवर । २१ ख ग. वड । २२ ख ग. तुरा । २३ ग. पाषण । २४ ख ग वणाय ।

---

४२. धरपति – राजा । जोवै – देखता है । धारणा – विचार ।

४३. द्रवे – दे कर । वाचियौ – पढ़ा । उझळे – उमडा । अथाह – वहुत ।

४४ तोले – उठा कर । तिजड़ – तलवार । विसन – विष्णु । सकति – शक्ति । वंद – नमस्कार । चवै – कहता है ।

४५. ध्रीह – नक्कारेकी ध्वनि । धर – पृथ्वी । अंबर – आसमान । थरहर – कंपायमान । जहर धार – शेषनाग । कठठ – ध्वनि विशेष करते चले । जाजुळ – ऊंट । आराब – तोप ।

४६ सिंधुरां – हाथी । मेघडंबर – मेघाडंबर । सझि – सज कर । पाखर – कवच (हाथी) । हौदा – हाथीका चारजामा । जंग साज – युद्धका सामान । तुरी – घोड़ा । जीण – घोडेका चारजामा या चारजामा सबकी समान । झूलाळ – समूह । झिलाइ – सुशोभित कर, पहना कर । छतीस – छत्तीस ।

छहतीस[1] वस आयुध[2] छतीस ।
सजि[3] काडाजूड[4] अड़ि उरस सीस ।
काळा दळवळ[5] बळ[6] चढ़ि[7] सक्रोध ।
जोग्यद्र[8] रूप राज्यद्र[9] जोध ॥ ४७

हुय[10] हूकळ कळहळ दळ अथाह ।
दरगह चलि[11] झळहळ मिळि दुबाह[12] ।*
जडि सस्त्र सिलह करि सकति जाप ।
इम चढे गयद जयचद[13] आप ॥ ४८

हालिया[14] थाट रजडमर[15] होय[16] ।
दळ जाणि हेक धर अवर दोय[17] ।
आमूझ[18] पंखि[19] अहि म्रत[20] अनेक ।
कुरँगाण जूथ आमूझ[21] केक ॥ ४९

---

१ ख छतीस । २ ख ग. आवध । ३ ख. ग सझि । ४ ग कड़ाजूड़ि । ५ ख. दळवळ । ६ ख. वळ । ७ ख चडि । ८ ख. जोगींद्र । ग जोगिंद्र । ९ ख. राजिंद्र । ग राजेंद्र । १० ख होय । ग हूय ।

*ख प्रतिमे यह पक्ति निम्न प्रकार है—

दरगह झळहळ मिलि भड दुवाह ।

११ ख. वल । १२ ख ग. दुवाह । १३ ख. जैचद । १४ ख. ग हालीया । १५ ग रझडंमर । १६ ख. होइ । १७ ख ग दोई । १८ ग. आमूझि । १९ ख ग पंषी । २० ख ग मृत । २१ ख ग आमूझि ।

---

४७. सजि – सज कर । कडाजूड़ – कटिवद्ध । अड़ि – स्पर्श कर के । उरस – आसमान । जोगंद – योगीन्द्र, महादेव । राज्यद्र – राजेन्द्र, राजा । जोध – योद्धा ।

४८. हूंकळ कळळ – घोडो तथा सेनाका कोलाहल । दळ – सेना । अथाह – असीम । दरगह – दरबार । झळहळ – देदीप्यमान । दुबाह – योद्धा । जडि – धारण कर । जाप – जप, ध्यान । इम – इस प्रकार । गयद – हाथी ।

४९. हालिया – चले । थाट – सेना, दल । रजडमर – धूलि-समूह । धर – पृथ्वी । अबर – आकाश । आमूझ – अमूझ कर, घुट कर । पखि – पक्षी । अहि – सर्प । कुरँगाण – हरिण । जूथ – समूह । केक – कई ।

तूटा बह[1] जळ सर[2] नदि[3] तटाक ।
हूकळ असि कळळ नकीब हाक ।
ताळी खुलि ऊठे बहु[4] तपेस ।
दळ धरा हले दहले द्रगेस[5] ।। ५०

ऊडंड नास सासा अपार ।
क्रोधाळ पवन[6] छजि रौदकार ।
घण नाळ तुरां अवघट्ट[7] घाट ।
वढि गिरवर[8] झिंगर[9] हुवै[10] वाट ।। ५१

जयचदतणा दळ एण[11] जात ।
सामंद्र उभ्रळिया[12] जाणि सात ।
करि धरा वीच[13] केइक[14] मुकाम[15] ।
जोजन मुर पुहुंता[16] कटक जाम ।। ५२

इण[17] हिज दळ समसर दळ उमंड ।
पतिसाह आठ चढिया[18] प्रचड ।

---

१ ख. वहीं । ग बहीं । २ ख. भरित । ग. भर । ३ ख दित । ४ ख. वहीं । ग वही । ५ ख ग दिगेस । ६ ग पवण । ७ ख अवघट । ८ ग गिरवरि । ९ ख ग. झींगर । १० ख. ग. हूवै । ११ ख एम । ग. ऐम । १२ ग उभ्रळीया । १३ ग. विचि । १४ ग केयक । १५ ख. ग सुकाम । १६ ख. पहुता । १७ ख यण । ग पण । १८ ख चढ़ीया ।

---

५० वह – बहुत । सर – तालाव । तटाक – तडाग, जलाशय । हूकळ – घोडोंकी हिनहिनाहट । असि – घोडा । कळळ – कोलाहल । नकीव – वह व्यक्ति जो किसी राजा-महाराजा वादशाहकी सवारीके आगे 'नजरे दौलत' आवाज करता चलता है । हाक – आवाज । ताळी – ध्यानावस्था । बहु – बहुत । तपेस – तपस्वी । दळ – सेना । धरा – पृथ्वी । हले – चले । दहले – कंपायमान हुए । द्रगेस – दिक्पाल, दिग्गज ।

५१ ऊडंड – घोडा । नास – नाक । सासा – श्वास । क्रोधाळ – क्रुद्ध । रौंदकार – रुद्र-रूप, भयंकर । घण – बहुत । नाळ – घोडेके सुमके नीचे लगाया जाने वाला लोहेका कड़ा । तुरा – घोडो । अवघट्ट – भयावह, जबरदस्त । घाट – स्थान । वढ़ि – कट कर । गिरवर – पर्वत । झिंगर – झाडी-समूह । वाट – मार्ग ।

५२. एण – इस प्रकार । जात – चलते हैं । सामद्र – समुद्र । उभ्रळिया – उभड़े । जाणि – मानो । केइक – कई । मुकाम – पडाव, डेरा । जोजन – योजन । मुर – तीन । पुहुंता – पहुँच गये । कटक – सेना, दल । जांम – प्रहर ।

५३. समसर – समान । उमड – उमड कर । पतिसाह – वादशाह । प्रचड – जवरदस्त ।

कठठिया[1] दहूं दळ काळ कीठ ।
पनगेस कमळ भिडि कमठ पीठ ।। ५३
अपछरा हूर रथ आसमांण ।
वजि सौक भांण थंभियौ[2] विमाण ।
परि[3] सौक झौक रातळ अपार ।
वजि सौक काळ चक्र विखम वार ।। ५४
काळिका डहक डमरू क्रहाक[4] ।
हर[5] रिख[6] मिळि जोगणि[7] वीरहाक ।
लख लक्ख[8] अरावा[9] धोम[10] लागि ।
ऊछळिया[11] गोळा चोळ आगि ।। ५५
जळधर अग्राज चढि धोम जोर ।
घण निसा अमावस तिमर घोर ।
पखरैत भिडज[12] जरदैत पूर ।
संघार हुवे अणपार सूर ।। ५६

---

१ ख. ग. कठटीया । २ ग थंभीयौ । ३ ख ग. परसोक । ४ ग कहाक । ५ ग हुरि । ६ ख. रिषि । ७ ग जोगणी । ८ ख लष । ग. लष्प । ९ ख. अरावां । १० ख. धोमि । ११ ख ऊछलीया । ग. उछळीया । १२ ख भिडज ।

---

५३. कठठिया – ध्वनि विशेष करते हुए चले । दहूं – दोनो । काळ कीठ – यमराजके समान । पनगेस – शेषनाग । कमळ – शिर, मस्तक । भिडि – टकराये । कमठ – कच्छप ।

५४ अपछरा – अप्सरा । हूर – परी । आसमांण – आकाश । सौक – ध्वनि विशेष । भांण – सूर्य । थंभियौ – रुका । विमाण – विमान । रातळ – पक्षी विशेष । काळ चक्र – यमराजका चक्र । विखम – भयकर, विषम । वार – समय ।

५५. डहक – हँसी । क्रहाक – ध्वनि विशेष । हर – महादेव । रिख – नारद ऋषि । वीर हाक – युद्धप्रिय भैरवदेवकी ध्वनि । अरावां – तोपो । धोम – अग्नि । ऊछळिया – उछले । चोळ – लाल, रक्तवर्ण । आगि – अग्नि ।

५६ जळधर – मेघ । धम – धुंआ । निसा – रात्रि । तिमर – अन्धेरा । घोर – घना, पूर्ण, पूरा, भयकर । पखरैत – कवचधारी घोडे । भिड़ज – घोडा । जरदैत – कवचधारी योद्धा । संघार – सहार । अणपार – असीम । सूर – वीर ।

बह[1] छूट अम्हौसम्ह[2] कुहक[3] बांण[4] ।
पमगा[5] गज[6] सुभटां[7] उडै प्रांण ।
पग हाथ उडै धड सीस पाट ।
आहुड़ै क्रोध पौरस[8] उपाट ।। ५७
हाकलै भडा जैचंद अथाह* ।
सुरतांण सात पररेज साह ।
बह[9] जोध कसै करगां कबांण[10] ।
पडि बाण[11] सौक घण झोक[12] पांण ।। ५८
तन फूट[13] पड़त[14] तड़फड़त ताइ ।
लख हेक जाणि लौटण लुटाइ[15] ।
पड़ि सौक भयकर उडि पखाळ ।
काळमे जाणि घण प्रळयकाळ ।। ५९
सामिळै तुरक[16] हिंदू[17] सक्रोध ।
जुध[18] दाणव देवा[19] जेम जोध ।

---

१ ख. वहौ । ग वहौ । २ ख. अम्होसम । ३ ख ग कौहौक । ४ ख वांण । ५ ख पमगां । ग पमगा । ६ ख मज । ७ ख ग सुभडा । ८ ख ग पौरिस ।

*ख प्रतिमे यह पक्ति निम्न प्रकार है—

हाकलै भडा जैचद चद अथाह ।

९ ख. वहौ । ग वहौ । १० ख कवाण । ११ ख. वाण । १२ ख. छोक । १३ ख फूटि । ग. फुट । १४ ग पडै । १५ ख लुटाय । १६ ख तूरक । १७ ख ग हींदू । १८ ग. जुधि । १९ ख देवा ।

---

५७. वह – वहुत । अन्हौसम्ह – आमने-सामने । कुहक वाण – एक प्रकारकी तोप । पमंगां – घोडो । गज – हाथी । सुभट – योद्धा । आहुड़ै – भिड़ते हैं, युद्ध करते है । पौरस – वल, शक्ति । उपाट – अधिक, अपार ।

५८ हाकलै – जोश दिलाता है । भड़ा – योद्धाओ । अथाह – वहुत । करगां – हाथी । कवांण – कमान, धनुष ।

५९ तन – शरीर । तडफड़त – तटफडाते हैं । ताइ – शत्रु । लौटण – कवूतर । सौक – पक्षियोके तेज उडनेकी ध्वनि । पंखाळ – पक्षी ।

६०. सांमिळै – भिटते हैं । सक्रोध – क्रोधपूर्ण । दाणव – दानव, असुर ।

धमरोळ पड़ै सेलां ध्रियाग[1] ।
खागा[2] कर[3] नीछट वहै खाग ॥ ६०
धड फूटत[4] तूटत सीस धार[5] ।
पडनाळ स्रोण वभकै अपार ।
चौसठी[6] पियै[7] भरि पत्र चंड ।
सिर माळ सझै[8] आरोह सड ॥ ६१
उड[9] रहियौ खागां गजर एम[10] ।
जुधि फहर[11] लक मझि गजर जेम ।
हुब[12] करै विना धड़ धूहकार ।
धू विना करै धड पछट धार ॥ ६२
सामठा लड़ै धड[13] पड़ै मूर ।
हरखंत वरै बह[14] रभ हूर ।
पड़ि पेसकवज[15] खरडक अपार ।
करडक्क खाग झरडक[16] कटार ॥ ६३

---

१ ख ग ध्रीयाग । २ ख. पाषा । ग पापां । ३ ख ग करि । ४ ग फूडत । ५ ग. धारि । ६ ख चौषटी । ग चौसटी । ७ ख ग. पीयै । ८ ख सझत । ९ ख ग उडि । १० ग ऐम । ११ ख ग फजर । १२ ख हुव । १३ ख ग धर । १४ ख वीहो । ग वीहो । १५ ख पेमकवज १६ ख. झरडक्क ।

---

६०. धमरोळ – प्रहारकी ध्वनि, हलचल । सेलां – भालो । ध्रियाग – वहुत, आकाश । कर – हाथ । नीछट – निकल कर, छूट कर ।

६१. पड़नाळ – जलकी नाली । स्रोण – खून, रक्त । वभकै – उमडता है । चौसठी – चौसठ युद्धप्रिय योगिनियां । चड – चडिका । सिरमाळ – मुडमाला । सझै – सजाते हैं । आरोह – सवार होकर । सड – वैल ।

६२ गजर – आवाज, प्रहार । हुव – भिड कर, युद्ध कर । धूहकार – आवाज विशेष, ध्वंस, नाश । धू – शिर । पछट – प्रहार । धार – तलवार ।

६३ सांमठा – वहुत, एक साथ । पडै – वीर गति प्राप्त होते है । हरखंत – हर्षित । वरै – वरण करती है । वह – वहुत । रभ – अप्सरा । हूर – परी । पेसकवज – पेशकब्ज । खरडक – प्रहार । करडक्क – शस्त्रका प्रहार या प्रहारकी ध्वनि । खाग – तलवार । झरड़क – शस्त्रका प्रहार या प्रहारकी ध्वनि ।

गजसीस पड़ै[1] धड पड़ै गात ।
पडिया[2] किर पाहड वज्र पात ।
गिळ[3] धापै पळचर मस गाळ ।
खळकिया[4] घणा रुधराळ[5] खाळ ।। ६४

नदि नांम अगै कहता निलाव[6] ।
सुरखाव[7] होय[8] उभळै[9] सताव ।
असि गयद असुर सुर कटि अपार[10] ।
पडिया[11] घण घायल घण अयर ।। ६५

इण भात[12] सात निस[13] दिन[14] अभग[15] ।
जुडि जीतौ जैचद[16] भूप जग[17] ।
सुरताण आठ इक दिवस साहि ।
मेल्हविया[18] काराग्रेह माहि ।। ६६

छप्पय— सिरै साह पररेज, रुमपति ग्रहे वहादर[19] ।
गौहरि[20] पारिज ग्रेह[21], हठी फिरँगी वहु[22] हुन्नर ।
हवसी[23] साह हुसेन, तरह मवला तूरानी ।
सेरसाह इसफहा, अभग ग्रहियौ[24] ईरानी[25] ।

---

१ ख ग झडै । २ ख ग पडीया । ३ ख ग गिलि । ४ ख ग कीया । ५ ख ग रुधिराळ । ६ ख नीलाव । ग. नीलाव । ७ ख सुरखाव । ८ ख होइ । ग होई । ९ ख उजले । १० ख. अपार । ११ ख ग पडीया । १२ ख ग भाति । १३ ख ग दिन । १४ ख ग निसि । १५ ख अनग । १६ ख ग जयचद । १७ ख झग । १८ ख ग मेल्हवीया । १९ ख वहादर । ग वाहादर । २० ख हर । ग र । २१ ख. ग्रहे । ग ग्रहै । २२ ख वहो । ग वहूं । २३ ख हवसी । २४ ख ग ग्रहीयौ । २५ ग इरानी ।

---

६४ पाहड – पर्वत । गिळ – निगल कर । पळचर – मासाहारी । मंस – मास । गाळ– क र, निवाला । खळकिया – ध्वनि करते हुए द्रव पदार्थ (खून), वहा । रुधराळ – रक्त, खून । खाळ – नाला ।

६५ अगै – पहिले । निलाव – स्वच्छ, नीलाभ । सुरखाव – लाल । उभळै – उडम रही है । सताव – शीघ्र । असि – घोडा । गयद – हाथी । असुर – मुसलमान । सुर – हिंदू । अयर–शत्रु ।

६६. निस – रात्रि । अभग – निरन्तर । जुडि – भिड कर । जीतौ – विजयी हुआ । सुरताण – वादशाह । दिवस – दिन । साहि – पकड कर । मेल्हविया – भेजे । काराग्रेह – कैद ।

ग्रैराक साह सल्लैमवै, बलकी[1] बबर[2] महाबळी[3] ।
पतसाह[4] ग्राठ जयचद[5] पकडि, इळ किय[6] किय[7]की ऊभळी[8] ॥ ६७

दोहा[9]–इम[10] जीते कनवज ग्रयौ, ग्रति छक वधे ग्रनद ।
सुरच द रीत बहु[11] कीध सुख, जगतजीत जयचद[12] ॥ ६८
बहु[13] खाटे जयचद विरद[14], वधि खग दत[15] विणवार ।
ग्रावै नहि[16] जे थाग ग्रति, पावै नहि[17] को[18] पार ॥ ६९
दे गज ग्रसि सिरपाव दळ, स्रब[19] छोडै सुरताण ।
साह ग्रहण मोखण सुपह, पाया विरद प्रमाण ॥ ७०
करै राज इण विध[20] कमध, पथ[21] वड ऊमर[22] पाय ।
सुपह पग कीरति सझै, एम[23] वसे[24] स्रगि ग्राय ॥ ७१

इति जयचद वरणण ।

*

छद पद्धरी

वरदाय पगसुत सूरवीर ।
सुत तास सेन झळहळ सरीर ।

---

१ ख वलकी । २ ख ववर । ३ ख ग. महावली । ४ ख ग पतिसाह । ५ ख जैचद । ६ ख ग. कीय । ७ ख. ग कीरति । ८ ख. ऊजळी । ग उजळी । ९ ग दौहा । १० ग. इन । ११ ख वहौ । ग बहौ । १२ ग जैचद । १३ ख वहौ । ग बहौ । १४ ख विरद । १५ ग दग । १६ ख ग नह । १७ ख ग नह । १८ ख ग कोय । १९ ख श्रव । ग श्रब । २० ख ग विधि । २१ ख ग यळ । २२ ख ग उम्मर । २३ ख येम । ग येमि । २४ ग बसे ।

---

६७. इळ – पृथ्वी । ऊभळी – उज्ज्वल ।

६८ ग्रयौ – ग्राया । छक – जोश । सुरच द – सुरेन्द्र, इन्द्र । कीध – किये ।

६९ खाटे – प्राप्त किये । विरद – विरुद । दत – दान । थाग – सीमा हद ।

७० साह – बादशाह । ग्रहण – पकडना । मोखण – छोडना । सुपह – राजा । पाया – प्राप्त किये । विरद – विरुद ।

७१ पग – राजा जयचदका विरुद । सझै – प्राप्त कर । स्रगि – स्वर्गमे ।

७२ वरदाय – वरदायीसेन । तास – उस । सेन – वर- दायीसेन । झळहळ – देदीप्यमान ।

नवखड दांन खग सुजस नांम[1] ।
राजंत सेन सुत सेतरांम[2] ।। ७२

अथ राव सीहारौ वरणण

ते सुतन[3] सीह दन खाग तीख ।
साभाव सुपह जैचद सरीख ।
कनवज्जहूत सीहौ सकाज ।
सझि चलै[4] पूर दळवळ[5] समाज ।। ७३
पह[6] चढ़े जाणि दध[7] छिले पाज ।
रिणछोड दरस कजि महाराज[8] ।
इळ पूरवहूंता[9] पछिम आय ।
जात्रा द्वारावति[10] कीध जाय ।। ७४
करि मदत चावड़ां अचड[11] कीध ।
लखपत[12] फूलाणी मार[13] लीध ।
ओद्राव पड़े पच्छिम[14] अपार ।
सह[15] कहै एम[16] कीरति सँसार ।। ७५

---

१ ख मांम । २ ख. सेनराम । ३ ख ग सुतण । ४ ख ग चढ़े । ५ ख. दळवळ । ६ ख. ग. पहौ । ७ ख. ग. दधि । ८ ख ग माहाराज । ९ ख पूरव । १० ख ग द्वारामति । ११ ख अचळ । १२ ख ग लखपति । १३ ख ग मारि । १४ ख ग पछिम । १५ ख. ग. सोहो । १६ ऐस ।

---

७२ राजत – शोभायमान होता है । सेन – वरदायीसेन ।

७३ ते – उस । सुतन – पुत्र । सीह – राव सीहा । दन – दान । तीख – विशेष, विशेषता । साभाव – स्वभाव । सुपह – राजा । सरीख – समान । कनवज्जहूंत – कनौजसे । सीहौ – राव सीहा । सझि – सुसज्जित हो कर ।

७४ पह – राजा । जाणि – मानो । दध – उदधि, समुद्र । छिले – उमड कर, छलक कर । पाज – सीमा, मर्यादा । दरस – दर्शन । कजि – लिए । इळ – पृथ्वी, भूमि । पूरवहूंता – पूर्वसे । जात्रा – यात्रा । द्वारावति – द्वारका । कीध – कीया ।

७५ अचड – महत्त्वपूर्ण कार्य । मार लीध – मार दिया । ओद्राव – भय, आतंक । सह – सब ।

जिण लखै अवनि वह[1] थाट जीत ।
कोड़ेस[2] बगसि[3] बहु[4] लीध क्रीत ।
सलिता सिणगारी जे सधीर ।
वाहर[5] सूरजरी चढै वीर ।। ७६

गहकत[6] इसौ लाखौ गरूर ।
सीहौ इज[7] साझै महासूर[8] ।
जात्रा सझि दारण[9] जिपै[10] जग[11] ।
आवियौ[12] नयर कनवज अभग ।। ७७

इम कहै वयण संदेस आय ।
परदेस दवावौ[13] खळ पजाय[14] ।
पर भोम[15] दवावौ[16] खगां पाण ।
पर भोम जिकै वाजै पँच्चांण[17] ।। ७८

पुत्र सीहतणा बळ[18] सीह पूर ।
समसेर पकड़िया[19] ऊठिया[20] सूर ।

---

१ ख. वहौ । ग वहौं । २ ख कोडेक । ३ ख वडासि । ४ ख वौहौ । ग बौहौ । ५ ग वाहर । ६ ख ग. गहतंत । ७ ख. हीज । ग. इज । ८ ग माहासूरि । ९ ख. ग. दारुण । १० ख ग जीपि । ११ ख जंग । ग. झग । १२ ख ग आवीयौ । १३ ख दवाओ । ग दवाओ । १४ ख. पजाय । ग. पंजाय । १५ ख ग परभौमि । १६ ख दवावै । ग दवावै । १७ ख. पछाण ग. पचाण । १८ ख ग वळ । १९ ख कडि । ग पकडि । २० ख ग ऊठीया ।

---

७६. लखै – लाखा फूलाणी । अवनि – पृथ्वी, भूमि । बह – बहुत । थाट – सेना । कोडेस – करोडो । बगसि – प्रदान कर, दान दे कर । लीध – ली । क्रीत – कीर्ति, यश । सलिता – नदी ।

७७ गहकत – गर्वपूर्व बोलता है, जोशपूर्ण बोलता है । इसौ – ऐसा । लाखौ – लाखा फूलाणी-नामक यादव राजा । गरूर – गर्वीला, अभिमानी । सीहौ – राव सीहा । इज – ही । साझै – सजा देता है, मारता है । जात्रा – यात्रा । दारण – दारुण, भयकर । जिपै – जीतता है । नयर – नगर । कनवज – कनौज । अभग – वीर ।

७८ वयण – वचन । संदेस – स्वदेश । दवावौ – अधिकारमे करो । खळ – शत्रु, दुष्ट । पजाय – पीट कर, वशमे कर । पर – शत्रु । भोम – भूमि, राज्य । खगां – तलवारो । पांण – प्रभाव से । जिकै – जो । पँच्चांण – पचानन, सिंह ।

७९ सीहतणा – राव सीहाके । समसेर – तलवार । सूर – वीर ।

अथ आसथानरौ वरणण

थट सभे महावळ[1] आसथांन ।
अज सोनग[2] चढ़िया भड अमान ।। ७९
ऊगमण धराहूं[3] एम[4] आय ।
जुध कीध आथमण धरा जाय ।
वाहै[5] खग गोहिल दळ विभाड[6] ।
इम[7] लीध[8] खेड़ धर मारवाड[9] ।। ८०
विहडियौ[10] सिवर मगरूर वाधि ।
ससि नांम आदि अतरिख[11] समाधि ।
जुड़ि करै नास[12] मैवास जंग ।
ईडरगढ लीधौ इम अभग ।। ८१
ईडरगढ सोनिग कर[13] अग्राज[14] ।
रचियौ[15] अतुळीबळ[16] अडिग राज ।
अज कमध द्वारिका दिसी आय ।
जिण मिळै चावडां मुहरि[17] जाय ।। ८२

---

१ ख महावल । ग माहावळ । २ ख सोंनिग । ग. सोनिग । ३ ग धराहु । ४ ग ऐम । ५ ख वाहे । ६ ख ग विभाड़ि । ७ ख यम । ग येम । ८ ग. कीध । ९ ख ग. मारवाड़ि । १० ख ग विहडीयौ । ११ ग अतिरिष । १२ ख ग नाम । १३ ख ग करि । १४ ख अग्राहज । १५ ख. रवियौ । ग. रवीयौं । १६ ख ग अतुळीवल । १७ ख. ग मोंहोर ।

---

७९. थट – सेना । अज – राव सीहाके एक पुत्रका नाम । अमांन – जबरदस्त, मजबूत, दृढ ।

८० ऊगमण – पूर्व दिशा । धराहूं – भूमिसे । आथमण – पश्चिम । वाहे – प्रहार कर । खग – तलवार । विभाड़ – संहार कर । लीध – ली ।

८१ विहडिया – सहार किये, मारे । मगरूर – गर्व । वाधि – विशेष । ससि नाम – यश । अतरिख – आकाश, आसमान । समाधि – पूर्णता, पूर्ण । जुड़ि – भिड कर । मैवास – लूटेरा, डाकू । जग – युद्ध । लीधौ – लिया । अभंग – वीर ।

८२. अग्राज – गर्जना । अतुळीवळ – शक्तिशाली । अडिग – अटल । दिसी – तरफ, ओर । मुहरि – अगाडी, प्रथम ।

माणक[1] च्यार[2] अस्व सर[3]स मेक[4] ।
उझ्ळी[5] दखिणाव्रत[6]-सख एक ।
कट्टार[7] हीर नग जडित[8] कीध ।
दळनाथ कमधरी नजर दीध ।। ८३
जळ देवी सप्रसन[9] हुई[10] जाम ।
तदि दीध[11] सुपन अज मुतण ताम ।
वीकमसीहूता[12] एक[13] बाणि[14] ।
जळदेवि उचारै सूर जाणि ।। ८४
धर दीध तूझनू[15] मूझ धाय ।
चावडांतणौ सिर मो चढाय ।
सकतिरौ पाय वर इम सधीर ।
वीकमसी वीकम[16] हणै वीर ।। ८५
सत्रु[17] वाढि सोस पूजै सकत्ति[18] ।
वाढेल[19] कहाया इण[20] विगत्ति[21] ।
इम लीध मंडळ औखौ उदार ।
धर समंद[22] वीटि[23] गढ सखोधार ।। ८६

---

१ ख माण्यक। ग. मांणक। २ ख ग च्यारि। ३ ख सरि। ग रस। ४ ख अमेक। ५ ख उज्जल। ग उझ्झळ। ६ ग दषिण। ७ ख ग कटार। ८ ख जटित। ९ ग. प्रसन। १० ख. हुइ। ग हूई। ११ ग दीद। १२ ख वीकसी। १३ ख. एम। ग ऐम। १४ ख ग वाणि। १५ ख. ग. तूनू। १६ ग रुकम। १७ ख ग सत्र। १८ ख ग सकति। १९ ख वढिल। २० ख तिणि। ग तिण। २१ ख ग विगति। २२ ख ग समद। २३ ख ग विट।

---

८३ दखिणाव्रत-सख – एक प्रकारका मागलिक शख विशेष। दीध – दिया, दिये।

८४ सप्रसन – सुप्रसन्न। जाम – जव। तदि – तव। सुपन – स्वप्न। अज – वीर राठौड आसथानके छोटे भाईका नाम। सुतण – पुत्र। वीकमसीहूता – चावडा राजा भोजके पुत्र वीकमसी चावडा। सूर – वीर। जाणि – समझ कर, जान कर।

८५ धर – भूमि। तूझनू – तुझको। मूझ – मुझको। धाय – स्मरण कर, पूजा कर, ध्यान कर। चावडातणौ – चावडोका। मो – मुझको। चढ़ाय – भेंट कर दे, बलि दे दे।

८६ वाढ़ि – काट कर। वाढ़ेल – राठौड वशकी एक शाखा। विगति – वृत्तान्त। मडळ औखौ – ओखा मडल, द्वारका मडल। वीटि – घेर कर, आवेष्टित कर। सखोधार – शखोद्धार, द्वारकाके पासका स्थान।

आए[1] पूरब[2] हूं पछिम एम[3] ।
जग कीध राज ध्रुवराज जेम ।

अथ राव धूहड़रौ वरणण

असथांन पाट[4] धूहड़ अमान ।
सझि कटक लियौ[5] कनवज सथांन ।। ८७
रचि समर बधवाहूत[6] रूठ ।
देवि चक्रेसुर[7] लीध दूठ ।
परठि[8] नागाणै सझि परेच ।
निज नाम हुवौ[9] जिण[10] नागणेच ।। ८८
पड़हार[11] घणा हणि सुजस पांमि ।
कमधज्ज[12] लेखवळि अयौ कामि ।
रत्त[13] सीची महुरत इसै रैण ।
जिण ब्रधराज[14] धर[15] अडिग जेण ।। ८९

---

१ ग आऐ। २ ख पुरव। ३ ग. ऐम। ४ ख. ग. पाटि। ५ ख. ग. गयौ। ६ ख ग. वधवां।' ७ ग चक्रेसुरि। ८ ख ग परठी। ९ ख. हूवो। ग. हुवो। १० ख जिणि। ११ ख. ग पडिहार। १२ ग. कमधज। १३ ख रत। ग रत्त। १४ ख ग वंसराज। १५ ग धरि।

---

८७ कीध – किया। ध्रुवराज – राजा ध्रुव। जेम – जैसे। असथांन – राव आसथान। पाट – राज्यसिंहासन। धूहड़ – राव आसथानके पुत्र व उत्तराधिकारी राजाका नाम। अमान – महान, जबरदस्त। सझि – सज कर। कटक – सेना। कनवज – कनौज। सथांन – स्थान।

८८ रचि – रच कर। समर – युद्ध। बधवाहूत – भाइयोसे। रूठ – नाराज हो कर। चक्रेसुर – राठौडोकी कुलदेवी चक्रेश्वरी। दूठ – जबरदस्त। परठि – पूजा कर। परेच – पर्दा। नागणेच – राठौडोकी कुलदेवी चक्रेश्वरीका नाम।
नोट – कहते हैं कि पूजाके समय चक्रेश्वरी देवीने राव धूहडजीको नागके रूपमे दर्शन दिये थे।

८९. पड़हार – पडिहार नामक राजपूत वंश। हणि – सहार कर, मार कर। पामि – प्राप्त कर। लेखवळि – प्रारब्धवश। अयौ कामि – काम आया। महुरत – मुहूर्त। रैण – भूमि रेणु।

अथ रायपाळवरणण

पह[1] धूहड सभ्रम[2] रायपाळ ।
झाळाहळ पौरस[3] अगनिझाळ ।
वीराधिवीर[4] पिततणै वैर ।
निज दळ सझि घेरे दुसह नैर ॥ ६०
दमगळ[5] रवि थाभै वाग दीठ ।
रिम थटां दियौ[6] खग[7] झटा रोठ ।
जाजुळि[8] पडिहारा[9] कुळ निजौडि[10] ।
इम लियौ[11] मडोवर गढ अरौडि[12] ॥ ६१
सुत[13] रायपाळ कानड[14] सधीर[15] ।
धरथभण 'जालण'[16] सूर धीर[17] ।
सुत 'जालण' 'छाडौ'[18] वस सूर ।
पाटोधर[19] 'तीडौ'[20] विरदपूर ॥ ६२

---

१ ख पहौ। ग पौहौ। २ ख. संभ्रम। ३ ख. ग पौरिस। ४ ख ग. वीराध। ५ ख ग दमगळ। ६ ख ग दीयौ। ७ क खट। ८ ख जाजुळ। ९ ख डिहारा। १० ख निजोड़ि। ग निजोड़। ११ ग लीयौ। ख. ली। १२ ख अरोडि। ग. अरोड। १३ ग. सूत। १४ ख. ग कान्हड। १५ ख ग सुधीर। १६ ख. ग जाल्हण। १७ ख. वीर। १८ ख. ग. छाडो। १९ ख. ग पाटोधर। २० ख तीरौ। ग. तीडौ।

---

६० पह – राजा। सभ्रम – पुत्र। झाळाहळ – देदीप्यमान। पौरस – शक्ति, वल। अगनि – अग्नि, आग। झाळ – लपट। वीराधिवीर – महावीर। पिततणौ – पिताके। दळ – सेना। नैर – नगर।

६१ दमगळ – युद्ध। रवि – सूर्य। थामै – रोकता है। वाग – लगाम। दीठ – देखा। रिम – शत्रु। थटा – समूहो, दलो। खग – तलवार। झटा – प्रहारो। रोठ – प्रहार। जाजुळि – जाज्वल्यमान, देदीप्यमान, तेजस्वी। निजौडि – काट कर, मार कर। अरौडि – जवरदस्त।

६२ कानड – राव रायपालका जेष्ठ पुत्र कनपाल। सधीर – वीर। धरथभण – भूमि-रक्षक, भूमिका सहारा, राजा, वीर। जालण – राव कनपालके उत्तराधिकारी राव जालणसी। छाडौ – राव जालणसीका जेष्ठ पुत्र राव छाडा। सूर – सूर्य। पाटोधर – पट्टाधिकारी। तीडौ – राव छाडाका जेष्ठ पुत्र तीडा। विरदपूर – यशस्वी।

राव सलखारौ वरणण

तीडरौ सळख कुळ चाढ तोइ[1] ।
दन खगा[2] विरद अजवाळ[3] दोइ[4] ।

अथ वीरमरौ वरणण

'वीरम' सळखावत खगां वाग[5] ।
जोइया वाढि[6] बिढियौ[7] व्रजाग[8] ।। ६६

अथ राव चूडारौ वरणण

गाथा चौसरा

चविजै 'वीर' पाटि राव चौंडौ ।
चहुवै जका करण जस चौडौ ।
चाढण सुजळ[9] उभै कुळ चौडौ ।
चरु सुकाळ विरदा[10] धर चौडौ ।। ६७

---

१ ख ग तोय । २ ख ग. षाग । ३ ख. अजुवाल । ग. अजुवाल । ४ ख. ग. दोय । ५ ख. ग वागि । ६ ख ग वाढि । ७ ख वढीयो । ग बढीयौ । ८ ख ग. व्रजाग्नि । ९ ग सुज । १० ख ग विरद ।

---

६६. तीडरौ – राव तीडाका । सळख – राव सखला । तोइ – तोय, आव, काति, दीप्ति । दन – दान । खगां – तलवारो । अजवाळ – उज्ज्वल कर । दोइ – दोनो । वीरम – राठौड राव वीरमदेव । सळखावत – राव सलखाका पुत्र । खगा वाग – तलवारें चलने पर, युद्ध होने पर । जोइया – एक प्राचीन राजपूत वंश जो कालान्तरमे मुसलमान हो गया था, यौद्धेय वश । वाढ़ि – काट कर, संहार कर । विढियौ – कट गया, वीर गति प्राप्त हुआ । व्रजाग – वज्राग्नि, वीर, जबरदस्त ।

६७ चविजै – कहा जाता है, कहते हैं । वीर – राठौड राव वीरमदेव । पाटि – राज्य-सिंहासन पर । राव चौंडौ – राव चूडा राठौड । चहुंवै – चारो । जकां – दिशाएँ । करण – करने वाला, दानवीर राजा कर्ण । चाढ़ण – चढने वाला । सुजळ – काति, दीप्ति । उभै – दोनो । चरु सुकाळ – वह दातार व उदारमना व्यक्ति जिसके दरवाजे पर कोई भूखा नही जा सकता हो । वह उदार राजा जिसने भूखी प्रजाको भोजन करानेका प्रण ले रखा हो ।

नोट – राठौड राव चूडाका चरु सुकाळ विरुद था । उसने भूखी प्रजाको भोजन करानेका प्रण ले रखा था । उसके राज्यमे कोई भूखा नही रह सकता था ।

*छन्द[1] जात झपताळ

वरियाम चौंड वखाणियै[2] ।
जगजीत व्रद धर जाणियै[3] ।
असुराण हिण जुध अप्पियौ[4] ।
लडि फेर[4] मंडोवर[5] लियौ[6] ॥ ९८
पह[7] खानजादा पाछटे ।
इळ नागपुर गढ आछटे[8]
जस धरम व्रद[9] भुज[10] छाजिया[11] ।
दनि सात सांसण करि दिया[12] ॥ ९९
प्रथमाद[13] सिर[14] व्रद[15] पावियौ[16] ।
कुळ भांण चौंड कहावियौ[17] ।
चत्रदूण खट पुत्र चौंडरै ।
सझि[18] हुवा दनि खग[19] जग सिरै ॥ १००

---

१ ख ग छंद ।

*ख तथा ग प्रतियोमे—छंद झमताळ ।

२ ख. ग वषाणीयै । ३ ख ग जांणीयै ।

*ख. तथा ग. प्रतियोमे वह पंक्ति निम्न प्रकार है—

असुरांण जुधि हणि वोपीयौ । (ख वोपीयौ । ग वोपीयौ)

४ ख ग फेरि । ५ क मंडोवरि । ग मंडवरि । ६ ख ग लीयौ । ७ ख ग पोहो । ८ ख ग ओहटे । ९ ख व्रत । १० ग भुझ । ११ ख ग छाजीया । १२ ख ग. दीया । १३ ख ग प्रियमादि । १४ ख ग सिरि । १५ ख व्रत । ग व्रंद । १६ ख ग पावीयौ । १७ ख ग कहावीयौ । १८ ख सुजि । १९ ख ग षगि ।

---

९८ वरियाम – श्रेष्ठ । चौंड – राव चूंडा । वखाणियै – यश वर्णन कीजिये । जगजीत – संसार विजयी । व्रद – विरुद । असुराण – यवन, मुसलमान । हिण – मार कर ।

९९ पह – प्रभु, राजा, योद्धा, वीर । खानजादा – मुसलमान । पाछटे – पछाड । इळ – पृथ्वी । नागपुर – नागौर । आछटे – पछाडा, जीता । व्रद – विरुद । छाजिया – शोभित हुए । दनि – दान । सासण – राजा द्वारा दानमे दी गई भूमि या ग्राम, शासन ।

१०० प्रथमाद – पृथ्वी, भूमि । सिर – पर, ऊपर । पावियौ – प्राप्त किया । भांण – सूर्य । चौंड – राव चूंडा । कहावियौ – कहलाया । चत्रदूण – आठ । खट – छ । दनि – दान । खग – तलवार । सिरै – श्रेष्ठ ।

दस च्यार रवि दरसाविया[1] ।
कुळ राव सकळ कहाविया[2] ।

अथ राव रणमलरौ वरणण

ऽवा[3] माहि रणमल ऐहडौ[4] ।
जगि[5] सुरा सुरिइद[6] जेहडौ ।। १०१
गहि[7] खाग जिण कणियागरा[8] ।
जुध हणे करि धमजागरा ।
नाडूळ दुरग नमावियौ[9] ।
इम फतै कर धर आवियौ* ।। १०२
अति भूळ गह मह आवळा ।
विमरीर[10] भड रिण वावळा ।
खग धार आछट दे[11] खुरा ।
धर भोगवता[12] मुरधरा@ ।। १०३
चित[13] समद[14] थानिक 'चौडरै' ।
कमधज्ज[15] राजस इम करै ।

१ ख ग दरसावीया । २ ख ग कहावीया । ३ ख ग वा । ४ ख एहडौ ५ ख ग. जुगि । ६ ख ग सुरीयंद । ७ ख ग ग्रहि । ८ ख ग कणीयागरा । ९ ख ग. नमावीयौ ।

*ख. तथा ग. प्रतियोमे यह पक्ति निम्न प्रकार है—
जगि अमल आप जमावीयौ ।

१० ग वरवीर । ११ ख ग. है । १२ ख. भोगवत ।

@ग प्रतिमे यह पक्ति निम्न प्रकार है—
धर भोग पुहुचत मुरधरा ।

१३ ग. चित । १४ ख कमद । १५ ख ग कमधज ।

---

१०१ रवि – सूर्य । दरसाविया – दिखाई दिये । ऽवा – उन । माहि – मे । ऐहड़ौ – ऐमा । जगि – ससारमे । सुरा – देवताओमे । सुरिइद – सुरेन्द्र, इन्द्र । जेहडौ – जैसा ।

१०२ गहि – धारण कर, पकड कर । कणियागरां – जालोरके शासक सोनगरा चौहाणोसे । जुध – योद्धा । हणे – महार किये । धमजागरा – युद्धो । दुरग – दुर्ग, किला । आवियौ – आया ।

१०३. भूळ – समूह । गह मह – भीड । आवळा – योद्धा, वीर । विमरीर – भयकर, जबरदस्त । रिण वावळा – रणोन्मत, युद्धोन्मत्त । आछट – प्रहार ।

१०४ समद – समुद्र । थानिक – स्थान । राजस – राज्य ।

उण वार धर मेवाडमे ।
मेरो'र[1] चाचौ[2] क्रोधमे ॥ १०५
विध[3] वयण क्रोध[4] विचारियौ[5] ।
मिळ[6] राण मोकळ मारियौ[7] ।
थट सहित 'कूभौ[8]' थरहरै ।
साहाय मामौ सभरै ॥ १०४
पत्र एम लिख[9] निज पाणियै[10] ।
जळग्राह जम[11] जिम जांणियै[12] ।
इळ[13] हस प्रभु जिम उच्चरै[14] ।
रणमाल ऊपरि राजरै ॥ १०६
इण भाति कागद आवियौ[15] ।
विधहूंत[16] राव वचावियौ[17] ।
इम[18] सुणे क्रुध झळ ऊपडी ।
इम लीध रणमल आखडी ॥ १०७
मेरो'र चाचौ मारऊ[19] ।
धड सीस पर पग धारऊ[20] ।

१ ख मैरैर। ग मेरैर। २ ख ग. चाचै। ३ ख ग विघ। ४ ख. ग थ्रोह। ५ ख ग. विचारीयौ। ६ ख. ग मिलि। ७ ख ग मारीयौ। ८ ख. ग. कुभौ। ९ ख. ग लिखि। १० ख ग. पाणीयै। ११ ख ग गज। १२ ख. ग जांणीयै। १३ ख. ग यळ। १४ ख ऊचरै। ग. उछरै। १५ ख. ग आवीयौ। १६ ख ग विघि। १७ ख ग वचावीयौ। १८ ख ग यम। १९ ख. ग. मारवूं। २० ख ग धारवू।

१०४. वार – समय । धर – भूमि, धरा । मेरो'र चाचौ – ये महाराणा लाखाकी रखैल स्त्रीके पुत्र थे। इन्होने ही महाराणा मोकलका वध किया था।

१०५ थट – सेना, दल । थरहरै – कपायमान होता है । साहाय – मदद, सहायता । मामौ – मामा । सभरै – याद करता है, स्मरण करता है ।

१०६ पाणियै – हाथसे । जम – जैसे । इळ – पृथ्वी । हंस – राव चूडाकी पुत्री हँसाबाई जो रणमलकी बहन थी और महाराणा मोकलकी महाराणी थी ।

१०७ इण भांति – इस प्रकार । आवियौ – आया । क्रुध झळ – क्रोधकी ज्वाला । ऊपडी – उठी । लीध – ली । आखडी – प्रण, प्रतिज्ञा ।

१०८. धड – विना शिरका शरीर ।

जळ दियू[1] 'मोकळ' जंगमै ।
सझि खाग बांधू[2] तिण समै[3] ।। १०८

इम कहे पौरस[4] ऊफणै[5] ।
विमरीर[6] झळहळ दळ वणै ।
चढि तुरग[7] थाट[8] चलाविया[9] ।
इम[10] पही गढ पुर आविया[11] ।। १०९

सीसोद[12] कमधां सैफळा ।
वहि सेल झळहळ वीजळा[13] ।
हुय[14] लूथबाथ[15] हकारिया[16] ।
कर खजर वाह[17] कटारिया[18] ।। ११०

दइवाण[19] उद्दम[20] दामणौ[21] ।
इम करे[22] जुध अघियामणौ[23] ।
मेरो'र[24] चाचौ मारिया[25] ।
सह[26] अवर दुसह सघारिया[27] ।। १११

---

१ ख. ग दीयौ। २ ख बाधू। ३ ख समै। ग समें। ४ ख ग पौरिस। ५ ग. उफणे। ६ ग बिमरीर। ७ ग तूरग। ८ ग. थाटि। ९ ख चलावीया। १० ख ग. यम। ११ ख. ग आवीया। १२ ख सीतोदि। ग. सीसौद। १३ ग बीजळा। १४ ख ग होय। १५ ख. जूयवाय। ग लूयवाथ। १६ ख हकारीयौ। ग हकारीयां। १७ ख ग घाव। १८ ख ग कटारीया। १९ ख ग दईवाण। २० ख ग ऊदम। २१ ख दासणौ। ग दामणौ। २२ ख ग. करै। २३ ख ग. अध्रीयामणौ। २४ ख ग मेरौर। २५ ग मारीया। २६ ख. सोहौ। ग सौहा। २७ ख ग सघारीया।

---

१०८. समै – समय।

१०९. पौरस – शक्ति, वल। ऊफणै – उवाल खाता है। विमरीर – भयकर, जवरदस्त। झळहळ – जाज्वल्यमान। दळ – सेना। चढ़ि – चढ कर। तुरग – घोडा। थाट – सेना।

११०. सीसोद – सीसोदिया वश या सीसोदिया वंशका व्यक्ति। कमधां – राठौडो। सैफळा – अस्त्रसे शस्त्रत सुसज्जि। सेल – भाला। झळहळ – जाज्वल्यमान, देदीप्यमान। वीजळा – तलवार। लूथवाथ – गुत्थमगुत्था। खंजर – शस्त्र विशेष।

१११. दइवाण – वीर, महान। उद्दम – विना वधनका। दामणौ – वाघने वाला। अघियामणौ – भयकर, जवरदस्त। सह – सव। अवर – अन्य। दुसह – शत्रु। सघारिया – सहार किये।

धड सीस पग धरि खग[1] धरै ।
कमधज्ज[2] साचौ पण करै ।
तन पड़े[3] दुहुवै[4] खळ तठै ।
जळ दीध मोकलनू[5] जठै ॥ ११२

पर छती[6] जगि रिण[7] जीपियौ[8] ।
दससहस[9] रच्छिक[10] दीपियौ[11] ।
सत्र[12] सुता गहि[13] सीसोदिया[14] ।
वह[15] करै चौरी[16] वरछिया[17] ॥ ११३

कळि[18] रुधिर केसरिया[19] किया[20] ।
वीजळा[21] तोरण वादियां[22] ।
जुध जीत[23] त्रंबक[24] वाजिया[25] ।
पह[26] कमध[27] वह[28] परणाविया[29] ॥ ११४

---

१ ग. खगि । २ ग कमधज । ३ ख. पडै । ४ ख ग. दहुवै । ५ ख मोकाल । ६ ख ग परछठी । ७ ख ग रण । ८ ख. ग. जीपीयौ । ९ ख दससहंस । १० ख ग रछिक । ११ ख ग दीपीयौ । १२ ग सत्रु । १३ ख ग ग्रहि । १४ ख. ग. सीसोदीयां । १५ ख ग वहौ । १६ क चोरी । ग चौरी । १७ ख वरछिया । ग वरछीया । १८ ख ग कल । १९ ख ग केसरीया । २० ख ग. कीया । २१ ग वीझला । २२ ख. वादीया । ग वादीया । २३ ग जीति । २४ ख त्रवक । ग त्रवक । २५ ख ग वजावीया । २६ ख ग पहौ । २७ ख. ग कमध । २८ ख. वहौ । ग वहो । २९ ख ग परणावीया ।

---

११२ कमधज्ज – राठोड । साचौ – सत्य । पण – प्रण, प्रतिज्ञा । दुहुवै – दोनो । खळ – शत्रु । तठै – वहाँ । जठै – जहाँ ।

११३. पर – दूसरोकी । छती – क्षिति, भूमि । जगि – ससारमे । रिण – युद्ध । जीपियौ – जीता, विजयी हुआ । दससहस – सीसोदिया वशका विरुद, सीसोदिया वश । रच्छिक – रक्षक । दीपियौ – देदीप्यमान हुआ । सत्र – शत्रु । गहि – पकड कर । नोट – राव रणमलजीने मेरा और चाचाको मार कर विपक्षी सीसोदिया वशके क्षत्रियोकी कन्याओके साथ अपने साथके राठोड वीरोका विवाह कर दिया । चौरी – विवाह मडप, विवाह मडपका यज्ञ कुण्ड । वरछिया – एक प्रकारके भाले विशेष ।

११४ कळि – युद्ध । रुधिर – रक्त, खून । वीजळां – तलवारो । त्रंबक – नगाडा । पह – योद्धा, वीर । परणाविया – विवाह किये ।

महि कुभराज जमावियौ[1] ।
यम एम चित्रगढ आवियौ[2] ॥ ११५

कवित्त छप्पै

कुभराण[3] बाळक्क[4], जुगत[5] राज ऊ[6] न जांणै ।
राव जतन कजि रहे, रछिक[7] चीतौड[8] घराणै ।
मारि खळा 'रिणमाल', एक[9] हुकमह[10] धर आणी
सीह गाय इक[11] साथ[12], पियै[13] इक ठाहर पाणी ।
इम देखि अमल जळिया[14] असह, धरा लियै[15] इम धारियौ[16] ।
जुध करण न ह्वै आसग जदि[17], विग्रह चूक विचारियौ[18] ॥ ११६
भय[19] दिखाय कूभेण, जीव धर ध्रोह जणाये ।
करण चूक कमधज्ज[20], ठीक मसलति[21] ठहराये ।
निद्रा वसि[22] पोह[23] निरखि, पिलग[24] बध[25] कसे अपारा ।
जड़ी विखम जमदाढ, एक[26] साथे ज अठारा ।

---

१ ख ग जमावीयौ । २ ख ग आवीयौ । ३ ख कुभराव । ४ ग बालक । ५ ग जुगति । ६ ख ग री । ७ ग रछक । ८ ख. चितोड । ग चीतोड । ९ ग ऐक । १० ग हुकम । ११ ग. एक । १२ ग साथि । १३ ख ग पीयै । १४ ख जलीया । ग जलीयां । १५ ख ग लीयै । १६ ख ग धारीयौ । १७ ग जरै । १८ ग. विचारीयौ । १९ ख भव । ग भवि । २० ख ग कमधज । २१ ख ग. मसलत । २२ ग वसि । २३ ख ग पौहौ । २४ ख ग पलग । २५ ख वधक । २६ ग ऐक ।

---

११५ महि – पृथ्वी । चित्रगढ – चित्तौड ।

११६ जतन – रक्षा । कजि – लिए, निमित्त । रछिक – रक्षक । चीतौड़ – चित्तौडके अधिपति । घराणै – वशके । ठाहर – स्थान, जगह । अमल – अधिकार, शासन, हुकूमत । जळिया – जल गये । असह – शत्रु । आसग – शक्ति, साहस । जदि – जव । विग्रह – युद्ध । चूक – धोखा, कपट, षडयत्र ।

११७ कूंभेण – महाराणा कुभा । ध्रोह – द्रोह । मसलति – ऐसी गुप्त युक्ति या मत्रणा जो सहसा न जानी जा सके, मस्लहत । ठहराये – स्थिर की । निद्रा वसि – नीदके वशीभूत । पोह – राजा, वीर । निरखि – देख कर । पिलग – पर्यंक, पलग । जडी – प्रहार की । विखम – भयकर, विषम । जमदाढ – एक प्रकारका कटार विशेष ।

'रिणमाल', ऊठि नरसिंघ रुख, पय ग्रहि लात[1] पछाडिया[2] ।
लोहाळ अठारहि[3] पिड लगा, पिसण[4] अठारह पाडिया[5] ॥ ११७

अ्रत[6] इम करि 'रिणमाल'[7], मिळे स्रग लोक मझारा ।
सुणे चूक नवसहस, जोध आवियौ[8] जिवारा[9] ।
धरा करे[10] धौखळा, करे दमगळा कराळा ।
वैर[11] पिता[12] वीजळा[13], हणे खळ हणे[14] हठाळां ।
राणरा थाट रिणमालरै, भिड[15] बहु[16] वार भजाविया[17] ।
कूभेण राण भागौ[18] कळह, पीछोले[19] असि पाविया[20] ॥ ११८

अथ राव जोधारौ वरणण

धरा सहरि[21] ऊधमे, जोध खिजिया[22] जमजाळा ।
कूभराण[23] औदके[24], वीच[25] फेरै[26] विसटाळा ।

---

१ ख ग सिया । २ ख ग पछडीया । ३ ख ग अठारह । ४ ख ग प्रिसण । ५ ख ग पाडीया । ६ ख. म्रित । ७ ख रणमाल । ८ ख. ग आवीयौ । ९ ख ग. जियारां । १० ख गा काजि । ११ ख ग वैरि । १२ ग पिपीता । १३ ग वीझळां । १४ ख हला । ग दळा । १५ ग भिडि । १६ ख वहौ । ग. वहौ । १७ ख ग भजावीया । १८ ख ग भगौ । १९ ग पीछौले । २० ख. ग पावीया । २१ ख ग सहर । २२ ख खिजियौ । ग खिजीयौ । २३ ग कुभराण । २४ ख औदके । २५ ख ग वीचि । २६ ग फेरे ।

---

११७ ऊठि – उठ कर । नरसिंघ – नृसिंहावतार । रुख – प्रकार, तुल्य । पय – पैर, चरण । लात – पदाघात । पछाडिया – प्रहार किये, गिराये गये । लोहाळ – शस्त्र, तलवार, शस्त्र प्रहारोसे युक्त । पिसण – शत्रु । पाड़िया – गिरा दिये, मार दिये ।

११८ अ्रत – मृत्यु, मौत । स्रग – स्वर्ग । मझारा – मध्य, मे । नवसहंस – राठौड । जोध – राव जोधा । जिवारा – जिस समय । धौखळां – युद्धो । दमगळ – युद्ध, उत्पात । कराळां – भयकर । वीजळा – तलवारो । हणे – सहार कर, मार कर । खळ – शत्रु । हठाळा – हठो, वीर । रांण – महाराणा । थाट – सेना । भिड – युद्ध कर । भजाविया – भगा दिये । कूभेण रांण – महाराणा कुभा । भागौ – भग गया । कळह – युद्ध । पींछोले – एक झीलका नाम जिस पर उदयपुर नगर वसा हुआ है । असि – घोडा ।

११९ धरा – पृथ्वी । सहरि – शहर, नगर । ऊधमे – नाश कर । जोध – योद्धा, वीर, राव जोधा । खिजिया – कोप किया, क्रुद्ध हुए । जमजाळा – यमराज तुल्य, यमराज । कूंभरांण – महाराणा कुभा । औदके – भयभीत हो गया । वींच – मध्य । विसटाळा – वीच-बचाव करने वाले, मध्यस्थ ।

गज[1] भिड़ज्ज पड़गनां, पेस धन करै[2] अपारा।
आडै-वळै अभंग, सीम कीधी सिरदारा।
महि भरे डड बूदी[3] मऊ, दळ तपतेज दुझाळरै।
सांसण पसाव कीधा सतरि[4], राव जोध रिणमालरै* ॥ ११९
सूत दियण[5] नग®सिरै मिळै जोधौ भड मेळा।
सुभ मुहरत[6] सुभ सगुन[7]®, वणै[8] चित्र[9] सू[10] सुभ वेळा।
सास्त्र[11] सिलप सजोय, सिलावट्टा[12] स सधीरा[13]।
सीस[14] असम समेल, नीम परठी[15] मझि नीरा।
पनरैसै[16] समत(१५१५)पनरोतड़ै[17], सुदी[18] जेठ ग्यारस[19] सनढ।
अवगाढ जोध रचियौ[20] इसौ, गाढपूर जोधाण गढ ॥ १२०
नग सीसा गळ[21] नीम, गरक असमां चूनागळ।
वीझाझळ सिर वणे, विखम[22] भुरजां वीजाझळ[23]।

---

१ ख ग गज्ज। २ ख. ग करे। ३ ख वूदी। ४ ग सितर।
*यह पंक्ति ख प्रतिमे नही है।
®यह अश ख प्रतिमे नही है।

५ ख ग. दीयण। ६ ग महुरत। ७ ग सुगन। ८ ग वणे। ९ ख ग. चित। १० ख ग सुध। ११ ख ग सासत्र। १२ ख मिलावटा। ग सिलपचढा। १३ ख. ससधीरा। ग समधीरां। १४ ख ग सीसा। १५ ख ग परठि। १६ ख ग पनरसै। १७ ख ग पनरोतरै। १८ ख सुद्दि। ग सुदि। १९ ख ग ग्यारसि। २० ख. ग रचीयौ। २१ ख नग। २२ ग विषम। २३ ख वीझाजल। ग वीझाझळ।

---

११९ गज – हाथी। भिडज्ज – घोडा। पडगना – तहसील। पेस – भेंट, नजर। अपारां – अपार, बहुत। आडै-वळै – अरावली पर्वत। अभग – वीर। सीम – सीमा, हद। कीधी – की। महि – पृथ्वी। डड – दण्ड। सासण पसाव – दानमे जागीरके गांव दिये।

१२०. सास्त्र सिलप – शिल्प-शास्त्र। सजोय – अलकृत करके, सज्जित कर। सिलावट्टा – शिल्पकारो। स सधीरा – दृढ। सीस – शीशा नामक धातु। समेल – मिला कर। नीम – नीव। परठी – रखी, लगाई। मझि – मध्य, मे। पनरोतड़ै – पन्द्रहकी सख्याका वर्ष। सनढ़ – दृढ। अवगाढ़ – वीर, बहादुर। जोध – राव जोधा। गाढपूर – मजबूत, सुदृढ। जोधाण – जोधपुर।

१२१. नग – पर्वत। सीसा – शीशा नामक धातु। गळ – गला कर। गरक – परिपूर्ण, पूरा। असमा – बहुत। चूनागळ – गला हुआ चूना। वीझाझळ – विध्याचल पर्वत। भुरजा – बुर्जों। वीजाझळ – विंध्याचल पर्वत।

कोट[1] सेस आकार, वणे कागुरा चहूवळ[2] ।
वडी[3] अबारति[4] वणे, जोख[5] घण नौख छिलै जळ ।
स्रब[6] लोक वसै[7] धनवत सुपह[8], सोहै रूप सुघाटरौ ।
गहतत्त विकट जोधाण[9] गढ, वणे मुकट वैराटरौ[10] ॥ १२१

अथ राव सूरजरौ वरणण

जोधपाट[11] जगजीत, सूर दाता राव[12] सूजौ ।
जिण प्रताप जोवता, देसपति जोड न दूजौ ।
जेण वार[13] इक जवन, अयौ अयुता[14] असवारा ।
सातवीस तीजणी, जेणि ग्रहि[15] लीधि[16] जियारा ।
जिणहूंत राव सूजौ जुडे, भाजे[17] खळ दळ[18] भारियौ[19] ।
सातसै भडां मुगला सहित, मुगल घडूकौ मारियौ[20] ॥ १२२

१ ख कोटि । २ ख चौहूवल । ३ ख वणडी । ४ ख अमारत । ५ ख ग. जौष । ६ ख श्रव । श्रव । ७ ग वसे । ८ ख सुपौहो । ग सुपौह । ९ ख जोधान । १० ख. वैरागरौ । ११ ग जोधपाटि । १२ क रव । १३ ग. जैणवा । १४ ख ग. अयता । १५ ख ग्रह । १६ ख ग लीध । १७ क भाजे । १८ ग. वळ । १९ ख ग भारीयौ । २० ख ग मारीयौ ।

१२१ चहूवळ – चारो ओर । अबारति – इमारत, भवन । जोख – आनन्द, हर्ष । नौख – श्रेष्ठ । स्रब – सब । धनवत – धनाढ्य । सुपह – राजा । सोहै – शोभा देता है । सुघाटरौ – सुन्दरताका । गहतत्त – गहरा, गंभीर ।

१२२ जोधपाट – राव जोधाका राज्यसिंहासन । जगजीत – संसार-विजयी । सूर – वीर । दाता – दातार । प्रताप – ऐश्वर्य । देसपति – राजा । जोड – बराबर । दूजौ – दूसरा । जेण वार – जिस समय । अयौ – आया । अयुता – दस हजार । सातवीस – एक सौ चालीस । तीजणी – युवती, सौभाग्यवती युवतियां । जेणि – जिस । ग्रहि – पकड कर । लीधि – ली । जियारा – जब । जिणहूंत – जिससे । जुडे – भिड कर, युद्ध कर । भांजे – तोड कर । खळ – शत्रु । दळ – सेना । भारियौ – भारी, विशाल । भडा – योद्धाओ । मुगल – मुसलमान, यवन । घडूकौ – वि स १५५८ चैत्र कृष्णा प्रतिपदा शुक्रवार तारीख २५ फरवरी सन् १४९२ मतान्तरसे वि स १५४८ (चैत्रादि १५४९) चैत्र सुदि ३ (ई स १४९२ ता० १ मार्च) को मारवाड राज्यके गाव कोसानाकी बहुत-सी हिन्दू तीजणिएँ तालाब पर गौरी पूजन करनेको गई थी । मौका पा कर अजमेरका सूबेदार मल्लूखा उनमेसे १४१ तीजणियोको पकड कर ले गया । जोधपुरके तत्कालीन नरेश राव सातलजीको इसका सदेश मिला । सदेश प्राप्त होते ही राव सातलजीने यवनोका त्वरित पीछा किया । उन्होने उन १४१ तीजणियोको यवनोके बन्धनसे वापिस छुडा लिया और लौटते समय अपने साथ मल्लूखाकी रूपवती पुत्री और २ अमीरजादियोको भी पकड कर ले आये । इसके लिये राव सातलजीको सूबेदारके साथ भयकर युद्ध करना पडा । इस युद्धमे सूबेदार मल्लूखा तथा उसका साथी घुडलेखा, जो सिंधका एक अमीर था, रावजीके सेनापति सारंगदेवजी खीचीके तीरोसे छिद कर मारा गया । ग्रथकर्ता कविराजा करणीदानजीने उपर्युक्त घटनाको राव सूजाके राज्यकालमे लिखी है परन्तु नवीन शोधसे यह घटना राव सातलजीके राज्य-कालकी मानी गई है । देखो—महामहोपाध्याय डॉ० गौरीशकर हीराचद ओझा कृत जोधपुर राज्यका इतिहास, प्रथम भाग, पृ० २६२ ।

करे फतै कमधज्ज[1], करे बह[2] रीझ कवेसां।
करि गुण परख सकाज, देसदेसां परदेसां।
मौज कड़ा मोतियां[3], कनक नग जडत[4] कटारा।
ग्रणपारा[5] सिरपाव, पमग बगसिया[6] ग्रपारां।
हमाला दरब थेला[7] वरन[8], उरड वरन[9] खट ग्राविया[10]।
जो धरै[11] राव सूजै जदिन, सांसण तीन समापिया[12]॥ १२३

कुवर वाघौ

सूजा पाट[13] सकाज, वाघ कमधज वरदाई।
कर[14] दन खग बह[15] कवर[16] पिता पहिला[17] म्रत[18] पाई।

राव गांगारौ वरणण

वाघ सुतण गगवीर, खाग दन प्रथी[19] वखाणै।
वैठौ[20] पाट[21] वहाळ[22], दुझल थानिक दादाणै।

---

१ ख ग कमधज। २ ख वहौ। ग. वहौ। ३ ख ग मोतीया। ४ ख ग जड़ित। ५ ख. ग्रणधारा। ६ ख वगसीय। ग वगसीया। ७ ख ग थैला। ८ ख. ग हरन। ९ ग वरन। १० ख. ग ग्रापीया। ११ ख धारै। १२ ख समीपीया। ग समापीया। १३ ख ग पाटि। १४ ख. ग. करि। १५ ख वहौ। ग वहौ। १६ ख ग. कवर। १७ ग पहला। १८ ख ग मृत। १९ ख ग. प्रिथी। २० ख वैठौ। २१ ख ग पाटि। २२ ख वाहाल। ग वाहाल।

---

१२३ वह – वहुत। रीझ – दान। कवेसां – कवीशो, कवियो। परख – परीक्षा। मौज – दान। कनक – स्वर्ण, सोना। जडत – जटित। ग्रणपारा – ग्रपार, वहुत। पमग – घोडा। वगसिया – वख्शीश किये ग्रपारा – ग्रपार, ग्रसीम। हमालां – वोझा ढोने वालो, भारवाहको, हम्मालो। दरव – द्रव्य, धन-दौलत। उरड – ग्रागे वढ कर। वरन खट = पट्वर्ण – याचक वृत्ति करने वाली राजस्थानकी ६ जातियाँ। जदिन – जिस दिन। सासण – राजाकी दान की हुई भूमि या दान किया हुग्रा गाँव। समापिया – समर्पण किये, दिये।

१२४ सूजा – राव सूजा। पाट – राज्यसिंहासन। वाघ – कुमार वाघा। कमधज – राठौडा। वरदाई – यशस्वी। दन – दान। खग – तलवार। वह – वहुत। कवर – कुमार। म्रत – मृत्यु, मौत। पाई – प्राप्त की। सुतण – सुत, पुत्र। गगवीर – राव गागा। खाग – तलवार। प्रथी – पृथ्वी, भूमि, ससार। वखांणै – प्रशसा करते है। वंहाळ = वाहाळ – ग्राजानवाहु, शक्तिशाली। दुझल – दो तलवार एक साथ रखने वाला, वीर। थानिक – स्थान। दादाणै – पिताके ननिहाल या पिताके पूर्वजोका निवास-स्थान।

वळवळा अजस सयणां वधे, भड़ां खळां छक भाजियौ[1]।
सुत वाघतणौ[2] उछरंग सझे[3], गगराव अग्राजियौ ॥ १२४

उरड जोस ऊफणै[4], वणै गहमह भड वका।
तेज घणै खगतणै[5], सत्रा सिर[6] हणै निसंका।
भट चारण गुण भणै, तिका रीझणौ[7] सतीखौ।
माया ऊधामणै, सघण वरसणै सरीखौ।
रमणा[8] सिकार गागौ[9] रमै, तदि सरणै खळ गिर तणै।
तिलमात[10] गिणै मरणै[11] तपै, इसै तेज अधियामणै[12] ॥ १२५

ईख राजछक इसौ, अडर[13] गांगौ वाघावत।
काकै सझिया[14] कटक, सूर सेखै सूजावत।

---

१ ख ग भाजीयौ। २ ख ग वाघ (वाघ, वाघ)। ३ ख ग सझि। ४ ख. उफणै। ५ ख. ताणै। ६ ख ग रिण। ७ ख ग रीझणै। ८ ख. रमणै। ग रणमै। ९ ख ग गागौ। १० ख. तिणमात। ग भिलमात। ११ ग सरणै। १२ ख. ग अध्रीयामणै। १३ ग अरड। १४ ख ग. सझीया।

---

१२४ वळवळा – चारो ओर। अंजस – गर्व, गौरव। सयणां – सज्जनो मित्रो। वधे – वढा वृद्धि हुआ। भड़ां – योद्धाओ। खळां – शत्रुओ। छक – जोश गर्व। भाजियौ – मिट गया। सुत – पुत्र। वाघतणौ – वाघाका कुमार। उछरग – उत्सव, हर्ष। गगराव – राव गागा। अग्राजियौ – गर्जना की।

१२५. उरड – आवेग। ऊफणै – उमडता है, वढता है। गहमह – समूह, भीड। भड – योद्धा। वका – वाकुरो, वीरो। खगतणै – तलवारके। सत्रा – शत्रुओ। हणै – प्रहार करते हैं। गुण – यश, कीर्ति। भणै – वर्णन करते है। तिका – उन। रीझणौ – प्रसन्न होने वाला, खुश होने वाला। सतीखौ – विशेष, अधिक। माया – धन-दौलत। ऊधामणै – दानादिमे व्यय करता है। सघण – घना। वरसणै – वर्षा। सरीखौ – समान। रमणां – शिकार खेलनेका मैदान। रमै – शिकार करता है। तदि – तव। सरणै – शरणमे। खळ – शत्रु। गिर तणै – गिरिके, पर्वतके। तिलमात – किंचित्, तिलमात्र। गिणै – समझता है। अधियामणै – भयकर, जबरदस्त।

१२६ ईख – देख कर। राजछक – राज्यवैभव। इसौ – ऐसा। सझिया – सज्जित किये। कटक – सेना, दल। सूर – वीर। सेखै – राव गांगाका चाचा शेखा।

नाग दुरग पति जवन, साह दौलत दळ सब्बळ[1]।
सेखै सुज[2] पतिसाह, मदित[3] आंणियौ[4] महाबळ[5]।
सझि राव गंग दळबळ[6] सकळ, दुझल तेज दरसावियौ[7]।
अरुणमै वदन छिबतै[8] उरस, इण विध[9] सामौ[10] आवियौ ॥ १२६

विढे एम वेखियौ[11], इता एकण[12] घरवाळा।
वड वड भडा विचारि, वीच[13] फेरै विसटाळा।
'सेख' तजौ दळ समर, रैण[14] वट[15] कहिक[16] रखावौ[17]।
तजे[18] विद्ध[19] कुळतणौ, मिळौ चित खत[20] मिटावौ।
मेलिया[21] लोह सहदा[22] मुहा, कटै दहू दळ धर कजै।
कुळ विहडि[23] राज लीजै तिकौ[24], एह[25] धरम नह ऊपजै[26] ॥ १२७

१ ख. सवल। ग सवल। २ ख ग सुजि। ३ ख ग मदति। ४ ख ग आणीयौ। ५ ख. महावल। ६ ख दळवळ। ७ ख ग दरसावीयौ। ८ ख ग छिवतौ। ९ ख ग विधि। १० ख साम्हौ आवीयौ। ११ ख ग. वेषीयौ। १२ ग ऐकण। १३ ख ग वीचि। १४ ख ग रेण। १५ ग वट। १६ ख. ग क्यौंहिक। १७ ग रषायौ। १८ ख ग तजौ। १९ ख ग वेध। २० ख ग षाति। २१ ख. मिलीया। ग. मेलीया। २२ ख सहैदा। ग. सहैंदा। २३ ख विहड। २४ ख. तिको। २५ ग ऐह। २६ ख. उपजं।

---

१२६ नाग – नागौर। दुरग – दुर्ग, किला। जवन – यवन, मुसलमान।
नोट – वि स १५८५ (ई० सन् १५२९) मे राव गागाके चाचा शेखाने नागौरके शासक खाजादा दौलतखाकी मददसे जोधपुर पर चढाई की थी। इस चढाईमे शेखा मारा गया और दौलतखा युद्ध-भूमिको छोड कर भग गया।
देखो—पं. विश्वेश्वरनाथ रेऊ कृत, मारवाडका इतिहास, प्रथम भाग, पृ १२३।
साह दौलत – दौलतखा, नागौरका शासक। दळ – सेना। सब्बळ – शक्तिशाली। सुजि – वह। पतिसाह – बादशाह। मदति – सहायता। आणियौ – लाया। सझि – सज्जित कर के। राव गग – राव गागा। दुझल – वीर, योद्धा। दरसावियौ – दिखाया। अरुणमै – लाल। वदन – मुख। छिबतै – स्पर्श करता हुआ। उरस – आकाश। इण विध – इस प्रकार। सामौ – सम्मुख, सामने। आवियौ – आया।
१२७. विढे – भिड करके, युद्ध कर वीर गति प्राप्त हो कर। वेखियौ – देखा। एकण–एक। वड वट – बडा-वडा। भडां – योद्धाओ। वीच – मध्य। विसटाळा – बीच-बचाव करने या कराने वाले, मध्यस्थ। सेख – राव सूजाका द्वितीय पुत्र शेखा। दळ – सेना। समर – युद्ध। रैण – भूमि। वट – हिस्सा। कहिक – कुछ। विद्ध – कलह। कुळतणौ – वशका। खत – भेद, भिन्नता, विरोध। धर – भूमि। कजै – लिये। विहडि – नाश कर। तिकौ – वह। एह – यह। धरम – कर्त्तव्य।

सेखै इम[1] साभळे[2], धुरा लिखियौ[3] कमधज्जां[4]।
कुळ धरि[5] कारिण कटै, सदा कुळ धरम सकाजा।
जोवै ज्या[6] धर राज, मुवा सुरराज मिळै मन।
किसन थका हिज[7] कियौ[8], जूझ[9] जुजथिर दरजोधन*।
कथ एम[10] हरौ ऊहड[11] कहै, इळ वाटा नह आवसी।
जुध करे[12] फतै जावसि[13] जिकौ, इळ सारी अपणावसी®॥ १२८

१ ग यम। २ ग साभलै। ३ ख ग लिषीयौ। ४ ख कमधजां। ग कमधुजां। ५ ख धार। ग धर। ६ ख ग जा। ७ ख ग इज। ८ ग कीयो। ९ ख जुज। ग जुध।

*ख प्रतिके अनुसार—

किसन थका इज कीयौ, जुजस धरहर दुरजोधन।

ग प्रतिके अनुसार—

किसन थका इज कीयो, जुधस धरहर दुरजोधन।

१० ग ऐम। ११ ग ऊजड। १२ ग करै। १३ ग जीसी।

®ख प्रतिमे यह पक्ति नही है।

---

१२८ सेखै — शेखाने। साभळे — सुन कर। धुरां — प्रथम, पहिले। कमधज्जा — राठौडों। धरि कारिण — धरतीके लिये। सकाजां — लिए। ज्यां — जिन। धर — भूमि। सुरराज — स्वर्ग। किसन — कृष्ण। थका — होते हुए। हिज — निश्चयार्थक अव्यय, ही। जूझ — युद्ध। जुजथिर — युधिष्ठिर। दरजोधन — दुर्योधन। कथ — वृत्तान्त। हरौ ऊहड — ऊहड हरदास।

नोट — ख्यातोमे लिखा है कि महाराज कुमार वाघाजीके देहावसानके समय उनके छोटे भाई शेखाने अपना हक छोड कर अपने भतीजे, वाघाजीके जेष्ठ पुत्र वीरमको राज्यका उत्तराधिकारी बनानेकी अनुमति दी थी परन्तु वीरमकी अनुपस्थितिमे सरदारोने गागाजीको राज्यसिहासन पर बैठा दिया। इसीसे शेखा राव गागाजीसे अप्रसन्न था। दूसरा वीरमके पक्ष वालोको यदा-कदा अवसर मिलता था, तब-तब वे उसे राव गागाजीके विरुद्ध उकसाते थे। किसी किसी ख्यातमे सिरोहीके राव अखैराजकी शिकायत पर शेखाकी जागीर पीपाडके एक गांवको जब्त करने पर और किसीमे ऊहडहरदासके उकसानेके कारण इस युद्धका होना लिखा गया है। यहा सूरजप्रकास भी ऊहड हरदासको उकसानेका उल्लेख करता है।

देखो—प० विश्वेश्वरनाथ रेऊ कृत मारवाडका इतिहास, प्रथम भाग, पृ० ११३।

इळ — पृथ्वी। वांटा — विभागो, हिस्सो। नह आवसी — नही आयेगी। सारी — समस्त, सब। अपणावसी — अपने अधिकारमे करेंगे।

इम सुणि चढिया[1] उभै, कटक कमधज कळिचाळा।
नित असपति नागौर[2], दुझल चढिया रवदाळा।
दगै[3] तोप[4] बळ[5] दहू[6], उडै गोळा झळ आतस।
धोम[7] वाण[8] धडहडै, पड़ै सायक झड[9] पावस।
रथ ताम[10] थांम[11] देखत[12] रवि, उडै[13] रीठ तरवारिया[14]।
घण करै पार जरदा घटा, करदा छुरा कटारिया[15]॥ १२९

ऊला केक[16] अपार, पडै[17] पल्ला[18] अणपारा।
धारा लड़िया[19] धाप[20], करद खजरा कटारा।
मडळावति[21] लडि अमर, चौथ[22] वाघरौ खगा चडि[23]।
सुत मोकल[24] हरदास[25], अधिक लड[26] पडियौ[27] ऊहडि[28]।

---

१ ख. ग चढ़ीया। २ ग. नागोर। ३ ख दगे। ४ ग तौ। ५ ख वळ। ग प्रबळ। ६ ग दहु। ७ ग धोम। ८ ख वाण। ९ ख झल। १० ख ग. थाभि। ११ ख. ग. ताम। १२ ग देषत। १३ ख उडे। १४ ख ग. तरवारीया। १५ ख. ग. कटारीया। १६ ग कंक। १७ ख पडे। १८ ख ग पंला। १९ ग लड़ीयां। २० ख ग धापि। २१ ख मडिलावत। ग मडलावत। २२ ख. चोहथ। ग चौहथ। २३ ख. ग चडि। २४ ख मौकल। २५ ख दरदास। २६ ख ग. लडि। २७ ख. ग. पडीयौ। २८ ख ग. ऊहड।

---

१२९ इम – इस प्रकार। उभै – दोनो। कटक – सेना, दल। कळिचाळा – योद्धा वीर। नित – नित्य। असपति – अश्वपति, बादशाह। दुझल – वीर। रवदाळा – यवन, म्लेच्छ। दगै – तोप दागते हैं। बळ – सेना, फौज, तरफ, ओर। दहू – दोनो। झळ – आगकी लपट। आतस – आग, अग्नि। धोम वांण – तोप। धड़हडै – गुंजायमान होती है, आवाज करती है। सायक – तीर, बाण। झड – अविरल वर्षा। पावस – वर्षा ऋतु। ताम – उस समय। थाम – रोक कर। रवि – सूर्य। रीठ – प्रहार, प्रहारकी ध्वनि। तरवारिया – तलवारें। जरदा – कवचो। घटां – शरीर। करदा – एक प्रकारका शस्त्र, हाथ।

१३० ऊला – इस ओरके। केक – कई। पड़ै – गिरते हैं। पल्ला – उस ओरके। अणपारा – अपार, असीम। धारा – तलवारो। पडियौ – वीरगति प्राप्त हुआ। ऊहड़ि – राठौडोकी ऊहड़ शाखाका व्यक्ति हरदास।

ववहाय घणी घण खग वही[1], सेखराव पडियौ[2] समर।
दौलत्तिइ पाव तजि गौ[4] जदिन[5], गगाराव धरियौ[6] गुमर[7] ॥ १३०

इम जीपे आवियौ[8], 'गग' वाजता नगारां।
सुजस वधे धर सिरै, उछक[9] छक वधे अपारा।
विहद लीध जिण वार, रैण[10] प्रथ[11] भूप जही[12] रस।
जस ध्रम कजि जगजीत, दिया[13] तबपत्र[14] दवादस।
करि राज एम[15] कमधांतिलक, वसे अमरपुर क्रीतवरि[16]।
तिण पाट[17] माल बैठौ[18] तखत, धर मुरधर सिर[19] छत्र धरि[20] ॥ १३१

राव मालदेवरौ वरणण

'माल' चढै दळ मेलि, घुरे नौवति घण घुम्मर।
इक लख असी हजार, भिडज असवार[21] भयकर।
सीधुर दळबळ[22] सबळ[23], पूर पैदल अणपारां।
नदि सर टूटै[24] निवाणा[25], भाण ढके रज भारां।

---

१ ख. वहि। ग बहि। २ ख ग पडीयौ। ३ ख ग दौलत। ४ ख ग गौ। ५ ख जदित। ६ ख ग धरीयौ। ७ ग. गुंमर। ८ ख ग आवीयौ। ९ ख ग उछव। १० ख ग रेण। ११ ख ग प्रिथ। १२ ख जहींरज। ग जहारस। १३ ख. ग दीया। १४ ख त्रबपत्र। १५ ख ऐम। १६ ख ग क्रीतिवर। १७ ख. ग पाटि। १८ ख वैठौ। १९ ग सिव। २० ख ग छत्रधर। २१ ख सवार। २२ ख दळवळ। २३ ख सवळ। २४ ख तुटै २५ ख निवाण।

---

१३० ववहाय – चला कर, प्रहार कर। घण – अधिक। समर – युद्ध। दौलति – खानजादा दौलतखा। तजि – छोड कर। गौ – गया। जदिन – जिस दिन। धरियौ – धारण किया। गुमर – गर्व।

१३१ जीपे – जीत कर। आवियौ – आया। गग – राव गागा। सुजस – सुयश। उछक – उत्साह। छक – जोश। वधे – वढा। अपारा – अपार, असीम। विहद – अपार। लीध – ली। जिण वार – जिस समय। रैण – भूमि। प्रथ भूप – राजा पृथु। ध्रम – धर्म। कजि – लिए। तबपत्र – ताम्र-पत्र। दवादस – द्वादश, बारह।

१३२ माल – राव मालदेव। घुरे – प्रतिध्वनित हुए। घुम्मर – (गर्व ?)। इक – एक। लख – लाख। भिडज – घोडा। सींधुर – हाथी। पूर – पूर्ण। अणपारां – अपार। नदि – नदी। सर – तालाव। निवाणां – जलाशय। भाण – सूर्य। ढके – आच्छादित हो गया। रज – धूलि। भारा – समूह।

जगहत्थ जगत सिर जळहळै, दस द्रिगपाळ दहक्कवै ।
महि माल[1] छहा जिहा[2] सातमौ, चौथै पहौरै चक्कवै ।। १३२

छंद निसिपालका[3]

जेण 'रावमाल' बहौ वार जुधि[4] जीपिया ।
दान[5] रावमाल वहौ गयद सासण दीया ।
सात अर वीस मुरधरतण[6] समपीया ।
अनि घणा गाव अनि देस मझि अप्पीया ।। १३३
लोहि हणि 'जैत' वीकाणगढ[7] जै लीयौ ।
दहुडि[8] खुरसांण अजमेर गढ दावीयौ[9] ।
खाग झड[10] राण खुरसाण दळ जिण खडे ।
डीडवाणा सहित सहर साभरि डडे ।। १३४
राणरौ लीध गुढवाड[11] समहर रतौ ।
माल गढ वासि जिणि लीध गढ मेडतौ ।
दूठ वधणौर गढ लीध हणि खळ दळा ।
थाट माडिळ पुरा[12] सहत[13] कोसी थला[14] ।। १३५
भाण मति ममूदौ जाजपूर[15] भाखरा ।
सहर सावर[16] लीयौ रतन हर साखरा[17] ।

---

१ ख पाल । २ ख. जिम । ३ ख निसिपालिका । ४ ख जुध । ५ ख दानि । ६ ख. मुधर । ७ ख वीकाणगढ । ८ ख दहुडि । ९ ख दावीयो । १० ख झट । ११ ख. गुडवाड । १२ ख पुरा । १३ ख सहित । १४ ख थळा । १५ ख जाजपुर । १६ ख सावर । १७ ख सीषरा ।

---

१३२ जगहत्थ – सूर्य । जळहळै – जाज्वल्यमान होता है, चमकता है । दहक्कवै – डोलायमान होते है । छहा – छ । जिहा – जैसे । चक्कवै – चक्रवर्ती ।

१३३ जेण – जिस । वहौ – वहुत । जुधि – युद्ध, युद्धमे । जीपिया – जीते, विजय किये । गयद – हाथी । सासण – राजाकी दानमे दी हुई भूमि या जागीर । सात अर वीस – सताईस । मुरधरतण – मारवाडके । समपीया – अर्पण किये, दान दिये । अनि – अन्य । अप्पीया – अर्पण किये, दान या पुरस्कारमे दिये ।

१३५ रांणरौ – महाराणाका । लीध – लिया । गुढवाड – गोढवाड प्रान्त समहर – युद्ध । रतौ – लीन । दूठ – जवरदस्त । हणि – सहार कर।

लूटि चाळक हणे दुरंग तौ[1] डोलीयौ ।
दुभल गवडां अने[2] डड हाडा दीयौ ॥ १३६
दाबि[3] रैवास खाटू जिकण[4] दावटी[5] ।
सहर काळा डहर सहत सेखावटी ।
पवारा हणे लीधौ जिकणि मालपुर[6] ।
कहर गति चढे आवेर[7] पर धर[8] कसर ॥ १३७
धर चवद चाळ भड लसे तजि धारणा ।
मुलक बौलीस[9] हत लीध मल्हारणा ।
लडि सहर चाटसू अनै दिव सालीयौ[10] ।
कमधपि[11] अमल लघाणि[12] माहे कीयौ ॥ १३८
सरद करि धरा ढूंढाड[13] खाटे सुजस ।
आवीयौ जीपि राव माल छिवतौ उरस ।
दसै दिस[14] माहि पौहौ जोड न हुवै दुवै ।
हाक जिण आण सुणि हिरण खोडा हुवै ॥ १३९
जवनपति परातप भाण ग्रीखम[15] जिसौ ।
आगि कहता खलां वदन दाझै इसौ ॥
. . . . १४०

---

१ ख तो । २ ख अनै । ३ ख. दावि । ४ ख जिकणि । ५ ख दावटी । ६ ख मालपुर । ७ ख. आवेर । ८ ख घर । ९ ख वोलीस । १० ख सालियौ । ११ ख कमधपि । १२ ख लच्चाई । १३ ख ढूंढ़ाड । १४ ख. दिसि । १५ ख ग्रीष्म ।

---

१३६ चाळक – चालुक्यवश । हणे – सहार किया । दुरग – दुर्ग, गढ । दुभल – वीर । गवडां – गौड राजपूतो । अनै – और । हाडां – चौहानवशी हाडा शाखाके व्यक्तियो ।

१३७ कहर – कोप ।

१३८ चाळ – वस्ती । धर चवद धारणा – उसकी भूमिमे वीरोकी चौदह वस्तियाँ थी । वे अपने शरीरका मोह नही करते थे ।

१३९- सरद – आवीन । खाटे – प्राप्त कर । जीपि – जीत कर । छिवतौ – स्पर्श करता है । पौहौ – राजा । जोड – वरावर, समान । दुवै – दूसरा । हाक – आवाज, दहाड ।

१४०. जवनपति – वादशाह । परताप – प्रताप, रौव । भांण – सूर्य । ग्रीखम – ग्रीष्म । वदन – शरीर । दाझै – जलता है ।

कवित्त– इळा राज करि एम[1], माल स्त्रगि वसे महाबळ[2] ।
जीत समर दन जजण, अमर रहीयौ जस उज्झळ ।
'माल' पाटि महपती, निडर 'उदळ' नर नाहर ।
गई भौमि गहतत[3], जेण[4] वाली जग[5] जाहर ।
वरीयांम राज चत्र वरस, करि वसीयौ स्त्रुग[6] क्रांमती ।
सूरज्झसिंघ[7] लहरी समद, पाट विराजै छत्रपती ।। १४१

महाराजा सूरसिंहरौ वरणण

छन्द[8] चचळी[9]

सोहियौ[10] सूरज्जसिंघ[11], नवकोटी[12] तणौ[13] नाह ।
सपेखे झळाळ सूज[14], पूजै[15] भुजा पातिसाह ।
दिलीहूंत धर[16] दावौ, ऊससे[17] पठाण एक[18] ।
राखिया[19] कराळ रूप, काळ रूप भूल केक ।। १४२
कोटवास[20] नास कीध, जास नाथ दास जैत[21] ।
तोडवे[22] मेवास[23] तास, रास कीध खास रैत[24] ।

---

१ ग ऐम । २ ख महावल । ३ ख. गहतत । ४ ख जेणि । ५ ख जर । ६ ख. स्रगि । ७ ख. सूरजसिंघ । ८ ख ग छद । ९ ग चंचला । १० ख ग. सोहीयौ । ११ ख सूरजसिंह । ग सूरजसिंघ । १२ ख ग नवैकोटी । १३ ख तणो । १४ ख ग सूर । १५ ख ग पूजे । १६ ख ग धरे । १७ ख ग वैसमै । १८ ग ऐक । १९ ख ग. राषीया । २० ग कोटवास । २१ ख ग जैति । २२ ख ग तोडवै । २३ ग मैवास । २४ ख. ग रैति ।

---

१४१ इळा – पृथ्वी । स्त्रगि – स्वर्ग । समर – युद्ध । दन – दान । जजण – यजन । उज्झळ – उज्ज्वल । माल – राव मालदेव । महपति – राजा । उदळ – मोटा राजा उदयसिंह । भौमि – भूमि । गहतत – वीर । जेण – जिस । वरीयांम – श्रेष्ठ । स्त्रुग – स्वर्ग । क्रांमती – तेजस्वी । लहरी समद – लहरोयुक्त समुद्र, उदार । पाट – राज्यसिंहासन । छत्रपती – राजा, नृप ।

१४२. सोहियौ – सुशोभित हुआ । नवकोटी तणौ – मारवाडका । नाह – नाथ, स्वामी, राजा । सपेख – सप्रेक्ष्य, देख कर । झळाळ – जाज्वल्यमान । दावौ – वाद, नालिश, हक । ऊससे – जोशमे आया, आवेगमे आया । कराळ – भयकर । भूल – समूह ।

१४३ कोटवास – वडे-वडे गढोमे रहने वाले । तोडवे – तोड दिये । मेवास – वडे-वडे लुटेरोके रहनेके या पनाहके स्थान । रास कीध खास रैत – उन लुटेरो आदिको सीधी राह पर चलने वाली अपनी प्रजा के समान कर दिये ।

वापरै[1] तख्त वैठी[2], धारि छत्र जोम धारि ।
वीजळा दिलेस[3] देस, मारि कीध थाळ वारि ।। १४३
आकळे[4] पुकार एह[5], जोगणेस द्वार[6] जाइ[7] ।
साभळेस पातिसाह, आम-खास कीध आइ[8] ।
मीर खान की सलाम, रज्ज[9] इद्र राव राय ।
देखियौ[10] सराह दोय[11], थाट नाथ कोध थाय ।। १४४
आवियौ[12] कमध एसि[13], वोम लागि जेण वार[14] ।
जोम[15] हूत कीध जोध, जाय साहहू जह्वार ।
हो[16] चगे नरेस साह, पेखि[17] दाखि लीध पेस ।
'सूर' जाव[18] दीध साह, देत हू चगेस[19] मेस ।। १४५
'सूररौ' कुरव्व[20] साह, भाति भाति कीध भाव* ।
देखता स राह दोइ[21], रौद खान भूप राव ।

१ ख वावरै । क वावरै । २ ख वैठि । ग बैठि । ३ ग दिसेस । ४ ख. आकला । ग आकली । ५ ग ऐह । ६ ख ग द्वारि । ७ ख ग. जाय । ८ ख ग आय । ९ ख ग राज । १० ख वेषीयौ । ग दंषीयौ । ११ ख दोइ । ग दोई । १२ ख ग. आवीयौ । १३ ख इस । ग ईस । १४ ख ग जेणिवार । १५ ख ग जोम । १६ ख ग हौ । १७ क पेचि । १८ ख जाव । १९ ख ग चगेह । २० ग. कुरब ।
*ख प्रतिकी इस पक्तिमे 'कुरव्व' शब्द नही है ।
२१ ग दोई ।

१४३ वीजळा – तलवारे, तलवारो । दिलेस – दिल्लीश, वादशाह । वारि – जल, पानी ।

१४४ आकळे – व्याकुल हुए, व्याकुल हो कर, घवरा कर । एह – यह । जोगणेस – योगिनीपुरका ईश वादशाह । द्वार – दरवाजा । जाइ – जा कर । साभळेस – सुन कर । कीध – किया । आइ – आ कर ।

१४५ आवियौ – आया । एसि – इस प्रकार । वोम – व्योम, आकाश । लागि – लग कर । जेण – जिस । वार – समय । जोम हूत – जोशसे, जोशपूर्वक । कीध – किया । जोध – योद्धा, वीर । साहहू – वादशाहसे । जह्वार – अभिवादन, सलाम । चगे – कुशल । नरेस – राजा । साह – वादशाह । पेखि – प्रेक्ष्य, देख कर । दाखि – कहा, कह कर । लीध – ली । पेस – पेश, सम्मुख, सामने, भेंट, नजर । सूर – सवाई राजा सूरसिंहका । जाव – जवाव, प्रश्नका उत्तर । दीध – दिया । चगेस – वादशाह अकवर जो चगेजखाका वशज था ।

१४६ सूररौ – सवाई राजा सूरसिंहका । कुरव्व – कुर्व, सम्मान, मान, प्रतिष्ठा । कीध – किया । भाव – इज्जत, मान । राह – धर्म । दोइ – दो, दोनो । रौद खान – सभव है यह शब्द मुजफ्फरके लिये प्रयोग कियागया हो ।

मेलियौ[1] तुजक्क[2] मीर, दीध हाथ पानदान ।
आखियौ[3] दिलेस[4] एम[5], पातिहूत फेरि पान ।। १४६

कवित्त– उभा सोह उमराव, अब[6] दीवाण[7] अनाही[8] ।
मीर त्रुजक[9] ज्या माहि, पान फेरे पतिसाही ।
स्रब[10] नटिया[11] तिण समै, अवर उमराव[12] अकाजा ।
'सूर' पान साहरा, जुडण लीधा महाराजा[13] ।
ग्रहि पान एम[14] कहियौ[15] अगज, झट खग बौह[16] बाहू[17] झलू ।
मोकळू पकडि मदफर[18] मिलक, मुदफररौ सिर मोकलू ।। १४७

गाथा

जमदढ खग जमहार[19], गज सिर पाउ[20] तुरग(जे) धर गुज्जर ।
व्रवि[21] असपति जिण वार, कहियौ[22] तखत लाज तो कमधज ।।१५८

---

१ ख ग मेल्हीयौ । २ ख ग तुज्झक । ३ ख ग आपीयौ । ४ ख. दीलेस । ५ ख ग येम । ६ ख. आव । ग आव । ७ ख दीवा । ८ ख ग अलाही । ९ ग तुजकं । १० ख श्रव । ग श्रव । ११ ख ग नटीया । १२ ख ऊवरा । ग ऊवरा । १३ ख महारा । ग. माहाराजा । १४ ख ग येम । १५ ख कहीयौ । ग कहीयो । १६ ख वहौ । ग बहौ । १७ ख वाहू । ग वाहू । १८ ख मुदफिर । ग मुदफर । १९ ख ग जवाहार । २० ख ग. पाव । २१ ख व्रव । २२ ख ग कहीयौ ।

---

१४६ **आखियौ** – कहा । **दिलेस** – दिल्लीश, बादशाह । **एम** – इस प्रकार । **पातिहूंत**–पक्तिसे, कतारसे । **पान**–पानका बीडा । **तुजक मीर**–राज सभाकी व्यवस्था करने वाला अफसर ।

१४७ **उभा** – खडा । **सोह** – सब । **उमराव** – अमीर, राजा । **अब दीवाण** – आम दरबार । **ज्यां** – जिन । **माहि** – मे । **पान** – पानका बीडा । **पतिसाही** – बादशाहका । **स्रब** – सब । **नटिया** – इन्कार कर दिया । **तिण** – उस । **समै** – समय । **अवर** – अपर, अन्य । **अकाजा** – अकारण, बिना कारण । **सूर** – सवाई राजा सूरसिंह । **साहरा** – बादशाहके । **जुडण** – युद्ध करनेके लिये, भिडनेके लिये । **लीधा** – लिये । **ग्रहि** – पकड कर ले, कर । **अगज** – अजेय, विजयी । **झट** – शीघ्र । **खग** – तलवार । **बौह** – (?) । **वाहू** – भुजासे । **झलू** – धारण करू । **मोकळू** – भेज देऊ । **पकडि** – पकड कर । **मदफर** – मुजफ्फर । **मिलक** – मलीक, स्वामी, मालिक । **मुदफररौ** – मुजफ्फरका, इसके पुत्र बहादुरशाहने बादशाह अकबरके शासनकालमे गुजरातमे लूट-खसोट व उपद्रव खडा कर दिया था । इसको पराजित करने हेतु बादशाह अकबरने सवाई राजा सूरसिंहको गुजरातकी तरफ भेजा था ।

१४८ **जमदढ** – एक प्रकारका कटार । **खग** – तलवार । **जमहारं** – जवाहरात । **गज** – हाथी । **सिर पाउ** – शिरोपाव । **तुरंग** – घोडा । **धर गुज्जर** – गुजरात राज्य । **व्रवि** – देकर । **असपति** – अश्वपति, बादशाह । **जिण वारं** – जिस समय । **कहियौ** – कहा । **तखत** – राज्यसिंहासन । **तो** – तुझे । **कमधज** – राठौड ।

छंद पद्धरी

सुणि साह हुकम इम सूरसाह ।
ऊससे[1] जोम पौरस[2] अथाह ।
तिण वार तोलि खग मूछ ताणि ।
असपतिहू कहियौ[3] छौह[4] आणि ।। १४६

विढि हणू बहादर[5] खाग वाहि ।
ग्रहि जडू जजीरा थाट गाहि ।
दळ बळ[6] खळ न वचै कोडि दाय ।
जो वचै राज तजि भाजि जाय ।। १५०

हव देखौ असपति मूझ हाथ ।
निहचत करा सुख दिली राज[7] ।
इम कहे[8] हालियौ[9] कमधईस[10] ।
सूरापण छिवतै[11] उरस सीस ।। १५१

---

१ ख उससे । ग ऊससै । २ ख. ग पौरिस । ३ ख ग कहीयौ । ४ ख. छोह । ५ ख. वहादर । ग बाहादर । ६ ख वल । ७ ख ग नाथ । ८ ग कही । ९ ख. ग हालीयौ । १० ग कमधइस । ११ ख. ग छिवतै ।

---

१४६ साह – वादशाह । इम – इस प्रकार । सूरसाह – सवाई राजा सूरसिंह । ऊससे – जोशमे आया । जोम – जोश । पौरस – शक्ति, वल । अथाह – अपार । तिण – उस । वार – समय । तोलि – उठा कर । खग – तलवार । मूछ ताणि – मूछो पर ताव दे कर । असपतिहू – वादशाहसे । कहियौ – कहा । छौह – जोश । आणि – ला कर ।

१५० विढ़ि – युद्ध कर, भिड कर । हणू – सहार कर दूं, मार दूं । वहादर – मुजफ्फरके पुत्र वहादुरशाहको । खग – तलवार । वाहि – प्रहार कर । ग्रहि – पकड कर । जडूं – वधनमे डाल दू । थाट – सेना, दल । गाहि – ध्वश कर, नाश कर । खळ – शत्रु । न वचै कोडि दाय – करोडो उपाय करने पर भी नही वचेगा ।

१५१ हव – अव । असपति – वादशाह । मूझ – मेरे, मेरा । निहचत – निश्चित । हालियौ – चला, प्रस्थान किया, कूच किया । कमध ईस – राठौडोका स्वामी, सवाई राजा सूरसिंह । सूरापण – शौर्य । छिवतै – स्पर्श करते हुए । उरस – आसमान, आकाश ।

गजराज चढे कमधज गरूर ।
सूरिमा मौड महाराज[1] 'सूर' ।
जाजुळ[2] मुदफरहू थापि जग ।
आवियौ[3] एम[4] डेरा[5] अभग ॥ १५२

सोरठा[6]–उमरावा[7] उण वार[8], मसळति पूछै[9] महपती ।
सुणे हुकम सिरदार, आलोचण लागा उठै ॥ १५३
सह[10] बोलिया[11] सकाज, मतौ करे[12] बिहुवै[13] मिसल ।
मन वछित[14] महाराज[15], ऐ[16] मोहमदीय असपती ॥ १५४
कौ[17] मन वछित केम, जाब[18] भडा दीजे[19] जकौ[20] ।
इम सुणि कहियौ[21] एम[22], सका[23] भडा महाराजसू[24] ॥ १५५

---

१ ख ग माहाराज । २ ख ग जाजुलि । ३ ख ग आवीयौ । ४ ग ऐम । ५ ख. ग डेरै । ६ ख ग दौहा सोरठा । ७ ख ग उवरावा । ८ ग. उण बार । ९ ख ग. पूछे । १० ख. ग सहौ । ११ ख वोलीया । ग बोलीया । १२ ग करै । १३ ख. ग विहुवं । १४ ग वछित । १५ ग माहाराज । १६ ख ग. एह । १७ ख ग. कहौ । १८ ख जाव । १९ ख. ग दीजै । २० ख जीकौ । ग जिकौ । २१ ख ग. कहीयौ । २२ ग. इम । २३ ख सको । ग. सकौ । २४ ग माहाराजासू ।

---

१५२. गजराज – हाथी । कमधज – राठौड । गरूर – गभीर । सूरिमा – शूरमा, वीर । मौड – श्रेष्ठ, मौर । महाराज सूर – महाराजा सूरसिंह । जाजुळ – जाज्वल्यमान । मुदफरहू – मुजफ्फरसे । थापि – निश्चय कर के । जग – युद्ध । आवियौ – आया । अभग – वीर ।

१५३. उण वार – उस समय । मसळति – मस्लहत, परामर्श, सलाह । महपती – राजा । आलोचण – विचार । उठै – वहाँ ।

१५४. सह – सब । बोलिया – बोले । सकाज – कार्य सहित, लिए । मतौ – विचार । बिहुवै – दोनो । मिसल – पक्ति । मन वछित – अभीष्ट । मोहमदीय – मुहम्मदका । असपती – बादशाह ।

१५५ कौ – कहो । केम – कैसे । जाब – जवाब । भडा – योद्धाओ । जकौ – वह । सुणि – सुन कर । कहियौ – कहा । एम – ऐसे । सका – सब ।

कवित्त–जाइ[1] करा[2] जोधाण, जूथ केजम जरदाळां।
दीध[3] गुजर[4] धर दुगम, चढां मंडण धकचाळा[5]।
आवू[6] धर ऊधमां, लाय सिवपुरी लगावां।
दुजड भडा देवड़ां, भाजि ग्रह[7] डड[8] भरावा।
सुरताण मरै का नीसरै, गिर अढार हुय[9] गाहणौ।
पाधरै खेत काढा पछटि, ताय वैर[10] 'रासा'तणौ।। १५६

स्यांम काज[11] साजिजे[12], वैर[13] इण विध[14] वाळीजे।
भर लीजै धर भोग, कळह मुदफरहू[15] कीजे।
साह हणा सग्रहा[16], काय लूटे दिल[17] काढां।
काय आय जुध[18] कांम[19], चुरस मुरधर जळ चाढा।

---

१ ख ग जाय। २ ख ग करो। ३ ख ग दिसि। ४ ख ग गुज्जर। ५ ख घपवाला। ग घपचाळा। ६ ख आवू। ७ ख ग ग्रहि। ८ ग दंड। ९ ख होय। ग होय। १० ग वैर। ११ ख. ग कांम। १२ ख ग साझिजै। १३ ख वैरि। १४ ख विधि। १५ ख. मुदफुर। १६ ग. सग्रही। १७ ख ग दळ। १८ ग जुधि। १९ ख ग कामि।

---

१५६ जाइ – जा कर। जूथ – यूथ, समूह। जरदाळां – कवचधारी योद्धाओ। दीध – दी, दिया। गुजर धर – गुजरात। दुगम – दुर्गम। मडण – रचनेको। धकचाळां – युद्धो। ऊधमां – तहस-नहस कर डाले। लाय – आग, अग्नि। सिवपुरी – सिरोही। दुजड़ – तलवार। भडा – प्रहार। देवड़ा – चौहानवशकी देवडा शाखाके व्यक्तियो। डंड भरावा – दण्ड वसूल करेंगे। सुरताण – सिरोहीका राव सुल्तान। का – या, अथवा। गिर अढार – आवू पर्वत। गाहणौ – नाश,ध्वंश। पाधरै खेत – खुले मैदान, खुले युद्धस्थल। पछटि – पछाड कर। ताय – आततायी, शत्रु। रासा – रायसिंह राठौड।

१५७ स्यांम – स्वामी, मालिक। काज – कार्य, काम। साजिजे – सफल करिये। वैर इण विध वाळजे – इस प्रकार प्रतिशोध लीजिये। भर लीजै – वसूल कीजिये। धर – भूमि। भोग – कृषिकी उपजका वह भाग जो जागीरदार या राज्य सरकार वसूल करती थी। कळह – युद्ध। मुदफरहू – मुजफ्फरसे। हणा – सहार कर दूं, या मार दू। सग्रहा – युद्ध करू। काय लूटे दिल काढ़ा – या लूट कर दिलकी उमग पूरी करें। चुरस – श्रेष्ठ। मुरधर – मारवाड। जळ – तेज, काति, प्रतिष्ठा।

सरव[1] ही वात दाखै सुभट, कुळ अजसै सुण[2] कीरती ।
धुर मुहमु[3] एम[4] गुजरात धर, इम[5] मन वछत[6] अधपती ।। १५७

एक[7] वात ऊबरा[8], सुणे रीझियौ[9] नरेसुर ।
वाह वाह अखियौ[10], तोल[11] खग लगे[12] अधतर ।
पूजि वधारा पटा, एम[13] कहियौ[14] उण वारा ।
मूझ वसे[15] मन मही[16], सोइज[17] दाखै[18] सिरदारा ।
करि इम[19] सलाह दळ वळ[20] करे[21], तूर भेर वाजै[22] तबल[23] ।
नृप[24] 'सूर' एम[25] दिस सहस[26] नव, दिलीहूत[27] चढियौ[28] दुझल ।। १५८

छद मत्त मात्तंग लीला करदडक

हालिया[29] एहडा[30] घेर वकी घडा ,
रज्ज[31] उडै[32] रवी धोमतै धूधळै ।

---

१ ख सरव । २ ख ग सुणि । ३ ख मौहम । ग मोहम । ४ ग ऐह । ५ ख. ग. यम । ६ ख ग वछित । ७ ग ऐह । ८ ग ऊवरा । ख ऊवरा । ९ ख ग. रीझीयौ । १० ख ग आपीयौ । ११ ख ग तोलि । १२ ग लगै । १३ ग ऐम । १४ ख ग कहीयौ । १५ ग वसे । १६ ख ग माहि । १७ ख सोईज । ग सौईज । १८ ख. दाषे । १९ ग यम । २० ख वळ । २१ ख कर । ग करै । २२ ग. बाजे । २३ ख तवल । २४ ख ग नृप । २५ ग ऐम । २६ ख ग सहस । २७ ख हूत । २८ ख. ग चढीयौ । २९ ख ग. हालीया । ३० ख. ग ऐहडा । ३१ ख ग. रज । ३२ ख ग उडे ।

---

१५७ दाखै – कहते हैं । सुभट – योद्धा । कुळ – वश । अजसै – गर्व करे, गर्व करेगा । धुर – प्रथम, अगाडी । मुहमु – मुहिम, महान कार्य, वडा काम, युद्ध, सग्राम । अधपति – राजा, नृप ।

१५८ ऊबरा – अमीरो, सरदारो । रीझियौ – प्रसन्न हुआ । नरेसुर – नरेश्वर, राजा । वाह वाह – धन्य-धन्य । अखियौ – कहा । तोल – उठा कर । अधतर – आसमान, आसमानके मध्यमे । वधारा – वढावेंगे । पटा – पट्टो । मूझ – मेरे । मन मही – मनमे । सोइज – वही । दाखै – कहा, कहते हो । करि – कर के । तूर – वाद्य विशेष । भेर – भेरी नामक वाद्य । तबल – वाद्य विशेष । नृप सूर – महाराजा सूरसिंहजी । एम – इस प्रकार । दिस – ओर, तरफ । सहस नव – मारवाड । दिलहूत – दिल्लीसे । चढियौ – चढा । दुझल – वीर, योद्धा ।

१५९ हालिया – कूच किये, चले । एहडा – ऐसे । वकी – वाकुरी । घड़ा – सेना । रज्ज – धूलि । रवी – सूर्य । धोमतै – धुआसे । धूधळै – धूलिसे आच्छादित होती है ।

वोल[1] नक्कीबरां[2] हींसवै हैमरां ,
धज्ज[3] धैंधींगरा[4] ऊपरां ऊछळै[5] ।
सीस धांमस मे[6] नाग वाळा नमै ,
कीध मुक्काम[7] को[8] मध्य[9] झूळा[10] मिळा ।
वब[11] ह्वै ववरा[12] इद्र आडबरा[13] ,
आवियौ[14] 'सूर' यूं[15] आपवाळी इळा ।। १५९

छंद तारक

मिळिया[16] बह[17] साजण उच्छब[18] मेळा ।
चद्राणण[19] राग करत सचेळा ।
अवछाड जरी चित्र हाट अपारां ।
वर वंधिय[20] कुंभ घण तिण वारां ।। १६०
निछरावळ[21] द्रव्व[22] उडत अनेकां[23] ।
करि उच्छब[24] हास नचंत अनेकां ।
मिळिया[25] भ्रत[26] सज्जण राज मझारे ।
पह[27] सूरज[28] एम[29] अवास[30] पधारे[31] ।। १६१

---

१ ख वोल । ग वौल । २ ख नक्कीव । ग. नकीवरा । ३ ख ग धज । ४ ख ग घेघींगरा । ५ ख ग ऊछले । ६ ख ग मैं । ७ ग. मुकाम । ८ ख ग के । ९ ख ग मधि । १० ग झूली । ११ ख वंव । १२ ख ववरा । १३ ख. आडवरां । ग आवैवरा । १४ ख ग आवीयौ । १५ ख ग सूरयौ । १६ ख ग मिलीया । १७ ख ग वहौ । १८ ख उछव । ग ऊछव । १९ ख ग चदाणणि । २० ख ग वधीय । २१ ग निछरावौळि । २२ ख द्रव्व । ग द्रव । २३ ख. ग. अनेक । २४ ख उछव । ग उत्छव । २५ ख ग मिलीया । २६ ख ग भृत । २७ ख ग पौहौ । २८ ख ग सूरिज । २९ ग ऐम । ३० ग आवास । ३१ ग पधारै ।

---

१५९ नक्कीवरा – नकीवोंके । हींसवै – हिनहिनाहट करते हैं । हैमरा – हयवरो, घोडो । धज्ज – ध्वजा । धैंधींगरा – हाथियो । ऊपरां – ऊपर । ऊछळै – फहराती है । धामस – धमक । नागवाळा – शेषनागके । वब – नगारा । ह्वै – होते हैं । आवियौ – आया । सूर – सवाई राजा सूरसिंह । यूं – इस प्रकार । आपवाळी – अपनी । इळा – भूमि ।

१६० मिळिया – मिले । साजण – सज्जन । उच्छब – उत्सव । चद्राणण – चद्रमुखी । सचेळा – सुन्दर । अवछाड – वस्त्र ।

१६१. निछरावळ – न्योछावर । द्रव्व – द्रव्य । मिळिया – मिले । भ्रत – भृत्य, नौकर । सज्जण – सज्जन । मझारे – मध्य, मे । पह – राजा । अवास – भवन । पधारे – पदार्पण किया ।

सुकिया मिळ[1] जूथ अनेक करै सुख ।
रवि नाम नरद[2] सुरचद तणी रुख ।
चत्र जाम वितीत उदोत जगा चख ।
सझि रीझ विदा किय[3] तीस छहै[4] सख[5] ।। १६२
अठ दीह करार[6] करे[7] भड आया ।
माहमा सज मत्रिया[8] फुरमाया ।
. . . . ।
. . ।। १६३

कवित्त– असट दीह नरइद[9], इद[10] जिम रहै अमासा[11] ।
डेरा वाहिर दिया[12], परठि महुरत[13] परगासा[14] ।
पह[15] निज हुकम प्रमाण[16], दीह नवमै विरदाळा ।
सराजांम करि समर, सकौ[17] भड मिळै[18] सचाळा[19] ।

---

१ ख ग मिलि । २ ख करचद । ३ ख. ग कीया । ४ ख. छहे । ५ ख. सष । ६ ग करारि । ७ ग. करे । ८ ख ग जमत्रवीया । ९ ख ग. नरियद । १० ग इद्र । ११ ख ग अवासा । १२ ख. ग. दीया । १३ ग महूरत । १४ ख ग परकासां । १५ ख ग. पौहो । १६ ख ग प्रमाणि । १७ क. सको । १८ ख ग मिले । १९ ख ग सिंघाला ।

---

१६२. सुकिया – स्वकिया, पतिव्रता । जूथ – यूथ, समूह । रवि नाम– प्रभाव, ऐश्वर्य । सुरचद – इन्द्र । रुख – समान । चत्र जाम – चार पहर । वितीत – व्यतीत । उदोत – उद्योत । जगा चख = जगद्‌चक्षु – सूर्य । सझि – सुसज्जित हो कर । रीझ – पुरस्कार । विदा – कूच । तीस छहै सख – क्षत्रियोके प्रसिद्ध छतीसही वश ।

१६३ अठ – आठ । दीह – दिन । करार – वायदा, वादा । भड – योद्धा । माहमां – परस्पर । संज – उपकरण, सामान ।

१६४ असट – अष्ट, आठ । नरइद – नरेन्द्र, राजा । इद – इन्द्र । अमासां – आवासों, भवनो । वाहिर – वाहर । परठि – देख कर । महुरत – मुहूर्त । परगासां – प्रकट, प्रकाश । पह – राजा । प्रमाण – अनुसार । विरदाळा – यशस्वी, विरुदधारी । सराजाम – तैयारी, सामान, सामग्री । समर – युद्ध । सकौ – सव । सचाळा – वीर ।

ऊधमत[1] देस एम[2], ज्याग[3] दक्ष[4] वीर जेम ।
तांम थाट पूर ताव, रीस धारि सोढ राव ।। १७२
वाजता त्रंबाळ[5] वीर, सामुहौ आयौ सधीर ।
वीर ते त्रवाळ वाज, गोम धोम वोम गाज* ।। १७३
ऊफणै[6] कमध ईस, रौद्र रूप जोग[7] रीस ।
आरवा[8] दगै अपार, काळ रूप अधकार ।। १७४
ऊछळै[9] गोळा अथाह, वूठ[10] बांण[11] बाण वाह[12] ।
'सूर' ताम रूप सोह, हाकलै भडां अबीह[13] ।। १७५
मारुवा तुरग मेलि, चाहुवाण वीर चेलि ।
घाट सेल वार घोळ, हूचकै[14] गजा हरोळ ।। १७६

---

१ ग उधमंत। २ ग ऐम। ३ ख वाग। ४ ख. ग दछि। ५ ग. त्रवाल। ग. त्रंबाळ।
*ख प्रतिके अनुमार यह पंक्ति—
वीर ते त्रवाल वाज, गोम वोस धौम काज ।
ग. प्रतिके अनुमार यह पंक्ति—
वीर ते त्रवाल वाज, गौम धौम धौम गाज ।
६ ख ऊपणे। ग ऊपणे। ७ ख ग जोस। ८ ख आरवाद। ग आरवाद। ९ ख ग. उछळै। १० ग वूट। ११ ख वाण। १२ ख वाह। १३ ख अवीह। १४ ग. हुचकं।

---

१७२ ऊधमंत – ध्वंश करते हैं। एम – इस प्रकार। ज्याग – यज्ञ। दक्ष – राजा दक्ष। वीर – महादेवका गण वीरभद्र। जेम – जैसे। ताम – उन। थाट – दल, सेना।
१७३ वाजतां – बजने पर। त्रवाळ – नगाडा। सांमुहौ – सम्मुख, सामने। सधीर – धैर्यवान, वीर। गोम – पृथ्वी। धोम – धुआ। वोम – व्योम, आकाश। गाज – गर्जित हुआ।
१७४ ऊफणै – उबालमें आता है। कमध ईस – राठौडोंका राजा सूरसिंह। रौद्र रूप – भयंकर, भयावह। जोग – योगी, महादेव। रीस – कोप। आरवां – तोपो, तोपे। दगै – दागे जाते हैं। काळ – यमराज।
१७५ ऊछळै – उछलते हैं, गिरते हैं। अथाह – अपार, असीम। वूठ – वर्षा। बाण – तीर। वाह – प्रहार। सूर – सवाई राजा सूरसिंह। ताम – उस। हाकलै – जोश दिलाता है, उत्साहित करता है। भडां – योद्धाओ। अबीह – निर्भय।
१७६ मारुवां – राठौडो। तुरग – घोडा। चेलि – (?)। घाट – शस्त्रका पैना या नोकदार भाग। वार – प्रहार। हूचकं – भिडते हैं। हरोळ – हरावल, सेनाके आगे।

'सूरराव'[१] हाथ[२] सेल, उछळै[३] रता[४] उझेळ ।
रग[५] माट घाट रत्र, ते[६] भरै[७] चौसट्ठ[८] पत्र ।। १७७
तोय[९] ज्यू[१०] पीवत[११] ताम, ज्वाळ त्रक्ख[१२] मेट[१३] जाम ।
झाळ रूप खाग झाट, घूमरा कटक्क[१४] घाट ।। १७८
ऊछळत हाथ पाव, घाट सीस दाव घाव ।
मड ईस रुंडमाळ, वीर निृत्त[१५] विक्कराळ[१६] ।। १७९
रीझवै हसै रिखेस[१७], देखवै रजै[१८] दिनेस ।
ऊमि[१९] लोह धार इद[२०], वारगा वरत व्यद[२१] ।। १८०
सूरवीर दोइ[२२] साथ, वोळ[२३] चोळ[२४] लूथ बाथ[२५] ।
वावरत रूप वीज[२६], खंजरा कटार खीज ।। १८१

---

१ ख ग सौंसराव । २ ख ग हत । ३ ख ग उछलै । ४ ख ग रत्रा । ५ ख. रम । ६ ख ग. तं । ७ ग. भरो । ८ ख ग चौसठि । ९ ग तोंय । १० ग. ड्यू । ११ ख. पिवंत । १२ ख ग. तृष । १३ ख. ग मेटि । १४ ख ग. कद्दत । १५ ख ग. नृत । १६ ग विकराळ । १७ ग. रिषेस । १८ ग रिजै । १९ ख ग ऊडि । २० ख ग इंद । २१ ख ग वींद । २२ ख ग. दोय । २३ ख वोल । क वोळ । २४ क चोळ । २५ ख वाथ । २६ ग. वीज ।

---

१७७ सूरराव – सवाई राजा सूरसिंह । सेल – भाला । ऊछळै – उछलता है । रता – रक्त, खून । उझेळ – तरग, हिलोर । घाट – घडा । रत्र – खून, रक्त । चौसट्ठ – चौसठ योगिनियोंके समूह । पत्र – देवीका खप्पर ।

१७८. तोय – जल । ज्यू – जैसे । पीवत – पीते हैं । ताम – उस । ज्वाळ त्रक्ख – तृषाकी ज्वाला । जाम – जो अथवा प्याला ? । झाळ – ज्वाला । रूप – समान । खाग – तलवार ।झाट – प्रहार । घूमरा – समूहो । कटक्क – सेना, दल । घाट – युद्ध भूमि ? ।

१७९. ऊछळत – उछलते है । पाव – पैर, पाद । घाट – शरीर । सीस – शिर । दाव – वार, प्रहार । मंड – बनाता है । ईस – महादेव । रुडमाळ – मुण्डमाला । वीर – युद्धप्रिय भैरवदेव । नृित – नृत्य । विक्कराळ – विकराल, भयकर ।

१८०. रीझवै – प्रसन्न होते है । रिखेस – ऋषीश, नारद मुनि । देखवै – देखता है । रजै – प्रसन्न होता है । दिनेस – सूर्य । ऊमि – उमड कर ? । लोह – रक्त, लोह । इद – इन्द्र ।

१८१ बोळ चोळ – लाल, रक्ताभपूर्ण । लूथ बाथ – गुत्यमगुत्था । वावरत – प्रयोग करते हैं । वीज – बिजली, तलवार । खीज – कोप ।

तदि वणै साज गयदां तुरां, वीर त्रवाळा[1] द्रीह वजि ।
सुरताण साह मुदफर दिसी, 'सूर' चढ़ै[2] दळ पूरि सजि ।। १६४

वाजि धमस[3] ऊडड[4], वाजि त्रबाळ[5] चहूंवळ ।
द्रोण वाजि है खुरा, वाजि दळ सौक[6] वळोवळ ।
सूर वीर साथिया[7], लियां[8] बौह[9] पूर लकाळां ।
मतिवाळा जौमरा[10], काळ रूपी कळिचाळा ।
कैजमां[11] भळक सिलहा खळक, भळळ तेज अणियां[12] भमर ।
देवडां चूर करिवा दुझल, 'सूर' चढे आरभ समर ।। १६५

छद मछिका[13]

एहडा[14] दळ[15] अथाह, सूरवीर सूर साह ।
भूप हालियौ[16] अभग, जोम पूर काजि[17] जग ।। १६६

---

१ ख त्रवागळ । ग त्रंबागळ । २ ग चढै । ३ ख ग घमस । ४ ख ग ऊडंडा । ५ ख ग त्रावाळ । ६ ख ग सोक । ७ ख ग साथीया । ८ ख ग. लीयां । ९ ख. ग वहौं । १० ख ग. जोमरां । ११ ख कँजमा । ग केजमां । १२ ख ग अणीया । १३ ख ग मल्लिका । १४ ग ऐहडा । १५ ख ग दळां । १६ ख. ग. हालीयौ । १७ ख ग. काज ।

---

१६४ तदि – तव । साज – उपकरण, सामान । गयंदा – हाथियो । तुरा – घोडो । त्रवाळा – नगाडा । द्रीह – भयकर । सुरताण – सिरोहीका राव सुलतान । साह – बादशाह । मुदफर – मुजफ्फर । दिसी – ओर, तरफ । सूर – सवाई राजा सूरसिंह । पूरि – पूर्ण । सजि – सज्जित कर के ।

१६५ वाजि – ध्वनि हुई । धमस – घोडोके सुमोंके आहटकी ध्वनि । ऊडंड – घोडा । त्रवाळ – नगाडा । चहूंवळ – चारो ओर । द्रोण – भयकर, भयावह । है – हय, घोडा । सौक – ध्वनि विशेप । वळोवळ – चारो ओर । बौह – बहुत । पूर – पूर्ण । लकाळा – वीरो, योद्धाओ । मतिवाळा – बुद्धिमानो । जौमरां – जोशीलो । काळ रूपी – यमराजके समान, रूपका । कळिचाळा – योद्धाओ । कैंजमां – (?) । भळक – चमक, दमक । सिलहा – अस्त्र-शस्त्रो । खळक – ध्वनि विशेप । भळळ – देदीप्यमान । अणियां भमर – सेनाके अग्रगण्य । देवडां – चौहानवशकी देवडा शाखाके व्यक्तियो । चूर – नाश, ध्वश । दुझल – वीर, योद्धा । सूर – सवाई राजा सूरसिंह । समर – युद्ध ।

१६६ एहडा – ऐसे । दळ – सेना, फौज । अथाह – अपार, असीम । सूरवीर – बहादुर । सूर साह – सवाई राजा सूरसिंह । हालियौ – चला, कूच किया । अभग – वीर । जोम – जोश । पूर – पूर्ण । काजि – लिए । जग – युद्ध ।

घट गै धमक घोर, जगमांण[1] नाळ जोर[2] ।
भूम धूज थाट भार, कोम कध जै प्रकार ।। १६७
धूधळै[3] रजैस[4] धोम[5], वैल माग ढक[6] व्यौम ।
. . . . ।। १६८
तूटये[7] नदी तटाक, हीस वाजि[8] वीर हाक ।
पेखि एम[9] थाट पूर, साजिया[10] मुकाम 'सूर' ।। १६९
दोय[11] एक[12] वीच[13] दीह, आवियौ[14] खड़े[15] अबीह[16] ।
औदके पवै अढार, भारही[17] अढार भार ।। १७०
जामि[18] लोक भाजि जाय, थाट नैर नास थाय ।
लूटजै[19] दरव्व[20] लाख, सच माल भूम साख ।। १७१

---

१ ग. मांणु । २ ग जोर । ३ ख ग धूधळे । ४ ख ग. रजेस । ५ ग धौम । ६ ख ग ढकि । ७ ख तूटीए । ग तूटीऐ । ८ ख वाज । ग वाज । ९ ग ऐम । १० ख ग साझिया । ११ ख ग दोइ । १२ ख ग हेक । १३ ख ग वीचि । १४ ख ग. आवीयौ । १५ ग षडै । १६ ख. अवीह । १७ ख भाहरी । ग भाहरा । १८ ख ग जाम । १९ ख लूटजे । ग लूटिजै । २० ख दरव । ग दरव ।

---

१६७ घट – घटा । गै – गज, हाथी । जगमाण – घोडा । धमक – ध्वनि विशेष । घोर – भयंकर । नाळ – घोडेके सुमके नीचे लगाया जाने वाला अर्द्ध चंद्राकार लोहेका खंड विशेष । भूम – भूमि पृथ्वी । धूज – कंपायमान होनेकी क्रिया । थाट – सेना, दल । कोम – कूर्म, कच्छप । कध – स्कंध ।

१६८. धूंधळै – धूलि-आच्छादित । रजैस – रज, धूलि । धोम – धुआ । ढक – आच्छादित करते हैं । व्यौम – आकाश ।

१६९ तूटये – टूट जाता है । तटाक – तालाब । हींस – हिनहिनाहट । वाजि – घोड़ा । वीर हाक – युद्धप्रिय भैरवदेवकी दहाड, वीर-ध्वनि । पेखि – प्रेक्ष्य, देख कर । एम – इस प्रकार । थाट – सेना, दल । पूर – पूर्ण । साजिया – सजाये । मुकाम – स्थान, डेरा, पडाव । सूर – सवाई राजा सूरसिंहजी ।

१७० वीच – मध्य, मे । दीह – दिन । आवियौ – आया । खड़े – चल कर । अबीह – निर्भय । औदके – भयभीत होते है, कंपायमान होते हैं । पवै – पर्वत । अढ़ार – आबू पर्वत । अढ़ार भार – अष्टादश भार वनस्पति ।

१७१. जामि – याम, प्रहर । थाट – सेना । नैर – नगर । नास थाय – विध्वंश होते हैं । दरव्व – द्रव्य । सच – सग्रह । भूम – भूमि ।

काळरूप भाळ क्रोध, जेठियां[1] सरूप जोध ।
डोरिया करंत डाव, घाटमे[2] दुसार घाव ।। १८२
देवडा मुकत्त दाम, तूटिया[3] अनेक तांम ।
'सूररा'[4] केईक[5] सूर, रूक घाइ[6] मग्गरूर[7] ।। १८३
वाकडा कमध वीर, सांकडा आया[8] सधीर ।
ताम सोढि देखि ताव, पालटै कुरंग पाव ।। १८४
त्रबि[9] वाजि[10] भेर[11] तूर[12], 'सूर' जैत[13] कीधि[14] सूर ।
लूटिवें[15] सिरोह[16] लीध, कोटमे[17] मुकाम कीध ।। १८५

कवित्त– राव सहित राणियां[18], भ्रमै वनि[19] वनि चित भगं[20] ।
सुवै[21] राव सुरताण, पथर साथरा पिलंग[22] ।
पवै तरा पालणा, रुदन बाळक मछरीकां ।
सुण[23] चमकै सुरतांण, हियै[24] सालै दुख हीकां ।

---

१ ख जेठीयां । ग झेठीया । २ ख ग. घाटमै । ३ ख ग तूटीया । ४ ग सुरग । ५ ग केइक । ६ ख ग घाय । ७ ग मगरूर । ८ ख अया । ९ ख तूब । ग तूब । १० ग वाजि । ११ ख ग. भेरि । १२ ग तूरि । १३ ख ग जैति । १४ ख ग. कीध । १५ ख लूटवे । १६ ग सिरोहि । १७ ख कोटवै । ग कोटमै । १८ ख ग. रांणीयां । १९ ग. वनि । २० ग. भंगा । २१ ख सूवै । २२ ख ग पिलगा । २३ ख ग. सुणि । २४ ख ग हीयै ।

---

१८२. झाळ – ज्वाला, आग । जेठियां – वडो, भीम । सरूप – समान । जोध – योद्धा । डोरिया – (?) । करत – करते है । डाव – दाव । घाट – शरीर । दुसार – भाला ।
१८३ मुकत्त – मुक्त । सूरररा – सवाई राजा सूरसिंहके । केईक – कई । सूर – वीर । रूक – तलवार । घाइ – प्रहार । मग्गरूर – गर्वयुक्त, उन्मत्त ।
१८४ वांकडा – वाकुरे । कमध – राठौड । साकडा – संकट, नजदीक । सधीर – धैर्यवान । कुरंग – घोडा ।
१८५. त्रबि – नगाडा । भेर – भेरी नामक वाद्य । तूर – वाद्य विशेष । सूर – सवाई राजा सूरसिंह । जैत – विजय । कीध – की । सूर – वीर । लूटिवै – लूटनेको । सिरोह – सिरोही । कोट – गढ । मुकाम – डेरा, पडाव । कीध – किया ।
१८६. राव सुरताण – सिरोहीका राव । भ्रमै – भ्रमण करती है । वनि वनि – वन-वनमे । चित भग – पागल । पथर – प्रस्तर । साथरा – संस्तर, बिछौना, शय्या । पिलग – पर्यंको । पवै – पर्वत । तरा – वृक्षो, तरुओ । मछरीकां – चौहानो । चमकै – चौंकता है । हियै – हृदयमे । सालै – शल्य रूप होते हैं । हीका – दर्द, टमक, चीस ।

त्रिय थकित[1] महल[2] चढतां तिकै[3], तिकै[4] चढै गिर तरवरा[5] ।
भवि 'सूरतणै' मछरीक भड, एम[6] हुवा थरहर उरां ॥ १८६
त्रासमाण सुरताण[7], माण पौरस[8] बळ[9] मूकै[10] ।
करै निजर केवाण[11], चित्तवै[12] राण[13] स[14] चूकै[15] ।
गज[16] भिडज्ज[17] गढ[18] गाम, करा द्रब[19] दीध पेसिकस[20] ।
हू[21] चाकर हुकमरौ, एम[22] कहियौ[23] तजि[24] अजस ।
ईहगां[25] घणौ[26] विरदावियौ[27], मारू अमली[28] माणनू[29] ।
आपरौ करै[30] दीधौ उतन, तरै राव सुरताणनू ॥ १८७
ताम[31] खबरि[32] बहु[33] तेज, अई गूजर[34] धरवाळी ।
कीध बहादर[35] किलम, करण जुध फौज कराळी ।

---

१ ग. थकिति । २ ख मलहि । ग महलि । ३ ख तिके । ग निकें । ४ ग तिके । ५ ख. वरतरां । ६ ग ऐम । ७ ग सूरतांण । ८ ख पैरिस । ग. पौरिस । ९ ग. वल । १० ख मुक्के । ग मूक्के । ११ ख ग केवाण । १२ ख ग चीतवै । १३ ख राण । १४ ख सु । ग सुं । १५ ख ग चुक्के । १६ ख गज्ज । १७ ख ग भिडज्ज । १८ ख वलि । ग वलि । १९ ख द्रव । २० ख ग पेसकस । २१ ख हुं । २२ ग ऐम । २३ ख ग कहीयौ । २४ ग तज । २५ ख एहगा । ग ऐहगा । २६ ख ग. घणा । २७ ख ग विरदावीयौं । २८ ग अवली । २९ ख. माणनू । ३० ग करै । ३१ ग ताम । ३२ ख खवरि । ३३ ख वहु । ३४ ख ग गुज्जर । ३५ ख वाहर । ग. वाहादर ।

---

१८६ त्रिय – स्त्रिएँ । थकित – थक जाती है । तिकै – वे । गिर – पर्वत । तरवरा – तरुवरो, वृक्षो । भवि – भय । सूरतणै – सवाई राजा सूरसिंहके । मछरीक – चौहान । एम – इस प्रकार । थरहर – कपायमान । उरा – हृदयमे ।

१८७ त्रासमाण – आतकित । मांण – गर्व, मान । पौरस – शक्ति, वल । मूकै – छोडते हैं । केवाण = कृपाण – तलवार । चित्तवै – विचार करते हैं । गज – हाथी । भिड़ज्ज – घोड़ा । करा – हाथो । द्रब – द्रव्य । दीध – दिया । पेसिकस – नजराना, भेंट । कहियौ – कहा । तजि – छोड कर । अंजस – गर्व, अभिमान । ईहगां – चारण कवियो । विरदावियौ – उत्साहित किया, जोश वधाया । मारू – मारवाडका अधिपति, राठौड । अमली माणनू – ऐश्वर्य या अधिकारोका उपभोग करने वालोको । दीधौ – दिया । उतन – वतन, जन्मभूमि । तरै – तव ।

१८८ ताम – उस, उन । खबरि – सदेश । अई – आई । गूजर धरवाळी – गुजरातकी । कीध – किया । बहादर – मुजफ्फरका पुत्र वहादुर । किलम – यवन, मुसलमान । करण – करनेके लिए । जुध – युद्ध । कराळी – भयकर, जवरदस्त ।

सझे कूच तिण समै[1], दळा आवळां वहादर[2]।
ज्वाळा मझ[3] घ्रत जेम, क्रोध ऊफणै[4] भयकर।
इम[5] 'सूर'[6] जीत[7] दूजौ अभग, आरंभ[8] दळ हालै[9] इसौ।
ऊझळै[10] छौळ पौरस उझळि[11], जळाबोळ[12] सामद[13] जिसौ॥ १८८

करै[14] केईक मुकाम[15], अधिक आतुर दळ आया।
मुणे वहादर[16] साह, चढे सांमुहा[17] चलाया।
वहै थाट दहुं[18] वळा[19], सरा नदिया[20] जळ सूकै।
चाकै दहु[21] दळ चढ़ै, धरा[22] गुजरात धधूकै[23]।
नीसाण झडा[24] डेरा निजर[25], दळां वळा[26] दरसाविया[27]।
कळिचाळ कमध[28] दारण[29] किलम, आरण कारण आविया[30]॥ १८९

---

१ ख ग समै। २ ख वाहादर। ग बाहादर। ३ ख ग मझि। ४ ख ग उफणे। ५ ख ग इक। ६ ख ग समर। ७ ख ग. जीति। ८ ख आर। ९ ख ग हाले। १० ख ग ऊझले। ११ ख मुमझि। १२ ख जळावोळ। ग जळावोळ। १३ ख ग. सामद। १४ ख करे। १५ ख ग मुक्काम। १६ ख ग वाहादर। १७ ख ग सामुहा। १८ ख ग दुहु। १९ ग वळा। २० ख.ग. नदीयां। २१ ख दुहूं। २२ ख. धरा। २३ ग धधूकं। २४ ख उडा। २५ ख ग. नजर। २६ ख. ग वला। २७ ख ग दरसावीया। २८ ख ग कमंध। २९ ख ग दारुण। ३० ख ग आवीया।

---

१८८ सझे कूच – प्रस्थानकी तैयारी की। तिण समै – उस समय। दळां – फौजों, सेनाएँ। आवळां – जबरदस्त मजबूत, दृढ। बहादर – वहादुरशाह। ज्वाळा – आग। मझ – मध्य। घ्रत – घृत। जेम – जैसे। इम – इस प्रकार। सूर – सवाई राजा सूरसिंह, वीर। दूजौ – दूसरा। अभग – वीर। आरंभ – युद्ध। दळ – सेना। हालै – चलता है। इसौ – ऐसा। ऊझळै – छलकना, पानीका किनारोंके ऊपर हो कर वहना। छौळ – तरग, हिलोर। पौरस – शक्ति, बल। उझळि – उमड कर। जळाबोळ – जल ही जलका फैलाव। सामंद – समुद्र। जिसौ – जैसा।

१८९. केईक – कई। मुकाम – पडाव, डेरा। आतुर – त्वरायुक्त। सांमुहा – सम्मुख, सामने। थाट – सेना, फौज। दहुं – दोनो। वळा – ओर, तरफ। सरा – तालावों। चाकै दहु दळ चढ़ै – दोनो दल चक्रित हो जाते हैं। धरा – पृथ्वी, भूमि। धधूकै – कम्पायमान होती है। दळां – सेनाओ। वळां – तरफ, ओर। दरसाविया – दिखाई दिये। कळिचाळ – योद्धा, वीर युद्ध। दारण – दारुण, भयकर, जबरदस्त। किलम – मुसलमान। आरण – युद्ध। आविया – आये।

दूहा[1]– 'सूर' पांन ले साहरा, अयौ करण अखियात।
धर मुदफर सिर छत्र धर[2], विसटाळा[3]री[4] वात॥ १६०
काळ रूप चड्ढी[5] किटक[6], सूरसाह पतिसाह।
दहुंव[7] दळां[8] नाळां दगै[9], गोळा झड़ं गजगाह॥ १६१

छंद कलहंस

उड[10] रीठ गोळा[11] नाळ झळपट ऊपडै[12]।
धड पडै अपहड घाट[13] धरपुड़[14] धड़हडै[15]।
अरडाव घोर[16] अधार रौद्रव रूपरा।
रवि ताम ग्रीखम रूप, भड सह[17] ऊपरा[18]॥ १६२
उडि बाण[19] तीर अपार, असि आफाळिया[20]।
मेलिया अरि घड माहि, लोहि[21] उलाळिया[22]।
घण धमक साबळि[23] घाट, नीछटि[24] नारगा।
हद वरै वर बहु[25] हूर, बधि[26] बधि बारगा[27]॥ १६३

१ ख दोहा। ग दूहो। २ ख धरि। ग धरे। ३ ख ग विसटाळो। ४ ख ग की। ५ ख ग चढीया। ६ ख ग कटक। ७ ख ग दहू। ८ ख वळा। ग. वळां। ९ ख दगे। १० ख ग उडि। ११ ख गोला। १२ ख उपडै। १३ क घाट। १४ ख धरुपुड। १५ ख ग धडहडै। १६ ग घौर। १७ ख साहै। ग सौहौ। १८ ख ग. भूपरा। १९ ख वाण। ग वाण। २० ख ग आफाळीया। २१ ख ग लोह। २२ ख. ग उलालीया। २३ ख ग सावल। २४ ख ग नीछट। २५ ख वहौ। ग. वहौ। २६ ख. ग वधि वधि। २७ ख ग वारगा।

१६० सूर – सवाई राजा सूरसिंह। पांन – पानका बीडा। साहरा – बादशाहका। अखियात – अद्भुत। धर – भूमि, राज्य। मुदफर – मुजफ्फर। विसटाळारी – मध्यस्थताकी।
१६१ काळ – यमराज। चड्ढी – चढा। किटक – कटक, सेना। सूरसाह – सवाई राजा सूरसिंह। दहुव – दोनो। वळा – सेनाओ। नाळा – तोपो, तोपें। दगै – दगती है। झड – वर्षा। गजगाह – युद्ध।
१६२ रीठ – प्रहार। झळपट – आगकी लपट। ऊपड़ै – उठती है। अपहड – वीर, योद्धा। धरपुड़ – पृथ्वीकी तह। धडहडै – ध्वनिमान होती है। अरडाव – ध्वनि, आवाज। रौद्रव – भयंकर। रवि – सूर्य।
१६३ असि – घोडा। आफाळिया – चलाये। अरि – शत्रु। घड – सेना। घण – बहुत। धमक – आवाज, ध्वनि। साबळ – भाला विशेष। घाट – शरीर। नीछटि – निकल कर, प्रहार कर। नारगा – तलवारो। हद – बहुत। वरै – वरण करती है। वर – पति। बहु – बहुत। हूर – अप्सरा। बधि बधि – बढ-बढ कर। बारगा – अप्सराएं, स्वर्गकी वेश्याएं।

झळ रूप वौह[1] झट[2] झाट, दुगम डडेहडा[3] ।
जुध[4] पड़ै सूर अजागि[5], वह[6] धड वेहडा[7] ।
बौह[8] करै भड़ गळ वाह[9], रण मझि रोसहूं ।
पिंड[10] जड़ै सूर अपार, जमदढ जोसहू ।। १६४
'किसनेस' वधव[11] कणैठ, अरि खग ओझड़ै[12] ।
रघु[13] मोहरि[14] लका राडि, लखमण किर लड़ै ।
पित मोहरि[15] 'गजण' प्रचड, जग[16] चख जेहडौ ।
तपवंत लडै सतेज, 'अरिजण' एहड़ौ[17] ।। १६५
कमधज्ज लडै कराळ, उरड अथाहरा ।
सह[18] पड़ै भड़ सिरदार, मुदफरसाहरा ।

---

१ ख वहौ। ग. वौहो। २ ख ग पग। ३ ग डडेहडा। ४ ग. जुधि। ५ ख. ग अजागि। ६ ख वहौ। ग वहौ। ७ ख वेहडा। ग वेहडा। ८ ख वहौ। ग वहौ। ९ ख. ग. वाह। १० ग पिडि। ११ ख. वधव। १२ ख ओझडै। १३ ग रघू। १४ ख ग महोरि। १५ ख. ग महोरि। १६ ख झग। १७ ग ऐहड़ौ। १८ ख सोहो। ग सोहो।

---

१६४ झळ – आगकी लपट। बौह – वहुत। झट – शीघ्र, प्रहार। झाट – प्रहार। दुगम – दुर्गम, कठिन। डडेहडा – डडा रास। पड़ै – वीर गति प्राप्त होते हैं। सूर – शूर-वीर, वहादुर। अजागि – जवरदस्त, वज्राग्नि। वेहडा – एकके ऊपर एक इस क्रमसे। वौह – वहुत। भड़ – योद्धा। गळ – गर्दन, कठ। वाह – प्रहार। रण – युद्ध। मझि – मध्य, मे। रोसहू – जोशपूर्वक, क्रोधपूर्वक।

१६५ किसनेस – सवाई गजा सूरसिंहका छोटा भाई किशनसिंह राठौड जो किशनगढ राज्यका सस्थापक था। वधव – भाई। कणैठ – कनिष्ठ, छोटा। अरि – शत्रु। ओझड़ै – काटता है, मारता है। रघु – श्रीरामचन्द्र भगवान। मोहरि – अगाडी। राड़ि – युद्ध, युद्धमे। लखमण – लक्ष्मण। पित – पिता। गजण – महाराज कुमार गर्जसिंह। जग चख – जगत्-चक्षु, सूर्य। जेहड़ौ – जैसा। तपवत – ऐश्वर्यवान, तेजस्वी। सतेज – तेजपूर्वक। अरिजण – वीर अर्जुन। एहड़ौ – ऐसा।

१६६. कमधज्ज – राठौड। कराळ – भयंकर। उरड – साहस, पराक्रम। अथाहरा – अपारके। सह – सव। भड़ – योद्धा। मुदफरसाहरा – मुजफ्फरशाहके।

*हुय[1] हीण मुदफरसाह, जुध तजि भाजियौ[2] ।
जुध[3] 'सूर' त्रबक वजाइ[4], गह धरि गाजियौ[5]* ॥ १९६
सह[6] रखत तखत सहेत, लूटे छत्र लिया[7] ।
दिल्लेस निजर[8] दुझाल, महपति मेलिया[9] ।
वरियाम[10] अहमद बाद[11], अमल जमावियौ[12] ।
पिथ भूप जिम अणपार, इळ रस आवियौ[13] ॥ १९७
सुणि रीझि[14] अकबर[15] साह[16], दसकत लिख[17] दिया[18] ।
पटझरा असि सिरपाव, मुनसम[19] मेलिया[20] ।
. . .. ।
. ... ॥ १९८

कवित्त– सतर[21] सहस धर 'सूर', कीध वसि एक गमकळ[22] ।
भूप जबर[23] भोमिया[24], मार[25] दड[26] लीध महाबळ[27] ।

---

*ये दो पक्तिया ख. प्रतिमे नही है ।

१ ग होय । २ ग भाजीयौ । ३ ग जुधि । ४ ग वजाय । ५ ग. गाजीयौ । ६ ख. सौह । ग. सौहो । ७ ख ग. लीया । ८ ख ग निजरि । ९ ख ग मेल्हीया । १० ख ग वरीयाम । ११ ख. ग. वादि । १२ ख ग जमावीयौ । १३ ख. ग आवीयौ । १४ ख रीझ । १५ ख अकवर । १६ ख ग. साहि । १७ ख. लिषी । ग लिषि । १८ ख ग दीया । १९ ख ग मुनसप । २० ख. ग. मेल्हीया । २१ ग. सतरि । २२ ख ग गामकल । २३ ख जवर । २४ ख ग भोमीया । २५ ख. ग मारि । २६ ग डड । २७ ख माहावळ । ग. माहावळ ।

---

१९६. हुय – हो कर । तजि – छोड कर । भाजियौ – भग गया । सूर – सवाई राजा सूरसिंह । त्रवक – नगाडा । वजाइ – वजा कर । गह – गर्व । धरि – धारण कर के । गाजियौ – गर्जित हुआ, गर्जना की ।

१९७ सह – सव । रखत – धन-दौलत । सहेत – सहित । दिलेस – दिल्लीश, वादशाह । दुझाल – वीर । महपति – राजा । मेलिया – भेजे । वरियांम – श्रेष्ठ । अमल – अधिकार, शासन । जमावियौ – जमाया, दृढ किया । पिथ भूप – राजा पृथु । जिम – जैसे । अणपार – असीम, अपार । इळ – पृथ्वी । रस – आनन्द । आवियौ – आया ।

१९८ सुणि – सुन कर । रीझि – प्रसन्न हो कर । साह – वादशाह । पटझरा – हाथी । असि – घोडा । मुनसम – (?) । मेलिया – भेजे ।

१९९ धर – पृथ्वी, धरा । सूर – सवाई राजा सूरसिंह । कीध – की । वसि – अधिकारमे, वशमे । गमंकळ – ग्रामके समान, ग्राम तुल्य । भोमिया – छोटी भूमिका मालिक । लीध – लिया ।

आवादा[1] नर ईत[2], भिलै हंडुळाहट[3] भूलां।
जमी नोख[4] गुलजार, फवै सुव्रण मय फूलां।
ऊपजै दरव[5] वह[6] वह उडै, साह खजाना[7] सांमले[8]।
जोधाण नाथ जोधांणरै, कोडि दरब चाढ़ै किले ॥ १९९

सोरठा[9]

सग्रह धन करि 'सूर', कर[10] काठा पह[11] नह[12] किया[13]।
पाता व्रद जस पूर, उदक अठारह[14] अप्पिया[15] ॥ २००
असि सिरपाव अपार, करि जवहर मोती कड़ा।
व्रविया[16] पह[17] जिण वार, उच्छब[18] जस कजि 'ऊदउत'[19] ॥ २०१
*

कवित्त दोढी[20]

प्रथम लाख समपियौ[21], कवी[22] वारट[23] 'सकर' कर।
लखपति वारट[24] लाख, दीध दूजौ करि[25] डवर[26]।

---

१ ग. आवादा। २ ख. ग ईयत। ३ ख ग. हिंमुलाहट। ४ क. नौख। ५ ख दरव। ६ ख वहौ। ग. वहौ वहौ। ७ ख. खजाना। ग खजानां। ८ ख ग सामिले। ९ ख. दूहा। ग दूहा सोरठा। १० ग करि। ११ ख पौहों। ग पोहो। १२ ग न। १३ ख ग कीया। १४ ख अवारह। ग अठार। १५ ख ग आपीया। १६ ख ग व्रवीया। १७ ख पौहो। ग पहो। १८ ख. ग उछव। १९ ख. ग ऊदऊद।

*ख और ग. प्रतियोमे उक्त सोरठेके अतिरिक्त निम्नलिखित सोरठा अधिक मिला।

सूरज तेरह लाख नायक सूरजसिंघ नृप।
लहरि हेक लट लाख, एहगा दीधा ऊदउत ॥ ३

२० ख ग दोढी। २१ ख ग समपीयौ। २२ ग कवि। २३ ख वारट। ग वारहट। २४ ख ग वारट। २५ ग. कर। २६ ख डवर।

---

१९९ नोख – श्रेष्ठ, उत्तम। गुलजार – उद्यान, बाग, वाटिका। फवै – शोभा देती है, शोभा देते है। सुव्रण – सुवर्ण, सोना। मय – सहित। ऊपजै – उत्पन्न होते है। दरव – द्रव्य। वह – वहुत। उडै – खर्च होता है। साह – वादशाह। सांमले – शामिल। जोधांण – जोधपुर। कोड़ि – करोडो।

२०० संग्रह – एकत्रित। सूर – सवाई राजा सूरसिंह। काठा – रोका। पह – प्रभु राजा। नह – नही। पाता – पात्रो, कवियो। व्रद – विरुद। पूर – पूर्ण। उदक – जल-सकल्पसे दी जाने वाली दानकी भूमि या ग्राम। अप्पिया – अर्पण किये, दान दिये।

२०१. असि – घोडा। सिरपाव – शिरसे पैरो तकका पहनावा, शिरोपाव। करि – हाथी। जवहर – जवाहिरात। कड़ा – वलय। व्रविया – दान दिये। उच्छब – उत्सव। कजि – लिए। ऊदउत – उदयसिंहका पुत्र राजा सूरसिंह।

२०२ लाख – लक्ष रुपयेके मूल्यका पुरस्कार, लक्ष प्रसाद। समपियौ – समर्पण किया, दान दिया। सकर – शकर वारहठ जिसे बीकानेरके महाराजा रायसिंहने भी करोड पसावका पुरस्कार दिया था। लखपति – लखा वारहठके नामके लिए प्रयोग किया गया है। दीध – दिया। दूजौ – दूसरा। डंवर – उत्सव, हर्ष।

तीजौ लख तिण वार, 'अजा' भादा कर[1] अप्पै[2]।
भण[3] ताराचद भाट, मौज लख चवथ समप्पै[4]।
पात नाम भट 'गोप'[5], करे जस प्रकट सकाजा।
मौज लाख पाचमौ, जेण बगसे[6] महाराजा[7]।
पह[8] 'सूर' करे[9] रूपक परख, वरे[10] कुरब[11] बह[12] क्रीत वर[13]।
छत्रपती[14] लाख दीधौ[15] छठौ, कविया[16] भानीदान[17] कर[18] ॥ २०२

कवित्त छप्पै

करे[19] रीझ इम कमध, सूर उगतै[20] दळ सब्बळ[21]।
अमरचद[22] उण वार, दुद कीधौ दखिणी दळ।
साह तांम दिस 'सूर', मांडि[23] दीधौ फुरमाणौ[24]।
इम लिखियौ[25] नृप आप, दुद मेटौ दखिणाणौ[26]।

---

१ ख ग करि। २ ख अप्पे। ३ ख ग भणि। ४ ख समप्पे। ५ ग. गौप्प। ६ ख वगसे। ७ ख माहाराजा। ८ ख ग पौहो। ९ ग करै। १० ख ग व्रवे। ११ ख. कुरव। १२ ख ग वहो। १३ ख ग वरि। १४ ग छत्रपति। १५ ग दीधो। १६ ख. ग. कवीयां। १७ ख ग भांनीदास। १८ ख ग करि। १९ ख ग करै। २० ख ग भुगतै। २१ ख. सव्वल। २२ ख ग चपू। २३ ख माणि। २४ ख ग फुरमांण। २५ ख ग लिषीयौ। २६ ख ग दिषणाण।

---

२०२ तीजौ – तीसरा। लख – लाख पसाव, लक्ष प्रसाद। अप्पै – अर्पण किया, दान दिया। भण – कहते हैं। मौज – दान, पुरस्कार। चवथ – चतुर्थ, चौथा। समप्पै – समर्पण किया, दिया, दान दिया। सूर – सवाई राजा सूरसिंह। रूपक – काव्य। परख – परीक्षा कर के। वरे – स्वीकार कर के। कुरब – सम्मान, मान। क्रीत – कीर्ति, दिया। वर – प्राप्त कर। छत्रपती – राजा। दीधौ – दिया। छठौ – छठवां। कविया – चारण कुलका एक गोत्र विशेष। कर – हाथ।

२०३. रीझ – पुरस्कार। इम – इस प्रकार। सूर – सूर्य। उगतै – उदय होते ही। सब्बळ – सबल, शक्तिशाली। अमरचद – निजामुउलमुल्क सेनाका सेनापति अवर चपू। उण वार – उस समय। दुद – द्वन्द, उपद्रव, उत्पात। कीधौ – किया। दखिणी – दक्षिणी। दल – सेना। साह – बादशाह। ताम – उस। दिस – तरफ, ओर। सूर – सवाई राजा सूरसिंह। माडि – लिख कर। दीधौ – दिया। फुरमांणौ – राजकीय आज्ञा-पत्र, पत्र, फरमान। लिखियौ – लिखा। मेटौ – मिटा दो। दखिणांणौ – दक्षिणियोका।

सुण[1] 'सूर साह' दळ बळ[2] सझे[3], राजा पौरस रूपरा ।
रस[4] करे[5] धरा गुजरातरी[6], आयौ दक्खण[7] ऊपरा ।। २०३

सहस तेर' असवार, सीह साद्दूळ समोसर[8] ।
वीस गयद वेछाड[9], निहस[10] पावस गिर नीझर[11] ।
वडी नाळ[12] दस विखम, धोम[13] सतपच मुहर[14] धर[15] ।
तीन राडि[16] विच[17] जीत[18], आयौ रेवा नदि ऊतर[19] ।
आवियौ[20] 'सूर' साभळि[21] 'अमर', सझि दळ चाळी सैसहस ।
पच सहस[22] धोम[23] गज वीस पंच, आयौ सझि छिवतौ[24] उरस ।। २०४

दांनयार[25] दहलियौ[26], हुतौ सझि[27] हफत हजारी ।
तजि हरवळ तापहूं[28], भिळे[29] चंदवळ दळ भारी ।

---

१ ख ग सुणि । २ ख वल । ३ ग सजै । ४ ख. ग रसि । ५ ग करै । ६ ग गुजराति । ७ ख दष्पण । ग दिष्पण । ८ क समोसर । ९ ग वैछाड़ । १० ख ग निहग । ११ ग नीझरि । १२ ख ग नाळि । १३ ग धोम । १४ ख मोहोर । ग मोहोरि । १५ ख ग धरि । १६ ग राड । १७ ग वीचि । १८ ख ग जीति । १९ ख उतर । ग उत्तरि । २० ख ग आवीयो । २१ ग सांभळ । २२ ख सहस । ग सहैस । २३ ग धोम । २४ ख ग छिवतौ । २५ ग. दानियार । २६ ख ग दहलीयौ । २७ सुणि । ग सुजि । २८ ग तापहु । २९ क भिलै ।

---

२०३ सूर साह – सवाई राजा सूरसिंह । सझै – सज्जित कर के । पौरस – शक्ति, बल । रस – वशमे, अधीन । दक्खण – दक्षिण । ऊपरा – ऊपर ।

२०४ सहस तेर' – तेरह सहस्त्र, तेरह हजार । सीह साद्दूळ – शार्दूलसिंह । समोसर – समान, तुल्य । गयद – गजेन्द्र, हाथी । वेछाड – उद्दण्ड । निहस – नगाडेकी ध्वनि, ध्वनि । पावस – वर्षा । गिर नीझर – पर्वतका झरना, झरना । वडी नाळ – तोप । विखम – विषम, भयकर । धोम – तोप । मुहर – अगाडी । धर – रख कर । राड़ि – युद्ध । विच – मे । आवियौ – आया । सूर – सवाई राजा सूरसिंह । अमर – अम्बर चपू । पच – पाच । सझि – कटिबद्ध होकर । छिवतौ – स्पर्श करता हुआ । उरस – आसमान ।

२०५ दानयार – शाहजादा दानयार । दहलियौ – भयभीत हुआ, घबरा गया । हुतौ – था । हफत हजारी – सात हजारी । हरवळ – सेनाका अग्र भाग । तापहूं – भयसे, चदवळ – सेनाका पीछेका भाग, चदावल ।

'सूरसाह' तिण समै, अडर[1] सामुहा[2] चलाया[3]।
वजि त्रबाळ[4] चहु[5] वळा[6], दुरम[7] आरवा[8] दगाया।
इक[9] पड़ै[10] रीठ गोळा अतर[11], देखि रूठा कमधज राड़िया[12]।
भूखाळ वधै[13] जिम[14] देखि भख, आया वागा उपाड़िया[15]॥ २०५

अठी 'सूर' पह[16] अडर, उठी 'अमर'[17] असपत्ती[18]।
मिळे लोह[19] मेलिया[20], काळचाळा कुदरत्ती[21]।
घमक सिलह वंध[22] घटा, भळळ साबळ[23] भालाळां।
गजर कराळां गजर[24], काळ[25] झाळा किरमाळा[26]।

---

१ ख अरड। २ ख सामुहा। ग सामुहां। ३ ख चलाया। ४ ख त्रवाळ। ५ ख ग. दुहु। ६ ग वळां। ७ ख ग दुगम। ८ ख आरवा। ९ ख ग यक। १० ख ग पडे। ११ ग अतर। १२ ख ग राडीया। १३ ख ग वाध। १४ ख ग. जिम। १५ ख ग उपाडीयां। १६ ख ग पौहों। १७ ख ग अम्मर। १८ ख ग असपती। १९ ग लोहि। २० ख मेलीया। ग मेळीया। २१ ख कुदरती। २२ ख वंध। २३ ख. ग सावल। २४ ख ग गजा। २५ ग. काळा। २६ ख. करमाळां। ग करिमाला।

---

२०५ सूरसाह — सवाई राजा सूरसिंह। तिण — उस। समै — समय। अडर — निशक, निर्भय। सामुहा — सम्मुख, सामने। वजि — वज कर। त्रंबाळ — नक्कारा, नगाडा। चहू वळा — चारो ओर। दुरम — जवरदस्त, भयकर। आरवा — तोपे। दगाया — दागी गई, तोपें छोडी गईं। इक — एक तरफ, एक। रीठ — प्रहार। अतर — भयकर। रूठा — कुपित हुए। राड़िया — युद्धप्रिय, योद्धा, लडाई करने वाले। भूखाळ — भूखा, बुभुक्षित। जिम — जैसे। देख — देख कर। भख — भक्ष्य। आया वाग उपाडिया — घोडोकी वागें तेजीमे उठाते हुए आए।

२०६ अठी — इस तरफ, इस ओर। सूर — सवाई राजा सूरसिंह। अडर — निर्भय, निशक। उठी — उस ओर। अमर — अम्वर चपू। असपत्ती — यवन। मिळे लोह मेलिया — अस्त्र-शस्त्रोंसे युद्धार्थ भिड गये। काळचाळा — मौतसे छेडछाड करने वाले, योद्धा। कुदरत्ती — स्वभावसे ही, प्राकृतिक। घमक — ध्वनि। सिलह — अस्त्र-शस्त्र। घटा — शरीरो। भळळ — चमक, दमक। सावळ — भाला विशेष। भालाळा — भालाधारी योद्धा। गजर — प्रहार या प्रहारकी ध्वनि। काळ झाळां — मौतकी आग। किरमाळा — तलवारो।

जमदढा भचक त्रण पहर[1] जुडि, 'सूरसाह'[2] जीतौ समर ।
लूटे अराव गज दळ लिया*, आव[3] छडे[4] भागौ 'अमर' ।। २०६

सका[5] गजा सिरपोस, मसत गज फतै[6] ममारख ।
'सूरसाह' साहनू, पेस मेल्हे[7] करि पारख ।
साह फतै साभळ, जाम गज भिडज जवाहर ।
ताम तेग[8] नय[9] वत्रि[10], धूप समसेर[11] जमंधर ।
मोकळे[12] वधारा[13] मझि मुलक, दिल फुरमाण लिखे[14] दियौ[15] ।
औ[16] फतै[17] ममारख गज अनड, पेस राखि वळि आपियौ[18] ।। २०७

दूहा[19]—धर गुज्जर[20] दक्खिण[21] धरा, करि जुध फतै अनेक ।
'सूर' अमल दहुवै[22] दिसा, इळा[23] हुकम किय[24] एक[25] ।। २०८

---

१ ख पोहोर । ग पोहोर । २ ग सूरिसाह ।
*यह चरण ख और ग प्रतियोमे निम्न प्रकार है—
लूटे आरा वदल गज लीया । ३ ख ग आव । ४ ख ग छाडि । ५ ख ग सको । ६ ग फते । ७ ख ग मेले । ८ ख तोग । ग तोप । ९ ख नव । ग नच । १० ख वति । ग वत्रि । ११ ग समसेर । १२ ग. मोकले । १३ ख ग वधारा । १४ ग लीखे । १५ ख ग दीयौ । १६ ग ओ । १७ ख फते । १८ ख ग आपीयौ । १९ ग दोहा । २० ख गूजर । ग गुजर । २१ ख. दक्षिण । ग दषिण । २२ ख. दहूवै । २३ ख ग यळा । २४ ख ग कीय । २५ ग ऐक ।

---

२०६ जमदढ़ा—कटारो । भचक—प्रहार या प्रहारकी ध्वनि । त्रण—तीन । जुडि—भिड कर । सूरसाह—सवाई राजा सूरसिंह । जीतौ—जीता । समर—युद्ध । अराव—तोपादि । आव—काति, प्रतिष्ठा । भागौ—भाग गया । अमर—अम्बर चपू ।

२०७ सका—सब । सिरपोस—शिरत्राण, शिरका टोप । मसत—मस्त । गज—हाथी । फतै ममारख—हाथीका नाम । सूरसाह—सवाई राजा सूरसिंह । साहनू—बादशाहको । पेस—भेंट, नजर । मेल्हे—भेजे । पारख—परीक्षा । फतै—फतह, विजय । साभळे—सुन कर । जाम—वस्त्र, कपडा । भिडज—घोडा । जवाहर—जवाहिरात । ताम—उस । तेग—एक खास बनावटकी तलवार, तलवार । नय वत्रि—(?) । धूप—एक खास बनावटकी तलवार । समसेर—तलवार । जमधर—एक खास बनावटकी कटार । मोकळे—भेज कर । वधारा—वृद्धि । मझि—मे, मध्य । फुरमांण—आज्ञा पत्र । औ—यह । अनड़—यहाँ हाथीके लिए अर्थ है परन्तु गजके साथ सहधारी रूपसे प्रयोग है । पेस—भेट । वळि—फिर, और । आपियौ—दिया ।

२०८. गुज्जर—गुजरात । दक्खिण—दक्षिण । धरा—पृथ्वी । सूर—सवाई राजा सूरसिंह । अमल—अधिकार, शासन । दहुवै—दोनो । इळा—पृथ्वी ।

अकबर[1] असपति आथमै[2], धर दिली छत्रधार ।
पाट विराजे छत्रपती[3], जाहगीर[4] जिण वार ।। २०९
तेडे राजा 'सूर'[5] तदि, अए साह अजमेर ।
'सूर' मिळे[6] दे[7] कुरब[8] सजि, साह दीध समसेर ।। २१०
महिपति[9] कुवर मिळावियौ[10], पाटोधर[11] 'गजपत्ति'[12] ।
रीधौ मिळता ही रवद[13], पेख[14] जोम असपत्ति[15] ।। २११
परखण वळ[16] 'गजपत्ति'रौ, बकौ[17] धर[18] गढ[19] वीर ।
दुझल जुदौ[20] मनसुब[21] दियौ, जाळधर जहगीर[22] ।। २१२

सोरठा[23]

प्रथम बगसि[24] सिरपाव, जमदढ़ खग जवहरत जडित ।
हाथी गढ हैराव, साह दीध 'गजसाहनू' ।। २१३

---

१ ख अकवर । २ ख आथमें । ३ ख ग असपती । ४ ख. जाहागीर । ग जाहांगीर । ५ ख सुर । ६ ख मिले । ७ ख ग तदि । ८ ख कुवर । ९ ख ग. महपति । १० ख ग मिलावीयो । ११ ग पाटोधर । १२ ख ग गजपति । १३ ग. जरवद । १४ ख. ग पेषि । १५ ख ग असपति । १६ ख ग वळ । १७ ख ग. वकौ । १८ ख ग. गढ़ । १९ ख ग धर । २० ख ग. जुदै । २१ ख ग सुपदीयो । २२ ख ग जाहागीर । २३ ख. सोरठा दूहा । ग सोरठा दुहा । २४ ख. ग वगसि ।

---

२०९. असपति – बादशाह । आथमै – अवसान हो गया, अस्त हो गया । धर – राज्य । छत्रधार – छत्रको धरने वाला, बादशाह, राजादि । पाट – राज्यसिंहासन । विराजै – सुशोभित हुआ, सिंहासनासीन हुआ, तख्तनसीन हुआ । जिण वार – जिस समय । तेड़े – बुलाये ।

२१०. सूर – सवाई राजा सूरसिंह । तदि – तब । अए – आये । साह – बादशाह । कुरब – मान, प्रतिष्ठा । दीध – दी । समसेर – तलवार ।

२११ महिपति – राजा, नृप । कुंवर – कुमार । मिळावियौ – मिलाया । पाटोधर – राज्य-सिंहासनाधिकारी, पदाधिकारी, युवराज । गजपत्ति – महाराजकुमार गजसिंह । रीधौ – प्रसन्न हुआ । रवद – यवन, बादशाह । पेख – देख कर । जोम – जोश । असपत्ति – बादशाह ।

२१२ परखण – परीक्षा करनेको । गजपत्तिरौ – महाराजकुमार गजसिंहका । बकौ – बाकुरा । दुझल – योद्धा, वीर । मनसुब – पद, ओहदा, मनसब ।

२१३ बगसि – बख्श कर, पुरस्कार दे कर । सिरपाव – सिरोपाव । जमदढ – एक प्रकारका कटार विशेष । खग – तलवार । जवंहर – जवाहिरात, रत्न । जडित – जडा हुआ । हैराव – हयराज, घोडा । साह – बादशाह । दीध – दिये । गजसाहनूं – महाराज-कुमार गजसिंहको ।

कवित्त– समपि[1] यतौ[2] पतिसाह, एम[3] 'गजपतिहू'[4] अक्खे[5] ।
जाळधर करि जबति[6], खल[7] थाणा धर रक्खे[8] ।
मुहम सिरोही मुलक, सरद करि लेहु पेसकस ।
लेहु सलामी लडे[9], विखम मेवाड करे वस ।
सुणि हुकम एम[10] पतिसाहरौ, उरस छिबे[11] छक ऊमहै[12] ।
आपरा हुकम माफक अमल, करू एम[13] 'गजबध'[14] कहै[15] ॥ २१४

विदा होय तिण वार, मसत गज जेम मलप्पे ।
आफ्रीवादह वाह[16] उभै, राहां कथ अप्पे ।
जोम विखम[17] दी जतौ, भौम[18] मुख रग भळाहळ ।
करण होम केविया[19], झळळ रवि धोम[20] झळाहळ ।

---

१ ग. समप । २ ख ग. इतौ । ३ ग. ऐम । ४ ख. जगपति । ५ ख अख्वे । ग. अर्ख्वे । ६ ख जवत । ग जबत । ७ ख. ग खिल । ८ ख रष्वे । ग रषे । ९ ख. लडे । १० ग. ऐम । ११ ख. छवे । ग छवै । १२ ख ऊमहे । १३ ख ग येम । १४ ख गजवंध । १५ ख कहे । १६ क. वाह । १७ ख. दीष । ग वीष्व । १८ क. भोम । १९ ख ग केवीया । २० ग. धौम ।

---

२१४ समपि – दे कर, प्रदान कर । यतौ – इतना । पतिसाह – बादशाह । एम – इस प्रकार । गजपतिहू – महाराज कुमार गजसिंहसे । अक्खे – कहा । जाळधर – मारवाड राज्यान्तर्गत जालोर नगर । जबति – जब्त । खळ – शत्रु । थाणा – चौकियो । मुहम – मुहिम, लडाई, युद्ध, आक्रमण । सरद – मर्द, बेरौनक, शिथिल, पराजित । पेसकस – बडोको दी जाने वाली भेंट, नजराना, दण्ड । विखम – विषम, जबरदस्त । उरस – आसमान, आकाश । छक – जोश । ऊमहै – उमगित होता है । माफक – माफिक, अनुकूल । अमल – अधिकार, शासन । गजबध – महाराज कुमार गजसिंह ।

२१५ विदा – प्रस्थान, कूच । तिण वार – उस समय । मसत – मस्त । गज – हाथी । जेम – जैमे । मलप्पे – चला । आफ्रीवादह – धन्यवाद, वाह-वाह । वाह – धन्य-धन्य, शाबास । उभै – उभय, दोनो । राहां – सम्प्रदायो, धर्मो । अप्पे – दिया । जोम – जोश । भौम मुख – लाल मुख, जोशमे लाल मुख, मगलग्रहके समान मुख्य । भळाहळ – देदीप्यमान, चमकयुक्त । होम – नाश, ध्वंश । केवियां – शत्रुओ । झळळ – देदीप्यमान, चमकयुक्त । रवि – सूर्य, भानु । धोम – अग्नि, आग उष्णता । झळाहळ – चमकयुक्त, देदीप्यमान ।

गज चढे आय बारै[1] 'गजण', 'अजण' रूप दरसावियौ[2] ।
तोलतौ करां असमर[3] तुरस, उरस छिबतौ[4] आवियौ[5] ।। २१५
मसलत[6] डेरा मडे, भडा विकराळ भुजाळा ।
आपतणा परखिया[7], काळ[8] रूपी कळिचाळा ।
केक[9] जोध इम कहै, चढौ इण वार चलावा ।
केक[10] जोध इम कहै, आप पहला[11] गढ[12] आवा ।
के कहै खळा गढि चढि करा, करदा घाव कटारिया[13] ।
इम कहै 'गजणहूं' ऊमरा[14], विढवा 'सूर' विहारिया[15] ।। २१६
भडां वात सभळे[16], एण[17] विधहूत[18] अकारा ।
वहसि[19] 'गजण'[20] बोलियौ[21], वधे[22] पौरस[23] जिणवारां ।
बहसि जिसा बोलिया[24], भडा मोहूंत[25] भरोसौ ।
पण अणचिता परा*, सभ्रा नह समर सरोसौ ।

---

१ ख. वारे । २ ख. ग. दरसावीयौ । ३ ख ग असिमर । ४ ख. ग. छिबतौ । ५ ख ग आवीयौ । ६ ग मसलति । ७ ख. ग. परषीया । ८ ख काळि । ९ ख. ग केइक । १० ख. केइक । ग केयक । ११ ख ग पहिला । १२ ग गढि । १३ ख. ग कटारीया । १४ ख उवरा । ग ऊवरा । १५ ख ग विहारीया । १६ ख ग. सांभले । १७ ग ऐण । १८ ख विधि । १९ ख ग वहसि २० ख. गजण । २१ ख वोलीयौ । ग वोलीयौ । २२ ग वधै । २३ ख पोरस । २४ ख वोलीया । २५ ख मोहुतो । ग मोहुतौ । *ख प्रतिके अनुसार यह चरण—
पण अण चीता चीता परा ।

---

२१५. बारै – बाहिर । गजण – महाराजकुमार गर्जसिंह । अजण – अर्जुन । दरसावियौ – दिखाई दिया । तोलता – उठाने पर । करा – हाथो । असमर – तलवार । तुरस – ढाल । उरस – आसमान । छिबतौ – स्पर्श करता हुआ ।

२१६. मसलत – मस्लहत, परामर्श, सलाह । भडा – योद्धाओ । विकराळ – जबरदस्त । भुजाळां – वीरो, बहादुरो । आपतणा – अपने । परखिया – परीक्षा की । काळ रूपी – यमराजके समान । कळिचाळा – योद्धा । केक – कई । जोध – योद्धा, वीर । के – कई । करदां – तलवारो । गजणहूं – महाराजकुमार गर्जसिंहसे । ऊमरा – अमीर, सरदार । विढवा – युद्ध करनेको, भिडनेको, टक्कर लेनेको ।

२१७ सभळे – सुन कर । एण – इस । विधहूत – प्रकारसे । अकारां – तेजस्वी, जोशपूर्वक । वहसि – जोश कर, आवेगसे । बोलियौ – बोला । वधे – बढा कर । पौरस – बल, शक्ति । जिण वारा – जिस समय । भड़ां – सुभटो । मोहूंत – मुझसे । भरोसौ – विश्वास । पण – परन्तु । अणचिता – यकायक, चिंतारहित । सभ्रां – तैयार करें । समर – युद्ध । सरोसौ – रोषपूर्ण, क्रोधपूर्ण ।

पढि खत जाव[1] पठाण, भीच ऊससे भुजाळां।
वँछता[2] तिम हिज वणै[3], कहै इण विध[4] कळि चाळा[5]।
'जबदळ'[6] लिखे जबाव[7], 'गजण'[8] दिस[9] एम[10] धरे गहि[11]।
सो नहि[12] असल[13] सिपाह, माण तजि मिळै दियै[14] महि।
आवौ सताब[15] दळ सझि इहा, पेखौ हाथ सिपाहियां[16]।
गजसिंघ एम[17] जाळोर गढ, देता आया जिम[18] दिया![19] ॥ २२१

इम कागद आवियौ[20], पेखि वचे 'गजपत्ती'।
अग पौरस[21] ऊफणै[22], भाहि घ्रित जेम विभत्ती।
कूच[23] होय इम कहै[24], निहस तदि वजे नगारा।
पमग जीण[25] पाखरा, सझै सिलहा सिरदारा।

---

१ ख जाव। २ ख वछिता। ३ ख ग वणे। ४ ग विधि। ५ ख ग चाळा। ६ ख ग जवदल। ७ ख जवाव। ८ ख गंजण। ९ ख ग दिसि। १० ग ऐम। ११ ख ग गह। १२ ख ग नह। १३ ख ग असलि। १४ ग दीयै। १५ ख. सताव। १६ ख ग सिपाहीया। १७ ख एह। ग ऐह। १८ ख तिम। १९ ख. ग. दीया। २० ख ग आवीयौ। २१ ख ग पोरस। २२ ख ऊपणे। २३ ख कूंच। २४ ख. कहे। २५ ख जिम।

---

२२१ जाव – जवाव। भींच – योद्धा। ऊससे – जोशमें हुए। भुजाळा – शक्तिशाली। वछता – इच्छा करते हैं। तिम – वैसे ही। इण विध – इस प्रकार। कळिचाळा – योद्धाओ। गजण – महाराजकुमार गजसिंह। दिस – ओर, तरफ। सिपाह – योद्धा, वीर, सेना, दल, फौज। माण – गर्व। महि – भूमि। सताव – शीघ्र। सझि – सज्जित हो कर। इहा – यहां। पेखौ – देखिये। सिपाहिया – योद्धाओ, वीरो। जिम – जैसे।

२२२ आवियौ – आया। पेखि = प्रेक्ष्य – देख कर। वचे – पढ कर, पढे। गजपत्ती – महाराजकुमार गजसिंह। अग – शरीर। पौरस – शक्ति बल, जोश। ऊफणै – उबाल खाता है। भाहि – भट्टी। घ्रित – घृत, घी। जेम – जैसे। विभत्ती – (?)। निहस – ध्वनि, आवाज। तदि – तब। पमग – घोडा। जीण – घोडेकी पीठ पर कसी जाने वाली काठी। पाखरा – घोडोके कवचो। सिलहा – अस्त्र-शस्त्रों।

बह[1] मडे[2] गजा मेघाडवर[3], कठठे[4] आराबा[5] सकळ ।
तन ससत्र[6] कसे चढिया[7] तुरा, दुगम सूर विमरीर दळ ॥ २२२

करे[8] ऊच[9] पौसाक, पहिर[10] बहु[11] अतर परमळ[12] ।
कसि जमदढ खग कसे, जाप करि सकति जळाहळ ।
वडफर भुज वामग, सझे दक्खिण[13] भुज साबळ[14] ।
जाम[15] विक्ख[16] भरि जमी, वहसि असि चढे अतुळबल* ।
जमाति[17] जाति[18] वजि[19] त्रव[20] गजर, जोध जनेती उछब जिम ।
गढ लियण[21] एम[22] हल्ले 'गजण', तोरण वादण वींद तिम ॥ २२३

---

१ ख ग. वहो । २ क मडै । ३ ख मेघाडवर । ४ ख ग. कठटे । ५ ख आरावा । ६ ख ग सस्त्र । ७ ख. ग चढीया । ८ ग. करै । ९ ख ग ऊच । १० ख परिर । ग पहरि । ११ ख. ग वौहो । १२ ख. ग. परमळ । १३ ख ग दष्यिण । १४ ख ग सावल । १५ ख जोम । १६ ग वीष ।

*यह पक्ति ख प्रतिमे नही है ।

१७ ख. ग जम्माति । १८ ख ग जांत । १९ ख ग वजि । २० ख त्रव । ग त्रंब । २१ ख ग. लीयण । २२ ग ऐम ।

---

२२२. वह – बहुत । मडे – घोडे हाथी आदिकी पीठ पर चारजामा कसे गये । मेघाडबर – एक प्रकारका बडा छत्र । कठठे – बोझके कारण गाडी तोप आदि चलने पर ध्वनि निशेप हुई । आरावा – तोप, तोपो । तुरा – घोडो । दुगम – (दुर्गम) जबरदस्त । सूर – शूरवीर । विमरीर – जबरदस्त, महान, भयकर ।

२२३ ऊच – वढिया, श्रेष्ठ । पहिर – पहन कर । अतर – इत्र । परमळ – सुगन्ध, खुशबू । जमदढ – एक प्रकारका कटार । जाप – स्मरण, जप । सकति – शक्ति । जळाहळ – तेजस्वी, देदीप्यमान । वडफर – ढाल । वामग – वाया अग, वाम पार्श्व । सझे – धारण कर के । दक्खिण – दक्षिण, दाहिना । सावळ – एक प्रकारका भाला विशेष । जांम – पहिनावा । वहसि – जोशमे आ कर । असि – घोडा । अतुळवळ – शक्तिशाली । जमाति – जमात, समूह । त्रव – नगाडा । गजरि – आवाज, ध्वनि, निरतर होने वाला प्रहार । जोध – योद्धा, वीर । जनेती – वरातमे जाने वाला बराती । उछव – उत्सव, हर्ष । जिम – जैसे । लियण – लेनेको । हल्ले – चले, कूच किया । गजण – गजसिंह । तोरण वादण वींद जिम – जिस प्रकार तोरण बाधनेके लिए दूल्हा चलता है ।

तेवडा रीत[1] द्वापुरतणी, इळ राखा कीरत[2] अमर।
कहि समर वात पिसणा[3] करा, सराजामहूंता समर ॥ २१७

सुणि इम बोलै[4] सुभड, आप जिम कुण इम अक्खे[5]।
कूतहू तौ जिम कहै[6], 'सुर(ह)' तेरह कुळ सक्खे[7]।
वेगि लिखीजै विगति, रवद जिम सझै दुरगा।
एक[8] उतन ऊपना, जुडा[9] द्वापुर जिम जगां।
ऊजळौ[10] रिजक करि आपरौ, कुळ अजस मुरधर करां।
जुध करा महाभारथ जिसौ, आसमान आधोफरां[11] ॥ २१८

सझे[12] एम मल्लीत[13], प्रकट[14] इम लिखे पठाणां।
अम्हा उतन कर दियौ[15], सोनगिरि[16] वर सुरतांणां।
तिकण[17] लियण[18] वासतै, अम्हे दळ वळ[19] सझि आवां।
तजि धर मिळौ सताव[20], पांण[21] जोड़े[22] निज पावा।

---

१ ग रीति। २ ख ग कीरति। ३ ख ग प्रसणा। ४ ख वोले। ग वोले। ५ ख. ग अर्ष्यं। ६ ख ग कहे। ७ ख ग सर्ष्पे। ८ ग ऐक। ९ ख ग जुडा। १० ग उजळौ। ११ ख. आधौफरा। १२ ख सझे। १३ ख. मसलति। ग मसल्लति। १४ ख प्रगट। ग परगट। १५ ख ग दीयौ। १६ ख. ग सोनगिर। १७ ख तिलक। १८ ख ग लीयण। १९ ख वल। २० ख संतान। २१ ख पांणि। २२ ग जोड़ै।

---

२१७ तेवडा – विचार करें, दृढ निश्चय करे, धारण करें। द्वापुरतणी – द्वापर युगकी। इळ – पृथ्वी, ससार। पिसणा – शत्रुओ। सराजांमहूंता – सामानसे, सामग्रीसे, प्रवधसे। समर – युद्ध।

२१८ सुभड़ – सुभट, योद्धा। जिम – जैसे। कुण – कौन। अक्खै – कहे। कूतहूं – बुद्धिसे। तौ – तेरे। सूर(ह) – सवाई राजा सूरसिंह। तेरह कुळ सक्खे – राठौडोकी प्रसिद्ध तेरह शाखाये जिसकी साक्षी देती हैं। वेगि – शीघ्र। विगति – वृत्तान्त, विज्ञप्ति। रवद – यवन, मुसलमान। सझै – सज्जित कर देवे। दुरगा – दुर्ग, गढ। उतन – जन्मभूमि, वतन। ऊपनां – जन्मे हुये। जुडां – भिडें, युद्ध करे, टक्कर लेवे। जगां – युद्धो। ऊजळौ – उज्ज्वल। रिजक – रिज्क, जीविका, रोजी। अजस – गर्व। मुरधर – मारवाड। महाभारथ – महाभारत युद्ध। जिसौ – जैसा। आधोफरां – वीच, मध्य।

२१९ सझे – सज्जित हो कर। एम – इस प्रकार। मल्लीत – मलिक, मलीक, राजा, वादशाह, स्वामी। अम्हां – हमारा। सोनगिरि = स्वर्ण गिरि – जालोर नगर या जालोर नगरका पर्वत। तिकण – उस। लियण – लेनेको। वासतै – लिये। अम्हे – हम। सझि – सज्जित हो कर। तजि – छोड कर। सताब – शीघ्र। पाण जोड़े – करबद्ध हो कर।

नमिलतौ[1] 'मिलक जबदळ'[2] निडर, पकडौ बळ[3] खग पाणरौ ।
तौ करा वणै करता तिकौ, सराजाम घमसाणरौ[4] ॥ २१९

असुरां दिस[5] लिख[6] एम[7], करे[8] दळ सबळ[9] भयकर ।
पवग[10] पूर पाखरा, सूर सिलहा बळ[11] सम्मर[12] ।
हले टिला हाथिया[13], जूट[14] हम्मला[15] हजारा[16] ।
सझे[17] चाढि बळ[18] सबळ[19], इसी नाळिया[20] अपारां ।
करि अगनि[21] बाण[22] घण रहकळां, दामणि सीसा दारवा[23] ।
गढ कनक लियण[24] दारुण 'गजण', मडिया[25] चाळा मारवा[26] ॥ २२०

---

१ ख ग नमिलोत । २ ख जवदळ । ३ ख. ग वल । ४ ख घणसाण । ५ ख ग दिसि । ६ ख ग लिषि । ७ ग ऐम । ८ ग करै । ९ ख. सवल । १० ख पवग । ग पमंग । ११ ख. ग. वळ । १२ ख ग. सम्मर । १३ ख ग हाथीया । १४ ख जूट । १५ ख. ग हमलां । १६ ख ग हाजारां । १७ क सझै । १८ ख ग वळि । १९ ख. सवल । २० ख ग नाळीयां । २१ ख ग. अगन । २२ ख वांण । ग वाण । २३ ख ग दारुवां । २४ ख. लीयण । २५ ख ग मडीया । २६ ख ग. मारुवा ।

---

२१९. मिलक जवदळ – मलिक जव्दतुलमुल्क ।
नोट – विहारी पठानोमे जालोर राज्यके सस्थापक उस्मानखाको गुजरातके वादशाहकी तरफसे जव्दतुलमुल्कका खिताव मिला था । इस खितावको अद्यावधि उस्मानखाके वशज जो पहिले जालोरके शासक थे और वादमे पालनपुरके शासक रहे है, अपने नामके साथ लगाते है । —देखो तवारीखे पालनपुर ।
सराजांम – प्रवध, इन्तजाम, सामान, सामग्री । घमसाण – युद्ध ।

२२० असुरा – यवन, मुसलमानो । दिस – तरफ, ओर । एम – इस प्रकार, ऐसे । दळ – सेना, फौज । पवग – घोडा । पूर – पूर्ण । पाखरां – घोडोके कवचो । सूर – सूरवीर, सवाई राजा सूरसिह । सिलहा – अस्त्र-शस्त्रो । सम्मर – युद्ध । हले – चले, गमन किया । टिला – आघात । जूट – युग्म, दो । हम्मला – हमाल, वोझा ढोने वाला, वजन, भार । बळ – सेना । इसी – ऐसी । नाळिया – वदूको, तोपो । अपारा – अपार, असीम । अगनि बाण – तोप । घण – वहुत । रहकळा – सवारी विशेष, एक प्रकारका रथ या सकट । दामणि – तोप (?) । सीसा – एक मूल धातु जो वहुत भारी और नीलापन लिए काले रगकी होती है । दारवा – वारूद । गढ़-कनक – जालोरका किला । लियण – लेनेको । दारुण – भयकर, जवरदस्त । गजण – महाराजकुमार गजसिह । मडिया – रचे । चाळा – युद्ध, समर । मारवा – राठौडो ।

छंद मालती

असे[1] अणभंग सभै[2] दळ संग ।
थटे अणथाह, हले 'गजसाह' ।। २२४
नगा असि नाळ[3], वजे विकराळ ।
धरा रजि धोम, वणै[4] उडि वोम ।। २२५
प्रथी[5] अणपार, धुजे विखधार ।
धुवै[6] धर धोम, कसक्कत[7] कोम ।। २२६
अकास[8] उडाय, पखी म्रत[9] पाय ।
तई रज तेण, अमूभत एण[10] ।। २२७
नदी वह[11] नाळ, त्रुटै[12] जळ-ताळ ।
भिळै[13] रजभाण, मडे[14] तिमराण ।। २२८
चय तजि चक्क, हुवै वीर हक्क ।
कटक्क[15] कहाक, हुवै वहु[16] हाक ।। २२९

---

१ ख ग इसा । २ ख ग सभै । ३ ख ताल । ४ ख ग वणे । ५ ख. ग प्रिथी । ६ ख धुवे । ग. धुवे । ७ ख कसकत । ग कसकत्त । ८ ख. ग अकासि । ९ ख ग मृत । १० ग ऐण । ११ ख वहो । ग वौहो । १२ ख ग. तुटै । १३ ख भिले । १४ ख ग मडे । १५ ख ग कटक । १६ ख वहो । ग वहौं ।

---

२२४ अणभंग – वीर, वहादुर । दळ – सेना । संग – साथ । थटे – एकत्रित हुए । अणथाह – अपार, असीम । हले – कूच किये, चले । गजसाह – कुमार गजसिंह ।

२२५ नगा – पैरो । असि – घोडा । नाळ – घोडेके सुमके नीचे लगाया जाने वाला गोलाकार धातुखड । विकराळ – भयकर । रजि – धूलि । धोम – धुंआ । वोम – व्योम-आकाश ।

२२६ प्रथी – पृथ्वी । अणपार – अपार, असीम । धुजै – कम्पायमान होता है । विखधार – शेषनाग । धुवै धर धोम – प्रवल वेगसे पृथ्वी पर धुंआ छा जाता है । कसक्कत – कसमसाहट करता है । कोम – कच्छपावतार ।

२२७. पखी – पक्षी । म्रत – मृत्यु । पाय – प्राप्त कर । तई – उस । रज – धूलि । अमूभत – दम घुटता है । एण – इस, हरिण ।

२२८ ताळ – तालाव । भिळै – मिल जाता है । भाण – सूर्य । मडे तिमराण – अन्धेरा छा गया ।

२२९ चय तजि चक्क – दिग्गज दिशाओंमे डोलायमान हो गये । हुवै वीर हक्क – वीर-ध्वनि हो रही है । कटक्क – सेना, दल । कहाक – कोलाहल, चिल्लाहट । वहु – वहुत । हाक – आवाज ।

जसौल जबाब[1], सजत[2] सताब[3] ।
हिसार[4] हयद, गराज गयद ॥ २३०
लसै दळ[5] लेस, विखम[6] वनेस ।
गाजत गरूर, त्रबागळ[7] तूर ॥ २३१
धुजत[8] ध्रहाड, प्रचड पहाड[9] ।
ताळी खुलि तान, उठे[10] तपवान ॥ २३२
ओदक्क[11] उराळ[12], दसे द्रगपाळ ।
समोभ्रम 'सूर', 'गजौ' मगरूर ॥ २३३
इसा अणपार, लिया दळ लार ।
जाळधर जाय, चौके[13] गढ चाय ॥ २३४

कवित्त– सभि गढ दारण[14] सगह, वाट जोवता विहारी ।
ईखे गढ घेरियौ[15], जाळभळ फौज 'गजा'री ।

---

१ ख जवाव। २ ख ग. सझत। ३ ख सताव। ४ ख ग हिंसार। ५ ख ग दह। ६ ख ग विषम। ७ ख त्रवागल। ८ ख ग ध्रुजत। ९ ख पाहाड। १० ख ग. उठैं। ११ ख. ग. औद्दक। १२ ग उकाळ। १३ ख चोकै। ग चौकै। १४ ग दारुण। १५ ख. ग घेरीयौ।

---

२३० जसौल – जोशपूर्ण, वीर, बहादुर। सजत सताब – शीघ्र ही उत्तर देते है। हिसार – हिनहिनाहट। हयंद – घोडा। गराज – गर्जना। गयंद – हाथी, गज।

२३१. लसै – शोभित होता है। विखम – विपम। गरूर – गर्वपूर्ण, जोशपूर्ण। त्रवागळ – नगाडा। तूर – वाद्य विशेप।

२३२ धुजत – कम्पायमान होते हैं। ध्रहाड – दहाड। ताळी – ध्यान, समाधि। तपवान – तपस्वी।

२३३ ओदक्क – चौकते हैं, भयभीत होते है। उराळ – वाष्प, भाप। समोभ्रम – पुत्र, लडका। सूर – सवाई सूरसिंह। गजौ – महाराजकुमार गजसिंह। मगरूर – गर्वीला।

२३४. अणपार – अपार, असीम। दळ – फौज। लार – पीछे। जाळधर – जालोर नगर। चौके – (?)।

२३५ सगह – गर्वपूर्वक। वाट – प्रतीक्षा, इन्तजार। ईखे – देख कर। घेरियौ – आवेष्टित किया। जाळभळ – जाज्वल्यमान। गजारी – गजसिंहकी।

ता[1] दग्गे[2] वह[3] तोप, वहै गोळा दहुवें[4] वळ[5] ।
मडे जमी असमान, झाळ इम रूप झळाहळ ।
सुणि गाज निवाणा जळ सुकें, धुकें मीस धारकधरा[6] ।
कळिचाळ एम[7] दमगळ करै, सबळ[8] थाट 'गजसाह'रा ॥ २३५

धुवै[9] राग सिधुवा[10], गजै नाळिया[11] त्रवागळ[12] ।
मेळा भड गहमहै, वहै गोळा[13] वीझाझळ[14] ।
ठहै[15] दवानळ ठठर, झोकि पिड सामी[16] झाळां ।
खौभ[17] गिरद खोहरा, लिया[18] मोरचा लकाळां ।
वहि वाण[19] वजर हूका[20] वहै, मतवाळा[21] औघा[22] मजा ।
ज्वाळमे[23] हुवै[24] भभरूत[25] जग, धूत पठाणा कमधजा ॥ २३६

---

१ ख ग. ताम । २ ख. ग दगे । ३ ख वहीं । ग वहो । ४ ख दहुवैं । ग. दहुंवैं । ५ ग. वळ । ६ ख घीरकघरा । ७ ग ऐम । ८ ख ग सबल । ९ ख ग. धुर्वं । १० ख ग सींधुवा । ११ ख ग नाळीयां । १२ ख त्रंवागळ । १३ ख गोला । १४ ख ग वीझाजळ । १५ ख ग ठहे । १६ ख ग साम्ही । १७ ख ग पाभ । १८ ख ग लीया । १९ ख ग वाण । २० ख ग. हूका । २१ ख ग मतिवाळा । २२ ख मोघा । ग वोघा । २३ ख ग. ज्वाळमैं । २४ ख ग हूवैं । २५ ग भभुरूत ।

---

२३५ ता – वहाँ । वह – वहुत । दहुवै वळ – दोनो ओर । झाळ – आगकी लपट । झळाहळ – जाज्वल्यमान । निवाणा – जलाशय । धुकै – जलता है । धारकधरा – शेषनाग । कळिचाळ – योद्धा, वीर । दमगळ – युद्ध । थाट – दल, सेना । गजसाहरा – महाराजकुमार गजसिंहके ।

२३६ धुवै – जोशपूर्ण हो रहा है । गजै – गर्जना करती है, करते हैं । नाळियां – तोपो, वदूको । त्रंवागळ – नगाडा । मेळा – एकत्रित, मिले हुए । भड – योद्धा । गहमहै – एकत्रित हो रहे हैं । वींझाझळ – विन्ध्याचल (?) । ठहै – होते हैं । दवानळ – दावाग्नि । ठठर – कठोर । झोकि – झोक कर । सामी – सामने । झाळा – आगकी लपटें । खौभ – गुफा (?) । गिरद – पर्वत । खोह – कदरा । लकाळां – वीर, योद्धा । मतवाळा – उन्मत्त, मस्त । औघा – (?) । ज्वाळमें हुवै भभरूत जग – युद्धमे क्रोधाग्निमे पूर्ण होते है । धूत – उन्मत्त, मस्त । पठाणां – पठानो । कमधजा – राठौडो ।

सूरवीर 'गजसाह', वडा तरवार[1] बहादर[2]।
हुवतां जुध हाकलै[3], निसा पडता नर[4] नाहर।
पिड अगा[5] सिर टोप, वणैं[6] झिलमा पर वेणी।
कसि जमदढ खग कसे, सझे हाथळा नूसेणी[7]।
इम चढे सोनगह[8] ऊपरा, सामत[9] 'गजण' सधीररा।
तोडिवा जाणि चढिया[10] त्रिकुट, विकट[11] घाट रघुवीररा ॥ २३७

नीम[12] कोट भड निडर, जाइ लागिया[13] जियारा।
दाते[14] खग जमदाढ, विखम धारे जिण वारा।
परठि नूसेणी[15] पाव, उरस[16] छिब[17] क्रोध[18] उझल्लै[19]।
वह[20] वरसता बदूक[21], झाळ मौहरी कर झल्लै।
चढि किलै एम[22] झफै[23] अचळ, विच[24] दळ 'सूर' विहारिया[25]।
तिण वार मिळै[26] हिंदू[27] तुरक, उडै रीठ तरवारिया[28] ॥ २३८

---

१ ख ग तरवारि। २ ख. वाहदर। ग वहादर। ३ ख ग हाकले। ४ ख. ग भड। ५ ख आगां। ग. आगा। ६ ख ग वणे। ७ ख ग निस्रेणी। ८ ख ग सोनगिर। ९ ख ग सामत। १० ख ग चढीया। ११ ख विघट। १२ ख नाम। १३ ग. लागीया। १४ ख दते। ग देसे। १५ ख ग निस्रेणी। १६ ख ग उरसि। १७ ख ग छिवि। १८/१९ ये दोनो शब्द ख प्रतिमे नही हैं। २० ख वहो। ग वहो। २१ ख वदूक। २२ ग ऐम। २३ ख ग झफे। २४ ख ग. विचि। २५ ख ग विहारीया। २६ ख मिले। २७ ख ग हींदू। २८ ख ग तरवारीया।

---

२३७ गजसाह – महाराजकुमार गजसिंहजी। हाकलै – जोश दिलाता है, उत्तेजित करता है। निसा – रात्रि। नर नाहर – नर शार्दूल। पिड – शरीर। अगा – कवच। टोप – शिरस्त्राण। झिलमा – युद्धके समय शिर पर धारण करनेका टोप विशेष। वेणी – (?)। हाथळा – हाथो। नूसेणी – निश्रेणी, सीढी, नसैनी। सोनगह – जालोरका गढ। सामत – योद्धा, वीर। गजण – महाराजकुमार गजसिंह। सधीररा – वीरके। तोडिवा – तोडनेको। जाणि – मानो। त्रिकुट – लका। घाट – सेना, दल।

२३८. नीम – नीव। भड – भट, योद्धा। जियारा – जिस समयमे। जिण वारां – जिस समय। परठि – धर कर, रख कर। नूसेणी – निश्रेणी। पाव – पैर, चरण। उरस – आकाश। छिब – स्पर्श कर के। उझल्लै – उमडते है। झाळ – आगकी लपट। मौहरी – वदूककी नालका अग्र भाग। झल्लै – पकडता या पकडती है। झफै – कूदते हैं। अचळ – पर्वत। विच – बीच, मध्य। सूर – वीर, सवाई राजा सूरसिंह। तिण वार – उस समय। रीठ – प्रहार। तरवारिया – तलवारो, योद्धाओ।

वाजि झाट वीजळां[1], घाट[2] तूटै[3] घण घावा।
करि[4] निराट घण कटै, पाव[5] तूटै गज[6] पावा।
आटपाट रत[7] उभळ, 'सूर' कुळ वाट सकाजा।
गूद थाट पडि गरट, जाणि खुलि हाट वजाजा[8]।
औझाट झाट उतवग[9] उडै, खजर दाढ[10] पजर खळां।
रगमाट घाट वैराण[11] रण, हुवै नराट[12] झळाहळां॥ २३९

विढ़े[13] विहारी वढै, आदि जव[14] लगि[15] अणरेहा।
पडै[16] तूटि[17] गढ परा, जवन मोती लड जेहा।
के घायल कमधरा, असह घायल्ल अणपारा।
गढ[18] इम जुध[19] करि 'गजण', जयति कीधी जिणवारा।
लडि वारह[20] वरस अलावदी, लखां दळां छळहू लियौ[21]।
त्रण मास[22] मांय[23] 'गजवध'[24] तिकौ[25], जाळधर गढ जीपियौ[26]॥ २४०

---

१ ख विजलां। २ ग. थाट। ३ ग लूटै। ४ ख ग कर। ५ ख ग पाट। ६ ख गजा। ७ ख रज। ८ ख ग वजाजां। ९ ख ग. उतवग। १० ग. दाट। ११ ख. ग वैराट। १२ ख ग निराट। १३ ग विढै। १४ ख ग जव। १५ ख ग दळ। १६ ख परे। ग पड़े। १७ ख. तूट। १८ ख. गढि। ग गढ़ि। १९ ग जुधि। २० ख. वारह। २१ ख ग लीयौ। २२ ख ग त्रिण मास। २३ ख. ग माहि। २४ ख. गजवध। २५ ख ग तिको। २६ ख ग जीतीयौ।

---

२३९ झाट — प्रहार। वीजळां — तलवारो। घाट — शरीर। आटपाट — पानीकी नदीके दोनों तटोंके ऊपर वहनेकी क्रिया। रत — रक्त, खून। उभळ — उमड कर। गूद — मास, मासपिंड। थाट — सेना, दल। गरट — ढेर, समूह। जाणि — मानो। हाट — दुकान। वजाजा — वस्त्र वेचने वाले, व्यापारियो। औझाट — उलटा प्रहार। झाट — प्रहार। उतवग = उत्तमाङ्ग — शिर। खजर — एक प्रकारका शस्त्र विशेष। दाढ़ — कटार। पजर — शरीर। खळां — शत्रुओ। रगमाट — रगरेजके घरका रग घोलनेका वडा पात्र। घाट — शरीर। वैराण — भयकर। रण — युद्ध। नराट — वहुत, अधिक।

२४०. विढ़े — युद्धमें वीर गति प्राप्त हुए। अणरेहा — निष्कलक, वीर, योद्धा। लड़ — पक्ति, धागा। जेहा — जैसे। असह — शत्रु। अणपारा — अपार, असीम। गजण — गजसिंह। जयति — विजय। कीधी — की। जिण वारां — जिस समय। छळहूं — कपटसे। त्रण — तीन। गजवध — कुमार गजसिंह। तिकौ — वह। जाळंधर — जालोर। जीपियौ — जीता, विजयी हुआ।

वीहारी[1] दळ विहडि, जीपि लीधौ जाळधर।
वीर त्रबाळ[2] वजाइ[3], सभै[4] फौजा घैसाहर[5]।
सीरोही धर सहर, धोम[6] अरबद्द[7] धुजाया[8]।
दळे माण देवड़ां, लूटि[9] डंडि[10] पाय लगाया[11]।
धोकळे[12] राण मेवाड धर, 'करण' साह चाकर कियौ[13]।
'गजसिघ' सिघ सूरा[14] गरू, इम तारागढ आवियौ[15] ॥ २४१

औघसता भुज उरस, क्रहस दळ[16] खिमस[17] सकाजा।
ऊससतौ आवियौ[18], दिली नायक्र दरवांजा[19]।
असपति[20] अजसियौ[21], पेख[22] अजसियौ पितापह[23]।
अवर खान उमराव[24], सतरि इकहतर[25] दबे[26] सह[27]।
'गजसाह' देखि जंहगीर[28] गह, करि हित कमळ प्रकासियौ[29]।
पूजियौ[30] साह मुनसप पटां, 'सूरसाह' साबासियौ[31] ॥ २४२

---

१ ख. ग विहारीयादळ। २ ख त्रंवाळ। ३ ख ग वजाय। ४ ख. सभे। ५ क घँसाहर। ६ ख घूम। ग घूमि। ७ ख अरवद। ग अरबद। ८ ख ग धूजाया। ९ ख लूटि। १० ख ग डड्ड। ११ ख गाया। १२ ख ग. धौंषले। १३ ख ग कीयौ। १४ ख सुर। ग सूरं। १५ ख ग आवीयौ। १६ ख ग क्रहदल। १७ ख घमस। ग श्रमस। १८ ख ग. आवीयौ। १९ ख दरवारा। ग. दरबारा। २० ख असपती। ग. असपत्ती। २१ ग अजसीयौ। २२ ख ग पेषि। २३ ख ग. पितापौहौ। २४ ख ग उवराव। २५ ख ग इकहतरि। २६ ख ग वेसौ २७ ख ग सौहौ। २८ ख ग जहागीर। २९ ख ग प्रकासीयौ। ३० ख ग. पूजीयौ। ३१ ख ग साबासीयौ

---

२४१ विहडि – संहार कर, ध्वंश कर। जीपि – जीत लिया, जीत कर। त्रबाळ – नगाड़ा। वजाइ – बजवा कर। घैसाहर – समूह, दल। अरबद्द – आबू पर्वत। धुजाया – कंपायमान किया। दळे – नाश कर, ध्वंश कर। माण – गर्व, मान। धोकळे – युद्धमे, युद्ध कर के। करण – महाराजकुमार कर्णसिंह।

२४२ औघसता – घर्षण करता हुआ। उरस – आसमान। ऊससतौ – जोशपूर्ण। अजसियौ – गर्व किया। सह – सब। गजसाह – महाराजकुमार गजसिंहजी। गह – गर्व, अभिमान। कमळ – मुख, मुह। प्रकासियौ – प्रकाशित किया, प्रफुल्लित किया। पूजियौ – मान बढाया, प्रतिष्ठा व इज्जत की। मुनसप – मनसब। पटा – जागीर। सूरसाह – राजा सूरसिंह। साबासियौ – धन्यवाद दिया।

अकळ[1] भूल आवळा[2], झिलै 'गजवंध'[3] झळाहळ[4] ।
पित अजसै भूपाळ, 'सूर' झळहळ दळ सव्बळ[5] ।
'सूर' कणैठी सूर, 'किसन' कमधज कळिचाळौ ।
'सूर' मुसाहिब सूर, भाटी 'गोयद' भुजाळौ ।
साहि[6] विण[7] साहिजादां सहित, कमध गिणै[8] तिल मात करि ।
इम जोम[9] देखि*[10] प्रफुलां[11] असुर, धिखे 'खुरम' चित ध्रोह धरि ।। २४३

कथ 'गोइद[12] किसनरै', पेखि[13] चित खांत[14] पहल्ली ।
साहिजादै 'किसन' सू, मडे हित पेच मुगल्ली[15] ।
ताम[16] 'खुरम' मसलती[17], एह[18] 'किसन'हू उचारी ।
दुमह मारि 'गोयद', हो(इ) तुमह फतै हजारी ।
कथ सुणे वछित मन कहै 'किसन', तेग 'खुरम' वळ[19] तासनू ।
पाधरै खेत जाहनपना[20], साझू 'गोयद' दासनू ।। २४४

---

१ ख अकल । २ ख ग आउळा । ३ ख गजवंध । ४ ग जळाहळ । ५ ख सव्वल । ६ ख सा । ग साह । ७ ख ग विणि । ८ ग गणै । ९ ग देषि । १० ख देष । ग जोम । ११ ख ग प्रजळे ।

*ग. प्रतिकी इस पक्तिमे 'देषि' पहले लिखा हुआ है और इसके पीछे जोम है ।

१२ ख ग गोयंद । १३ ग पिषि । १४ ख ग पाति । १५ ख ग मुग्गली । १६ ख ग. ताम । १७ ख. ग मसल्लति । १८ ग ऐह । १९ ख वळ । २० ख. जाहानपनाह । ग जाहांपनाह ।

---

२४३ अकळ – वीर, योद्धा । भूल – समूह । आवळा – बाकुरा, वीर । झिलै – तपता है, ऐश्वर्य प्रकट करता है । गजवध – महाराजकुमार गजसिहजी । झळाहळ – पूर्ण तेजस्वी । पित – पिता । अजसै – गर्व करता है । सूर – सवाई राजा सूरसिंह । झळहळ – देदीप्यमान । कणैठी – कनिष्ठ, छोटा भाई । किसन – किशनसिंह राठौड जो महाराजा सूरसिंहका छोटा भाई तथा किशनगढ रियासतका संस्थापक था । कळिचाळौ – योद्धा, वीर । भुजाळौ – शक्तिशाली, समर्थ । साहि – बादशाह । जोम – जोश, बल । असुर – मुसलमान । धिखे – क्रोध करता है, क्रोधमे प्रज्वलित होता है । ध्रोह – द्वेष, दाह ।

२४४ किसनरै – किशनसिंह राठौडके । खात – लगन । पहल्ली – प्रथम, पहिली । पेच – जाल, छल, कपट । दुमह – शत्रु, दुष्ट । गोयद – सवाई राजा सूरसिंहका आमात्य, भाटी गोविन्ददास । वछित – अभीष्ट । पाधरै खेत – खुले मैदान । जाहनपना – जहापनाह, ससारको अपनी शरणमे लेने वाला, राजाओ और बादशाहोके लिए सबोधन शब्द । साझू – मार डालूगा, मारू गा ।

पावक सिव चख प्रवळ[1], सेस फूका धिखि सब्बळ[2] ।
मझि धरियौ[3] घ्रत[4] समंद[5], नीर काढे बडवानळ[6] ।
नारसिघ[7] नीछटै, अरण नहराद इतां उद्र ।
काळ झाळ[8] कळकळै[9], रोस विकराळ जडा रुद्र ।
अवसाण[10] बीज कोटिक उछब, तपत[11] बाण[12] रघुवरतणै ।
रण जिसौ 'किसन' पथ खेड रथ, इसौ 'किसन' अध्रियामणौ[13] ॥ २४५

अथ झूलणा

इम मिसलति[14] करि आविया[15], 'केहरि'[16] कळिचाळा ।
करमसेन[17] मिळिया[18] 'करण', लोह मेलण लाला ।
पूळा बळती[19] मझि पडै, झळहळ घ्रत[20] झाळा ।
इम विकराळा ऊफणै[21], पडि[22] क्रोध[23] प्रजाळा ॥ २४६
तेडे 'केहरि'[24] वार तिण, भड थाट भुजाळा ।
आया दरगह ऊबरा[25], बहसे[26] बिरदाळा[27] ।

---

१ ख ग प्रवल । २ ख सब्वल । ३ ख ग धरीयौ । ४ ख ग. घृत । ५ ख ग समद । ६ ख ग वडवानळ । ७ ग नारसीघ । ८ ग काळ । ९ ख. कलकले । १० ख असवांण । ग. असमाण । ११ ग तप । १२ ख वाण । १३ ख अध्रीयामणौ । ग अध्वीयमणौ । १४ ख. मसलत । १५ ख ग आवीया । १६ ग केहर । १७ ख. ग. करमसेण । १८ ख ग मिलीया । १९ ख वळती । २० ख ग घृत । २१ ख. ऊपणे । ग. उफणे । २२ ख ग पिड । २३ ख कोध । २४ ख ग केहर । २५ ख ऊमरा । ग ऊंबरा । २६ ख वहसे । २७ ख विरदाळा ।

---

२४५. पावक – अग्नि, आग । चख – चक्षु, नेत्र । सेख – शेषनाग । फूंका – फुत्कार । धिखि – क्रोधमे प्रज्वलित हो कर । धरियौ – धरा । नारसिंघ – नृसिंहावतार । अरण – लाल । नहराद – नाखून । उद्र – उदर । काळ – यमराज । झाळ – आग । कळकळै – तप्त होता है, प्रज्वलित होता है । जडा रुद्र – महादेवकी जटा । अवसांण – अवसर, मौका । किसन – श्रीकृष्ण । पथ – पार्थ, अर्जुन । अध्रियामणौ – जबरदस्त, उग्र, भयावह ।

२४६ मिसलति = मस्लहत – परामर्श, सलाह । केहरि – केसरी । पूळा – पुआल । वळती – प्रज्वलित । झळहळ – आग । प्रजाळा– प्रज्वलित ।

२४७. वहसे – जोशपूर्ण हो कर । विरदाळा – विरुदधारी, यशस्वी ।

देखि भडा[1] बोले[2] दुगम, कर[3] ग्रहि किरमाळा[4] ।
मै[5] मरणा आसगिया[6], करणा धकचाळा ॥ २४७

स्त्रुग[7] वसिवा[8] आवौ सुतौ, अम[9] सत्थि[10] उताळा ।
जीवण सुख चावौ[11] जिके, टळ दे वहु[12] टाळा ।
एम[13] सुणे भड लगि[14] उरसि, कथ कहै[15] कराळा ।
इण दिन[16] कजि पावा अम्हे, बौह[17] पटा वडाळा ॥ २४८

किम खावौ टाळा 'किसन', ते वडि[18] रिणताळा ।
हुवै हुकम[19] तौ साहरा, रहचां रवदाळा ।
कहौ तौ[20] आणा किलमरा, मदझर[21] मतवाळा[22] ।
साहिजादा कै[23] अमीरसू, चित ह्वै चकचाळा ॥ २४९

तौ 'केहर'[24] कहिजे[25] सताब[26], वाइक विगताळा ।
कूदि पडा गज कटहडा, चढि गौख विचाळा ।

---

१ ग भजा । २ ख वोले । ३ ख करि । ४ ख ग करिमाळा । ५ ख ग मैं । ६ ख. ग आसगीया । ७ ख ग श्रुगि । ८ ख ग वसिवा । ९ ख ग अम्ह । १० ख ग. साथि । ११ ख. ग चाहौ । १२ ख वहु । १३ ग ऐम । १४ ख गि । १५ ख कहे । १६ ख कजि । १७ ख वहौ । ग वहौ । १८ ख ग. वड । १९ ख. हुम । २० ख ग त । २१ ख महझर । २२ ख ग मतिवाळा । २३ ख ग क । २४ ख ग केहरि । २५ ख ग कहिजै । २६ ख तताव ।

---

२४७ दुगम – दुर्गम, असह्य । कर – हाथ । ग्रहि – पकड कर । किरमाळा – तलवार । मरणा – मृत्यु । आसगिया – स्वीकार किया, अगीकार किया । धकचाळा – युद्ध ।

२४८ स्त्रुग – स्वर्ग । अम – हमारे, हमारा । सत्थि – साथ । उताळा – त्वरायुक्त । चावौ – चाहते हो । टाळा – टलना, प्रथक होनेकी क्रिया या भाव । कराळा – भयंकर । अम्हे – हम । बौह – वहुत । पटा – पट्टा, जागीर । वडाळा – वडा ।

२४९ रिणताळा – युद्ध । रहचा – ध्वस कर देवें, मार डालें । रवदाळा – यवन । किलमरा – यवनके, मुसलमानके । मदझर – हार्थी । चकचाळा – छेडछाड ।

२५०. सताव – शीघ्र । वाइक – वाक्य, वचन । विगताळा – वृत्तान्तपूर्वक । कटहडा – हाथीकी पीठ पर कसा जाने वाला चारजामा, अम्मारी । गौख – (?) । विचाळा – बीच, मे, मध्य ।

जडां धडा[1] जवना[2] जजर[3], पजर प्रतिमाळा ।
हुवै अमा[4] खावद हुकम, दीसै दावाळा ।। २५०
तो[5] जुध जमहू तेवडा, चौडै[6] बधि[7] चाळा[8] ।

भाटी गोविंददासरै साथ किसनसिंघरौ जुध-वरणण

इम सुणि वाइक[9] ऊमरा[10], बोले[11] बंबराळा[12] ।
मोनू 'गोयद' मारणौ[13], चित नहि[14] अनि चाळा ।
सुरतांणा[15] दळ[16] मझि सझौ, चौरग चिरताळा[17] ।। २५१
सुणे 'गजण' कथ 'सूरसाह', तायक तिण ताळा* ।
कळहण ऊससियौ[18] कुवर, पित धीर प्रमाळा ।
सूर' कहै गजसिघनू[19], रखि[20] धीर रढाळा[21] ।
कळह करौ तदि 'केहरी', आय मडै[22] आळा ।। २५२

---

१ ख घरा । २ ग जव्रवा । ३ ख. ग जजर । ४ ख ग अम्हा । ५ ख ग तो । ६ ख चोडै । ७ ख वधि । ८ ख चाळा । ९ ख ग वायक । १० ख ऊवरां । ग ऊवरा । ११ ख वोले । ग वोलै । १२ ख ववराला । ग ववराळा । १३ ख मारणै । १४ ख. ग नह । १५ ख. सूर तणी । ग सूर तणा । १६ ग. दलि । १७ ख चिरताळां ।

*इस पक्तिके पहले ख प्रतिमे निम्न पक्ति है—

सुणि भड उठे करण सज आरभ जुध वाळा ।

१८ ख ग ऊससीयौ । १९ ख ग ह । २० ख ग. रख्य । २१ ख रंढालां । २२ ग मडे ।

---

२५० जडा – प्रहार करे, बांध डाले, बधनमे डाले । धडा – शरीर । जजर – शस्त्र विशेष, जजीर अथवा जर्जर । पजर – शरीर । प्रतिमाळा – कटार । अमा – हमको । दावाळा – प्रतिपक्षी, शत्रु ।

२५१ जमहू – यमराजसे । तेवडा – निश्चय कर लेवे । ऊमरा – अमीर, सरदार । बबराळा – जबरदस्त । अनि – अन्य । चाळा – लक्ष्य, कार्य जिसमे मन लगे । चौरग – युद्ध । चिरताळा – चरित्रवान, अद्भुत ।

२५२ तायक – क्रोधित, तेज त्वरायुक्त । तिण ताळा – उस समय । कळहळ – युद्ध । सूर – मत्राई राजा सूरसिंह । रढ़ाळा – वीर, अपनी बात पर अटल रहने वाला । मडै – रचा जाय । आळा – युद्ध, लडाई, छेडछाड ।

राखौ[१] करे[२] तयारियां[३], जगा[४] जमजाळा ।
सुणि भाटी भड[५] ऊससै[६], जेसाण उजाळा ।
डेरा दळ बाहिर[७] दिया[८], बहसे[९] वांहाळा[१०] ।
चाहौ सुजि आवौ चढ़े[११], इम कहै[१२] उताळा ।। २५३

चाढा दहुं दळ चाढवै[१३], भळहळ भूलाळा ।
खुरसांणां दहु[१४] दळ खिवै, वीजळ वाढाळा ।
*साभदा हुय[१५] आतसां[१६], दुहु[१७] दळ[१८] दुरदाळा ।
दहू[१९] दळां हुय[२०] साभदा[२१], पमग[२२] पखराळा ।। २५४

दुहू दळां साबळ[२३] दुगम[२४], ओपै अणियाळा[२५]* ।
जेबि[२६] कबांण[२७] कीजियै[२८], दुहु दळ दुगमाळा ।

---

१ ग राख्यौ । २ ख ग करै । ३ ख ग. तयारीया । ४ ग जगो । ५ ख. भडा । ६ ख ग ऊससे । ७ ख वाहिर । ८ ख ग दीया । ९ ख. ग वहसे । १० ख ग वाहाला । ११ ग. चढै । १२ ख. ग. कहे । १३ ख ग ह्वै । १४ ख दुहु । ग दुहु । १५ ग होय । १६ ग आनसा । १७ ख दहूं । ग दहु । १८ ख दळां । १९ ख. ग दहूं । २० ग होय । २१ ग साभदा । २२ ग प्पमग । २३ ख सावळ । २४ ख. दुकम । २५ ख. ग अणीयाळा ।

*इन पक्तियोमे से निम्न रिक्त स्थान वाली पक्तिया ख प्रतिमे नही लिखी हुई हैं—

दहू दला' . . , ... ।
. .. 'साल दुकम, ओपै अणीयाला ।।

२६ ख ग जेवि । २७ ख कवाणा । २८ ग कीजीयै ।

---

२५३ जमजाळा – एक प्रकारकी तोप । जेसांण – जयसलमेर । उजाळा – प्रकाशित करने वाला । वहसे – उत्कठित हो कर, जोशमे आ कर । वाहाळा – समर्थ, शक्तिशाली । उताळा – त्वरायुक्त, तेज ।

२५४ भळहळ – अग्नि, आग । भूलाळा – स्नान करने वाला । खुरसांण – यवन, मुसलमान । खिवै – चमकती है । वीजळ – तलवार । वाढाळा – पैनी धार वाला, काटने वाला । दुरदाळा – हाथी, गज । साभदा – तैयार । पमग – घोडा । पखराळा – कवचधारी घोडा ।

२५५ सावळ – भाला विशेप । दुगम – जवरदस्त । ओपै – शोभा देते हैं । अणियाळा – नोक वाले । जेवि – अच्छा लगने वाला, सुन्दर, जेत्रि । दुगमाळा – दुर्गम, जवरदस्त ।

करै दळां[1] दहुवै[2] कमध, भर बाण[3] भथाळा ।
दहू दळा वहसै[4] दुझल[5], भड झळहळ भाळा ।। २५५
वकरै[6] दहुवै दळ विढण[7], तायक[8] करताळा[9] ।
ध्रोह जगे लग्गौ[10] धियाग, ब्रहम लेख वडाळा ।
धोम सिलती[11] तोडा धिकै[12], वह[13] दमग वराळा[14] ।
इम देखे जग[15] उच्चरै, एकणि घरि[16] वाळा ।। २५६
आज विहांणैं रट्ठवड[17], लडसी लकाळा ।
.. ।
।
।। २५७
पमगा साकति पाखरा, सझि विखम सहट्टी[18] ।
भडा सिलह कसि ससत्र[19] भीडि, किय[20] सज कुळवट्टी ।
आप सिलह कसि आवधा, भरि त्रसुळ[21] भ्रगुट्टी[22] ।
चढे 'किसन' असि भड चढे, अग[23] नयण उछट्टी ।। २५८

१ ख ग दळा । २ ख दहुपै । ग दहुये । ३ ख ग वाण । ४ ख. ग वहसै । ५ ग दुजळ । ६ ग वकरै । ७ ग विढण । ८ ख ग ताय । ९ ग करवताळा । १० ख ग लगो । ११ क सिलति । १२ ख ग धिर्ष । १३ ख ग वहो । १४ ख ग. वराळा । १५ ख गज । १६ ख ग घर । १७ ख ग राठवड । १८ ख. सहट्टी । १९ ख ग सस्त्र । २० ख ग कीय । २१ ख ग त्रसल । २२ ख भृकुट्टी । ग. भृगुटी । २३ ग अगि ।

---

२५५ **दहुवै** – दोनो । **भथाळा** – तर्कशयुक्त, तर्कश धारण करने वाले । **वहसै** – जोशमे होते हैं । **झळहळ** – देदीप्यमान, चमकयुक्त । **भाळा** – देखने वाला, दिखाई देने वाला ।

२५६ **वकरै** – जोशमे होते हैं, क्रोधपूर्ण होते हैं । **विढण** – युद्ध करनेको, कटनेको । **तायक** – नाश करने वाला, विध्वंसक, शत्रु । **ध्रोह** – द्रोह, द्वेष । **धियाग** – आसमान । **धोम** – अग्नि । **तोडा** – बदूक या तोप छोडनेका पलीता । **वह** – वहुत । **दमग** – अग्नि-कण, चिनगारी । **वराळा** – (?) । **एकणि घरि वाळा** – एक ही वशके ।

२५७. **विहाणै** – प्रात काल, सवेरे । **लकाळा** – वीर, योद्धा ।

२५८ **साकति** – जीन । **पाखरा** – घोडेका कवच । **सहट्टी** – (?) । **सिलह** – घोडेका कवच । **सज** – घोडे, ऊँट आदिके जीन या चारजामेके उपकरण, तैयारी । **कुळवट्टी** – कुल-मार्ग । **आवधा** – आयुधो, अस्त्र-शस्त्रो । **त्रसुळ** – क्रोधमे ललाटमे होने वाली तीन वली या सलवट । **भ्रगुट्टि** – भ्रकुटि । **किसन** – किशनसिंह । **अग** – आग, अग्नि । **उछट्टी** – निकली, उछली ।

भाला झलि हल्ले भिडण, करि फौज विकट्टी ।
खारखधा असि खेडिया[1], धावै वह[2] घट्टी ।
दारुण 'गोयद' चौगडद, फिरिया[3] पह[4]-फट्टी ।
ओभी आगि व्रजागि अग, नाराज निछट्टी ॥ २५९
कटि वगतर[5] आगौ कटै, काया खळ कट्टी ।
आधा धड पडियां[6] उडै, पीछा धर पट्टी ।
जाणि उलट्टी[7] दोवडी, लिय[8] नगर[9] नट्टी ।
पडै[10] 'गोयद' ऊपरि गजर, खागा खळवट्टी* ॥ २६०
'गोयंद' बह[11] दीधा गजर[12], अर धडा आछट्टी ।
साथी गोयदासरा[13], अति रीस उपट्टी ।
'किसन' घडा खग झाडि[14] करि, धारा धोपट्टी[15] ।
नाराजां वग्गौ[16] निहाव[17], उस्सीस[18] अघट्टी ॥ २६१

---

१ ख ग. पेडीया । २ ख ग वहो । ३ ख ग फिरीया । ४ ख ग. पौहो । ५ ख वगतर । ६ ख ग पड़ीया । ७ ख ग उल्लटी । ८ ख. ग लीय । ९ ख. ग. नीगर । १० ख. ग पड़े ।

*यह पक्ति ख तथा ग. प्रतियोमे निम्न प्रकार है—

पडे गजर गोयद परा षागा पलपट्टी ।

११ ख ग वोहो । १२ ख अरघड । ग अरिघड । १३ ग गोइददास । १४ ख ग झाट । १५ ख. धोपट्टी । ग धोंपट्टी । १६ ग. वग्गो । १७ ख ग निहाव वा । १८ ख ग. सीसि ।

---

२५९. झलि – धारण कर के । हल्ले – चले, कूच किया । विकट्टी – विकट, जबरदस्त । खारखधां – शत्रुताका भाव लिए हुए, अति क्रोधी । खेड़िया – चलाये । धावै – दौडते है । घट्टी – घोडा । दारुण – जबरदस्त । चौगडद – चारो ओरसे । पह-फट्टी – प्रात काल, सूर्योदयसे पूर्व । ओभी आगि व्रजागि – वह भी वज्राग्निके समान । नाराज – तलवार । निछट्टी – प्रहार किया, म्यानसे तलवार निकाली ।

२६०. वगतर – कवच । आगौ – शरीर । खळ – शत्रु । कट्टी – कट गई । जाणि – मानो । दोवडी – दोहरी । नगर – कुलाच । नट्टी – नट । गजर – प्रहार । खळवट्टी – ध्वसक ।

२६१ उपट्टी – उत्पन्न हुई । घड़ा – सेना । झाडि कर – सहार कर । धारां धोपट्टी – तलवारोंके प्रहार किये । नाराजा – तलवारो । वग्गौ – वजा । निहाव – प्रहार, चोट ।

'केहर'[1] मन वछत[2] किया[3], कुळरीस उकट्टी[4] ।
जोगणि[5] रत पीधा जठै, गळ ग्रीधळ गट्टी ।
कमळ लिया[6] वह[7] हार कजि, जिण वार त्रिजट्टी ।
सूरवीर 'गोयद'[8] सहित, वढिया[9] कुळवट्टी ॥ २६२
तूटा मोती हार तिम, भड पडिया[10] भट्टी ।
.... ।
.... ।
. ... ॥ २६३
'सूर' 'गजण' कथ साभळे[11], लगि ध्रोह सिलग्गी[12] ।
करि तुरांण[13] सज केजमा, भड सिलह भमग्गी[14] ।
असत्र[15] ससत्र[16] खट तीस ह्वै, सझिया[17] सरबग्गी[18] ।
'गजण' ऊच पौसाक गहि[19], असमान उमग्गी[20] ॥ २६४
कसि आवध हल्ले कमंध[21], आखूं[22] व्रण[23] अग्गी ।
मुख सूरज[24] बारह[25] मडै[26], भौह मूछ[27] भिडग्गी[28] ।

---

१ ख. ग. केहरि । २ ख ग. वछित । ३ ख ग कीया । ४ ग उक्कट्टी । ५ ग जोगिण । ६ ख. ग लीया । ७ ख ग वहौं । ८ ग गोइद । ९ ख ग वढीया । १० ख. ग पड़ीया । ११ ख ग सभळे । १२ ख ग सिलगी । १३ ख ग तुरगा । १४ ग. भमगी । १५ ख अस्त्र । १६ ख ग सस्त्र । १७ ग सझीयां । १८ ख सखग्गी । ग. सरवगी । १९ ख. ग गह । २० ग उमग्गी । २१ ख. कमध । २२ ख अंघ । ग. अपू । २३ ख व्रह्म । २४ ग सूरिज । २५ ख. वारह । ग वाहर । २६ ख मडे । २७ ग मूछ । २८ ख भिडग्गी । ग भिडगी ।

---

२६२. उकट्टी – (?) । जोगणि – रणचडी । रत – रक्त, खून । पीधा – पिया । जठै – जहां पर । गळ – मास पिंड । ग्रीधळ – गिद्ध पक्षी । गट्टी – निगला । कमळ – शिर, मस्तक । वह – वहुत । कजि – लिये । त्रिजट्टी – महादेव ।

२६३. पडिया – वीर गति प्राप्त हुए । भट्टी – भाटी वशका ।

२६४. सूर – सवाई राजा सूरसिंह । गजण – गजसिंह । सांभळे – सुन कर । ध्रोह – द्वेष, दाह । सिलग्गी – प्रज्वलित हुई । करि – हाथी । तुराण – घोड़ा । केजमा – (?) । भमग्गी – (?) । सझिया – सुसज्जित हुए । सरवग्गी – सर्वांग, सब शरीर । ऊच – श्रेष्ठ । असमान उमग्गी – आसमान तक ।

२६५ आखूं – कहता हू । व्रण – वर्णन । अग्गी – अगाडी । भिड़ग्गी – स्पर्श कर गई छू गई ।

चढिया[१] पाव रकेव[२] चाढ़ि, असि[३] तेज अथग्गी[४] ।
सावळ[५] गहिया[६] 'सूरउत', झाळाहळ[७] झग्गी ॥ २६५
अनि[८] सोहौ[९] चढिया उडड[१०], करि सेल करग्गी ।
वाग उपाडी वैडका, धरती धगधग्गी ।
आया सेल उधावियां[११], करि खाग उनग्गी[१२] ।
दहुवै दळां त्रबाक[१३] डाक[१४], वीरा रस वग्गी ॥ २६६
कहर[१५] 'गजण' 'किसनेस'[१६] री[१७], खुटहड़ घड़ खग्गी[१८] ।
घण सायक सावळ[१९] घमक, विखमी खग वग्गी ।
मिळ ज्वाळा ज्वाळा मही[२०], जाणै[२१] घ्रत[२२] जग्गी ।
काकै[२३] भात्रीजै[२४] कळह, लग्गी[२५] मझि लग्गी[२६] ॥ २६७
सावळ[२७] वाहै सूरिमां, धड़ फूटै धज्जर ।
सिलहा भल्लक[२८] नीसरै, वरळक[२९] रातंबर[३०] ।

---

१ ख ग चढीया । २ ख ग. रकेब । ३ ख असं । ४ ग. अथगी । ५ ख सावल । ६ ख ग ग्रहीया । ७ ख झाळाभम । ग झाळाझग । ८ ख. अति । ९ ख. ग. सौहौं । १० ख. ग उडसां । ११ ख. ग. उधावीया । १२ ख उन्नगी । ग उभग्गी । १३ ख त्रवाळ । ग. त्रबाळ । १४ ख डाक । १५ ग. कहिर । १६ ख किसने । १७ ख ग की । १८ ग. भग्गी । १९ ख ग सावळ । २० ख मही । ग महीं । २१ ख. जाणे । ग जाणें । २२ ख ग. घृत । २३ ख ग काके । २४ ख ग भतीजे । २५ ख ग लगी । २६ ग जगी । २७ ख ग. सावळ । २८ ख ग. भरलक । २९ ख ग. वरलक । ३० ख रातंवर ।

---

२६५ रकेव – घोड़े की काठी का पायदान जिस पर पैर रख कर सवार होते हैं, रकाव, रिकवा । अथग्गी – अपार, असीम, बहुत । सूरउत – गजसिंह । झाळाहळ – आग, अग्नि । झग्गी – प्रज्वलित हुई ।

२६६. अनि – अन्य । सोहो – सुभट, नव । उडंड – घोड़ा । करग्गी – हाथोंमें । वैडकां – मोटा । धगधग्गी – कम्पायमान हुई । सेल – भाला । उधाविया – उठाये हुए । उनग्गी – नग्न । त्रंबाक – नगाड़ा । डाक – डंका, आवाज ।

२६७ कहर – कोप । खुटहड़ – वीर, योद्धा । घड़ – सेना । सायक – तीर । घमक – प्रहार, प्रहारकी ध्वनि । वग्गी – चली, बजी । मंही – में । जाणै – मानो । जग्गी – प्रज्वलित हुई । भात्रीजै – भ्रातृव्य ।

२६८ वाहै – प्रहार करता है । सूरिमा – शूरवीर । धज्जर – भाला । भल्लक – भाला । वरळक – प्रहार या प्रहारकी ध्वनि, धमक-धमक । रातंबर – ललाई, रक्तता ।

पडता रत जोगणि[1] पियै[2], भरि पत्र भयंकर ।
वाला[3] खांणी खग वहै, धारां धमजग्गर ॥ २६८
अध सिर उड्डै[4] घाट अध, कम्मर[5] कर कोपर ।
भिलमां सहिता सिर भड़ै, कर धारै सकर* ।
कंठ चौसर घातै करै, छक सूर[6] अपच्छर[7] ।
नाचै बावन[8] वीर नृत[9], डह डह करि डम्मर[10] ॥ २६९
करि रथ थाभे वाकसी[11], देखत दिनकर ।
हड़हड़ रिख नारद हसै, भड़ भड जूटै भर ।
होय लथत्थड[12] आहुड़ै[13], धड जड़ै जमधर ।
करडक खग वीजळ कळा, बरडक्क[14] बगत्तर[15] ॥ २७०
कध कडक[16] बरडक[17] कगळ, खरडक वहि[18] खजर ।
रत दरडक काळिज रडक्क[19], फरडक बौह[20] फीफर[21] ।

---

१ ख ग. जोगिण । २ ख ग पीवै । ३ ख ग वाल्हा । ४ ख ग ऊडै । ५ ख. ग. कंम्मर ।

*यह पक्ति ख प्रतिमे नही है ।

६ ख सुवर । ग. सुवर । ७ ख. ग अपछर । ८ ख वावन । ९ ख ग नृत । १० ख. डमर । ग. डूवर । ११ ख ग वाकसी । १२ ख ग लडथड । १३ ख अहुडै । ग. आहुडै । १४ ख ग वरडक्क । १५ ख वग्गातर । ग वग्गतर । १६ ख ग. करड़ । १७ ख. ग कवरडक । १८ ख. वहि । १९ ख ग रडक्क । २० ख वहो । ग वहो । २१ ख. ग फीफर ।

---

२६८ रत – रक्त, खून । पत्र – खप्पर । वाला = वाल्हा – प्यारा । धमजग्गर – युद्ध ।

२६९ अध – अर्द्ध, आधा । घाट – शरीर । कोपर – कूर्पर, कोहनी, घुटना । भिलमा – शिरत्राण । भड़ै – कट कर गिरते है । चौसर – वरमाला, पुष्पहार । छक – मस्त, उन्मत्त । डह डह – प्रसन्न, हर्षपूर्वक, डमरू वाद्यकी ध्वनि । डम्मर – डमरू नामक वाद्य ।

२७० दिनकर – सूर्य, भानु । लथत्थड़ – गुत्थमगुत्था । आहुडै – भिडते है, युद्ध करते हैं । जड़ै – प्रहार करते हैं । जमधर – कटार । करडक – ध्वनि विशेष । वीजळ – विद्युत, बिजली । कळा – प्रकार । बरडक्क – टूटने आदिसे होने वाली ध्वनि ।

२७१. कड़क – टूट कर । वरड़क – देखो वरडक्क । कगळ – कवच । खरडक – ध्वनि विशेष । वरड़क – धारा, प्रवाह । रड़क्क – टक्कर । फरड़क – ध्वनि विशेष । बौह – बहुत । फीफर – फेंफडा ।

वाहै खग स्रो हथ[1] 'किसन', 'गजपति' वर घुम्मर[2] ।
पडै क जांणै[3] पाहडा, त्रिकटा पर वज्जर ।। २७१

घण वाहै[4] झेले घणी, 'किसनेस' किरमर[5] ।
चुख चुख हुय[6] पडियौ अचळ, 'ऊदल' सुत अड्डर[7] ।
पडिया[8] भड सह[9] पाखती, कामा[10] नामा[11] कर ।
के घायल ऊला कमध, पडिया[12] के पाधर ।। २७२

करणाजळ पडिया कमध, वाहै[13] वहि[14] वज्जर ।
कुरग ज्युही[15] पलटै[16] कमध[17], हल्ले[18] दावागर ।
जैत नगारा वज्जिया[19], वीता धमजग्गर[20] ।
गह धर[21] इम जीता 'गजण', वळवत[22] वहादर[23] ।। २७३

कवित्त– समर जीप[24] 'गजसाह', अयी छिवतौ[25] भुज अवर[26] ।
खुरम हियै[27] खटकियौ[28], अवर ढहले[29] दावागर ।
'सूरसाह' 'गजसाह', साह भयप्रत्ति सधारा[30] ।
पूजि वधारा[31] पटा[32], विदा कीधा जिण वारा ।

---

१ ख ग हथि । २ ख ग गुम्मर । ३ ख जाणे । ४ ख ग वाहे । ५ ख ग करिम्मर । ६ ख ग होय । ७ ख ग अडर । ८ ख ग पडीया । ९ ख ग सोहो । १० ख ग कामा । ११ ख ग नामा । १२ ख ग पडीया । १३ ख वाहे । ग वहि । १४ ग वाहे । १५ ख ग जही । १६ ख ग पलटे । १७ ख ग कमाद । १८ ख ग हले । १९ ख. ग वज्जीया । २० क समजग्गर । २१ ख ग धरि । २२ ख. ग. वलिवत । २३ ख वाहादर । ग. वाहादर । २४ ख ग जीपि । २५ ख ग छिवतो । २६ ख ग. अछर । २७ ख. हीए । ग. हीऐ । २८ ख. ग पटकीयो । २९ ख ग दहले । ३० ख. सुधारा । ३१ ख वपटारा । ३२ ख वधा ।

---

२७२. किरमर – तलवार । पडियौ – वीर-गति प्राप्त हुआ । अचळ – पृथ्वी, भूमि । अड्डर – निर्भय । ऊदल – मोटा राजा उदयसिंह । पाखती – पास, निकट ।

२७३ करणाजळ – करणसिंह जो किशनसिंहका भतीजा था । वज्जर – तलवार । कुरग – घोडा, हरिण । ज्युहीं – जैसे ही । दावागर – दावा करने वाला, शत्रु । धमजग्गर – युद्ध । गहधर – गर्वधारी ।

२७४ जीप – जीत कर । गजसाह – गजसिंह । अवर – आसमान । सूरसाह – शूरसिंह । जिण वारा – जिस समय ।

हुय[1] तबळ[2] बंब[3] दळ मझि हले, पित सुत जस व्रद फाबिया[4] ।
हुय मगळ धमळ उछब[5] हुवा[6], एम मडोवर आविया[7] ।। २७४

केइक[8] दीह कमधेस, रहे मंडोवर[9] राजा ।
इतै दखिण[10] ऊठिया[11], सबळ[12] दळ दुद सकाजा ।
'सूरसाह' पतिसाह, तेडिया[13] तुर तिण वारा ।
आयौ 'सूर' अभग, सझे[14] फौजा घैसारां ।
गजपूर[15] दत भिडजां गजा, दिलीनाथ तौरा[16] दिया[17]* ।
दळ समपि अराबा[18] दिखण[19] दिस[20], कमधज भूप[21] विदा किया[22] ।।२७५

दीह केक मझि दुझल, सूर दळ लिया[23] सकाजा ।
अभग दखिण आवियौ[24], रहे व्रहनपुर[25] राजा ।
दहले भागा दुसह, पाय लागा बध[26] पाणै ।
अजू 'सूर' करि अमल, एक[27] हुकमह[28] धर[29] आणै[30] ।

---

१ ख ग होय । २ ख तवल । ३ ख. वव । ४ ख. ग पावीया । ५ ख उछव । ग. उत्छव । ६ ग हुआ । ७ ख ग आवीया । ८ ग कोइक । ९ ग मडोवरि । १० ख ग. दखिणि । ११ ख ग ऊठीया । १२ ख. सवल । १३ ख ग तेडिआ । १४ ग. सझै । १५ ख ग गहतत । १६ ख ग तोरा । १७ ख ग दीया ।

*यह पक्ति ख. ग प्रतियोमे निम्न प्रकार है—

गहतत मिले तदि भिडज गज ।

१८ ख अरावा । १९ ख ग दखिणि । २० ख ग दिसि । २१ क. रूप । २२ ख ग कीया । २३ ख ग कीया । २४ ख ग आवीयौ । २५ ख. व्राहनपुर । ग व्रहानपुर । २६ ख वधि । ग बधि । २७ ग ऐक । २८ ग हुकम । २९ ख धरि । ३० ख. आणे ।

---

२७४ तवळ – वाद्य विशेष । वव – नगाडा । व्रद – विरुद । फाबिया – शोभित हुए । मगळ धमळ – मागलिक गायन, उत्सवके गीत ।

२७५ कमधेस – राठौड राजा । दुंद – द्व द, युद्ध । तेडिया – बुलाये । तुर – तुरन्त । सूर – शूरसिंह । घैसारा – समूहो । भिडजा – घोडो । अराबा – तोप ।

२७६ दहले – भयभीत हो कर । दुसह – शत्रु । पाय लागा बध पाणै – करवद्ध हो कर पैरोमे लगे ।

वीह[1] करे[2] दांन खग अथिग[3] ब्रिद[4], पिसणा[5] करि ऊथल[6] पथल ।
मांनवा[7] लोक[8] जस करि अमर[9], देव लोक वसियौ[10] दुझल ।। २७६

इति तृतीय प्रकरण ।

इति पूरवारध ।



१ ख ग वहौ। २ ग. करै। ३ ख ग अथग। ४ ख ग व्रिद। ५ ख. प्रिसणा। ग प्रिसुणां। ६ ख. उथल। ७ ख ग. मान्नव। ८ ग लोकि। ९ ख अम्मर। १० ख. ग वसीयौ।

२७६ अथिग – अपार, असीम। ब्रिद – विरुद। पिसणा – शत्रुओ। ऊथल पुथल – उलट-पलट। वसियौ – निवास किया। दुझल – वीर।

* श्री *

परिशिष्ट १

नामानुक्रमणिका

ह

* श्री *

परिशिष्ट २

छंदानुक्रमणिका

सूरजप्रकासके प्रथम खडके सपादनके सहायक ग्रथोकी सूची



१ उदयपुरका इतिहास—डॉ० गौरीशंकर हीराचद ओझा कृत—जिल्द १, २

२ जोधपुर राज्यका इतिहास—डॉ० गौरीशकर हीराचद ओझा कृत—जिल्द १, २

३ जोधपुर राज्यकी ख्यात—(हस्तलिखित) हमारे संग्रहमे।

४ दयाळदासकी ख्यात—सिंढायच दयाळदास कृत—भाग २
डॉ० दशरथ शर्मा आदि द्वारा सपादित
अनूप सस्कृत लायब्रेरी, बीकानेर, द्वारा प्रकाशित

५ नैणसी, मुहणोत नैणसीकी ख्यात—काशी नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित—खड १, २

६ मारवाड़का इतिहास—प० विश्वेश्वरनाथ रेऊ कृत—प्रथम भाग।

७ मारवाड़का सक्षिप्त इतिहास—प० रामकरण आसोपा कृत।

८ वीर विनोद—महामहोपाध्याय, कविराजा श्यामलदास कृत—भाग १, २

९ तवारीखे पालनपुर—सैयद गुलाब मिया कृत

१० पालनपुर राज्यनो इतिहास—(गुजराती) भाग १—नवाब सरताले मुहम्मद खा कृत

११ राजरूपक—वीरभाण रतनू कृत



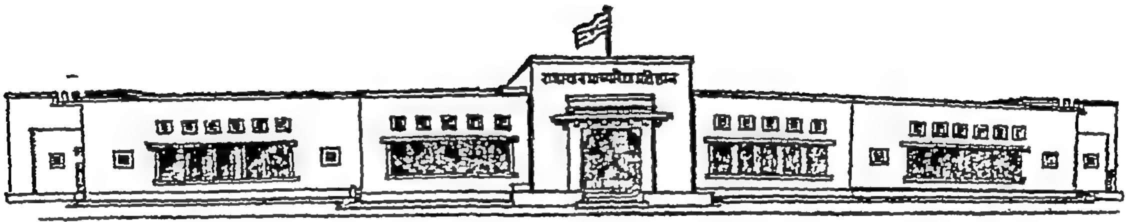


राजस्थान सरकार

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

Rajasthan Oriental Research Institute

जोधपुर



सूची-पत्र

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रधान सम्पादक—पद्मश्री मुनि जिनविजय, पुरातत्त्वाचार्य

मार्च, १९६१ ई०

राजस्थान पुरातन ग्रन्थ-माला

प्रधान सम्पादक–पद्मश्री मुनि जिनविजय, पुरातत्त्वाचार्य

प्रकाशित ग्रन्थ

१ संस्कृत

१ प्रमाणमंजरी, तार्किकचूडामणि सर्वदेवाचार्यकृत, सम्पादक – मीमांसान्यायकेसरी पं० पट्टाभिरामशास्त्री, विद्यासागर। मूल्य–६ ००

२ यन्त्रराजरचना, महाराजा सवाईजयसिंह-कारित। सम्पादक–स्व० पं० केदारनाथ ज्योतिर्विद्, जयपुर। मूल्य–१ ७५

३ महर्षिकुलवैभवम्, स्व० पं० मधुसूदन ओझाप्रणीत, सम्पादक–म०म० पं० गिरिधरशर्मा चतुर्वेदी। मूल्य–१०.७५

४ तर्कसंग्रह, अन्नंभट्टकृत, सम्पादक–डॉ. जितेन्द्र जेटली, एम ए, पी–एच. डी, मूल्य–३ ००

५ कारकसंबंधोद्योत, पं० रभसनन्दीकृत, सम्पादक–डॉ० हरिप्रसाद शास्त्री, एम ए, पी-एच डी.। मूल्य–१.७५

६ वृत्तिदीपिका, मौनिकृष्णभट्टकृत, सम्पादक–स्व पं पुरुषोत्तमशर्मा चतुर्वेदी, साहित्याचार्य। मूल्य–२ ००

७ शब्दरत्नप्रदीप, अज्ञातकर्तृक, सम्पादक–डॉ हरिप्रसाद शास्त्री, एम ए, पी-एच. डी। मूल्य–२.००

८. कृष्णगीति, कवि सोमनाथविरचित, सम्पादिका–डॉ प्रियबाला शाह, एम ए, पी-एच डी, डी लिट्। मूल्य–१.७५

९ नृत्तसंग्रह, अज्ञातकर्तृक, सम्पादिका–डॉ प्रियबाला शाह, एम ए, पी-एच. डी., डी लिट्। मूल्य–१.७५

१०. शृङ्गारहारावली, श्रीहर्षकविरचित, सम्पादिका–डॉ प्रियबाला शाह, एम ए, पी-एच डी, लिट्। मूल्य–२ ७५

११ राजविनोद महाकाव्य, महाकवि उदयराजप्रणीत, सम्पादक–पं० श्रीगोपालनारायण बहुरा, एम. ए., उपसञ्चालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर। मूल्य–२ २५

१२ चक्रपाणिविजय महाकाव्य, भट्टलक्ष्मीधरविरचित, सम्पादक–केशवराम काशीराम शास्त्री मूल्य–३.५०

१३. नृत्यरत्नकोश (प्रथम भाग), महाराणा कुम्भकर्णकृत, सम्पादक–प्रो रसिकलाल छोटालाल पारिख तथा डॉ० प्रियबाला शाह, एम ए, पी-एच. डी., डी लिट्। मूल्य–३ ७५

१४. उक्तिरत्नाकर, साधुसुन्दरगणिविरचित, सम्पादक–पुरातत्त्वाचार्य श्रीजिनविजयमुनि, सम्मान्य संचालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर। मूल्य–४ ७५

१५ दुर्गापुष्पाञ्जलि, म०म० पं० दुर्गाप्रसादद्विवेदिकृत, सम्पादक–पं० श्रीगङ्गाधर द्विवेदी, साहित्याचार्य। मूल्य–४ २५

१६ कर्णकुतूहल, महाकवि भोलानाथविरचित, सम्पादक–पं० श्रीगोपालनारायण बहुरा, एम. ए, उप-संचालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर। इन्हीं कविवर की अपर कृति श्रीकृष्णलीलामृतसहित। मूल्य–१ ५०

१७ ईश्वरविलासमहाकाव्यम्, कविकलानिधि श्रीकृष्णभट्टविरचित, सम्पादक–भट्ट श्रीमथुरानाथ शास्त्री, साहित्याचार्य, जयपुर। मूल्य–११ ५०

राजस्थानी और हिन्दी

प्रेसों में छप रहे ग्रंथ

संस्कृत

१. शकुनप्रदीप, लावण्यशर्मरचित, सम्पादक–मुनि श्रीजिनविजय ।
२. त्रिपुराभारतीलघुस्तव, धर्माचार्यप्रणीत, सम्पादक–मुनि श्रीजिनविजय ।
३. करुणामृतप्रपा, भट्ट सोमेश्वरविनिर्मित, सम्पा०–मुनि श्रीजिनविजय ।
४. बालशिक्षाव्याकरण, ठक्कुर संग्रामसिंहरचित, सम्पा०–मुनि श्रीजिनविजय ।
५ पदार्थरत्नमंजूषा, पं० कृष्णमिश्रविरचित, सम्पा०–मुनि श्रीजिनविजय ।
६. वसन्तविलास फागु, अज्ञातकर्तृक, सम्पा०–श्री एम सी मोदी ।
७ नन्दोपाख्यान, अज्ञातकर्तृक, सम्पा०–श्री बी जे सांडेसरा ।
८ चान्द्रव्याकरण, आचार्य चन्द्रगोमिविरचित, सम्पा०–श्री बी डी. दोशी ।
९. वृत्तजातिसमुच्चय, कविविरहाङ्करचित, सम्पा०–श्री एच डी. वेलणकर ।
१०. कविदर्पण, अज्ञातकर्तृक ,, ,, ,,
११ स्वयंभूछन्द, कविस्वयंभूरचित ,, ,, ,,
१२. प्राकृतानन्द, रघुनाथकविरचित, सम्पा०–मुनि श्री जिनविजय ।
१३ कविकौस्तुभ, पं० रघुनाथरचित, ,, श्री एम. एन. गोरी ।
१४ नृत्यरत्नकोश, भाग २, महाराणा कुंभकर्णप्रणीत, सम्पा०–डॉ. प्रियबाला शाह ।
१५ इन्द्रप्रस्थप्रबन्ध, सम्पा०–डॉ श्रीदशरथ शर्मा ।
१६. हमीरमहाकाव्यम्, नयचन्द्रसूरिकृत, सम्पा०–मुनि श्रीजिनविजयजी ।
१७ रत्नपरीक्षादि, ठक्कुर फेरूरचित ,, ,,
१८ स्थूलिभद्रकाकादि, सम्पा०–डॉ० आत्माराम जाजोदिया ।
१९ वासवदत्ता, सुबन्धुकृत, सम्पा०–डॉ० जयदेव मोहनलाल शुक्ल ।
२० घटखर्परादि पंचलघुकाव्यानि ,, पं० अमृतलाल मोहनलाल ।
२१. भुवनदीपक, यावनाचार्यकृत, सम्पा०–पं० श्रीपुरुषोत्तमभट्ट ।

राजस्थानी और हिन्दी

२२ मुहता नैणसीरी ख्यात, भाग २, मुहता नैणसीकृत, सम्पा०–श्रीबद्रीप्रसाद साकरिया ।
२३ गोरा बादल पदमिणी चऊपई, कवि हेमरतनकृत ,, श्रीउदयसिंह भटनागर ।
२४. राजस्थानमें संस्कृत साहित्यकी खोज, एस आर भाण्डारकर हिन्दीअनुवादक–श्रीब्रह्मदत्त त्रिवेदी ।
२५ राठौडारी वंशावली, सम्पा०–मुनि श्रीजिनविजय ।
२६ सचित्र राजस्थानी भाषासाहित्यग्रन्थसूची, सम्पादक–मुनिश्रीजिनविजय ।
२७. मीरां-बृहत्-पदावली, स्व० पुरोहित हरिनारायणजी विद्याभूषण द्वारा संकलित, सम्पा०–मुनि श्रीजिनविजय ।
२८ राजस्थानी साहित्यसंग्रह, भाग ३, संपादक–श्रीलक्ष्मीनारायण गोस्वामी ।
२९. सूरजप्रकास, भाग २, कविया करणीदानकृत, सम्पा०–श्रीसीताराम लाळस ।
३०. नेहतरंग, बूंदीनरेश रावराजा बुधसिंह हाडाकृत, सम्पा०–श्रीरामप्रसाद दाधीच ।

विशेष–पुस्तक-विक्रेताओं को २५ कमीशन दिया जाता है ।